अमित खान

का सुपरहिट थ्रिलर

सांप सीढ़ी का खेल



साँप सीढ़ी का

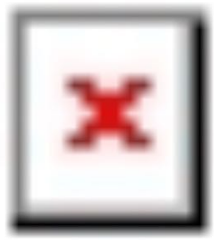
खेल

उसने मरने के बाद मर्डर किया।

कैसे?

एक सुपरहिट थ्रिलर

<u>साँप सीढ़ी का खेल</u>



क्या कोई मरने के बाद मर्डर कर सकता है? इम्पॉसिबल! नामुमकिन! भला मरने के बाद भी कोई मर्डर कर सकता है? लेकिन उसने किया?

कैसे?

हत्या की एक बेहद हैरतअंगेज दास्तान, जो आपने आज से पहले कभी नहीं पढ़ी होगी।

'अमित खान' की लौहलेखनी से निकला एक शानदार थ्रिलर।

कंटेंट्स

साँप सीढ़ी का खेल

थ्रिलर

ISBN: 978-81-953684-3-3

प्रथम संस्करण: दिसम्बर 2001
दूसरा संस्करण: फ़रवरी 2004
तीसरा संस्करण: जुलाई 2008
चौथा संस्करण: सितम्बर 2015
ई-बुक संस्करण: अप्रैल 2022

वैधानिक नीति:

प्रकाशक:
बुक कैफे पब्लिकेशन
गोरेगांव (वेस्ट), मुम्बई- 400104
संपर्क सूत्र : bookcafepublication@gmail.com
+91 9372257140 (सिर्फ व्हाटसअप या नॉर्मल मैसेज़ करें)

लेख़क का परिचय

लेखक का जन्म गाजियाबाद जनपद के पिलखुआ क़स्बे में हुआ। उनके द्वारा लिखी गयी पहली कहानी मात्र 12 वर्ष की अल्प आयु में और पहला उपन्यास मात्र 15 वर्ष की आयु में प्रकाशित हो गया था, जो संभवत विश्व रिकॉर्ड है। उनके द्वारा लिखी गयी कहानियां बहुत कम आयु में ही देश की बड़ी प्रसिद्द पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं।

देश के बड़े प्रकाशन संस्थानों द्वारा अभी तक उनके लिखे गए 100 से ज्यादा उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

देश के प्रसिद्ध 'राइटर फेस्टिवल' में उन्हें 'स्पीकर' के तौर पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

उन्होंने 'डायमंड कॉमिक्स' भी काफी बड़ी संख्या में लिखे, जो हिंदी, अंग्रेजी और बंगला भाषाओ में प्रकाशित हुए।

इसके अलावा आज उनका पात्र ‘कमाण्डर करण सक्सेना’ हिंदी उपन्यास जगत में मील का पत्थर बन चुका है, जिस सीरिज पर उन्होंने 58 उपन्यास लिखे ।

वह आजकल मुंबई में रहते हैं और मुंबई फ़िल्म इंडस्ट्री में भी काफी सक्रिय हैं । उनके द्वारा लिखी कथा, पटकथा, संवादों पर कई भाषाओं (हिंदी-मराठी-पंजाबी) में फ़िल्में बन चुकी हैं और टीवी पर भी वह अभी तक अलग-अलग धारावाहिकों के सौ से ज्यादा एपिसोड लिख चुके हैं । ‘एकता कपूर’ द्वारा बनाई गयी उनके उपन्यास पर आधारित वेब सीरीज़ ‘बिच्छू का खेल’ भी सुपरहिट रही है ।

उन्हें ‘विश्व हिंदी अकादमी ’ द्वारा ‘हिंदी सेवा सम्मान’ से भी अलंकृत किया जा चुका है।

‘नाशिक इंटरनेशनल फ़िल्म फेस्टिवल’ में भी उन्हें ‘बेस्ट कथा-पटकथा’ का अवार्ड दिया गया है ।

इस समय आपके हाथ में उन्ही हिंदी उपन्यासों के बेताज बादशाह ‘अमित खान’ द्वारा लिखित एक शानदार थ्रिलर ‘साँप सीढ़ी का खेल’ है, जो दिसम्बर 2001 में पहली बार प्रकाशित हुआ था और तभी उसने सफलता का प्रचण्ड इतिहास रच दिया था ।

अमित खान के सम्पर्क सूत्र :

Email- foramitkhan@gmail.com

Facebook Page- @AuthorAmitKhanOfficial

Instagram- @author_amit_khan

Twitter- @AuthorAmitKhan

साँप सीढ़ी का खेल

जिंदगी में कुछ वाकये ऐसे होते हैं, जिन्हें इंसान चाहते हुए भी नहीं भूल सकता ।

यशवंत गवली की जिंदगी में भी वह ऐसा ही एक केस था, चौंका देने वाला केस । हालांकि वह आज से 4 साल पुरानी घटना है, मगर यशवंत गवली उसे अभी तक नहीं भुला पाया था । यशवंत गवली एक कोई 34 साल का क्राइम ब्रांच ऑफिसर था । बेहद हैण्डसम था । सबसे बड़ी बात यह है कि उसकी ज़िन्दगी में अभी तक एक अदद लड़की नहीं आई थी । 34 साल की उम्र में भी वह कुँवारा था । इसीलिये उसका सारा वक़्त अपने डिपार्टमेंट को समर्पित था ।

बेहद चालाक दिमाग अपराधियों से टकराने में उसे मज़ा आता था । यशवंत गवली को मज़ा आता था कि कोई शातिर अपराधी उससे टकराये ।

यह भी ऐसे ही एक बेहद चालाक अपराधी की कहानी है, जिसे वह आज तक नहीं भुला पाया था ।

यशवंत गवली को आज भी अच्छी तरह याद था, वह 25 दिसंबर 1998 की सुबह थी ।

एक अलसाई हुई-सी सुबह ।

यशवंत गवली के पास उन दिनों कोई केस नहीं था और वह बिल्कुल खाली था । तभी एकाएक क्राइम ब्रांच ऑफिसर हरिनारायण आप्टे ने उसे ऑफिस में तलब किया ।

हरिनारायण आप्टे ज्यादातर उसे ऑफिस तभी बुलाते थे, जब मामला काफी संगीन हो ।

यशवंत गवली तुरंत ऑफिस पहुँचा ।

"आओ यशवंत !" हरिनारायण आप्टे बोले, "प्लीज सिट डाउन !"

यशवंत गवली, हरिनारायण आप्टे के सामने विजिटर्स चेयर पर बैठ गया ।

हरिनारायण आप्टे उस समय काफी परेशान नजर आ रहे थे । बेचैनी उनके चेहरे से दृष्टिगोचर हो रही थी ।

फिलहाल एक फाइल हरिनारायण आप्टे के सामने खुली पड़ी थी, जिसमें अलग-अलग अखबारों की काफी सारी कटिंग्स थीं ।

द टाइम्स ऑफ इंडिया ।

मिड डे ।

दैनिक यशोभूमि ।

सामना ।

मुंबई शहर में छपने वाले तमाम अखबारों की कटिंग उस फाइल के अंदर थी ।

"क्या बात है सर ?" यशवंत गवली उनके चेहरे पर नजरें गड़ता हुआ बोला, "आज आप काफी परेशान नजर आ रहे हैं ।"

"हाँ, बात ही कुछ ऐसी है ।" हरिनारायण आप्टे ने कहा ।

उन्होंने गहरी लंबी साँस ली ।

"तुम तो जानते ही हो ।" हरिनारायण आप्टे थोड़ा रुककर पुनः बोले, "कि पिछले महीने से एक अपराधी मुंबई शहर के अंदर एक के बाद एक बड़े अजीबोगरीब तरीके से मर्डर किए जा रहा है और वह अभी तक अलग-अलग स्पॉट पर जाकर कोई 6 मर्डर कर चुका है ।"

"मैं जानता हूँ सर !" यशवंत गवली बोला, "सचमुच आज की तारीख में उस हत्यारे ने जबरदस्त आतंक बरपा किया हुआ है । कोई नहीं जानता कि वह कल कहाँ पहुँचकर मर्डर कर दे ।"

"एब्सोल्यूटली करेक्ट !" हरिनारायण आप्टे के स्वर में थोड़ा उत्साह झलका, "मैं उसी हत्यारे की बात कर रहा हूँ । सबसे बड़ी बात यह है कि सभी मर्डर बहुत प्री-प्लान, बहुत योजनाबद्ध तरीके से किये गए हैं । यही वजह है कि हत्यारा कब घटनास्थल पर आता है और कब अपना काम करके चला जाता है किसी को कुछ पता नहीं चलता । मुंबई पुलिस उस हत्यारे को ढूंढ-ढूंढकर थक चुकी है और अब तंग आकर पुलिस ने उस रहस्यमई हत्यारे की केस फाइल को हमारे हैंडओवर कर दिया है ।"

"यानी क्राइम ब्रांच के हैंड ओवर ।"

"हाँ ।" हरिनारायण आप्टे की गर्दन स्वीकृति में हिली, "इतना ही नहीं, मुंबई पुलिस ने उस फाइल में अपनी एक फाइनल रिपोर्ट भी लगाई है जिसमें उन्होंने क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर से आग्रह किया है कि अब इस केस का इन्वेस्टिगेशन इंचार्ज यशवंत गवली को बनाया जाए, क्योंकि वही उस हत्यारे तक पहुँच सकता है । यह रही मुंबई पुलिस की फाइनल रिपोर्ट ।"

हरिनारायण आप्टे ने फाइल में से निकालकर पुलिस की वह फाइनल रिपोर्ट उसके सामने रखी ।

यशवंत गवली ने उस फाइनल रिपोर्ट पर एक सरसरी से निगाह दौड़ाई । उस रिपोर्ट में हत्यारे के बारे में काफी सनसनीखेज बातें दर्ज थीं । रिपोर्ट देखने के बाद यशवंत गवली ने उसे वापस हरिनारायण आप्टे को लौटा दिया ।

जिसे हरिनारायण आप्टे ने पहले की तरह फाइल में लगाया ।

"यानी वह हत्यारा कौन है ?" यशवंत गवली बोला, "मुंबई पुलिस अभी तक उसके बारे में कोई सबूत इकट्ठे नहीं कर पाई है ?"

"बिल्कुल नहीं ।" हरिनारायण आप्टे का लहजा सपाट था, "हालांकि मुंबई पुलिस ने हत्यारे तक पहुँचने की काफी कोशिशें की हैं । जिस जगह मर्डर हुए, वहाँ जाकर भी पूछताछ की । मगर सारी भागा-दौड़ी, सारी इन्वेस्टिगेशन का बस एक ही नतीजा निकला कि हत्यारा जो भी है, काफी स्मार्ट है, काफी

खूबसूरत है और एकाएक कोई उस पर इस बात का यकीन नहीं कर पाता कि वह मर्डर करने जैसे खतरनाक काम को भी अंजाम दे सकता है । वह मर्डर स्पॉट पर हर बार कोई नया रूप धारण करके छलावे की तरह आता है और गायब हो जाता है ।"

"यानी वह रूप बदलने में भी माहिर है ।" यशवंत गवली हत्यारे के बारे में सारी जानकारी जुटाता हुआ बोला ।

"बिल्कुल सही । यही तो उसकी खूबी है । इसी वजह से तो वह पकड़ा नहीं जाता । घटनास्थल पर जाकर जितने आदमियों से मिलोगे उतने आदमी उसके बारे में नया-नया खाका खींचते हैं, नई-नई बात बताते हैं । यही वजह है कि उसकी कोई मुकम्मल और साफ तस्वीर दिमाग में नहीं बनती । बहरहाल पुलिस फाइल में उसे जेंटलमैन किलर नाम दिया गया है ।"

"जेंटलमैन किलर !" यशवंत गवली ने नाम रिपीट किया, "स्मार्ट नेम ।"

हरिनारायण आप्टे ने हवाना सिगार का एक कश और लगाया ।

"उस जेंटलमैन किलर नामक फैंसी हत्यारे के बारे में मैं तुम्हें दो बहुत खास बातें और बताना चाहूँगा यशवंत ?"

"क्या ?"

"नंबर एक, उसने अभी तक जिन 6 आदमियों के मर्डर किए हैं, वे सभी क्रिमिनल्स थे । इश्तिहारी मुजरिम थे । सबके ऊपर क़त्ल और डकैती जैसे बड़े इल्जाम थे और वह सब सजायाफ्ता थे । दूसरे नजरिए से देखा जाए तो वह आतताई जो कुछ कर रहा है, लॉ एंड ऑर्डर के हक में कर रहा है । वह वही कर रहा है जो कानून को करना चाहिए । फिर भी इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं कि हम खामोश बैठ जाएँ । एक आम आदमी सड़कों पर खुलेआम अपराधियों का मर्डर करता घूम रहा है और हम सिर्फ इसलिए उसे नहीं पकड़ते क्योंकि वह वही कर रहा है जो कानून को करना चाहिए । नो नेवर, रॉन्ग वर्क इज रॉन्ग । कानून का काम कानून करेगा । कानून किसी नॉर्मल सिटीजन को यह हक हरगिज़ नहीं देता कि वह खुद कानून का अलंबरदार बन जाए और सड़कों पर फैसला करने निकल पड़े ।"

"लेकिन अहम सवाल यह है सर !" यशवंत गवली बोला, "कि हत्यारा उन अपराधियों का मर्डर कर क्यों रहा है ?"

"यही तो अभी तक एक पहेली बनी हुई है ।" हरिनारायण आप्टे के स्वर में उलझन थी, "इसके अलावा उस हत्यारे के बारे में एक दूसरी खास बात यह है कि वह मर्डर करने के बाद घटनास्थल पर एक बहुत छोटी उंगली के बराबर प्लास्टिक की सीढ़ी भी छोड़कर जाता है, जिस पर साँप बना रहता है और जो मुँह उठाए सीढ़ी पर ऊपर की तरफ चढ़ने की कोशिश कर रहा होता है ।"

हरिनारायण आप्टे ने एक लिफाफे में से निकालकर प्लास्टिक की वह साँप-सीढ़ी भी यशवंत गवली को दिखाई ।

यशवंत गवली उस साँप-सीढ़ी को देखकर चौंक उठा ।

यह एक और नया मायाजाल था ।

नया रहस्य चक्र ।

"हत्यारा घटनास्थल पर साँप-सीढ़ी क्यों छोड़कर जाता है ?" यशवंत गवली ने पूछा ।

"यह भी एक रहस्य है, गहरा रहस्य । बहरहाल तुम जेंटलमैन किलर के इस पूरी केस फाइल को ले जाओ और इसकी अच्छी तरह स्टडी कर लेना । मैं समझता हूँ, वह हत्यारा खामोश बैठने वाला नहीं है । वह फिर बहुत जल्द किसी नई घटना को अंजाम देगा और तुम्हें इस बार उस होने वाले नए हादसे को रोकना है ।"

"ओके सर !"

हरिनारायण आप्टे ने फाइल बंद करके यशवंत गवली की तरफ बढ़ा दी, जिसे यशवंत गवली ने फौरन अपने कब्जे में ले लिया।

"मुझे पूरी उम्मीद है।" हरिनारायण आप्टे बोले, "जिस जेंटलमैन किलर को पूरी मुंबई पुलिस मिलकर नहीं खोज पाई उसे तुम खोज पाओगे। विश यू ऑल द बेस्ट यंग मैन, एंड गुड लक!"

"थैंक यू, थैंक यू वेरी मच!"

यशवंत गवली कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया और उसने हरिनारायण आप्टे से कसकर हाथ मिलाया।

●●●

यशवंत गवली उस केस फाइल को लेकर सीधा घर पहुँचा तथा फिर उसका पूरा दिन जेंटलमैन किलर की केस फाइल स्टडी करते हुए गुजरा।

जेंटलमैन किलर नामक उस हत्यारे का किरदार सचमुच बहुत रहस्य से भरा था।

यशवंत गवली भाँप गया, वह जरूर कोई सनकी कैरेक्टर था, जो भावनाओं के वशीभूत होकर इस तरह की हत्याएँ कर रहा था लेकिन उसकी कार्यप्रणाली बताती थी कि वह बुद्धिमान बहुत था और हर कदम सोच-समझकर उठाता था।

बेहद योजनाबद्ध तरीके से।

यशवंत गवली का निजी अनुमान था, इस तरह के लोग कभी-कभी समाज के लिए भयंकर खतरा बन जाया करते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि जैंटलमैन किलर की कार्यप्रणाली यह भी जाहिर करती थी कि वह अनपढ़ और जाहिल किस्म का हत्यारा नहीं है।

वह अच्छा-खासा एजुकेटेड आदमी था और यह बात भी भारी खतरे की थी क्योंकि इस तरह के पढ़े-लिखे अपराधी को पकड़ पाना और भी जटिल हो जाता है। ऐसे अपराधी हर मामले में उस्ताद होते हैं।

बहरहाल हरिनारायण आप्टे और यशवंत गवली के विचारों में एक बात कॉमन थी।

वो यह; जिस तरह हरिनारायण आप्टे यह कह रहे थे कि वह खामोश बैठने वाला नहीं है, उसी तरह पूरी केस फाइल स्टडी करने के बाद खुद यशवंत गवली भी इस नतीजे पर पहुँचा कि वह बहुत जल्द कुछ-न-कुछ करेगा।

और।

वही हुआ।

रात के 10:00 बज रहे थे जब हरिनारायण आप्टे का यशवंत गवली के पास दोबारा फोन आया।

हरिनारायण आप्टे की आवाज उस समय काफी घबराई हुई थी।

वह चिंतित थे।

"यशवंत!" हरिनारायण आप्टे बोले, "गड़बड़ हो गई।"

"क्या हुआ?"

यशवंत गवली की समस्त इंद्रियाँ सजग हुईं।

"जेंटलमैन किलर ने एक और खून कर दिया है।" वह धमाका करते हुए बोले, "तथा वह हमेशा की तरह घटनास्थल से बड़ी सफाई से निकल भागा है।"

"क्या कह रहे हैं आप?" यशवंत गवली के लिए वह सचमुच चौंका देने वाली खबर थी, "लेकिन इस बार उसने किस जगह मर्डर किया?"

हरिनारायण आप्टे ने उसे जगह के बारे में बताया।

●●●

हालात सचमुच संजीदा थे ।

खतरनाक ।

जेंटलमैन किलर उनकी उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी के साथ सारा काम कर रहा था ।

यशवंत गवली रात के समय अभी तुरंत कार चलाता हुआ घटनास्थल पर पहुँचा ।

इस बार हत्यारे ने कांदिवली के एक बीयर बार को अपना निशाना बनाया था ।

बियर बार हालांकि कांदिवली के बेहद पॉश और भीड़-भाड़ भरे एरिया में था, लेकिन जेंटलमैन किलर फिर भी अपना काम बखूबी कर गया था । यशवंत गवली जब वहाँ पहुँचा तो पुलिस की तीन पेट्रोलिंग कारें वहाँ पहले से ही खड़ी थी और कोई दर्जनभर से भी ज्यादा पुलिसकर्मियों ने उस पूरे बीयर बार को अंदर-बाहर सब जगह से घेर लिया था ।

वह चप्पे-चप्पे पर फैले हुए थे ।

हर तरफ ।

यशवंत गवली के वहाँ पहुँचते ही उन सभी ने उसे जोरदार तरीके से सैल्यूट मारा ।

यशवंत गवली बीयर बार के अंदर पहुँचा ।

अंदर का दृश्य और भी ज्यादा स्तब्धकारी था ।

रहस्य से भरा ।

कोई 15-20 शक्ल-सूरत से ही आवारा नज़र आने वाली लड़कियाँ एक कोने में खड़ी हुई सूखे पत्ते की भांति थर-थर काँप रही थीं । उनका चेहरा पीला जर्द पड़ा हुआ था और आँखों में सफेदी थी । उन्हें नहीं मालूम था कि अब उनके साथ क्या सलूक होने वाला है । वहीं उन लड़कियों के पास बीयर बार का पूरा स्टाफ और तमाम अय्याश आदमी भी खड़े हुए थे, जो शराब-शबाब का मजा लूटने वहाँ आए थे मगर अब उनकी भी हवा खुश्क थी ।

बाकी पूरा हॉल खाली था ।

"आइए यशवंत !" फौरन स्थानीय थाने का इंस्पेक्टर गर्मजोशी के साथ आगे बढ़ा, "आइए, मैं आप ही का इंतजार कर रहा था ।"

"यानी जेंटलमैन किलर का यह सातवां शिकार है ।"

"जी हाँ ।"

यशवंत गवली की निगाह लाश पर जाकर ठिठक गई ।

हॉल के बिल्कुल बीचो-बीच फर्श पर वह लाश पड़ी हुई थी । लाश कोई 35-36 साल के आदमी की थी और वह शक्ल-सूरत से ही बदमाश नजर आता था ।

"जेंटलमैन किलर ने बहुत दुर्दांत अंदाज में यह मर्डर किया है ।" इंस्पेक्टर बोला, "गोली उसने ठीक मृतक की खोपड़ी में मारी जो आगे से घुसी और पीछे कहीं जाकर अटक गई है । जिस अंदाज में मृतक की खोपड़ी में गोली लगी है उससे एक और बात भी साबित होती है यशवंत !"

"क्या ?"

"जेंटलमैन किलर ने जब इस आदमी को गोली मारी तो वह बीयर बार में इसके काफी करीब था ।"

"हूँ ।"

यशवंत गवली गौर से लाश को देखने लगा ।

वहीं लाश के नजदीक प्लास्टिक की एक उंगली के बराबर सीढ़ी भी पड़ी हुई थी, जिस पर एक साँप मुँह उठाए ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहा था ।

"इसमें तो कोई शक ही नहीं यशवंत !" इंस्पेक्टर आगे बोला, "जेंटलमैन किलर के हौसले अब दिन-ब-दिन बुलंद होते जा रहे हैं । वह बेधड़क एक के बाद एक हत्याएँ कर रहा है । अभी हम पिछली हत्याओं

की गुत्थी सुलझा नहीं पाते कि वह आगे एक और हत्या कर डालता है । मैं तो कहता हूँ, अगर उसे पकड़ने के लिए जल्दी कुछ न किया गया तो शहर में जबरदस्त अफरा-तफरी फैल जाएगी ।"

"सही बात है ।"

यशवंत गवली ने अब एक सिगरेट सुलगा ली और वह लाश के इर्द-गिर्द घूमता हुआ उसके छोटे-छोटे कश लगाने लगा ।

"मृतक के बारे में अभी कोई इंफॉर्मेशन मिली ?" यशवंत गवली ने पुनः स्थानीय थाने के इंस्पेक्टर की तरफ देखा, "जैसे यह कौन था, इसका नाम वगैरह क्या था ?"

"यस सर ! मृतक के बारे में हमें काफी जानकारी मिल गई है ।"

"जैसे ।"

"जैसे इसका नाम सलीम कट्टा था और यह काफी खतरनाक किस्म का अपराधी था । कई कत्ल में इसका हाथ होना बताया जाता है और यह दो-तीन बार जेल की हवा भी खा चुका है ।"

"सलीम कट्टा !" यशवंत गवली ने यह नाम होंठों-ही-होंठों में बुदबुदाया, "क्या यह सलीम कट्टा इस बीयर बार में अक्सर आता था ?"

"यस सर ! बीयर बार के मैनेजर से पता चला है कि यह यहाँ अक्सर आता था, बल्कि इसका घर भी यहाँ से बहुत ज्यादा दूर नहीं है ।"

"यानी यह यहीं कांदिवली में रहता है ।"

"बिल्कुल ।"

"इसके घर पर इन्फॉर्म किया गया ?"

"हाँ, मैंने अभी-अभी एक कॉन्स्टेबल को वहाँ भेजा है ।"

यशवंत गवली अब सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगाता हुआ नीचे झुककर सलीम कट्टा की लाश को देखने लगा ।

उसने गौर से सलीम कट्टा के माथे पर बने गोली के निशान को देखा । निशान माथे के बिल्कुल बीचो-बीच बना हुआ था और काफी चौड़ा था । यशवंत गवली ने गोली के उस निशान को देखकर निर्णय लिया कि जेंटलमैन किलर ने उसे पॉइंट 32 कैलीबर की रिवॉल्वर से शूट किया था ।

इसके अलावा यशवंत गवली उस निशान को देखकर यह भी भाँप गया कि जेंटलमैन किलर एक जबरदस्त क्रैक शॉट था, अचूक निशानेबाज । क्योंकि माथे के एकदम बीचो-बीच जिस तरह गोली मारी गई थी इससे साफ साबित होता था कि वह कारनामा कोई दक्ष निशानेबाज ही अंजाम दे सकता है ।

यशवंत गवली अभी लाश का मुआयना ही कर रहा था तभी एकाएक उस पूरे बीयर बार में किसी की जोर-जोर से हिड़कियों के साथ रोने की आवाज गूँज उठी ।

वह नारी स्वर था ।

तेज नारी स्वर, जो भीषण क्रंदन करता हुआ अंदर आया था ।

रोने-पीटने की उस आवाज को सुनकर यशवंत गवली तेजी के साथ बीयर बार के दरवाजे की तरफ घुमा ।

तभी वहाँ एक औरत दाखिल हुई थी, जो भीषण प्रलाप करती हुई सीधे लाश की तरफ झपटी तथा फिर उससे चिपटकर और भी ज्यादा हृदयविदारक अंदाज में पछाड़े खा-खाकर रोने लगी ।

उसका रोना देखा नहीं जा रहा था ।

उस औरत के पीछे-पीछे एक कॉन्स्टेबल भी बीयर बार में दाखिल हुआ ।

"यह कौन है ?"

"इसका नाम रेहाना है ।" वही कॉन्स्टेबल शुष्क स्वर में बोला, "यह सलीम कट्टा की बीवी है ।"

"रेहाना !"

सिगरेट यशवंत गवली के होंठों तक पहुँचते-पहुँचते ठिठक गई ।

उसने सिगरेट वहीं नीचे फर्श पर फेंक दी और उसे जूते से मसला ।

●●●

यशवंत गवली उस समय क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर के एक केबिन में बैठा हुआ था । उसके दाएँ-बाएँ रागिनी और सावंत बैठे थे, जो क्राइम ब्रांच एजेंट थे और उसके साथी थे । जबकि सामने सलीम कट्टा की बीवी रेहाना बैठी थी ।

रेहाना की आँखों में अभी भी आँसू थे ।

वह अपने पति की मौत का गम भुला नहीं पा रही थी । जितना वह अपने आँसुओं को रोकने की कोशिश करती, उतने ही उसके आँसू समस्त बाँध तोड़कर बह निकलते ।

मुँह से हिचकियाँ उबल-उबल पड़ती ।

"मेरा तो सबकुछ उजड़ गया साहब, सब कुछ !" रेहाना ने दुपट्टे के आँचल से अपने आँसू साफ करते हुए कहा, "मैं नहीं जानती, मेरे पाक परवरदिगार ने मुझे किस बात की सजा दी है !"

"क्या यह बात तुम्हें पहले से पता थी ?" यशवंत गवली, रेहाना की आँखों में झांकता हुआ बोला, "कि तुम्हारा पति एक अपराधी है ?"

"जब मेरी नई-नई शादी हुई थी ।" रेहाना ने कहा, "तब तो मुझे उसके बारे में कुछ नहीं मालूम था साहब ! तब तो मैं उसे बड़ा शरीफ आदमी समझती थी । वह खुद भी यही कहता था कि वह एक बहुत बड़े गैराज में मोटर मैकेनिक का काम करता है लेकिन उसकी जेब में हरदम नोटों की गड्डियाँ भरी रहती थीं । जिसने मुझे शक में डाला और बाद में तो मुझे सब कुछ पता चल ही गया ।"

"क्या पता चल गया ?"

"यही कि सलीम हकीकत में वो नहीं है जो दिखाई देता है ।" रेहाना ने फिर जोर से सुबकी ली, "उसके यार-दोस्त भी बड़े आवारा किस्म के लोग थे ।"

"हूँ ।"

"लेकिन अब क्या हो सकता था साहब ! अब तो इस रेहाना के मुकद्दर में आँसुओं की कहानी लिखी जा चुकी थी ।"

"क्या सलीम कट्टा को कभी जेल भी हुई थी ?" यशवंत गवली ने उसे थोड़ा कुरेदा ।

"हाँ, साहब ! वह दो-तीन बार जेल भी रहकर आ चुका था । लेकिन आपको एक बात बताऊँ साहब !" बोलते बोलते रेहाना का स्वर थोड़ा शुष्क हो गया ।

और ।

बेहद रहस्यमई भी ।

"क्या ?"

"मालूम नहीं, आप मेरी बात पर यकीन करेंगे भी या नहीं ।" रेहाना धीमे स्वर में बोली, "परंतु यह सच है कि पिछले 2 महीने से सलीम बिल्कुल सुधर गया था और उसने तमाम बुरे कामों से तौबा कर ली थी ।"

यशवंत गवली चौंका ।

न सिर्फ यशवंत गवली बल्कि रागिनी और सावंत भी ।

यह क्राइम ब्रांच के उन दोनों जासूसों के लिए भी एक नई जानकारी थी ।

"यानी पिछले 2 महीने से उसने कोई गलत काम नहीं किया था ? " रागिनी एक-एक शब्द पर जोर देकर बोली ।

"हरगिज़ नहीं।"

"तुम्हें पूरा यकीन है ?" यशवंत गवली के स्वर में विस्मय का पुट था।

"एकदम पक्का यकीन है साहब ! मैंने ही तो उसे आहिस्ता-आहिस्ता इस बात के लिए तैयार किया था कि वह जुर्म की दुनिया छोड़ दे। उसे खुदा का वास्ता दिया था तो वह मेरे साथ हाजी अली की दरगाह पर गया था और वहाँ जाकर उसने बाकायदा चद्दर चढ़ाई थी तथा यह कसम लेकर लौटा था कि अब वह कभी कोई गलत काम नहीं करेगा।"

"लेकिन बीयर बार में तो वह फिर भी जाता था।" यह शब्द सावंत ने कहें।

"बिल्कुल जाता था साहब ! बस यही एक ऐसा ऐब था जो उसके अंदर बचा हुआ था। मगर परसों ही उसने मुझसे यह वादा भी किया था कि बहुत जल्द वह बीयर बार में भी जाना छोड़ देगा।"

"यानी सलीम कट्टा फुल तौर पर सुधरने लगा था ?"

"बिल्कुल।"

यशवंत गवली की निगाह एक बार फिर रागिनी और सावंत के चेहरे पर जाकर अटकी।

मामला सचमुच पेचीदा था।

हद से ज्यादा पेचीदा।

"अगर यह बात है तो फिर उसका मर्डर क्यों किया गया ?"

"मालूम नहीं साहब, मुझे तो खुद हैरानी हो रही है।"

यशवंत गवली के चेहरे पर अब बेचैनी साफ-साफ देखी जा सकती थी।

केस वाकई सनसनीखेज था।

हर पल नई-नई बातें सामने आ रही थीं। नए-नए सूत्र उसमें जुड़ रहे थे।

"अच्छा, एक बात बताओ !" यशवंत गवली सिगरेट की राख एश-ट्रे में झाड़ता हुआ बोला, "तुम्हें किसी ऐसे आदमी पर शक है, जिसने तुम्हारे पति का खून किया हो ?"

"नहीं साहब ! मुझे किसी पर शक नहीं। मरने के बाद मुझे अपने खुदा को भी मुँह दिखाना है, फिर मैं झूठ क्यों बोलूँ ? सलीम जिगर वाला आदमी था साहब ! उसके आसपास जितने आदमी थे, सब उससे डरते थे। फिर उनमें से भला कौन उसे मारता ?"

"यानी कातिल जो भी था।" यशवंत गवली बोला, "कोई नया था।"

"अब मैं क्या बोलूँ साहब !" रेहाना बोली, "यह तो आप ही बेहतर जान पायेंगे।"

यशवंत गवली ने सिगरेट के दो-तीन कश और लगाए।

इन्वेस्टिगेशन आगे बढ़ाने के लिये कोई सूत्र उनके हाथ नहीं आ रहा था।

"यशवंत !" रागिनी काफी सोची-विचारकर बोली, "मैं एक बात कहूँ ?"

"बोलो।"

"जहाँ तक मैं समझती हूँ, कातिल जो भी है, कोई बहुत रहस्यमयी व्यक्ति है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि उसने अभी तक जो सात मर्डर किये हैं, बहुत सेंसेशनल अंदाज में किये हैं। कहीं से उसके खिलाफ कोई ऐसा मामूली-सा सूत्र भी नहीं मिला, जो इन्वेस्टिगेशन का आधार बने। इतना ही नहीं, उसे पुलिस का भी कोई डर-खौफ नहीं है, इसीलिये वो हर कत्ल करने के बाद घटनास्थल पर जानबूझकर साँप-सीढ़ी छोड़कर जाता है, ताकि पुलिस डंके की चोट पर यह समझ सके कि ये तमाम कत्ल एक ही व्यक्ति कर रहा है।"

"लेकिन सवाल तो यह है ।" यशवंत गवली झुंझलाकर बोला, "वो हर कत्ल करने के बाद घटनास्थल पर साँप-सीढ़ी ही छोड़कर क्यों जाता है ? खास साँप-सीढ़ी छोड़ने के पीछे कोई-न-कोई लॉजिक, कोई-न-कोई वजह तो जरूर होगी ?"

"सही बात है ?" रागिनी की गर्दन स्वीकृति में हिली, "कोई-न-कोई तो वजह जरूर होगी ।"

"फिर इन सभी मर्डर्स में एक बात और कॉमन है यशवंत !" सावंत बोला ।

"क्या ?"

"ये सभी व्यक्ति अपराधी थे, क्रिमिनल्स ! सवाल यह है कि कोई एक-एक करके इन सभी अपराधियों को मार क्यों रहा है ?"

"करेक्ट ! यह पॉइंट भी अपने आप मे काफी दमदार है । देखो, जहाँ तक मैं समझता हूँ, मारे गए इन सभी अपराधियों का आपस में कोई-न-कोई लिंक जरूर होना चाहिये ।" यशवंत गवली ने सिगरेट का टोटा एश-ट्रे में रगड़कर बुझाया और फिर रागिनी की तरफ देखा, "तुम एक काम करो रागिनी, सलीम कट्टा से पहले जो छः अपराधी मारे गए हैं, उन सभी के अखबारों में छपे फोटोग्राफ लाकर मिसिज रेहाना को दिखाओ । हो सकता है, यह उन्हें पहचानती हो ।"

"ओके यशवंत !"

रागिनी तुरंत कुर्सी छोड़कर उठ खड़ी हुई और वहाँ से चली गयी ।

●●●

मुश्किल से दस मिनट बाद ही रागिनी की केबिन में वापसी हुई ।

रागिनी जब लौटी तो उसके हाथ में एक फ़ाइल थी । वो जेंटलमैन किलर की फ़ाइल थी, जिसमें उससे सम्बंधित तमाम दस्तावेज मौजूद थे ।

रागिनी पुनः अपनी कुर्सी पर बैठ गयी और उसने फ़ाइल के अंदर से कुछ अखबारों की कटिंग्स निकालकर रेहाना के सामने रखीं ।

वह जेंटलमैन किलर द्वारा मारे गए तमाम अपराधियों की तस्वीरें थीं ।

"मिसिज रेहाना !" यशवंत गवली ने रेहाना की तरफ देखा, "तस्वीरें अब आपके सामने रखी हैं । आप इन्हें पहचानने की कोशिश कीजिये, क्योंकि आपका कोई भी बयान हमें आपके पति के कातिल तक पहुँचा सकता है । इन तस्वीरें को ध्यान से देखकर बताइये, क्या आपने इनमें में से किसी को अपने पति के साथ देखा था ?"

रेहाना की निगाहें अब फोटोग्राफ्स पर जाकर अटक गयीं और वह बहुत गौर से उन फोटोग्राफ्स को देखने लगी ।

कोई दस मिनट तक उसने वो फोटोग्राफ्स देखे और उसके बाद एकाएक उसकी गर्दन इनकार की सूरत में हिलने लगी ।

"नहीं ।" रेहाना बोली, "इनमें से पाँच आदमी ऐसे हैं, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा ।"

"और एक आदमी ।" यशवंत गवली तुरंत बोला, "और इनमें वह एक आदमी कौन है, जिसे तुम पहले देख चुकी हो ?"

"यह है वो आदमी ।" रेहाना ने फौरन एक तस्वीर पर उंगली टिकाई, "इसे मैं कई बार सलीम के साथ देख चुकी हूँ ।"

तीनों चौंक उठे ।

तीनों की निगाहें तुरंत अखबार में छपी उस तस्वीर पर जाकर अटक गयीं, जो एक गुंडे की तस्वीर थी ।

तस्वीर के नीचे गुंडे का नाम भी लिखा था, करसन भाई !

"हूँ, करसन भाई !" यशवंत गवली ने सिगरेट का एक कश और लगाया, "यानी तुमने इस करसन भाई को कई मर्तबा सलीम कट्टा के साथ देखा था ?"

"बिल्कुल ।"

"यशवंत !" सावंत एकाएक उत्साहपूर्वक बोला, "यह भी तो हो सकता है, इन्होंने सिर्फ करसन भाई को सलीम कट्टा के साथ देखा हो, लेकिन यह पाँचों भी सलीम कट्टा से कनेक्टेड हों और घर से बाहर इनकी आपस में अक्सर मुलाकातें होती हों !"

"एकदम सही । यही बात मैं सोच रहा था ।" यशवंत गवली बोला, "अब मैं कम-से-कम एक बात दावे के साथ कह सकता हूँ कि जरूर इन सातों का आपस में कोई-न-कोई कनेक्शन था । मिसिज रेहाना, अब मेरे एक दूसरे सवाल का जवाब दें !"

"पूछिये साहब !"

रेहाना उनकी सरगर्म इन्वेस्टिगेशन को देखकर अब थोड़ा सकपकाई हुई थी ।

डरी हुई ।

"मिसिज रेहाना !" यशवंत गवली ने आगे पूछा, "क्या आप इस करसन भाई के अलावा सलीम कट्टा के किसी और दोस्त को भी जानती हो ? किसी ऐसे दोस्त को जो अभी जिंदा है ?"

रेहाना के नेत्र अब सोचनीय मुद्रा में सिकुड़ गये और वह अपने दिमाग पर जोर डालकर सोचने लगी ।

वह सोचती रही ।

काफी देर तक सोचा उसने ।

"हाँ, साहब !" फिर एकाएक उसने उत्साहपूर्वक कहा, "सलीम कट्टा का एक दोस्त और था, जो अक्सर घर आता था और वह दोनों घण्टों-घण्टों तक एक कमरे में बंद होकर बड़े रहस्यमयी अंदाज में बातें किया करते थे ।"

तीनों के दिमाग में जोर से घण्टी बज उठी ।

"वेरी गुड !" यशवंत गवली झटके के साथ कुर्सी छोड़कर खड़ा होता हुआ बोला, "नाम क्या है उसका ?"

"नाम... नाम तो उसका नहीं मालूम साहब !" रेहाना विचलित स्वर में बोली, "हाँ, मैं उसका हुलिया जरूर बयान कर सकती हूँ ।"

"ठीक है, हुलिया ही बताओ ।" यशवंत गवली बोला, "उसका हुलिया कैसा है ?"

"उसके चेहरे पर एक बहुत बड़ा चाकू के कट का निशान है साहब !" रेहाना अपने दिमाग पर पुनः जोर डालते हुए बोली, "आँखें गहरी नीली हैं और बाल घुँघराले हैं । वो शक्ल से ही बड़ा डेंजर नजर आता है ।"

"घुँघराले बाल !" यशवंत गवली बोला ।

"हाँ, साहब !"

"और उसके चेहरे पर चाकू का एक बड़ा-सा कट का निशान भी है !"

"जी हाँ ।"

"मेरे साथ आओ ।"

यशवंत गवली तुरंत कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया ।

उसके साथ-साथ रागिनी, सावंत और रेहाना ने भी कुर्सी छोड़ी ।

●●●

वह क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर का रिकॉर्ड रुम था, जहाँ यशवंत गवली उन्हें लेकर पहुँचा ।

उस रिकॉर्ड रुम में चारों तरफ बड़े-बड़े रैक लगे हुए थे, जिनमें फाइलों का अम्बार था । छत में एक सौ वाट का बल्ब लटका था । मगर उस विशाल रिकॉर्ड रुम के हिसाब से उसकी रोशनी पर्याप्त नहीं थी । रिकॉर्ड रुम में ही एक तरफ गोल मेज पड़ी थी, जिसके इर्द-गिर्द छः कुर्सियाँ मौजूद थीं ।

"रागिनी !" यशवंत गवली रिकॉर्ड रुम में पहुँचते ही बोला, "क्रिमिनल रिकॉर्ड फ़ाइल निकालकर लाओ ।"

"ओके यशवंत !"

रागिनी एक बड़े से रैक की तरफ बढ़ गयी ।

साफ लग रहा था, यशवंत गवली का दिमाग उस समय काफी स्पीड से चल रहा था ।

जबकि यशवंत गवली, सावंत और रेहाना अब गोल मेज के इर्द-गिर्द पड़ी कुर्सियों पर जाकर बैठ गये । एक बल्ब उस गोल मेज के ऊपर भी लटका हुआ था, जिसकी वजह से वहाँ अच्छी-खासी रोशनी थी ।

तभी रागिनी रैक में से क्रिमिनल रिकॉर्ड फ़ाइल निकाल लायी । वह काफी छोटी फ़ाइल थी । उसने वह फ़ाइल यशवंत गवली के सामने ले जाकर रखी ।

"यह देखो ।" यशवंत गवली, रेहाना के सामने उस फ़ाइल को खोलते हुए बोला, "यह क्रिमिनल रिकॉर्ड फ़ाइल है और इस फ़ाइल में शहर भर के उन तमाम मुजरिमों की डिटेल उनके फोटोग्राफ्स के साथ मौजूद है, जो कभी न कभी सजा काट चुके हैं । अगर हमने सलीम कट्टा के कातिल तक पहुँचना है, तो हमारा फौरन सलीम के उस जीवित दोस्त तक पहुँचना बहुत जरूरी है, जिसका जिक्र तुम अभी-अभी कर रही थी । क्योंकि जहाँ तक मैं समझता हूँ, जेंटलमैन किलर का अगला शिकार अब सलीम कट्टा का वही साथी होगा ।"

सावंत चौंका ।

"आप नीली आँखों वाले आदमी की बात कर रहे हैं यशवंत !" वह बोला, "जिसके चेहरे पर चाकू के कट का निशान है ?"

"हाँ, वही ।"

"लेकिन यह जरुरी तक नहीं ।" सावंत बोला, "कि अब जेंटलमैन किलर उसी को अपना शिकार बनाये ?"

"बिल्कुल जरुरी नहीं । लेकिन मत भूलो, अभी तक जितनी भी हत्यायें हुई हैं, वह सब एक ही सिलसिले की कड़ी नजर आ रही हैं । जहाँ तक मैं समझता हूँ, इन सब मरने वालों का एक-दूसरे से कोई-न-कोई सम्बन्ध था और अभी थोड़ी देर पहले खुद तुमने ही कुबूल किया है कि ऐसा हो सकता है, या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ ?"

"नहीं ।" सावंत नजरें झुकाकर बोला, "यह सच है । यह आशंका मेरे मन मे भी है ।"

"और यह आशंका कुछ गलत नहीं ।" यशवंत गवली ने कहा ।

"आप यह कहना चाहते हैं यशवंत !" इस मर्तबा रागिनी बोली, "कि मिसिज रेहाना, सलीम कट्टा के जिस खूंखार से नजर आने वाले दोस्त का जिक्र कर रही हैं, इस बार जेंटलमैन किलर उसे अपना शिकार बना सकता है ?"

"करेक्ट । मैं बिल्कुल यही कहना चाहता हूँ । हालांकि मैं इस बात को लेकर पूरी तरह श्योर नहीं हूँ, मगर फिर भी इस बात की संभावना काफी ज्यादा है कि इस बार वही जैंटलमैन किलर का शिकार हो । इसलिए हमने जल्द-से-जल्द उस आदमी तक पहुँचने की कोशिश करनी है और फिर वैसे भी जेंटलमैन किलर तक पहुँचने का फिलहाल हमारे पास यही एक जरिया है ।"

रागिनी और सावंत, दोनों सोच में डूब गये ।

"शायद आप ठीक कह रहे हैं यशवंत !" रागिनी बोली, "इससे पहले कि जेंटलमैन किलर हमारे हाथ आए उस एक सूत्र को भी खत्म करें, हमें जल्द-से-जल्द उस तक पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए ।"

फिर उन तीनों ने ही बड़े एकाग्रचित्त होकर रेहाना को क्रिमिनल रिकॉर्ड फ़ाइल दिखानी शुरू की ।

रेहाना फ़ाइल में मौजूद अपराधियों के एक-एक फोटो को बहुत ध्यानपूर्वक देख रही थी ।

बड़े गौर से ।

और जैसे-जैसे वह फ़ाइल का कार्ड पलटती, उन तीनों का सस्पेंस बढ़ता ।

उन्हें लगा, क्या उनके हाथ आया वह एक सूत्र भी मिस फायर होने जा रहा है ?

वही हुआ ।

रेहाना ने वह पूरी क्रिमिनल रिकॉर्ड फाइल देख डाली, मगर उसे उसके अंदर सलीम कट्टा का वह साथी कहीं नजर न आया जो शक्ल-सूरत से बड़ा डेंजर नजर आता था, जिसके गाल पर चाकू का बड़ा-सा कट का निशान था, आँखें नीली थीं और बाल घुंघराले थे ।

"नहीं साहब !" रेहाना बड़े अफसोस से इनकार में गर्दन हिलाते हुए बोली, "इनमें से कोई भी वह आदमी नहीं है, जिसका जिक्र मैं कर रही हूँ ।"

"तुमसे फोटोग्राफ्स देखने में कोई चूक तो नहीं हुई ?"

"बिल्कुल भी नहीं साहब ! मैंने एक-एक फोटो को खूब ध्यान से देखा है । आखिर मैं खुद जेंटलमैन किलर को जल्द-से-जल्द सींखचों के पीछे देखना चाहती हूँ ।"

रेहाना गलत नहीं कह रही थी ।

भला कौन ऐसी औरत होगी, जो अपने पति के कातिल को खुले घूमते देखना चाहे ।

उन सबके चेहरों पर अब निराशा पुत गयी, गहरी निराशा ।

●●●

अब यशवंत गवली के सामने एक नई प्रॉब्लम थी ।

अगर उस केस की इन्वेस्टिगेशन आगे बढ़ानी थी, तो उसके लिये उसे किसी प्रकार जल्द-से-जल्द उस अपराधी को खोज निकालना था, जिसका जिक्र रेहाना कर रही थी ।

मगर कैसे ?

कैसे वह उस अपराधी तक पहुँचे ?

यशवंत गवली को एकाएक कोई रास्ता न सूझा । थक-हारकर उसने अंधेरे में एक तीर छोड़ा । उसने उस अपराधी का पूरा हुलिया मुंबई शहर के तमाम थानों में सर्कुलेट करा दिया कि इस तरह की शक्ल-सूरत का आदमी अगर किसी की भी जानकारी में हो तो फौरन क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर से संपर्क किया जाए । इसके अलावा यशवंत गवली ने पुलिस के जो मुखबीर होते हैं, उनके बीच भी वह हुलिया सर्कुलेट कराया, क्योंकि उसका मानना था कि पुलिस के मुखबिरों को इस तरह के अपराधियों की ज्यादा जानकारी होती है ।

यशवंत गवली के अंधेरे में छोड़े गये उस तीर का शाम तक ही रिजल्ट निकल आया ।

सात बज रहे थे, जब क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर में घण्टी बजी ।

"मैं यशवंत गवली से बात करना चाहता हूँ ।" वह एक अनजान स्वर था ।

"आप कौन हैं ?" क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर के रिसेप्शनिस्ट ने पूछा ।

"मैं सुलेमान खबरी, पुलिस का मुखबिर !" आवाज भारी-भरकम थी, "सुबह यशवंत ने जिस अपराधी का हुलिया सबके बीच सर्कुलेट कराया था, मुझे उसी सिलसिले में बात करनी है ।"

"जस्ट अ मिनट होल्ड ऑन प्लीज़ !"

फौरन ही लाइन यशवंत गवली के पास ट्रांसफर कर दी गयी ।

"हेलो ।" रिसीवर पर अब यशवंत गवली की आवाज उभरी ।

"सर !" सुलेमान खबरी उस आवाज को सुनकर एकदम से हड़बड़ाया ।

"यस, आई एम स्पीकिंग !"

"मैं सुलेमान खबरी बोल रहा हूँ सर !" खबरी यूँ बोला मानो वह यशवंत गवली को बरसों से जानता हो ।

"बोलो खबरी ।"

यशवंत गवली के स्वर में भी अपनापन था ।

"सुबह आपने जिस अपराधी का हुलिया सर्कुलेट कराया है, मैं उसे अच्छी तरह से पहचानता हूँ ।"

"वेरी गुड ! कौन है वो ?"

"उसका नाम महेश खोखा है सर ! और वो नागपाड़ा के इलाके में रहता है ।"

"महेश खोखा !"

यशवंत गवली की एकदम से समस्त इन्द्रियाँ सजग हो उठीं ।

"जी हाँ !"

"नागपाड़ा में कहाँ रहता है, पूरा एड्रेस बताओ ?"

सुलेमान खोखा ने उसे महेश खोखा का पूरा एड्रेस बताया ।

"थैंक्यू, थैंक्यू वेरी मच !"

यशवंत गवली ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और फिर वह तेजी के साथ पलटा ।

उसके सामने ही रागिनी और सावंत खड़े थे ।

"क्या रिपोर्ट है यशवंत ?"

"हमारी मेहनत रंग लायी, सलीम कट्टा के साथी का पता चल गया है । वो नागपाड़ा के इलाके में रहता है, जल्दी मूव करो ।"

तीनों फौरन क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर से बाहर की तरफ झपटे ।

●●●

20 मिनट बाद ही यशवंत गवली की कार उस चाल के सामने पहुँचकर रुकी जिसमें महेश खोखा रहता था ।

महेश खोखा ।

नाम से ही जाहिर था कि वह कोई गुंडे-मवाली टाइप का आदमी था ।

सबसे पहले तो नागपाड़ा ही कोई बहुत अच्छा इलाका नहीं था । वह मुंबई शहर में गुंडे-मवालियों की पनाहगाह के तौर पर बड़ा मशहूर था । कहा जाता था जिस अपराधी को कहीं शरण नहीं मिलती उसे धारावी और नागपाड़ा जैसे इलाके में शरण मिल जाती है । अपराधियों के लिए वह काफी सुरक्षित जगह था, जहाँ पहुँचकर उन्हें पकड़ पाना बेहद जटिल होता था ।

वहाँ छोटी-छोटी तंग गलियाँ थीं, जो अपराधियों को भाग निकलने में उनकी पूरी-पूरी मदद करती थीं ।

बहरहाल यशवंत गवली के पीछे-पीछे रागिनी और सावंत कार से नीचे उतरे ।

उन्होंने चाल पर एक नजर फिराई ।

"यहाँ वो कौन-सी मंजिल पर रहता है ?" रागिनी ने पूछा ।

वह चार मंजिली चाल थी ।

इसके अलावा वह काफी खस्ताहाल में थी । जगह-जगह से प्लास्टर उखड़ा हुआ था । कई जगह से लेंटर तथा उसके सरिये भी झाँक रहे थे, उस इमारत की पुताई हुए तो मानो एक जमाना गुजर गया था ।

"वह ग्राउंड फ्लोर पर ही रहता है । छः नम्बर रूम में ।"

"छः नम्बर !"

तीनों तेजी से अब चाल में आगे की तरफ बढ़े ।

पूरी चाल में हंगामा था । हर तरफ से चिल्ल-पौं की आवाजें आ रही थीं । कहीं से बच्चों के शोर मचाने की आवाजें, कहीं से टेप और टीवी के चलने के स्वर ।

शीघ्र ही वह तीनों उस चाल के छः नंबर रूम के सामने पहुँच गए और वहाँ पहुँचते ही चौंके ।

"अरे !" सावंत बोला, "यहाँ तो ताला पड़ा हुआ है ।"

छः नम्बर रूम के दरवाजे पर सचमुच ताला पड़ा हुआ था ।

"लगता है ।" रागिनी ने कहा, "महेश खोखा कहीं गया है ।"

"मगर कहाँ जा सकता है ?"

"क्या मालूम ! पड़ोस में किसी से पूछते हैं ।"

सावंत बराबर वाले रूम की तरफ बढ़ा ।

अभी उसने रूम की तरफ कदम बढ़ाए ही थे कि तभी उसके अंदर से एक औरत ने बाहर झांका । वह बड़ी कड़क जवान सुंदरी थी । हालांकि शादीशुदा थी मगर उसके चेहरे पर ऐसा अल्हड़पन और ताजगी थी, मानो अभी-अभी जवान हुई हो । उस समय वह मुश्किल से छः महीने के अपने बच्चे को छाती से चिपकाए उसे दूध पिला रही थी ।

उससे भी बड़ा सितम यह था कि उसकी एक छाती सारी-की-सारी बाहर थी ।

सावंत की निगाह उस पर पड़ी तो उसका मुँह खुला-का-खुला रह गया ।

औरत ने जल्दी से अपनी छाती को आँचल से ढाँपा और वापस अंदर रूम में घुस गयी ।

सावंत ने उस रूम के सामने पहुँचकर दरवाजे को धीरे से खटखटाया ।

वही कड़क जवान सुंदरी दोबारा प्रकट हुई ।

"जी, कहिये ।"

वह अपने बच्चे को अंदर लिटा आई थी । वह सावंत के सामने तनी हुई खड़ी थी और अभी-अभी जो घटना घटी थी, उसकी उसके चेहरे पर कोई शिकन न थी ।

सावंत उसकी दिलेरी पर सकपका उठा ।

"द... दरअसल आपके बराबर वाले रूम में जो आदमी रहता है, क्या आप बता सकती हैं कि वो इस वक़्त कहाँ गया होगा ?"

"कौन, महेश ?" औरत की जबान में और भी दबंगपना झलका, "नहीं, मुझे नहीं मालूम ! वह तो चौबीस घण्टे में से बीस घण्टे घर से गायब रहता है । बस कभी-कभार ही लौटता है । जब देखो, घर में ताला ही पड़ा मिलेगा ।"

"क्या उसके घर पर और कोई नहीं है ?"

"नहीं ।"

"शादी नहीं की ?"

"शादी करता, तो यूँ ही उसकी खोली में ताला ठुका पड़ा होता ! वैसे भी उस बदजात से कौन खसमाखानी शादी करेगी !" उसने नाक-भौं सिकोड़ा, "जब देखो, हराम के जने को, बन्दर भूत की तरह आसपास की खोलियों में ताका-झांकी करता रहता है । परायी औरतों से तो यूँ पेश आता है, जैसे वह

सब-की-सब उसकी जनानियाँ हैं । परसों ही मैंने उसके चेहरे पर ऐसी कसकर चमाट मारी कि अभी तक तो उसका थोबड़ा दिखाई नहीं दिया है ।"

सावंत के चेहरे की रंगत फीकी पड़ गयी ।

अजीब औरत थी ।

"कुछ और पूछना है उस मरदूद के बारे में ?"

"नहीं ।"

"तो फिर नमस्ते !"

औरत ने सावंत के मुँह पर भड़ाक से दरवाजा बंद कर दिया ।

सावंत पिटा-सा मुँह लिये पलटा । उससे थोड़े ही फासले पर यशवंत गवली और रागिनी खड़े थे, जिनके होंठों पर मुस्कुराहट थी । वो सब कुछ सुन चुके थे ।

"बड़ी तीर-कमान औरत निकली । सीधे सवालों का जवाब भी टेढ़ा-टेढ़ा दे रही थी ।"

"लगता है, जिंदगी में काफी खता खाये हुए है ।"

"उसकी हरकतें भी तो वैसी ही हैं ।" सावंत बोला, "खता खाने लायक ।"

"अब यह सारी बातें छोड़ो ।" रागिनी ने कहा, "महेश खोखा के बारे में किसी और से पूछते हैं । शायद वह कुछ बताये ।"

उन्होंने चाल में आगे बढ़कर महेश खोखा के बारे में दो-तीन लोगों से और पूछा । हर किसी ने यही बताया कि महेश खोखा बहुत कम अपने रुम पर होता है । कभी-कभी तो कई-कई दिन यहाँ दिखाई नहीं पड़ता ।

उस पूरे केस में उम्मीद की जो हल्की-सी किरण रोशन होती दिखाई दी थी, वह फिर बुझने लगी ।

"यह तो भयंकर गड़बड़ होने वाली बात है ।" रागिनी बोली, "अगर इससे पहले कि हम महेश खोखा तक पहुँचे, उसे भी जेंटलमैन किलर ने मार डाला, तो क्या होगा ? यह एक सूत्र भी हमारे हाथ से निकल जायेगा ।"

"सही बात है । हमें जल्द-से-जल्द किसी तरह महेश खोखा तक पहुँचना होगा । वो जिंदा हमारे हाथ लगना चाहिये ।"

"मगर कैसे ?"

यशवंत गवली के चेहरे पर सोचनीय भाव उभर आये ।

हालात सचमुच बहुत पेचीदा हो चुके थे ।

गम्भीर ।

"अब बस एक ही तरीका है ।" यशवंत गवली बोला ।

"क्या ?"

"हमें आधी रात के वक़्त महेश खोखा के रुम पर धावा बोलना होगा । वो तभी हमारे हत्थे चढ़ेगा ।"

"लेकिन इस बात की क्या गारंटी है ।" सावंत ने पूछा, "कि वो आधी रात के वक़्त भी अपने रुम में होगा ?"

"गारंटी किसी बात की कुछ नहीं, लेकिन अगर हमें महेश खोखा तक पहुँचना है, तो यह एक कोशिश भी हमें करके देखनी होगी ।"

"ओके ।"

"तो फिर अब चलें ?" रागिनी बोली ।

"चलो ।"

●●●

वह तीनों वापस चाल के सामने खड़ी कार के पास पहुँच गये ।

उसी पल हालातों ने एक नया मोड़ लिया ।

रागिनी और सावंत कार में बैठ चुके थे, जबकि यशवंत गवली अभी ड्राइविंग सीट पर बैठने ही जा रहा था कि एकाएक उसकी निगाह सामने सड़क से आते एक आदमी पर पड़ी ।

उस आदमी के बाल घुँघराले थे, आँखें नीली थीं और चेहरे पर चाकू के कट का निशान था ।

"महेश खोखा !" यशवंत गवली उस आदमी को देखते ही बहुत उत्साहित अंदाज में बोल उठा ।

दरअसल महेश खोखा का पूरा गेटअप ऐसा था कि कोई भी उसे झटके के साथ पहचान सकता था ।

तब तक महेश खोखा उनकी तरफ से पूरी तरह अनजान था । वह बड़े मस्त-मौला अंदाज में सीटी बजाता और टीन के एक डिब्बे को पैर मारता हुआ उसी तरफ चला आ रहा था । महेश खोखा का नाम सुनकर रागिनी और सावंत भी चौंके तथा जितनी तेजी से वह कार में सवार हुए थे उससे कहीं ज्यादा तेजी के साथ नीचे उतर आए ।

तीनों लपककर महेश खोखा के सामने जा खड़े हुए ।

"महेश खोखा !" यशवंत गवली ने सीधे उसकी आँखों में झाँकते हुए कहा ।

महेश खोखा एक पल के लिये हड़बड़ा उठा ।

"हाँ, मेरा ही नाम महेश खोखा है ।" वह बोला, "आप कौन ?"

"हम क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर से हैं । हमें तुमसे कुछ पूछताछ करनी है । हमारे साथ चलो ।"

महेश खोखा का एकदम से सारा मस्त-मौलापन हवा हो गया ।

उसने पलभर के लिये कुछ सोचा, फिर अकस्मात उसे न जाने क्या सूझा कि वह पलटा और वहाँ से एकदम तीर की तरह भागा ।

"महेश !" यशवंत गवली हलक फाड़कर चिल्ला उठा ।

लेकिन महेश खोखा नहीं रुका ।

यशवंत गवली तुरंत उसके पीछे-पीछे झपटा ।

रागिनी और सावंत भी उसके पीछे दौड़े ।

"यह भागना नहीं चाहिये ।" यशवंत गवली द्रुतगति के साथ उसका पीछा करते हुए चिल्लाया ।

परन्तु ।

महेश खोखा के पैरों में मानो पंख लग गये थे ।

वह बेपनाह तेजी के साथ भागता हुआ एक तंग-सी गली में घुस गया । यशवंत गवली भी उसके पीछे-पीछे उस गली में घुसा । इस बीच उसने ओवरकोट की जेब से अपनी पॉइंट 32 कैलीबर की कोल्ट रिवॉल्वर भी निकाल ली थी । रिवॉल्वर हाथ में आते ही उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और फिर सामने की तरफ तन गयी ।

"महेश !" यशवंत गवली गला फाड़कर चिल्लाया, "रुक जाओ, वरना मैं तुम्हें शूट कर दूँगा ।"

हालांकि वह उसे कोरी धमकी दे रहा था ।

खालिस धमकी ।

गोली वह किसी हालत में चलाने वाला नहीं था । गोली चलाकर उसे क्या मिलता ? महेश खोखा तो उसे जिंदा चाहिए था ।

परंतु उसकी धमकी के बावजूद महेश खोखा नहीं रुका, बल्कि वह उस तंग-सी गली में भागता-भागता दूसरी गली में घुस गया ।

वह गली उससे भी ज्यादा तंग थी ।

महेश खोखा काफी तेज दौड़ रहा था । उसे भागते देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे वह कोई कुशल धावक रह चुका हो ।

यशवंत गवली ने पलटकर देखा, रागिनी और सावंत बिल्कुल उसके पीछे-पीछे आ रहे थे ।

यशवंत गवली धड़धड़ाता हुआ महेश खोखा के पीछे-पीछे उस दूसरी तंग गली में घुसा ।

और ।

घुसते ही चौंका ।

आश्चर्य, घोर आश्चर्य ।

महेश खोखा उस तंग-सी गली में कहीं नहीं था ।

वह एकाएक बड़े करिश्माई तरीके से गायब हो चुका था ।

तभी रागिनी और सावंत भी तेजी के साथ वहाँ आ पहुँचे । वह भी चौंके ।

"अरे !" रागिनी हैरानी से बोली, "यह एकाएक कहाँ गायब हो गया ?"

यशवंत गवली खुद आश्चर्यचकित था । पूरी गली वीरान पड़ी हुई थी, इसलिए किसी से पूछा भी नहीं जा सकता था ।

दरअसल वह गली बीच में से ही दो अलग-अलग हिस्सों में फट गई थी, जबकि एक रास्ता सीधा चला गया था । यानी वह गली कुल तीन तरफ फट रही थी और उनमें से किसी भी तरफ महेश खोखा गया हो सकता था ।

"अब हम क्या करें ?" सावंत बौखलाये हुए से स्वर में बोला ।

सचमुच अजीब मामला था ।

चीजें हाथ में आ-आकर निकली जा रही थीं ।

"फिलहाल सिर्फ एक ही तरीका है ।" यशवंत गवली तेजी से बोला, "तुम दोनों इन दायें-बायें की गलियों में जाओ, मैं सामने की तरफ जाता हूँ ।"

"ठीक है यशवंत !"

"और ध्यान रहे ।" यशवंत गवली उन्हें हिदायत देता हुआ बोला, "हमारे हाथ से वो किसी भी हालत में बचकर नहीं निकलना चाहिये ।"

"आप बेफिक्र रहें ।"

तुरंत रागिनी और सावंत दायें-बायें फटती अलग-अलग गलियों में घुस गये ।

●●●

यशवंत गवली ने हालांकि सामने वाला रास्ता पकड़ा था, मगर वह रास्ता भी बहुत लंबा नहीं था । वह मुश्किल से 20 मीटर आगे जाकर ही बाईं तरफ मुड़ गया था ।

सचमुच वहाँ तंग गलियों का बड़ा गहरा, बड़ा भूलभुलैया जाल फैला था । एक गली खत्म नहीं होती थी कि दूसरी शुरु हो जाती थी ।

यशवंत गवली जैसे ही उस दूसरी गली में मुड़ा तभी एकाएक उसने एक साये को एक अन्य तंग-सी गली में मुड़ते देखा ।

यशवंत गवली की समस्त इंद्रियों सजग हो उठीं ।

उस साये की हालांकि उसे हल्की-सी झलक मिली थी, मगर उसे लगा कि वह महेश खोखा है ।

यशवंत गवली और भी तेज भागा तथा धड़धड़ाता हुआ उसी गली में घुसा ।

यशवंत गवली का अनुमान गलत नहीं था, वह महेश खोखा ही था ।

"महेश !" यशवंत गवली रिवॉल्वर उसकी तरफ तानकर दहाड़ा, "रुक जाओ ! मैं कहता हूँ रुको ।"

महेश खोखा फिर भी न रुका ।

यशवंत गवली अब खतरनाक एक्शन में आ गया । उसने एक साथ दो स्टेप उठाएं । पहला स्टेप, उसने महेश खोखा की खोपड़ी को निशाना बनाकर गोली चलाई । हालांकि गोली उसने ऐसे चलाई थी जो वह महेश खोखा की खोपड़ी से 6 इंच ऊपर से होकर गुजर जाए । वही हुआ भी । गोली उसकी खोपड़ी के ऊपर से होते हुए गुजरी, किंतु महेश खोखा की जान सुखा देने के लिए इतना बहुत था । गोली चलाते ही यशवंत गवली ने दूसरा स्टेप उठाया । यशवंत अब किसी कुशल योद्धा की भांति एकदम तेंदुए की तरह छलांग लगाता हुआ महेश खोखा की तरफ झपटा ।

महेश खोखा ने पलटकर देखा तो उसकी जान हलक में आ फँसी ।

यशवंत गवली और उसके बीच अब बस चंद कदम का फासला था ।

"तुम नहीं बच पाओगे महेश !" यशवंत गवली फिर दहाड़ा, "रुक जाओ ।"

वह गली आगे पुनः एक तरफ मुड़ती थी ।

महेश खोखा ने बदहवासों की तरह भागते हुए फिर उस दूसरी गली में मुड़ना चाहा, लेकिन इस बार दुर्घटना घट गई । गली में दूसरी तरफ से एक मोटरसाइकिल हाई स्पीड से दौड़ती हुई आ रही थी । इधर से महेश खोखा उस गली में मुड़ा और उधर से मोटरसाइकिल इस तरफ घूमी ।

दोनों की भड़ाक से भीषण टक्कर हुई ।

जबरदस्त टक्कर ।

महेश खोखा एकदम किसी गेंद की तरह उछलकर गली में दूर जाकर पड़ा और उसकी हृदयविदारक चीख चारों तरफ गूँजती चली गई ।

तभी रागिनी और सावंत भी धड़धड़ाते हुए वहाँ आ पहुँचे । गोली की आवाज सुनते ही वह समझ गए थे कि यशवंत गवली ने महेश खोखा को खोज निकाला है ।

●●●

महेश खोखा जसलोक हॉस्पिटल में था ।

एक्सीडेंट मामूली था, लेकिन उसमें महेश खोखा का खून काफी बह चुका था ।

"अगर हमने इस केस को सॉल्व करना है ।" यशवंत गवली ऑपेरशन थिएटर के सामने बेचैनीपूर्वक इधर से उधर टहलता हुआ बोला, "तो महेश खोखा का हमारे लिये जिंदा रहना बहुत जरूरी है । बेइंतेहा जरूरी ।"

यशवंत गवली ने सिगरेट सुलगा ली ।

फिर वह उसके छोटे-छोटे कश लगाने लगा ।

रागिनी और सावंत भी काफी बेचैन थे । सचमुच उस पूरे केस की वही एक कड़ी उनके हाथ में थी ।

"लेकिन एक बात समझ में नहीं आयी यशवंत !" सावंत के स्वर में उलझन थी, "वह हमें देखकर इस तरह भागा क्यों ?"

"मत भूलो, वह एक अपराधी है, एक क्रिमिनल !" यशवंत गवली ने सिगरेट का कश लगाते हुए कहा, "और जैसे ही हम यह बोले कि हम क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर से हैं, वो बौखला उठा । उसने समझा कि हम उसे अरेस्ट करने के लिये आये हैं ।"

"लेकिन जब उसने हाल-फिलहाल में कोई अपराध ही नहीं किया था, तो हम उसे क्यों अरेस्ट करते ?"

"अब यह तो वही जाने कि उसने हाल-फिलहाल में कोई अपराध किया है या नहीं ।" यशवंत गवली बोला, "वैसे भी एक अपराधी का दिल एक चूहे से बड़ा नहीं होता । जो पुलिस को देखते ही जोर-जोर से धड़कने लगता है । इसके अलावा एक बात और कहूँगा ।"

"क्या ?"

"महेश खोखा जिस प्रकार चाल के सामने से एकदम सिर पर पाँव रखकर भागा, उससे एक बात और साबित होती है कि वो हद से ज्यादा डरपोक आदमी है।"

"आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं यशवंत !" रागिनी ने भी इस बात के प्रति सहमति दर्शायी।

वह तीनों अभी महेश खोखा को लेकर आपस में बात ही कर रहे थे कि तभी ऑपेरशन थिएटर का दरवाजा खुला और उसमें से एक डॉक्टर दो नर्सों के साथ बाहर निकला।

"पेशेंट की अब तबीयत कैसी है ?" यशवंत गवली तेजी से उसकी तरफ बढ़ा।

"देयर इज नथिंग टु वरी अबाउट ! एवरीथिंग इज फाइन !" डॉक्टर ने अपने दस्ताने उतारते हुए कहा, "पेशेंट की पट्टियाँ कर दी गयी हैं और उसे होश भी आ गया है। आप उससे जाकर मिल सकते हैं।"

"यानी कोई बड़ा जख्म नहीं है ?"

"नहीं, लेकिन फिर भी पेशेंट अगर दो दिन इसी हॉस्पिटल में रहे, तो बेहतर है।"

"ओके।"

यशवंत गवली ने सिगरेट वहीं फेंक दी, फिर वह रागिनी और सावंत के साथ ऑपेरशन थिएटर के अंदर की तरफ बढ़ा।

●●●

ऑपरेशन थिएटर का माहौल बड़ा रहस्यमई था।

वहाँ उस समय बहुत मद्धिम प्रकाश फैला था। सामने ही एक बेड मौजूद था, जिस पर महेश खोखा लेटा हुआ था।

महेश खोखा उस वक्त काफी आतंकित था और उसकी हालत ऐसी थी, मानो उसे पिंजरे में लाकर बंद कर दिया गया हो।

उन तीनों को देखते ही उसने जल्दी से उठकर बैठने की कोशिश की।

"इट्स ओके !" यशवंत गवली ने आगे बढ़कर उसे उठने से रोका, "ओके। तुम्हारे जख्म अभी ताजे हैं। लेटे रहो।"

महेश खोखा की आँखों में अब आँसू झिलमिला उठे।

वह और भी ज्यादा डरा हुआ नजर आने लगा।

"साहब !" वह ऑपेरशन बेड पर लेटा-लेटा हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाया, "मैंने क्या किया है साहब ? आप लोग क्यों हाथ धोकर मेरे पीछे पड़े हुए हैं ?"

वह बाकायदा रो पड़ा।

यशवंत गवली ने एक बात उसके बारे में गलत नहीं कही थी कि वह डरपोक किस्म का आदमी है।

मालूम नहीं, वह अपराध जैसे खतरनाक रास्ते पर कैसे चल पड़ा !

"रिलैक्स !" यशवंत गवली ने उसका कन्धा थपथपाया, "रिलैक्स ! शांत हो जाओ। हम लोग तुम्हें अरेस्ट नहीं करना चाहते थे, महेश खोखा !"

महेश खोखा अब चौंक उठा।

रोना तो वह मानो एकदम से भूल गया।

"अ... आप लोग मुझे अरेस्ट नहीं करना चाहते साहब ?"

"नहीं, बल्कि हम तुम्हारी जान बचाना चाहते हैं।" यशवंत गवली बोला, "हिफाजत करना चाहते हैं हम तुम्हारी।"

"ह... हिफाजत !" महेश खोखा के नेत्र खुले-के-खुले रह गये, "यह आप क्या कह रहे हैं ? ल... लेकिन मुझे हुआ क्या है, किससे हिफाजत करना चाहते हैं आप मेरी ?"

बेड के नजदीक ही एक कुर्सी पड़ी थी, यशवंत गवली उसी कुर्सी पर इत्मीनान के साथ बैठ गया ।

रागिनी और सावंत, वह दोनों खड़े रहे ।

"तुमने भेड़ की एक कहावत जरूर सुनी होगी महेश खोखा !" यशवंत गवली बोला, "वो कहावत, जिसमें एक भेड़ कटने वाली होती है, मगर उस भेड़ को अपने कटने का तब तक पता नहीं होता, जब तक उसे कसाईखाने के अंदर नहीं ले जाया जाता ।"

"य... यह आप क्या कह रहे हैं ?"

महेश खोखा ने एक बार फिर झटके के साथ उठकर बैठना चाहा ।

"रिलैक्स ! रिलैक्स ! लेटे रहो । मेरी बात सुनकर अभी ऐसे कई झटके तुम्हें और लगेंगे ।"

महेश खोखा आश्चर्य की प्रतिमूर्ति बना वापस बिस्तर पर ढेर हो गया ।

अलबत्ता उसके नेत्र फैले हुए थे और वह हैरानी से यशवंत गवली को देखे जा रहा था ।

"दरअसल जैसे उस भीड़ को कसाईखाने में घुसने से पहले यह पता नहीं होता कि वह कटने वाली है कमोबेश ऐसी ही कुछ हालत तुम्हारी है । कोई है, जो तुम्हारी जान के पीछे हाथ धोकर पड़ा हुआ है महेश खोखा ! कोई है, जो तुम्हें जान से मार डालना चाहता है । फर्क सिर्फ इतना है कि तुम किस्मत के थोड़े तेज हो, तुम्हें यह बात एडवांस में पता चल रही है । कसाईखाने में पहुँचने से पहले पता चल रही है । या फिर मुमकिन है कि सिर कलम होते वक्त या खोपड़ी में गोली लगते वक्त तुम्हें यह बात पता चलती ।"

उसके चेहरे पर एकाएक पसीने की ढेर सारी बूँदें चुहचुहा उठीं ।

"ल... लेकिन वह कौन है ?" महेश खोखा कंपकँपाये स्वर में बोला, "जो मेरी जान लेना चाहता है ।"

"यह हमें भी नहीं मालूम ।"

महेश खोखा पुनः चौंका ।

उसकी हैरानी पल-प्रतिपल बढ़ रही थी ।

"जब आपको हत्यारे के बारे में कुछ नहीं मालूम साहब !" महेश खोखा का स्वर विचलित था, "तो आप यह बात इतने दावे के साथ कैसे कह सकते हैं कि कोई मेरी जान लेना चाहता है ?"

"इस सवाल का जवाब मेरे पास है ।"

●●●

यशवंत गवली ने रागिनी को इशारा किया, तो रागिनी ने फौरन अपनी जैकेट की जेब से निकालकर सात अलग-अलग अखबारों की कटिंग्स महेश खोखा के सामने रखी ।

वह सब जेंटलमैन किलर से संबंधित समाचार थे और उन सभी पर उन अपराधियों की फोटो छपी थी जो जेंटलमैन किलर का शिकार बने थे ।

"महेश खोखा !" यशवंत गवली अखबारों में छपी उन सभी फोटोज को उसके सामने फैलाता हुआ बोला, "इन फोटोग्राफ्स को अच्छी तरह देखो और बताओ, क्या तुम इन अपराधियों से कभी मिल चुके हो ?"

महेश खोखा की निगाह अखबार में छपे उन सभी फोटो पर जाकर ठहर गई तथा फिर एकाएक उसकी आँखों में दहशत के निशान उभरे ।

"हाँ-हाँ साहब !" वह जल्दी से बोला, "मैं इन सबको पहचानता हूँ । सब अपने जैसे ही गिरहकट थे । हम सबने मिलकर काफी समय तक एक साथ अपराध किये थे ।"

"वेरी गुड !" यशवंत गवली को अब अपना शक यकीन में बदलता हुआ लगा, "यानी तुम लोगों का एक पूरा ग्रुप था, संगठन था ।"

"हाँ... हाँ, साहब !" महेश खोखा ने वह शब्द थोड़ा हिचकिचाते हुए कहा, "लेकिन हम लोगों का वो संगठन ज्यादा लम्बे समय तक नहीं चल सका ।"

"वजह ?"

"वजह कोई खास नहीं थी ।"

"फिर भी ।"

"बस सब अपनी-अपनी मर्जी के मालिक थे । आजाद ख्याल । कोई दायें चलने को कहता, तो कोई बायें । सबकी अपनी दुनिया थी, अपने-अपने सपने थे । ऐसी कंडीशन में कोई भी संगठन एकजुट कैसे रह सकता था ?"

"हूँ ।" यशवंत गवली ने गहरी लम्बी साँस छोड़ी, "तुम्हें मालूम है, यह सातों अब कहाँ हैं ?"

"नहीं साहब, मुझे क्या मालूम कि कहाँ हैं !" महेश खोखा बोला, "होंगे कहीं, अपनी-अपनी दुनिया में । मौज-मेला करते हुए । मुझे इनसे मिले हुए काफी टाइम गुजर चुका है ।"

"शायद इसीलिये तुम ऐसी बात कह रहे हो ।"

"क्या मतलब ?"

महेश खोखा को पुनः एक जोरदार झटका लगा ।

वह पुनः आश्चर्य से यशवंत गवली की तरफ देखने को मजबूर हो गया ।

"तुम्हारी जानकारी के लिये बता दूँ ।" यशवंत गवली एक-एक शब्द चबाते हुए बोला, "यह सातों अब इस दुनिया में नहीं हैं । यह मारे जा चुके हैं ।"

महेश खोखा की आँखें मानो हैरत से उबल पड़ीं ।

"य... यह आप क्या कह रहे हैं ?"

वह उठकर बैठ गया ।

यशवंत गवली ने भी अब उसे नहीं रोका ।

"मैं वही कह रहा हूँ ।" यशवंत गवली बोला, "जो सच है । अगर तुम रूटीन में अखबार पढ़ते होते, तो तुम्हें पता चलता कि तुम्हारे इन दोस्तों का किसी ने कितनी बेरहमी के साथ मर्डर कर डाला है ।"

"ल... लेकिन किसने ?" महेश खोखा के चेहरे पर भूकंप जैसे भाव थे, "किसने किया यह सब ?"

"अभी खुद हमें पता नहीं लग पाया है कि आखिर कौन कातिल है ?" यशवंत गवली के स्वर में गजब का धैर्य था, "कौन यह सब कर रहा है ? अलबत्ता एक बात जरूर दावे के साथ कहीं जा सकती है । यह सातों कत्ल जिसने भी किए हैं वह कोई एक ही आदमी है, क्योंकि कत्ल होने के बाद हर जगह घटनास्थल से प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी बरामद हुई है । फिलहाल पुलिस फाइल में उस कातिल को जेंटलमैन किलर का नाम दिया गया है ।"

"ज... जेंटलमैन किलर !" महेश खोखा ने होंठों-ही-होंठों में वह नाम बड़बड़ाया ।

"हाँ ।"

"बड़ा अजीब नाम है ।"

"नाम अजीब जरूर है ।" यशवंत गवली बोला, "लेकिन अपने नाम की तरह वह कातिल अजीब नहीं है । उसका शिकार उसके हाथों से कभी नहीं बचता और हमें शक है महेश खोखा; कि इस बार जेंटलमैन किलर के निशाने पर तुम हो ।"

महेश खोखा उछल पड़ा ।

"यह आप क्या कह रहे हैं साहब ?"

"मैं वही कह रहा हूँ, जो तुम सुन रहे हो ।"

"ल... लेकिन वो भला मुझे क्यों मारेगा ?" महेश खोखा बेहद आंदोलित स्वर में बोला, "मैंने उसका क्या बिगाड़ा है ?"

"यह तो अब तुम्हें ही ज्यादा बेहतर मालूम होगा कि तुमने उसका क्या बिगाड़ा है । तुम्हारे उन तमाम साथियों ने उसका क्या बिगाड़ा था जो अब सभी एक-एक करके मारे जा चुके हैं । हाँ, इतना मैं जरूर कहूँगा कि इस बार अगर तुम उसके निशाने पर हो, तो हम ज्यादा आसानी से जेंटलमैन किलर तक पहुँच सकते हैं ।"

"कैसे ?"

"वेरी सिम्पल ! जेंटलमैन किलर तुम्हारा शिकार करने के लिए तुम तक पहुँचने की कोशिश करेगा लेकिन हम लोग पहले ही पूरी तरह तुम्हारे ऊपर निगाह रखे हुए हैं, इसलिए इस बार उसका हमारे जाल में फंसना तय है ।"

"यानी आप !" महेश खोखा और भी ज्यादा भयभीत हो उठा, "यानी आप लोग शेर का शिकार करने के लिए मुझे बकरी की जगह इस्तेमाल कर रहे हो । जिस तरह शेर को फाँसने के लिए जंगल में मचान के नीचे बकरी बाँध दी जाती है, उसी तरह मुझे बाँध रहे हो ।"

"फिलहाल चाहे तुम कोई भी अंदाजा लगाओ, हम तुम्हें नहीं रोकेंगे ।" यशवंत गवली बोला, "हाँ, एक बात जरूर तुम अपने दिमाग में कील की तरह ठोंक लेना ।"

"क्या ?"

" जब तक तुम कानून की कस्टडी में हो, तब तक पूरी तरह सुरक्षित हो । जैंटलमैन किलर तुम तक पहुँचने के बावजूद तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा ।"

"लेकिन... ।"

"फिलहाल तुम आराम करो ।" यशवंत गवली उसकी बात बीच में ही काटकर बोला, "अभी हमें तुम्हारी सुरक्षा के कुछ और इंतजाम करने हैं ।"

यशवंत गवली, रागिनी, सावंत, वह तीनों जिस तरह ऑपरेशन थिएटर के अंदर गये थे, उसी तरह बाहर निकल आये ।

●●●

यशवंत गवली ने फिर आनन-फानन कई कदम उठाए ।

वह महेश खोखा की सिक्योरिटी में कोई कोताही नहीं बरतना चाहता था ।

इसके लिए वह सबसे पहले उस डॉक्टर से मिला, जो महेश खोखा के केस को एग्जामिन कर रहा था । उस डॉक्टर ने यह बात फिर दोहराई कि अगर महेश खोखा दो-तीन दिन उसी हॉस्पिटल में रहे तो ज्यादा मुनासिब होगा । सच तो यह है, खुद यशवंत गवली भी इसी बात का इच्छुक था, क्योंकि अगर महेश खोखा को वहाँ से क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर में शिफ्ट कर दिया जाता, तो फिर उसके ऊपर अटैक की संभावना नगण्य हो जाती । जबकि हॉस्पिटल जैसे पब्लिक प्लेस पर जेंटलमैन किलर, महेश खोखा को आसानी से अपना शिकार बनाने की कोशिश कर सकता था ।

वही जरूरी भी था ।

बहरहाल महेश खोखा को सबसे पहले उन तीनों की निगरानी में ऑपरेशन थिएटर से निकालकर फर्स्ट फ्लोर के एक कमरे में शिफ्ट कर दिया गया ।

वह कमरा एक कोने में था और काफी सुरक्षित था ।

इसके अतिरिक्त यशवंत गवली ने फोन करके वहाँ छः क्राइम ब्रांच एजेंट और बुला लिए तथा उन्हें महेश खोखा की सुरक्षा के लिए अलग-अलग तरीके से तैनात किया ।

जैसे उनमें से दो कॉरिडोर में बनी बेंचों पर पड़ गए, जिस तरह अस्पतालों में पेशेंटों के रिश्तेदार पड़े रहते हैं ।

एक स्वीपर बनकर वहाँ झाड़ू-पोछा करने लगा ।

दो नर्सिंग स्टाफ के मेंबर बन गए ।

जबकि एक ने वार्ड बॉय की जिम्मेदारी संभाली ।

इसके अलावा रागिनी तथा सावंत डॉक्टर बन गए । अलबत्ता यशवंत गवली अपनी चिर-परिचित नॉर्मल ड्रेस में ही रहा ।

कुल मिलाकर जिस कमरे में महेश खोखा था, उस कमरे की अच्छी तरह किलेबंदी कर दी गई थी और अब उसके अंदर कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता था ।

वह जेंटलमैन किलर की अगवानी के लिए पूरी तरह तैयार थे ।

उन्हें इंतजार था तो बस जेंटलमैन किलर के आने का ।

वह आता ।

और उनके बनाए जाल में फंसता ।

●●●

उधर कमरे के अंदर मौजूद महेश खोखा की दहशत के मारे बुरी हालत थी ।

जरा-सी आहट होती तो वह उछलकर बैठ जाता । उसे लगता जेंटलमैन किलर आ गया । उसे मारने आ गया ।

कमरे के अंदर दो खिड़कियाँ थी, जिन्हें कसकर बंद कर दिया गया था । सिर्फ कॉरिडोर की तरफ वाला एक दरवाजा खुला था और उसके बाहर क्राइम ब्रांच के वह तमाम एजेंट बहरूपियों वाले ड्रेस में मौजूद थे ।

"तुम इत्मीनान से लेटे रहो ।" डॉक्टर का वेष धारण किए रागिनी उस समय महेश खोखा के पास मौजूद थी, "हम लोग तुम्हारी सिक्योरिटी के लिए यहाँ हैं और हमारे होते हुए तुम्हें कोई आँच नहीं आएगी ।"

"नहीं ।" महेश खोखा आंदोलित लहजे में बोला, "तुम लोग चाहे कुछ भी कर लो, लेकिन जेंटलमैन किलर यहाँ आयेगा और मुझे मार डालेगा । जिस तरह उसने उन सातों को मार डाला, उसी तरह मुझे भी मार डालेगा ।"

"यह तुम्हारा वहम है महेश !"

"नहीं ।" महेश खोखा की गर्दन इनकार की सूरत में हिली, "नहीं । यह मेरा वहम नहीं है । तुम देखना, वो आयेगा । वो आयेगा और अपना काम करके चला जायेगा, जबकि तुम लोग उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाओगे ।"

"बेवकूफ मत बनो ।" रागिनी गुर्रा उठी, "मत भूलो, तुम्हारी सुरक्षा के लिए स्वयं यशवंत गवली यहाँ मौजूद हैं । मेरी गारंटी है, यशवंत के यहाँ होते हुए तुम्हें कुछ नहीं होगा । यशवंत गवली के बनाए हुए जाल को बड़े-बड़े अपराधी नहीं भेद पाते, जबकि जेंटलमैन किलर तो फिर भी एक साधारण-सा अपराधी है । तुम देखना, वह आएगा और फंसेगा ।"

"फ... फिर भी मुझे डर लग रहा है ।" महेश खोखा अपने आपमें ही सिमटा जा रहा था ।

"स्टॉप वरीइंग ! देयर इज नथिंग टु फिअर ! जितना डरोगे, उतना भय का भूत तुम्हारे पास आयेगा । फिलहाल मैं जा रही हूँ । अगर कोई काम हो तो बेल बजा देना, मैं आ जाऊँगी । ओके ?"

"अ... ओ... के... ।"

महेश खोखा के मुँह से फंसा-फंसा स्वर निकला ।

डरा हुआ वह अभी भी बहुत था ।

रागिनी जाने के लिए पलटी । वह अभी पलटी ही थी कि एकाएक महेश खोखा जोर से चीख उठा ।

"क्या हुआ ?" रागिनी वापस घूमी ।

"उधर... उधर... लगता है, खिड़की के परली तरफ कोई है ।"

रागिनी लपककर विंडो के पास पहुँची ।

वह ग्लास विंडो थी ।

मगर उसे विंडो के परली तरफ कुछ नजर न आया ।

"महेश, अगर तुम्हारी यही हालत रही, तो तुम पागल हो जाओगे ।" रागिनी के स्वर में फटकार थी, "जेंटलमैन किलर को तुम्हें मारने की कोई जरूरत न पड़ेगी ।"

"म... मुझे लगा... उधर कोई है ।"

"कोई नहीं है उधर !"

"लेकिन... ।"

"अब आराम से लेट जाओ और अपने साथ-साथ मेरा दिमाग भी खराब मत करो ।"

रागिनी ने झटके से उस ग्लास विंडो पर पर्दा डाल दिया ।

"उ... उस पर भी ।" महेश खोखा बेड पर लेटता हुआ बड़ी मासूमियत से बोला ।

"क्या उस पर ?"

"उ... उधर ।"

वह दूसरी विंडो पर भी पर्दा डालने के लिए कह रहा था । रागिनी आगे बढ़ी, उसने पेलमेट में झूल रहा पर्दा दूसरी ग्लास विंडो पर भी खींच दिया ।

●●●

उसी दिन शाम के वक्त एक और बड़ी अजीबो-गरीब घटना घटी ।

कोई छः बज रहे थे जब महेश खोखा का रूटीन चेकअप करने के लिए एक डॉक्टर वहाँ आया ।

उसकी उम्र कोई पैंतालिसेक साल थी ।

शरीर भारी ।

चेहरे पर मूंछें ।

और आँखों पर आई साइट की ऐनक ।

डॉक्टर के साथ एक नर्स भी थी । दोनों यशवंत गवली और दूसरे सीबीआई एजेंटों के बीच से गुजरते हुए सीधे उस कमरे में दाखिल हुए ।

"कैसे हो अब ?" डॉक्टर, महेश खोखा की नब्ज देखता हुआ बोला ।

महेश खोखा ने कुछ न कहा ।

वह लेटा हुआ बस अपलक डॉक्टर को देखता रहा ।

फिर डॉक्टर ने गले में लटके स्टैथोस्कोप को अपने कानों से लगाया और आले से उसके दिल की धड़कन चेक करनी चाही ।

"नहीं ।" यही वह पल था, जब महेश खोखा जोर से हलक फाड़कर चीख उठा, "बचाओ, बचाओ ।"

उसके चीखने की आवाज चारों तरफ गूँजी ।

वह झटके से उठ बैठा ।

डॉक्टर हड़बड़ाया ।

नर्स भी हड़बड़ाकर पीछे हटी ।

"यह लोग मुझे मार डालेंगे ।" महेश खोखा गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा था, "यह डॉक्टर नहीं है, यह कातिल है । यह जेंटलमैन किलर है ।"

डॉक्टर के होश उड़ गये ।

"यह क्या बकवास कर रहे हो तुम ?"

उसी पल यशवंत गवली, रागिनी, सावंत तथा दूसरे क्राइम ब्रांच एजेंट भी धड़धड़ाते हुए वहीं घुस आये और उन्होंने झटके के साथ रिवॉल्वर निकाल ली ।

महेश खोखा को एकाएक उन्होंने चारों तरफ से अपने सुरक्षा के घेरे में ले लिया ।

"य... यह जेंटलमैन किलर है ।" महेश खोखा लगातार गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा था, "यह मुझे मारने यहाँ आया है यशवंत ! पकड़ो इसे, पकड़ो !"

महेश खोखा एकदम बेड से नीचे कूद पड़ा और तुरंत यशवंत गवली के पीछे चूहे की तरह जाकर छिप गया ।

जबकि डॉक्टर के उन चंद सेकेंडों में ही पसीने छूट गये थे ।

"महेश !" यशवंत गवली चीख उठा, "यह क्या हरकत है ? यह डॉक्टर चतुर्वेदी हैं ।"

"नहीं ।" महेश खोखा की आँखों में मौत नाच रही थी, "य... यह खूनी है, यह जेंटलमैन किलर है । यह डॉक्टर के वेश में मुझे यहाँ मारने आया है यशवंत ! य... यह मुझे मार डालेगा, मुझे बचाओ ।"

"ब्लडी बास्टर्ड !" यशवंत गवली ने उसे अपने पीछे से खींचकर आगे किया, "तुम सचमुच पागल हो चुके हो । मैं कह रहा हूँ कि यह डॉक्टर चतुर्वेदी हैं ।"

इसी बीच चीख-पुकार सुनकर हॉस्पिटल स्टाफ के भी कुछ लोग दौड़ते हुए यहाँ चले आये थे ।

"इनसे पूछो !" यशवंत गवली ने हॉस्पिटल स्टाफ के मेम्बरों की तरफ इशारा किया, "सब इन्हें पहचानते हैं । यह डॉक्टर चतुर्वेदी ही हैं । पूछो इनसे ।"

हॉस्पिटल स्टाफ ने अपनी नजरें नीचे झुका ली ।

महेश खोखा के धैर्य का बाँध अब पूरी तरह टूट गया । वह एकाएक यशवंत गवली के सीने से चिपट गया और हिड़कियों के साथ रो पड़ा ।

"ऑफिसर !" वह रोता हुआ बोला, "प्लीज़, मुझे बचा लो । मुझे बचा लो । एक दिन यह जेंटलमैन किलर मुझे सचमुच ही मार डालेगा । मैं अभी मरना नहीं चाहता ऑफिसर ! मैं अभी जीना चाहता हूँ ।"

"ओके, कुछ नहीं होगा तुम्हें !" यशवंत गवली बोला, "हम लोग तुम्हें कुछ नहीं होने देंगे ।"

यशवंत गवली के सीने से चिपटा हुआ महेश खोखा फिर भी रोता रहा ।

हिड़कियों के साथ रोता रहा ।

पूरे कमरे में दुख का माहौल तारी हो गया था ।

●●●

"मामला सचमुच काफी संजीदा है ।" डॉक्टर चतुर्वेदी के माथे पर चिंता की लकीरें खिंची हुई थीं, "दिस इज फोबिया ! जेंटलमैन किलर का डर उसके अंदर तक बैठ गया है ।"

यशवंत गवली, डॉक्टर चतुर्वेदी और महेश खोखा का केस एग्जामिन कर रहे सीनियर डॉक्टर मिस्टर भट्ट उस समय एक केबिन में मौजूद थे तथा महेश खोखा की वर्तमान हालत के बारे में विचार-विमर्श कर रहे थे ।

"इसमें तो कोई शक ही नहीं ऑफिसर !" डॉक्टर भट्ट ने भी कहा, "वो काफी डरा हुआ है । मौत का खौफ उसके अंदर बुरी तरह बैठ गया है और यही वजह है कि हर आदमी के अंदर उसे जेंटलमैन किलर नजर आता है । उसे जेंटलमैन किलर का फोबिया हो गया है ।"

"लेकिन यह तो काफी खतरनाक स्थिति है डॉक्टर !" यशवंत गवली बोला ।

"ऑफकोर्स, आई नो, दिस इज वेरी डेंजरस पोजीशन ।" डॉक्टर भट्ट बोले, "लेकिन हम लोग इसमें कुछ नहीं कर सकते, बल्कि मुझे तो एक और डर है ।"

"क्या ?"

"जेंटलमैन किलर के इसी खौफ के चलते महेश खोखा कभी कोई गलत कदम न उठा जाए ।"

यशवंत गवली चौंका ।

"कैसा गलत कदम ?"

"फिलहाल इस बारे में हमें कुछ नहीं मालूम । मगर फोबिया से ग्रस्त इस तरह के पेशेंट किसी भी पल कुछ भी कर सकते हैं । कई बार इस तरह के केसों में बड़ी-बड़ी अजीब तरह की घटनाएँ देखने-सुनने को मिली हैं, जो चौंकाती हैं ।"

"लेकिन इसका कोई इलाज भी तो होगा डॉक्टर ?"

"नहीं, मेडिकल साइंस में इसका कोई इलाज नहीं है । वक्ती तौर पर इंजेक्शन वगैरा देकर फोबिया के पेशेंट को कंट्रोल किया जा सकता है, परंतु इसका परमानेंट इलाज नहीं हो सकता । हाँ, आपके पास इस बीमारी का इलाज जरूर है ऑफिसर !"

"मेरे पास !" यशवंत गवली पुनः चौंका ।

"जी हाँ ।"

"वो कैसे ?"

"अगर आप या आपके क्राइम ब्रांच एजेंट मिलकर किसी तरह जेंटलमैन किलर को मार दें या उसे अरेस्ट कर लें, तो महेश खोखा का डर खुद ब खुद उसके दिल से निकल जाएगा ।"

यशवंत गवली के नेत्र सिकुड़ गये ।

वह भाँप गया, डॉक्टर भट्ट गलत नहीं कह रहे हैं ।

●●●

यशवंत गवली अपनी तरफ से महेश खोखा की जितनी सिक्योरिटी कर सकता था, कर रहा था ।

सिर्फ दो डॉक्टर को परमिशन थी, जो महेश खोखा का चेकअप करने के लिए अंदर जा सकते थे । एक डॉक्टर भट्ट, दूसरे डॉक्टर चतुर्वेदी या फिर एक नर्स । उन तीनों के अलावा उस रुम में घुसने की बाकी किसी को इजाजत नहीं थी । यहाँ तक कि उस रुम की साफ-सफाई की भी सारी जिम्मेदारी खुद क्राइम ब्रांच एजेंटों ने संभाली हुई थी । इसके अलावा सभी क्राइम ब्रांच एजेंटों को उन तीनों की अच्छी तरह शिनाख्त भी करा दी गई थी ताकि उनके अलावा कोई चौथा आदमी रुम में न घुस जाए ।

एक-एक कदम सोच-समझकर उठाया जा रहा था ।

पूरी सतर्कता से ।

वह जानते थे, जैंटलमैन किलर किसी भी पल कोई भी दाँव खेल सकता है ।

मगर हंगामा तब भी हुआ ।

पहली रात तो किसी प्रकार अमन-चैन के साथ गुजर गई, परंतु अगले दिन सुबह-ही-सुबह जब डॉक्टर भट्ट, नर्स के साथ महेश खोखा की ड्रेसिंग करने के लिए रुम में गए तो उन्हें देखकर महेश खोखा के ऊपर पुनः मानो हिस्टीरिया का जबरदस्त दौरा पड़ गया और वह उन्हें 'जेंटलमैन किलर, जेंटलमैन किलर' बताता

हुआ चिल्लाने लगा। यशवंत गवली और दूसरे क्राइम ब्रांच एजेंटों ने उसे किसी तरह अंदर पहुँचकर काबू किया। मगर जब तक उन्होंने खोखा को काबू में किया तब तक वह वहाँ अच्छा-खासा बवाल खड़ा कर चुका था।

उसने साइड टेबल पर रखा गिलास, प्लेटें तथा दूसरा साज-सामान उठा-उठाकर बिल्कुल पागलों की तरह डॉक्टर भट्ट के ऊपर फेंका।

डॉक्टर भट्ट वहाँ से भागे।

"छोड़ दो मुझे।" महेश खोखा, क्राइम ब्रांच एजेंटों के शिकंजे में फंसा चिल्ला रहा था, "छोड़ दो। यह जेंटलमैन किलर है। यह मुझे मारने आया है।"

"होश में आओ।" यशवंत गवली ने उसके नजदीक पहुँचकर उसे झंझोड़ा, "यहाँ कोई जेंटलमैन किलर नहीं है।"

"न... नहीं यशवंत !" महेश खोखा मानो सचमुच पागल हो चुका था, "वो जेंटलमैन किलर ही है। व... वो डॉक्टर के रूप में मुझे मारने आया था।"

"वो डॉक्टर भट्ट हैं।" रागिनी चिल्लाई।

"न... नहीं।"

"हर पल बेवकूफों जैसी बातें मत करो महेश !" यशवंत गवली ने भी उसे जोर से झिड़का, "ध्यान से देखो, वह मिस्टर भट्ट ही हैं।"

महेश खोखा अब जोर-जोर से हाँफता हुआ तथा अपनी पलकें झपकाता डॉक्टर भट्ट को देखने लगा। उस समय उसकी हरकतें देखकर बिल्कुल ऐसा लग रहा था जैसे वह पागल हो चुका है।

उसे देखकर दिल में खौफ की एक लहर पैदा होती थी।

"लो, पानी पिओ !" सावंत ने आगे बढ़कर उसे पानी पिलाया।

वह एक ही घूँट में गटागट सारा पानी पी गया।

"महेश, अपने आपको सम्भालो !" यशवंत गवली बोला, "हमने तुमसे कितनी बार कहा है। हमारे होते हुए जेंटलमैन किलर तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर पायेगा।'

"फ... फिर भी मुझे डर लगता है साहब !" महेश खोखा रुआँसे स्वर में बोला, "मुझे लगता है, जेंटलमैन किलर आयेगा और मुझे मार डालेगा।"

"यह तुम्हारा वहम है।"

"लेकिन कभी-कभी वहम सच भी साबित हो जाता है साहब !"

यशवंत गवली अब निरुत्तर हो गया।

●●●

महेश खोखा की हालत लाख समझाने के बावजूद पल-प्रतिपल बिगड़ती जा रही थी।

दोपहर के वक्त उसने फिर वैसा ही बवाल खड़ा कर दिया। इस बार सावंत को देखकर बवाल फैला। दरअसल सावंत भी डॉक्टर की वेशभूषा में था और उसने भी सफेद ओवरऑल पहना हुआ था तथा गले में स्टैथोस्कोप डाल रखा था।

सावंत दोपहर के समय महेश खोखा के पास उसका हाल-चाल मालूम करने आया था, जब महेश खोखा के ऊपर फिर वह दौरा पड़ गया और वह सामान उठा-उठाकर उसके ऊपर फेंकने लगा।

"जेंटलमैन किलर, जेंटलमैन किलर !" सामान फेंकते हुए वह चिल्लाता भी जा रहा था।

फौरन कई सारे लोग धड़धड़ाते हुए वहाँ जमा हो गए और एक बार फिर महेश खोखा को बड़ी मुश्किल के साथ काबू किया गया।

सबकी चिंताएँ और बढ़ गईं ।

महेश खोखा के पागलपन की वह इंतेहा थी ।

चरम सीमा ।

"इस आदमी का फोबिया हर पल बढ़ता जा रहा है ।" डॉक्टर भट्ट ने अपने केबिन में कुर्सी पर बैठते हुए गंभीरतापूर्वक कहा, "बल्कि अभी-अभी मैंने एक बात और मार्क की है यशवंत !"

"क्या ?"

"महेश खोखा डॉक्टर के वेश में जिस किसी को भी देखता है उसी को जेंटलमैन किलर समझने लगता है ।"

"यानी उसे यह उम्मीद है ।" यशवंत गवली बोला, "कि हत्यारा डॉक्टर के रूप में उसके पास आएगा ।"

"करेक्ट ।"

"लेकिन यह जरूरी तो नहीं ।"

"बिल्कुल जरूरी नहीं ।" डॉक्टर भट्ट बोले, "परंतु महेश खोखा के दिमाग में यह बात कील की तरह ठुक चुकी है और अब यह आसानी से निकल भी नहीं पाएगी ।"

"हूँ ।"

यशवंत गवली ने सिगरेट सुलगा ली । हत्या के इस अजीबोगरीब केस में नई-नई मुश्किलें पैदा होती जा रही थीं ।

नई-नई उलझनें ।

जितना जल्द-से-जल्द वह इस केस को सॉल्व करने की कोशिश कर रहा था, उतने संकट गहरा रहे थे ।

●●●

काली पेंट ।

सफेद लाइनदार शर्ट ।

काले जूते ।

आँखों पर सुनहरे फ्रेम की चमचमाती ऐनक ।

वह नौजवान सचमुच बहुत स्मार्ट, बहुत हैंडसम नजर आ रहा था, जैसे किसी कॉलेज का स्टूडेंट हो या फिर किसी फिल्म का हीरो ।

एकदम गोरा-चिट्टा रंग ।

चेहरे पर सिंदूरी छटा बिखरी हुई ।

परंतु उस स्मार्ट नौजवान के चेहरे पर जो मासूमियत होनी चाहिए थी, वह नहीं थी । ऐनक के पीछे झांकती उसकी आँखों में भी ऐसे भाव थे जो मन में खौफ पैदा करते थे । वह मानो पत्थर की आँखें थीं ।

जसलोक हॉस्पिटल से मुश्किल से एक किलोमीटर के फासले पर बनी रॉयल अकॉर्ड बिल्डिंग का वह एक आलीशान फ्लैट था, जिसमें इस वक्त वह नौजवान मौजूद था ।

वह मानो किसी ख़ास काम पर जाने के लिए तैयार हो रहा था ।

"मेरी बात मान लो ।" उस फ्लैट में एक दूसरी आवाज गूँजी, "ये खेल खेलने अब बन्द करो ।"

मुस्कुराया वह नौजवान ।

उसकी वह मुस्कुराहट भी मानो जहर बुझी थी ।

"नहीं ।" उस नौजवान की गर्दन इनकार की सूरत में हिली, "ये खेल अब मेरी साँसों के साथ ही खत्म होगा ।"

यह शब्द कहते हुए उस नौजवान ने वहीं एक कोने में रखी मेज की ड्राअर से पॉइंट 32 कैलीबर की रिवॉल्वर बाहर निकाल ली ।

स्मिथ एंड वैसन रिवॉल्वर ।

उसने स्मिथ एंड वैसन का चैंबर खोलकर देखा, वह खाली था । नौजवान ने ड्राअर के अंदर से ही कार्टेज निकालकर उसके अंदर डाले, उसे फुल लोड किया और रिवॉल्वर अपनी जेब में रखी ।

"लेकिन यह जरूरी तो नहीं ।" वही दूसरी आवाज फिर गूँजी, "कि जिस तरह तुमने पहले 7 मर्डर किए हैं, उसी तरह तुम महेश खोखा का मर्डर भी कर दोगे ?"

"उसका मर्डर भी उसी तरह होगा ।" नौजवान की आवाज में फुल कॉन्फिडेंस था, "उतनी ही आसानी से ।"

"यह तुम्हारा वहम भी तो हो सकता है ।"

"वहम !" नौजवान की मुस्कुराहट गहरी हुई, "मुझे कभी कोई वहम नहीं होता ।"

"लेकिन... ।"

"मालूम है ।" वह नौजवान मानो दीवानावार अंदाज में अपने आपसे बड़बड़ाया, "इस जिंदगी में कदम-कदम पर इतनी ठोकरे लगी हैं मुझे, इतना कुछ खोया है मैंने कि इस जिंदगी के असल मायने मेरी समझ में आ गए हैं । मैं जान गया हूँ, मुश्किल और उबड़-खाबड़ राहों पर भी कैसे चला जाता है ! कैसे कामयाबी हासिल की जाती है ! जेंटलमैन किलर !" वह खतरनाक ढंग से हँसा, "मुंबई पुलिस ने यही नाम रखा है न मेरा, जेंटलमेन किलर ! और यह जेंटलमैन किलर कभी कोई कच्चा गेम नहीं खेलता । इतना ही नहीं, मैंने महेश खोखा के बारे में भी तमाम जानकारी इकट्ठी कर ली हैं ।"

"कैसी जानकारी ?"

दूसरा व्यक्ति चौंका ।

आवाज में हैरानी थी ।

"जैसे इस समय वह जसलोक हॉस्पिटल में एडमिट है ।" नौजवान बोला, "और सबसे बड़ी बात यह है, उसे डॉक्टर का फोबिया हो गया है ।"

"फोबिया !"

"यस । सफेद ओवरऑल पहने और गले में स्टैथोस्कोप लटकाए किसी भी डॉक्टर को देखते ही वह गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगता है । वह समझता है कि यह डॉक्टर उसे मारने आया है, वह उसका कत्ल कर डालेगा । अभी तक हॉस्पिटल में ऐसी कई घटनाएँ घट चुकी हैं । यहाँ तक कि तमाम हॉस्पिटल स्टाफ उसे पागल समझने लगा है और सबका यह मानना है कि वह खामखाह चीखता-चिल्लाता रहता है । ऐसे में कल्पना करो ।" जेंटलमैन किलर की आवाज अकस्मात बहुत रहस्यमई हो उठी, "हत्यारा अगर सचमुच डॉक्टर के वेश में महेश खोखा को मारने वहाँ पहुँच जाए तो क्या होगा ?"

कमरे में मौजूद दूसरा व्यक्ति चौंक उठा ।

बुरी तरह चौंक उठा ।

जबकि जेंटलमैन किलर एकाएक बहुत जोर से खिलखिलाकर हँसा था, बड़े ही शैतानी अंदाज में ।

"असली हत्यारे को देखते ही वह फिर चीखेगा-चिल्लायेगा । हंगामा करेगा । सामान उठा-उठाकर फेंकेगा, लेकिन कोई उसकी तरफ ध्यान नहीं देगा । सब यही समझेंगे कि उसे वापस दौरा पड़ गया है, पागलपन का दौरा । जबकि हत्यारा बड़ी सहूलियत से अपना काम कर जाएगा । मार डालेगा महेश खोखा को ! और तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूँ , मैं डॉक्टर बनकर ही जसलोक हॉस्पिटल जा रहा हूँ ।"

वह फिर हँसा ।

जोर से खिलखिलाकर हँसा ।

हँसी उसकी सचमुच बहुत भयानक थी ।

दहला देने वाली ।

जबकि दूसरे व्यक्ति के चेहरे की रंगत फीकी पड़ गई ।

उसके बाद जेंटलमैन किलर चहलकदमी-सी करता हुआ वार्डरोब के नजदीक पहुँचा था । उसने वार्डरोब खोला और उसके अंदर से डॉक्टरों वाला सफेद ओवरऑल निकालकर पहना । फिर वार्डरोब के अंदर से ही उसने स्टैथोस्कोप निकाला और ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़े होकर उसे गले में डालकर देखा ।

एकाएक वह डॉक्टर नजर आने लगा ।

कोई बड़ा डॉक्टर ।

ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़े-खड़े उसने स्किन कलर के बहुत पतले ग्लव्स पहने ।

उसने सारी तैयारी पहले से की हुई थी ।

"अभी भी मेरी बात मान लो ।" वही आवाज फिर गूँजी, "मत जाओ वहाँ । न जाने क्यों आज मेरा दिल बहुत घबरा रहा है ।"

हँसा जेंटलमैन किलर ।

"तुम्हारा दिल कब नहीं घबराता माय डियर ! हमेशा घबराता है । वैसे भी यह दुनिया बहुत कठोर हो गई है, इसलिए दिल की आवाज ज्यादा नहीं सुननी चाहिए । मुझे आज जाना ही होगा । महेश खोखा के मरने का समय आ गया है ।" उसके स्वर में दीवानगी थी, पागलपन था, "एक पापी इस धरती पर ज्यादा दिन जिंदा रहे यह ईश्वर को भी पसंद नहीं ।"

"तुम पागल हो चुके हो ।" दूसरा व्यक्ति चीखा ।

"एक पागल ही इस दुनिया में ऐसा कुछ करता है, जो समझदार आदमी नहीं कर पाते ।"

यह बात कहकर वह संजीदगी से टेबल के नजदीक पहुँचा और उसने सबसे नीचे वाले ड्राअर खोली । उसमें ढेर सारी प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी भरी हुई थी । जेंटलमैन किलर ने उनमें से एक साँप-सीढ़ी निकालकर अपने जेब में रख ली ।

●●●

शाम के उस समय 5:00 बज रहे थे । यशवंत गवली ने अभी थोड़ी देर पहले ट्रांसमीटर पर हरिनारायण आप्टे से बात की थी और उन्हें बताया था कि उसे किसी भी पल जेंटलमैन किलर के यहाँ पहुँचने की उम्मीद है । उसने उसे फाँसने की पूरी तैयारी की हुई है । यशवंत गवली ने हरिनारायण आप्टे को महेश खोखा के संबंध में भी पूर्ण जानकारी दी ।

दरअसल महेश खोखा की हालत अभी भी चिंताजनक थी ।

परेशानी में डाल देने वाली ।

सुबह से वह डॉक्टर को लेकर कई बार हंगामा मचा चुका था ।

हालांकि यशवंत गवली ने उसे काफी समझाया, मगर यशवंत गवली के समझाने का उस पर कोई असर न हुआ । जेंटलमैन किलर का खौफ महेश खोखा के दिलो-दिमाग पर पूरी तरह हावी था ।

यशवंत गवली थोड़ी देर पहले महेश खोखा को देखने अंदर गया, तो उसने झटके से यशवंत गवली का हाथ पकड़ लिया और वह बिस्तर पर उठ बैठा ।

"ऑफिसर !" वह जल्दी से बेचैनीपूर्वक बोला, "मुझे लग रहा है, जेंटलमैन किलर यहाँ पहुँच जायेगा और मुझे मार डालेगा ।"

"वो यहाँ पहुँच जायेगा, यह तो हमारे लिये अच्छी बात है महेश !" यशवंत गवली उसे समझाते हुए बोला, "क्योंकि यही तो हम चाहते हैं कि वह यहाँ पहुँचे । मगर इस बात से तुम बेफिक्र रहो, वह तुम्हें मार नहीं पाएगा ।"

"नहीं ऑफिसर !" वह शीघ्रतापूर्वक बोला, "वह मुझे मार डालेगा । उसने उन सातों को नहीं छोड़ा, तो मैं क्या चीज हूँ ! मेरी क्या औकात ! ऑफिसर, आप एक काम करो !"

"क्या ?"

"मुझे दो-तीन साल के लिए किसी जेल में डाल दो । किसी ऐसी जेल में जहाँ परिंदा भी पर न मार सके । एक काम करो, मुझे कालापानी भेज दो या जूनागढ़ की जेल में भेज दो । हाँ, वहीं ठीक रहेगा । वहाँ जेंटलमैन किलर मेरे तक आसानी से नहीं पहुँच पाएगा ।"

"शटअप ! तुम पागल हो चुके हो ।"

"नहीं ऑफिसर !" वह गिड़गिड़ा उठा, "मुझे प्लीज यहाँ से कहीं और शिफ्ट कर दो ! मुझे लग रहा है, अगर मैं यहाँ रहा तो मैं मर जाऊँगा ।"

"तुम यहाँ रहने से नहीं मरोगे बेवकूफ आदमी !" यशवंत गवली के स्वर में झुंझलाहट थी, "बल्कि तुम अपनी उन बेवकूफ़ाना हरकतों की वजह से मरोगे, जो कर रहे हो ।"

यशवंत गवली उसके कमरे से बाहर निकल आया ।

महेश खोखा फिलहाल उन सबके लिए सिरदर्द बनता जा रहा था ।

भयंकर सिरदर्द ।

जो भी अंदर जाता वह उसी को पकड़कर बैठ जाता या फिर हंगामा करने लगता ।

"इस आदमी का बस एक ही हल है ऑफिसर !" सावंत बोला, "जेंटलमैन किलर जल्द-से-जल्द हमारे हाथ आए और हम इसे छोड़ें ।"

"ठीक कहते हो ।"

यशवंत गवली के चेहरे पर भी उस समय परेशानी की लकीरें थीं ।

●●●

ठीक पाँच बजकर पन्द्रह मिनट पर एक ऑटो रिक्शा जसलोक हॉस्पिटल के सामने पहुँचकर रुका और फिर उसमें से सफेद ओवरऑल पहने एक बहुत सजा-धजा डॉक्टर बाहर निकला ।

आँखों पर आई साइड की ऐनक ।

हाथ में स्टैथोस्कोप और तेज शाइनिंग वाले चमचमाते बाल ।

कहने की आवश्यकता नहीं, वह जेंटलमैन किलर था ।

हॉस्पिटल की सीढ़ियाँ चढ़ते समय जेंटलमैन किलर ने अपनी तर्जनी उंगली के अग्रिम हिस्से से ऐनक दुरुस्त की और जसलोक हॉस्पिटल के काफी बड़े होर्डिंग पर एक नजर डाली । ठीक पाँच बजकर अठारह मिनट पर वह हॉस्पिटल की पहली मंजिल पर जाने वाली सीढ़ियाँ चढ़ रहा था । उसने किसी से कुछ नहीं पूछा । हॉस्पिटल का एक-एक हिस्सा मानो उसका जांचा-परखा था ।

सीढ़ियाँ चढ़कर वह पहली मंजिल पर पहुँचा ।

अब लंबा-चौड़ा कॉरिडोर उसके सामने था, जिसके दोनों तरफ कमरे बने हुए थे और उनमें पेशेंट एडमिट थे ।

उसी कॉरिडोर के सबसे आखिरी सिरे पर महेश खोखा का कमरा था ।

जेंटलमैन किलर ने एक दृष्टि कॉरिडोर में आगे की तरफ दौड़ाई ।

फिर उसके होंठों पर मुस्कुराहट उभरी ।

चिर-परिचित मुस्कुराहट ।

वह धीरे-धीरे कदमों से अब कॉरिडोर के आखिरी सिरे की तरफ बड़ा ।

पेशेंट और उनके रिश्तेदार आ-जा रहे थे । हॉस्पिटल का स्टाफ भी रोजमर्रा की तरह इधर से उधर भागा-भागा फिर रहा था । सब व्यस्त थे । किसी को कानों-कान भनक नहीं थी, वहाँ क्या होने जा रहा है ।

तभी जेंटलमैन किलर को सामने से सर्जिकल ट्रे हाथ में लिए एक वार्ड बॉय आता दिखाई पड़ा । वह भी काफी जल्दी में था और उसका ध्यान कहीं और था । एकाएक उसकी निगाह जेंटलमैन किलर पर पड़ी तथा उसे देखते ही वह चौंका ।

पहले तो उसने जेंटलमेन किलर के बराबर में से गुजर जाना चाहा, मगर फिर वह ठिठक गया ।

"एक्सक्यूज मी !"

"यस ।"

जेंटलमैन किलर के दिमाग में खतरे की घंटी बज चुकी थी, लेकिन फिर भी वह बेहद मीठे स्वर में बोला ।

"जहाँ तक मुझे याद पड़ता है ।" वार्ड बॉय ने सर्जिकल ट्रे हाथ में पकड़े-पकड़े कहा, "मैंने पहले कभी आपको इस हॉस्पिटल में नहीं देखा ।"

मुस्कुराया जेंटलमैन किलर ।

उसकी मुस्कुराहट निर्दोष थी ।

किसी अबोध बच्चे जैसी ।

"वेरी फनी ! मजाक तुम सचमुच काफी अच्छा कर लेते हो ।"

"ज...जी !" वार्ड बॉय की खोपड़ी फिरकनी की तरह घूम गयी, "म... मैं कुछ समझा नहीं ।"

"मेरे दोस्त, अगर तुमने मुझे पहले कभी इस हॉस्पिटल में नहीं देखा, तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? मैं इस हॉस्पिटल से कनेक्टीड ही नहीं हूँ । मैं दरअसल सिटी हॉस्पिटल से आया हूँ और एक न्यूरोलॉजिस्ट हूँ । खासतौर पर फोबिया स्पेशलिस्ट ।"

जेंटलमैन किलर मानो हर मुश्किल का सामना करने के लिए तैयार था ।

हर सवाल का जवाब उसके पास था ।

"ओह !" वार्ड बॉय एकदम से रिलैक्स हो गया, "आपका नाम ?"

"डॉक्टर आर्यमन !"

"क्या आप यहाँ किसी स्पेशल विजिट पर आए हैं ?"

"हाँ, डॉक्टर भट्ट ने मुझे बुलाया है ।" जेंटलमैन किलर ने तर्जनी उंगली की नोक से फिर अपनी ऐनक दुरुस्त की, "शायद इसी फ्लोर पर कोई फोबिया का पेशेंट है । महेश ! ऐसा ही कुछ उसका नाम है ।" वह अपने दिमाग पर जोर डालता हुआ बोला, "हाँ, याद आया ! महेश खो... खो... ।"

"महेश खोखा !"

"करेक्ट !" जेंटलमैन की आँखें शीशे की तरह चमकीं, "महेश खोखा ! मैं उसी के चेकअप के लिये यहाँ बुलाया गया हूँ ।"

"मगर डॉक्टर भट्ट तो कहीं नजर नहीं आ रहे !" वार्ड बॉय की आवाज में पुनः संशय के भाव उभरे ।

दरअसल महेश खोखा की वजह से उस पूरे फ्लोर पर जबरदस्त जाँच-पड़ताल चल रही थी ।

"वह भी बस मेरे पीछे-पीछे आते ही होंगे । क्या तुम मुझे बताओगे कि महेश खोखा का रुम कहाँ है ?"

वार्ड बॉय उससे फिर कोई सवाल करता, उससे पहले ही उसने अपनी अगली चाल चली ।

"आइए ।"

"चलो ।"

जेंटलमैन किलर अब वार्ड बॉय के पीछे-पीछे महेश खोखा के कमरे की तरफ चल पड़ा ।

अलबत्ता चौकन्ना पूरा था ।

उसकी निगाहें बेहद साधारण अंदाज में इधर-उधर घूम रही थीं ।

एकाएक अलर्ट हो उठा । उसकी निगाहें अकस्मात यशवंत गवली पर पड़ी, जो वहीं कॉरिडोर में बैठा था और सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगा रहा था । हालांकि जेंटलमैन किलर उसे फौरन पहचान न सका, परंतु उसके व्यक्तित्व को देखकर उसे इतना अंदाजा जरूर हो गया कि वह कोई खास शख्स है ।

और ।

उसके दिमाग में घंटी बजा देने के लिए इतना बहुत था ।

"क्या बात है डॉक्टर साहब ?" वार्ड बॉय पलटकर बोला, "आप एकाएक रुक क्यों गए ?"

"वो सामने जो आदमी बैठा है ।" जेंटलमैन किलर ने यशवंत गवली की तरफ उंगली उठाई, "वो कौन है ?"

"वो !" वार्ड बॉय मुस्कुराया, "वो क्राइम ब्रांच ऑफिसर यशवंत गवली हैं और महेश खोखा की सिक्योरिटी के लिए अपनी पूरी टीम के साथ खुद यहाँ मौजूद हैं ।"

"यशवंत गवली !"

जेंटलमैन किलर के दिमाग में आश्चर्य के अनार छूटते चले गए ।

माय गॉड ! वह मन ही मन बड़बड़ाया । इसका मतलब मुझे फंसाने के लिए यह सारा जाल यशवंत गवली ने ही फैलाया हुआ है ।

जेंटलमैन किलर ने रुमाल निकालकर अपने चेहरे पर चुहचुहा आई पसीने की नन्ही-नन्ही बूंदें जल्दी से साफ कीं ।

"आइये डॉक्टर साहब, मैं आपको महेश खोखा के कमरे तक छोड़ दूँ, फिर मुझे नीचे भी कुछ जरूरी काम है ।"

"नहीं । मैं महेश खोखा का चेकअप अब थोड़ी देर बाद करूँगा ।"

"क्यों ?"

"मैं दरअसल फोबिया पेशेंट का थेरेपी चार्ट नीचे डॉक्टर भट्ट के केबिन में ही भूल आया हूँ । मैं उसे लेकर आता हूँ । बल्कि जब यहाँ जासूसों का ऐसा जाल फैला है, तो मैं डॉक्टर भट्ट को भी अपने साथ लेता आऊँगा । तुम मेरी फिक्र मत करो ।"

वार्ड बॉय कुछ कहता उससे पहले ही जेंटलमैन किलर मुड़ा और लंबे-लंबे डग भरता हुआ वहाँ से चला गया ।

पीछे वार्ड बॉय भौंचक्का-सा अपनी जगह खड़ा रह गया ।

उसकी कुछ समझ में नहीं आया था, डॉक्टर एकाएक यहाँ किसलिए आया और किसलिए गया ?

●●●

रात के ठीक आठ बजे महेश खोखा के सिक्योरिटी दस्ते की ड्यूटी चेंज होती थी ।

दिन में जो क्राइम ब्रांच एजेंट हॉस्पिटल में उसकी हिफाजत के लिए तैनात होते वह आठ बजते ही ड्यूटी छोड़कर चले जाते थे और उनकी जगह नए क्राइम ब्रांच एजेंट वहाँ आ जाते । फिर उन्हीं की नाइट ड्यूटी रहती । यही वह समय होता था जब यशवंत गवली भी कुछ घंटे आराम करने के लिए वहाँ से चला जाता था । अलबत्ता रागिनी और सावंत रात को दो बजे के बाद सोते, तब तक यशवंत गवली वहाँ आ जाता ।

कुल मिलाकर उन्होंने पूरा सिक्योरिटी शेड्यूल बहुत सिस्टम के साथ डिवाइड किया हुआ था ।

रोजाना रात को पौने आठ बजे ही महेश खोखा को डिनर भी सर्व कर दिया जाता था, जो एक क्राइम ब्रांच एजेंट ही उसके रुम में लेकर जाता ।

बहरहाल हंगामा हुआ । तमाम फुलप्रूफ सिक्योरिटी तथा परफेक्ट टाइम शेड्यूल के बावजूद हुआ और हंगामा भी ऐसा ताबड़तोड़ हुआ जिसके विषय में किसी ने ख्वाब में भी नहीं सोचा था । हुआ यूँ कि ठीक पौने आठ बजते ही एक क्राइम ब्रांच एजेंट रोजाना की तरह महेश खोखा को डिनर सर्व करने के लिए उसके रुम में गया । मगर जितनी तेजी से वह गया, उससे कहीं ज्यादा तेजी के साथ वह चीखता-चिल्लाता हुआ बाहर निकला ।

खाने की ट्रे उसके हाथ से झनझनाती हुई नीचे गिर गई ।

"क्या हुआ ?" सब चीखते हुए उसकी तरफ झपटे ।

"महेश खोखा रुम में से गायब है ।"

"क्या बकवास कर रहे हो तुम !" यशवंत गवली, जो जाने की तैयारी ही कर रहा था, वह भी एकदम से झपटकर उसके नजदीक आया और धड़धड़ाता हुआ रुम के अंदर घुसा ।

उसके पीछे-पीछे सब घुसे ।

महेश खोखा सचमुच रुम के अंदर से गायब था । उसका बिस्तर खाली पड़ा था । इतना ही नहीं रुम के पीछे वाले विंडो भी खुली थी । जरूर उसी में से निकलकर वह खुद भागा था, क्योंकि अगर कोई और आता तो विंडो का कांच टूटा हुआ होता, जबकि ऐसा नहीं था ।

"हे भगवान !" यशवंत गवली झल्ला उठा, "आखिरकार उस आदमी ने वह बेवकूफी कर ही डाली, जिससे उसकी जान जा सकती है । सब उसे जल्दी ढूंढो, जल्दी ! वह अभी आस-पास ही कहीं होगा ।"

तुरंत पूरे जसलोक हॉस्पिटल में हड़कंप मच गया । तमाम क्राइम ब्रांच एजेंट कैरम की गोटियों की मानिंद हॉस्पिटल में चारों तरफ बिखर गए ।

कुछ जहाँ सीढ़ियाँ उतरते हुए नीचे भागे, वहीं कुछ ऊपर भागे, जबकि कुछ ने उसी फ्लोर पर महेश खोखा को तलाशना शुरु किया ।

एक अच्छी बात यह हुई कि नाइट शिफ्ट के क्राइम ब्रांच एजेंट भी तब तक वहाँ पहुँच चुके थे, इसलिए तलाश करने वालों की संख्या अच्छी-खासी हो गई ।

खुद यशवंत गवली भी फर्स्ट फ्लोर पर ही महेश खोखा को तलाश कर रहा था ।

रिवॉल्वर निकलकर उसके हाथ में आ चुकी थी ।

वह धड़धड़ाता हुआ एक-एक कमरे की तलाशी लेने लगा ।

एक के बाद दूसरे कमरे में ।

दूसरे के बाद तीसरे में ।

मगर महेश खोखा का कहीं कुछ पता न था ।

तभी जो क्राइम ब्रांच एजेंट सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर की मंजिल पर गए थे, उनमें से एक दौड़ता हुआ नीचे आया ।

"यशवंत ! महेश खोखा ऊपर भी नहीं है ।"

"जरूर वह इसी फ्लोर पर कहीं होगा ।" यशवंत गवली धड़ाक से एक दूसरे कमरे में दाखिल होता हुआ बोला, "या फिर संभव है, वह ग्राउंड फ्लोर पर हो ।"

यशवंत गवली रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े उस कमरे में फिरकनी की भांति चारों तरफ घूम गया ।

लेकिन महेश खोखा वहाँ भी कहीं नहीं था ।

यशवंत गवली अब उस कमरे से बाहर निकला और वह दूसरे कमरे की तरफ बढ़ा ।

पूरे हॉस्पिटल में उस समय जबरदस्त भाग-दौड़ की आवाजें आ रही थीं ।

रागिनी और सावंत, महेश खोखा को खोजते हुए नीचे जा चुके थे ।

एकाएक किसी एजेंट के जोर से चिल्लाने का स्वर वातावरण में गूँजा ।

चीख ऐसी थी मानो किसी ने उसके सीने में बर्फ का खंजर घोंप दिया हो ।

"यशवंत !" तभी सावंत नीचे से दौड़ता हुआ वहाँ आया, "लगता है, उधर टॉयलेट के पास कुछ गड़बड़ हो गयी है ।"

"टॉयलेट के पास !"

"हाँ, चीखने की आवाज उसी तरफ से आयी है ।"

सावंत के साथ-साथ अब यशवंत गवली भी टॉयलेट की तरफ झपटा ।

वह टॉयलेट के अंदर दाखिल हुए । एक तरफ लेडीज टॉयलेट बना हुआ था, दूसरी तरफ जेंट्स । जेंट्स टॉयलेट के दरवाजे पर एक क्राइम ब्रांच एजेंट स्तब्ध-सा खड़ा था और उसके नेत्र आश्चर्य से फटे हुए थे, मानो वह अभी बाहर को उबल पड़ेंगे ।

यशवंत गवली उसे हटाकर टॉयलेट के अंदर दाखिल हुआ ।

और ।

अंदर घुसते ही कमोबेश उसकी भी वही हालत हुई, जो उस एजेंट की हुई थी । उसके नेत्र भी विस्मय से फट पड़े ।

सामने यूरिनल स्टॉल (पेशाब करने वाले पॉट) के पास ही महेश खोखा की खून से लथपथ लाश पड़ी थी । किसी ने साइलेंसर युक्त रिवॉल्वर से उसे बड़ी बेरहमी के साथ शूट कर दिया था । गोली ठीक उसकी खोपड़ी में लगी थी, जिससे उसका चेहरा भी काफी हद तक वीभत्स हो गया था ।

महेश खोखा का मुँह यूरिनल स्टॉल के पाइप के नीचे बनी नाली में पड़ा था और वहाँ जमा ढेर सारा पेशाब तथा खून उसके मुँह में जा रहा था । इतना ही नहीं, वहीं प्लास्टिक की एक साँप-सीढ़ी भी पड़ी थी ।

देखते-ही-देखते वहाँ कई सारे लोग जमा हो गए ।

एक क्राइम ब्रांच एजेंट ने महेश खोखा की टांगे पकड़कर उसका मुँह नाली के अंदर से बाहर खींचा ।

"जेंटलमैन किलर !" यशवंत गवली वह साँप-सीढ़ी देखकर झल्ला उठा, "जेंटलमैन किलर ! आखिर वह हरामजादा एक और खून करने में कामयाब हो गया ।"

"यशवंत !" रागिनी भीड़ को चीरकर आगे बढ़ी, "यह खून जेंटलमैन किलर की बुद्धिमानी की वजह से कम और महेश खोखा की बेवकूफी की वजह से ज्यादा हुआ है । अगर वह कमरे से निकलकर न भागता तो शायद आज इस हालत तक न पहुँचता ।"

"सबसे बड़ी बात तो यह है ।" सावंत बोला, "जिस तरह खून बह रहा है, उसे देखकर ऐसा लगता है कि इसका मर्डर हुए अभी ज्यादा देर नहीं हुई । मुश्किल से एक-दो मिनट... ।"

"साहब... साहब !" तभी एक वार्ड बॉय हाँफता हुआ वहाँ आया ।

"क्या बात है ?" यशवंत गवली वार्ड बॉय की तरफ घूमा ।

"साहब ! मैं उस आदमी को जानता हूँ जिसने महेश खोखा का खून किया है । वह बिल्कुल डॉक्टरों जैसी ड्रेस में था और कह रहा था, वह सिटी हॉस्पिटल से आया है, फोबिया स्पेशलिस्ट है और डॉक्टर भट्ट ने उसे यहाँ महेश खोखा का इलाज करने के वास्ते बुलाया है । जबकि भट्ट साहब बता रहे हैं, उन्होंने किसी डॉक्टर को नहीं बुलाया ।"

"हाँ !" वार्ड बॉय के पीछे-पीछे डॉक्टर भट्ट भी वहाँ आये, "मैंने किसी को नहीं बुलाया ऑफिसर !"

सब चौंक उठे ।

सबकी आँखें एक-दूसरे से टकराईं ।

"तो फिर वह कौन था ?" यशवंत गवली का सनसनाया स्वर ।

"जरूर वही जेंटलमैन किलर होगा ।" रागिनी चिल्लाई, "वह एक डॉक्टर के रूप में यहाँ आया था ।"

"ऑफिसर !" वही वार्ड बॉय जल्दी से बोला, "मैंने अभी-अभी उस बहरुपिये डॉक्टर को हॉस्पिटल से बाहर निकलते देखा है । वह काफी तेजी में था ।"

"अभी-अभी !" सावंत बोला ।

"हाँ ।"

"तब तो वह हत्यारा अभी यहाँ से ज्यादा दूर नहीं गया होगा ऑफिसर ! हमें उसे पकड़ना चाहिये ।"

सावंत के मुँह से अभी वह शब्द निकले ही थे कि यशवंत गवली एकदम अद्वितीय फुर्ती से नीचे की तरफ झपट पड़ा ।

उसके पीछे-पीछे सब झपटे ।

रागिनी और सावंत ने भी अब अपनी-अपनी रिवॉल्वर निकाल ली थी ।

●●●

यशवंत गवली सेकेंड के सौवें हिस्से में जसलोक हॉस्पिटल के मेन गेट से धड़धड़ाता हुआ बाहर निकला ।

हॉस्पिटल के बिल्कुल सामने एक बहुत गहमा-गहमी भरी सड़क थी, जहाँ चौबीसों घण्टे वाहनों की चिल्ल-पों मची रहती थी । उस समय भी तूफानी अंदाज में वाहनों की आवाजाही जारी थी । यशवंत गवली ने बाहर आते ही जेंटलमैन किलर की तलाश में इधर-उधर निगाहे दौड़ाई ।

तुरंत ही उसे सफेद ओवरऑल पहने एक डॉक्टर नजर आ गया, जिसके हाथ में स्टैथोस्कोप था और जो लंबे-लंबे डग रहता हुआ बड़ी तेजी के साथ नजदीक के ही एक ऑटो रिक्शा स्टैंड की तरफ बढ़ रहा था ।

" ऑफिसर !" पीछे से सावंत भी चिल्लाया, "जरूर यही वो हरामजादा है ।"

यशवंत गवली तेजी से उसकी तरफ झपटा ।

उसी पल न जाने कैसे जेंटलमैन किलर को भी इस बात का आभास हो गया कि वह क्राइम ब्रांच एजेंटों की निगाह में आ गया है । उसने एक बार आहिस्ता से बस पीछे पलटकर देखा और फिर वह द्रुतगति के साथ वहाँ से भागा ।

जेंटलमैन किलर से गलती इतनी हुई कि वह ऑटो रिक्शा स्टैंड पर पहुँचकर किसी ऑटो में बैठने की बजाय नजदीक की एक गली में घुस गया ।

तुरंत यशवंत गवली, रागिनी और सावंत भी धड़धड़ाते हुए उसी गली में दाखिल हुए ।

"रुक जाओ ।" यशवंत गवली रिवॉल्वर उसकी तरफ तानते हुए चिल्लाया, "आई से स्टॉप !"

लेकिन वह रुकने वाला कब था ! उल्टे वह और सिर पर पांव रखकर भागा ।

यशवंत गवली भी अब बेतहाशा दौड़ा ।

अलबत्ता रागिनी, सावंत तथा दूसरे क्राइम ब्रांच एजेंट फिलहाल पीछे रह गए थे ।

"तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है जेंटलमैन किलर !" यशवंत गवली द्रुतगति के साथ उसके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ चिल्लाया, "रुक जाओ, वरना मैं गोली चला दूँगा । स्टॉप, आई विल रियली शूट यू दिस टाइम !"

जेंटलमैन किलर फिर भी न रुका ।

और ।

यशवंत गवली ने गोली चला दी ।

धायं ।

गोली चलने की आवाज पूरी गली के अंदर गूँजी ।

परंतु जेंटलमैन किलर की छठी इंद्री भी कुछ कम सतर्क न थी । इधर यशवंत गवली ने गोली चलाई, उधर उसने एकदम आगे की तरफ से जंप लगा दी ।

गोली उसकी खोपड़ी के ऊपर से सरसराती हुई गुजरी ।

धायं-धायं ।

यशवंत गवली ने दो गोलियाँ और चलाईं ।

उसने फिर इधर-उधर चक्कर काटा ।

गोली पहले की तरह उसके दायें-बायें से गुजर गई ।

अलबत्ता गोली से बचने की बौखलाहट में उसका एक पैर गारा भरे गड्ढे में जाकर पड़ा । एक पल के लिए ऐसा लगा, वह भी नीचे गिर पड़ेगा और पकड़ा जाएगा ।

परंतु वह भी जीवट इंसान था ।

बेहद मजबूत इरादों वाला ।

गारा भरे गड्ढे में पैर पड़ते ही वह लड़खड़ाकर नीचे गिरा जरूर, मगर जितनी तेजी के साथ गिरा, उससे कहीं अधिक तेजी से जंप लेकर उठा और पुनः भागा ।

जेंटलमैन किलर के गिरते ही यशवंत गवली उसके बिल्कुल नजदीक जा पहुँचा था और एक पल के लिए ऐसा लगा यशवंत गवली उसे पकड़ लेगा ।

अभी उसका चेहरा उसके सामने होगा ।

लेकिन गिरते ही जेंटलमैन किलर ने इतनी तेज जंप लगाई थी कि वह हाथ आते-आते फिर उसके हाथ से निकल गया ।

"स्टॉप, स्टॉप !" यशवंत गवली गला फाड़कर दहाड़ा, "तुम आज चाहे कुछ भी कर लो, मगर बचकर नहीं निकल पाओगे जेंटलमैन किलर, योर गेम इज ओवर !"

धायं ।

यशवंत गवली ने एक गोली और चलाई ।

बेतहाशा भागता जेंटलमैन किलर फिर आगे को झुकाई देकर बचा ।

लेकिन इस बार गोली से बचने के प्रयास में वह सचमुच वहीं रेत के एक ढेर में लड़खड़ाकर गिर पड़ा ।

यही वह पल था जब यशवंत गवली ने भी एकदम चीते की तरह जंप लगा दी और उसे जा दबोचा ।

"मैंने कहा था न, तुम आज बच नहीं पाओगे ।"

जेंटलमैन किलर का चेहरा अभी भी उससे दूसरी तरफ था ।

यशवंत गवली ने जैसे ही उसका चेहरा देखना चाहा तभी जेंटलमैन किलर ने अपनी दोनों मुट्ठियों में रेत भरकर जोर से उसकी आँखों में झोंक मारा ।

यशवंत गवली की चीख निकल गई ।

तेज चीख ।

ढेर सारा रेत उसकी आँखों में भर गया था ।

जबकि जैंटलमैन किलर अब जोर से खिलखिलाकर हँसा, बहुत जोर से ।

"तुम मुझे पकड़ोगे, तुम... उंह !" उसने धड़ाधड़ यशवंत गवली को दो-तीन लातें जड़ीं ।

यशवंत गवली के हाथ से रिवॉल्वर निकलकर भी दूर जा पड़ी ।

इससे पहले कि यशवंत गवली खुद को उन हालातों से लड़ने के लिए तैयार करता, जेंटलमैन किलर वहाँ से भाग खड़ा हुआ ।

तभी रागिनी, सावंत तथा दूसरे एजेंट भी धड़धड़ाते हुए वहाँ आ पहुँचे ।

"ऑफिसर !" रागिनी ने आते ही उसे झंझोड़ा, " ऑफिसर, क्या हुआ ?"

"मुझे कुछ नहीं हुआ है ।" यशवंत गवली खड़ा होता हुआ बोला, "आई एम ऑल राइट ! तुम लोग जल्दी से जेंटलमैन किलर के पीछे जाओ । वह बचना नहीं चाहिए, क्विक !"

"लेकिन... ।" सावंत ने हिचकिचाते हुए कुछ कहना चाहा ।

"क्विक !" यशवंत गवली गला फाड़कर चीख उठा, "डोंट वेस्ट टाइम !"

तुरंत वे सब यशवंत गवली को वहीं छोड़कर आगे की तरफ दौड़ पड़े ।

●●●

उस गली को पार करते ही एक मेन रोड था और मेन रोड से आगे एक काफी बड़ा चौराहा था । वह सब दौड़ते हुए सीधे उसी चौराहे पर पहुँचे और उन्होंने चारों दिशाओं में देखा ।

जेंटलमैन किलर का दूर-दूर तक कहीं कुछ पता न था ।

तीर कमान से निकल चुका था ।

"ब्लडी शिट !" रागिनी झल्ला उठी, "हमें पहुँचने में देर हो गई । वह निकल गया ।"

तभी यशवंत गवली भी दौड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा । उसकी आँखें लाल-भभूका हो रही थीं और चेहरे पर अभी भी रेत के कण चिपके हुए थे ।

"कुछ पता चला ?"

"नहीं ऑफिसर, वह भाग निकला है !"

यशवंत गवली के चेहरे पर हताशा के चिन्ह उभर आए । मगर हताशा के वह क्षण सिर्फ एक पल के लिए उभरे थे, क्योंकि अगले ही पल उसकी निगाह सड़क पर बने कुछ जूतों के निशान पर पड़ी, जो मिट्टी से सने हुए थे और इसीलिए वह निशान वहाँ रह गए थे ।

"क्या देख रहे हैं ऑफिसर ?"

"यह निशान !" यशवंत गवली एकाएक जूतों के उन निशानों की तरफ इशारा करते हुए बड़बड़ाया, "यह निशान जेंटलमैन किलर के जूतों के हैं ?"

"यह आप कैसे कह सकते हैं ?"

"क्योंकि मेरा पीछा करते समय ही उसका पैर एक गारा भरे गड्ढे में पड़ा था और उसने इसी तरह के शूज पहने हुए थे, जैसे यह निशान हैं ।"

"ओह !"

"लेकिन यह निशान गये किस तरफ हैं ?" सावंत ने आगे की तरफ निगाह दौड़ाई ।

सब क्राइम ब्रांच एजेंटों ने इधर-उधर देखा । शीघ्र ही उन्हें बिल्कुल वैसे ही गारा सने कुछ और जूतों के निशान भी नजर आए जो सामने एक बिल्डिंग की तरफ चले गए थे ।

" ऑफिसर !" रागिनी तेजी से बोली, "यह निशान उस रॉयल अकॉर्ड बिल्डिंग की तरफ गये हैं ।"

यशवंत गवली सहित तमाम लोग अब बिना कोई सेकेंड गवायें तुरंत उस रॉयल अकॉर्ड बिल्डिंग की तरह झपटे ।

वह पच्चीस मंजिली इमारत थी ।

सब धड़धड़ाते हुए उस बिल्डिंग में दाखिल हुए और सीधे लिफ्ट के सामने पहुँचे ।

लिस्ट का इंडिकेटर उस समय जल्दी-जल्दी जल-बुझ रहा था और लिफ्ट ऊपर की तरफ जा रही थी ।

वह इस समय पन्द्रहवीं मंजिल पर थी ।

"जरूर लिफ्ट के अंदर वही शैतान है ।" एक क्राइम ब्रांच एजेंट चिल्लाया ।

"शायद !"

यशवंत गवली सहित सबके चेहरों पर उलझन के भाव थे । लिफ्ट इक्कसवीं मंजिल पर पहुँचकर रुकी ।

"ट्वेंटी वन !" रागिनी बोली, "इसका मतलब वह ट्वेंटी वन फ्लोर के ही किसी फ्लैट में रहता है ।"

"जरूर यही बात है ।" यशवंत गवली बोला ।

उस लिफ्ट के बराबर में ही एक दूसरी लिफ्ट थी । तुरंत वह सबके सब उसी लिफ्ट की तरफ दौड़े, क्योंकि उसे नीचे बुलाने की जरूरत नहीं थी, वह पहले ही नीचे मौजूद थी ।

सबके सब उस लिफ्ट में घुसने शुरु हुए ।

वह काफी बड़ी लिफ्ट थी ।

यशवंत गवली भी उस लिफ्ट में घुसा । मगर फिर एकाएक ठिठका ।

"जस्ट अ मिनट !" वह तेजी से कुछ सोचता हुआ बोला, "एक काम करो ।"

"क्या ?"

सबकी आँखों में सवालिया निशान उभरे ।

"तीन एजेंट यहीं रुक जाओ ।" यशवंत गवली बोला, "और बाकी सब ऊपर चलो ।"

"तीन एजेंट क्यों ?" यह प्रश्न रागिनी ने किया ।

"क्योंकि हो सकता है कि जेंटलमैन किलर इस समय भी हमारे साथ कोई गेम खेल रहा हो । हम सब यह समझ रहे हैं कि वह इक्कीसवीं मंजिल के किसी फ्लैट में गया है जबकि मुमकिन है कि उधर वह दुष्ट आदमी उसी लिफ्ट से नीचे आकर फरार हो जाए ।"

तमाम एजेंटों की निगाहें एक-दूसरे से टकराईं । उनकी आँखों में प्रशंसा के भाव उभर आये ।

यशवंत गवली गलत नहीं कह रहा था, जेंटलमैन किलर यह चाल चल सकता है ।

"ठीक है ऑफिसर ! हम ग्राउंड फ्लोर पर ही रुक जाते हैं ।"

तीन एजेंट तुरंत लिफ्ट से बाहर निकल गए ।

"और सुनो ।"

तीनों की निगाहें पुनः यशवंत गवली की तरफ उठी ।

"अगर जेंटलमैन किलर इस लिफ्ट से वापस नीचे पहुँच जाए तो मुझे फौरन इस ट्रांसमीटर पर इन्फॉर्म करना । यह लो ट्रांसमीटर सेट ।"

यशवंत गवली ने अपनी जेब से एक रिस्टवॉच निकालकर उन तीनों की तरफ उछाली, जिसे उनमें से एक ने लपक लिया ।

वास्तव में वह रिस्टवॉच एक बेहद शक्तिशाली ट्रांसमीटर सेट था ।

"ओके ?"

"ओके यशवंत !"

यशवंत गवली ने लिफ्ट में घुसकर उसके दोनों जंगलें धड़ाधड़ बंद किए और फिर इंडिकेटर पैनल में लगा इक्कीस नंबर का बटन दबा दिया ।

लिफ्ट अब उस रॉयल अकॉर्ड बिल्डिंग में ऊपर की तरफ भागी जा रही थी ।

●●●

मुश्किल से पाँच मिनट बाद ही वह इक्कीसवें माले पर थे । वहाँ पहुँचते ही वह एकदम मधुमक्खियों की मानिंद चारों तरफ फैल गए ।

उस फ्लोर पर कुल चार फ्लैट थे । इसके अलावा दूसरी लिफ्ट अभी भी उसी फ्लोर पर खड़ी थी और वह वापस नीचे नहीं गई थी ।

"इसका मतलब जेंटलमैन किलर अभी यहीं कहीं है ।" यशवंत गवली उस लिफ्ट को वहाँ खड़े देखकर बोला, "और वह वापस नीचे नहीं गया है ।"

"करेक्ट ऑफिसर !"

सबके सब बेहद चौकन्ने दिखाई पड़ने लगे ।

इस समय उनमें से ज्यादातर एजेंटों के हाथ में रिवॉल्वर थी ।

सब बेहद अलर्ट ।

गोली चलाने को तैयार ।

"लेकिन यह कैसे पता चले ।" सावंत बोला, "कि इन चारों में से किस फ्लैट के अंदर जैंटलमैन किलर है ?"

"उसका भी एक तरीका है ।" यशवंत गवली बोला ।

"क्या ?"

यशवंत गवली रिवॉल्वर हाथ में लिए-लिए दूसरी लिफ्ट की तरफ बढ़ा और उसने दोनों जंगलें खोलकर लिफ्ट के अंदर झांका ।

वहाँ लिफ्ट के फर्श पर भी बिल्कुल वैसे ही गारा सने जूतों के निशान बने थे जैसे बाहर देखे गए थे । अलबत्ता वह जूतों में लगी गारा (मिट्टी) थोड़ी कम हो गई थी और इसीलिए वह निशान भी धूमिल थे ।

"यह देखो ।" यशवंत गवली बोला, "जूतों के वह निशान यहाँ भी हैं, जिनसे साबित होता है कि अभी-अभी इस लिफ्ट के द्वारा जो व्यक्ति यहाँ आया, वह जेंटलमेन किलर ही था और अब गारा सने जूतों के यही निशान हमें जेंटलमैन किलर तक भी ले जायेंगे । जूतों के इन्हीं निशान को वॉच करते हुए हमने आगे बढ़ना है और जिस फ्लैट के दरवाजे पर पहुँचकर जूतों के यह निशान खत्म होते हैं, समझ लो उसी के अंदर जेंटलमैन किलर है ।"

"बिल्कुल सही ऑफिसर !"

सभी एजेंटों ने अब अपनी चौकन्नी निगाहों से कॉरीडोर के फर्श पर जूतों के वह निशान तलाश करने शुरु किये ।

मगर आश्चर्य ! वहाँ गारा सने जूतों के निशान तो थे, लेकिन वह किसी भी फ्लैट के दरवाजे तक नहीं पहुँच रहे थे ।

" ऑफिसर !" रागिनी एकाएक सनसनाये स्वर में बोली, "जूतों के यह निशान तो सीढ़ियों के रास्ते होते हुए नीचे की तरफ जा रहे हैं ।"

"नीचे की तरफ ।"

सबको पुनः एक झटका लगा ।

यशवंत गवली ने भी दौड़कर देखा, रागिनी गलत नहीं कह रही थी । जूतों के निशान सचमुच सीढ़ियों के रास्ते नीचे की तरफ चले गये थे ।

"लगता है, जेंटलमैन किलर हर पल हमसे एक कदम आगे की चाल चल रहा है ।" यशवंत गवली बोला, "वह लिफ्ट से इक्कीसवीं मंजिल तक आया जरूर था, लेकिन उसे जाना नीचे की किसी मंजिल पर था । मगर उसने हमें धोखा देने के लिये यह सारा नाटक रचा ।"

जेंटलमैन किलर की बुद्धि पर अब उन सभी को आश्चर्य होने लगा ।

सचमुच वह जो भी था, वह बहुत बड़ा खिलाड़ी था ।

कदम-कदम पर चाल चलने वाला ।

उसका हर पत्ता नया था ।

बहरहाल अब वह सब जूतों के उन निशानों को वॉच करते हुए सीढ़ियाँ उतरने लगे। जूतों के वह निशान उनके काफी बड़े मददगार साबित हो रहे थे।

उन्नीसवीं मंजिल पर पहुँचकर वह निशान खत्म हुए और पुनः कॉरीडोर में फैल गये। अलबत्ता इस बार वह एक फ्लैट में जाकर समाप्त हुए।

"नाइन्टीन फ्लोर !" सावंत एकाएक उत्साहपूर्वक बोला, "इसका मतलब फ्लोर नम्बर नाइन्टीन फोर के अंदर जेंटलमैन किलर है।"

तमाम क्राइम ब्रांच एजेंटों के शरीर में रोमांच की लहर दौड़ गयी।

सेकेंड के सौवें हिस्से में ही वह सब फ्लैट के सामने फैल चुके थे।

फ्लैट के दरवाजे पर गोल्डन अक्षरों में एक नाम लिखा हुआ था।

अभय मल्होत्रा।

यशवंत गवली ने आगे बढ़कर उस फ्लैट की कॉलबेल दबाई।

तुरंत कॉलबेल बजने की आवाज अंदर फ्लैट में यूँ गूँजी, मानो किसी ने धायं से गोली चलायी हो।

●●●

थोड़ी देर शांति रही।

गहन शांति।

कॉलबेल की कोई प्रतिक्रिया अंदर फ्लैट में न दिखाई पड़ी।

अंदर कहीं जर्रा बराबर आहट की आवाज नहीं हुई थी।

यशवंत गवली ने फिर कॉलबेल का बटन पुश किया।

बटन पुश करते ही पहले की तरह पुनः धायं से गोली चलने का स्वर गूँजा।

"बड़ी अद्भुत आवाज है !" एक क्राइम ब्रांच एजेंट बड़बड़ाया।

"कॉलबेल की ऐसी आवाज पहले कभी नहीं सुनी।"

इस बार अंदर आहट की आवाज सुनाई पड़ी। ऐसा लगा, मानो अंदर बेड चरमराया हो।

"कौन है भई ?" एक बड़ी उनींदी-सी आवाज आई।

"दरवाजा खोलिये मिस्टर अभय !" यशवंत गवली की कड़कड़ाती आवाज गूँजी, "जल्दी !"

"आता हूँ। इस वक़्त कौन आ गया ?"

फिर कदमों की पदचापों का आवाज उभरा, जो उसी तरफ आ रहा था।

सभी क्राइम ब्रांच एजेंट और भी ज्यादा अलर्ट हो उठे।

चौकन्ने।

रिवॉल्वर के ट्रिगर पर उनकी उंगलियाँ मुस्तैदी के साथ कस गयीं। बस उन्हें हल्का-सा पुश करने की जरूरत थी और गोलियों की बारिश शुरू हो जाती।

पदचापों की वह आवाज दरवाजे के बिल्कुल नजदीक आकर रुक गयी फिर सिटकनी गिरने तथा डोर चैन हटने की आवाज सुनाई पड़ी और एक ही झटके में दरवाजा खुल गया।

अब उसके सामने मुश्किल से सत्ताइस-अट्ठाइस साल का एक बेहद आकर्षक नौजवान खड़ा था। जिसने नेवी ब्लू कलर का रेशमी नाइट गाउन पहना हुआ था। पैरों में खूबसूरत स्पीलर थे। आँखें ऐसी उनींदी थीं, मानो वह अभी सोते से जागा हो।

उस आकर्षक नौजवान ने अपने नाइट गाउन की डोरियाँ कसते हुए दरवाजा खोला।

"यस प्लीज़ !" उसने हैरानीपूर्वक यशवंत गवली तथा बाकी तमाम लोगों की तरफ देखा, "कैन आई हेल्प यू ?"

तुरंत गुस्से की आँधी बने यशवंत गवली ने उसके सीने पर इतनी जोर से हाथ मारा कि अभय मल्होत्रा नाम का वह नौजवान एकाएक पीछे गिरता-गिरता बचा ।

"ब्लडी बास्टर्ड !" यशवंत गवली चीखा, "तुम हमारी क्या मदद करोगे ! अब खुद तुम्हें अपनी मदद की जरुरत है ।"

फौरन यशवंत गवली रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े धड़धड़ाता हुआ अंदर घुस गया ।

उसके पीछे-पीछे तमाम लोग घुसे ।

रागिनी और सावंत तो तुरंत फ्लैट के अंदर के कमरों की तरफ दौड़ पड़े थे, यह चेक करने के लिये कि यहाँ कोई और तो नहीं है ।

"मिस्टर अभय !" यशवंत गवली रिवॉल्वर उस नौजवान के ऊपर ताने-ताने चिल्लाया, "तुमने एक के बाद एक आठ मर्डर किये, लेकिन महेश खोखा का खून करने के बाद आखिर तुम पकड़े ही गये ।"

"अ... आठ खून !" अभय मल्होत्रा हड़बड़ा उठा, "यह क्या बकवास कर रहे हो तुम ! म...मैंने कोई खून नहीं किया ।"

"अब यह ड्रामा करने से कुछ नहीं होगा जेंटलमैन किलर ! तुम्हारा गेम खत्म हो चुका है ।"

"ज... जेंटलमैन किलर !" अभय मल्होत्रा के होश और भी ज्यादा उड़े ।

"यस, यू आर जेंटलमैन किलर !"

"लेकिन आप लोग कौन हैं ?"

"हम क्राइम ब्रांच के आदमी हैं ।"

अभय मल्होत्रा अब साफ-साफ भयभीत दिखाई पड़ने लगा ।

"द... देखिये, लगता है, आप लोगों को कोई गलतफहमी हो गयी है ।"

यशवंत गवली ने उसकी बातों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया ।

इस बीच रागिनी और सावंत भी अंदर के कमरों से बाहर निकल आये थे ।

वह थ्री रुम सेट था । मगर अंदर के कमरों में कहीं कोई न था ।

यशवंत गवली के पीछे-पीछे जो क्राइम ब्रांच एजेंट अंदर घुसे थे, उन्होंने अंदर घुसते ही फ्लैट का दरवाजा अंदर से कसकर बन्द कर लिया और वहाँ पूरी मुस्तैदी के साथ खड़े हो गये, ताकि वह वहाँ से एकाएक भागना भी चाहे तो भाग न सके ।

पूरे फ्लैट की किलेबन्दी-सी कर दी गयी ।

मजबूत किलेबन्दी ।

"इस फ्लैट की एक-एक चीज की अच्छी तरह तलाशी लो ।" यशवंत गवली आदेश-सा दनदनाता हुआ बोला, "क्योंकि इसी फ्लैट के अंदर से हमें इस आदमी के जेंटलमैन किलर होने का प्रमाण मिलेगा ।"

फौरन सभी क्राइम ब्रांच एजेंट, रागिनी, सावंत, वे सब फ्लैट की तलाशी लेने में जुट गये ।

यशवंत गवली ने भी उनका साथ दिया ।

कवर्ड खोलकर देखे गये ।

कप-बोर्ड देखे गये ।

सारा सामान इधर से उधर फेंका जाने लगा । पूरे फ्लैट में हंगामा मच गया ।

जबरदस्त हंगामा ।

जो फ्लैट थोड़ी देर पहले तक बहुत तरीके से सजा-सँवरा नजर आ रहा था, वही अब बेहद उबड़-खाबड़ था ।

"देखिये, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ ।" अभय मल्होत्रा चीखकर बोला, "कि आप लोग यह सब क्या कर रहे हैं ! क्या आप लोगों के पास तलाशी के सर्च वारंट हैं ? व्हाई आर यू नोट रिप्लायिंग ? हेव यू ब्रोट अ सर्च वारंट ?"

उसी पल यशवंत गवली ने कोने में रखी मेज की निचली ड्राअर खोली ।

और ।

वह ड्राअर खोलते ही मानो बिजली-सी कड़कड़ायी ।

उस ड्राअर में ढेर सारी साँप-सीढ़ियाँ भरी हुई थीं ।

"सर्च वारंट ! रबिश ! यह रहा तलाशी का सर्च वारंट !" यशवंत गवली ने प्लास्टिक की वह तमाम साँप-सीढ़ियाँ ड्राअर के अंदर से निकालकर बाहर फेंकी, "प्लास्टिक की यह साँप-सीढ़ियाँ जिसे जेंटलमैन किलर मर्डर करने के बाद मर्डर स्पॉट पर छोड़कर जाता था ।"

उसके बाद यशवंत गवली ने एक के बाद एक टेबल की बाकी दोनों ड्राअर भी खोली ।

उन ड्राअर्स को खोलते ही और भी धमाके हुए ।

एक ड्राअर के अंदर से रिवॉल्वर बरामद हुई जबकि दूसरे ड्राअर में से उन सभी अपराधियों के फोटोग्राफ्स मिले जिनका मर्डर हो चुका था ।

"यह देखो !" यशवंत गवली उन सभी वस्तुओं को टेबल पर फैलाता हुआ बोला, "यह तलाशी का एक और सर्च वारंट । पॉइंट 32 कैलीबर की वही स्मिथ एंड वैसन रिवॉल्वर जिससे वह 8 मर्डर हुए और अन्य तमाम अपराधियों के फोटोग्राफ्स, जो मारे जा चुके हैं । क्या इन तमाम चीजों के बावजूद भी किसी सर्च वारंट की जरूरत रह जाती है, किसी सबूत की जरूरत रह जाती है ?"

अभय मल्होत्रा अब एकाएक साफ-साफ बौखलाया हुआ नजर आने लगा ।

उससे एकाएक कोई जवाब देते न बना ।

"बोलो मिस्टर अभय !" यशवंत गवली उस पर बुरी तरह हावी होता हुआ बोला, "क्या अभी भी तुम्हें कोई सबूत चाहिए ?"

अभय मल्होत्रा कुछ न बोला ।

उसी पल रागिनी ने वहीं बना एक वार्डरोब झटके के साथ खोला और उसकी भी तलाशी लेनी शुरु की ।

वार्डरोब में जो कपड़े भरे हुए थे वह सब उसने एक-एक करके बाहर निकालकर फेंके ।

अकस्मात उसे डॉक्टरों वाला वह सफेद ओवरऑल और स्टैथोस्कोप भी नजर आ गया जो वहीं कपड़ों के नीचे छुपाकर रखा गया था ।

" ऑफिसर !" वह तेजी से वह दोनों चीजें उठाकर यशवंत गवली की तरफ पलटी, "यह देखिए, डॉक्टर का वह ओवरऑल और स्टैथोस्कोप भी यहाँ मौजूद है जिसे पहनकर इसने महेश खोखा का मर्डर किया ।"

"गुड, वेरी गुड !" यशवंत गवली की आँखों में विलक्षण चमक कौंध उठी, "यानी इसके जेंटलमैन किलर होने के सभी प्रमाण हमें मिल चुके हैं ।"

यशवंत गवली के इतना कहने की देर थी, फौरन सभी क्राइम ब्रांच एजेंटों ने अभय मल्होत्रा को चारों तरफ से घेर लिया । जबकि यशवंत गवली धीरे-धीरे कदमों से चलता हुआ अभय मल्होत्रा के नजदीक पहुँचा ।

डॉक्टरों वाला ओवरऑल तथा स्टैथोस्कोप अब उसके हाथ में था ।

"मिस्टर अभय !" यशवंत गवली उन दोनों चीजों को अभय मल्होत्रा की आँखों के सामने नचाता हुआ बोला, "क्या तुम अब भी अपनी सफाई में कुछ कहना चाहोगे ? क्या तुम अब भी यही कहोगे कि तुम जेंटलमैन किलर नहीं हो ?"

अभय मल्होत्रा के चेहरे पर अब गहन हताशा के चिन्ह नजर आने लगे ।

वहीं एक कुर्सी पड़ी हुई थी, वह धम्म से उसी पर ढेर हो गया ।

●●●

अगला दिन मुंबई शहर में हंगामे से भरा दिन था ।

यह खबर पूरे शहर में आग की तरह फैली कि जेंटलमैन किलर पकड़ा गया ।

हर अखबार ने उस न्यूज़ को अलग-अलग तरीके से छापा । खूब मिर्च-मसाला लगाकर छापा ।

'टाइम्स ऑफ इंडिया' का हैडिंग था -

जेंटलमैन किलर अरेस्टेड, द एंड ऑफ ए मर्डर मिस्ट्री ।

'नवभारत टाइम्स' ने लिखा -

यशवंत गवली का एक और कारनामा, जेंटलमैन किलर गिरफ्तार ।

'सामना' ने हैडिंग दिया -

एक दहशत का अंत ।

'दैनिक यशोभूमि' ने लिखा ।

खूंखार कातिल जैंटलमैन किलर के चेहरे से यशवंत ने नकाब उठाई, वह अभय मल्होत्रा निकला ।

पूरे शहर में जेंटलमैन किलर और यशवंत गवली की ही चर्चा थी ।

हर कोई उन्हीं के बारे में बात कर रहा था ।

यशवंत गवली, जिसने मुंबई शहर को एक और बड़े संकट से मुक्ति दिलाई ।

●●●

वह क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर का इंटेरोगेशन रुम (पूछताछ कक्ष) था, जिसमें उस समय अभय मल्होत्रा एक कुर्सी पर बैठा था । उसके सिर के ठीक ऊपर एक काफी हाई पावर का बल्ब लटका था, जिसकी रोशनी में वह सिर से पांव तक नहा रहा था ।

उस समय पूरे इंटेरोगेशन रुम का माहौल बेहद खतरनाक था ।

रहस्य से भरा ।

रागिनी, सावंत तथा दूसरे कई क्राइम ब्रांच एजेंटों ने उसे चारों तरफ से घेरा हुआ था ।

यशवंत गवली, अभय मल्होत्रा के बिल्कुल सामने खड़ा था और वह सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगाता हुआ बड़े गौर से उसे देख रहा था ।

अभय मल्होत्रा से थोड़ा ही फासले पर एक दूसरी कुर्सी पड़ी थी । यशवंत गवली टहलता हुआ उसी कुर्सी पर आकर बैठ गया ।

अब यशवंत गवली और अभय मल्होत्रा के बीच में मुश्किल से दो फुट का फासला था ।

"मिस्टर अभय !" यशवंत गवली ने सिगरेट का एक और कश लगाया तथा सीधे उसकी आँखों में झांकता हुआ बोला, "जहाँ तक मैं समझता हूँ, अब तुमसे यह सवाल करना तो मूर्खतापूर्ण होगा कि तुम जेंटलमैन किलर हो या नहीं । क्योंकि तुम्हारे जेंटलमैन किलर होने के तमाम सबूत बरामद हो चुके हैं, तथा अब शक-शुबह की कहीं कोई गुंजाइश नहीं बची । हाँ, एक सवाल का जवाब मैं तुमसे जरूर चाहूँगा ।"

अभय मल्होत्रा कुछ न बोला ।

वह सिर्फ यशवंत गवली की तरफ देखता रहा ।

मगर ।

उसकी खामोशी में भी जैसे कुछ छुपा था ।

कोई राज ।

गहरा राज ।

"मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ ।" यशवंत गवली ने बात आगे बढ़ाई, "कि तुमने यह आठ खून किये, तो क्यों किये ? उन आदमियों से तुम्हारी क्या दुश्मनी थी, जो खुद इश्तिहारी मुजरिम थे, दुर्दांत कातिल थे ।"

"दुश्मनी !" अभय मल्होत्रा मानो अपने आपसे बड़बड़ाया ।

"हाँ, दुश्मनी !" यशवंत गवली बोला, "आखिर उन सबको मार डालने के पीछे कोई-न-कोई वजह तो जरूर रही होगी ।"

बिल्कुल खामोश बैठा अभय मल्होत्रा एकाएक यू बहुत जोर से खिलखिलाकर हँसा, जैसे उसे पागलपन का दौरा पड़ गया हो ।

जबरदस्त दौरा ।

उसकी हँसी यू चांदी के सिक्कों की तरह खनखानाती हुई थी जैसे रात के सन्नाटे में शमशान के अंदर कोई चुड़ैल हँसी हो ।

या किसी दानव ने अट्टहास लगाया हो ।

जबकि उसे यू वहशियों की तरह खिलखिलाते हुए देखकर सब सन्न रह गये, भौंचक्के ।

"अभय !" यशवंत गवली चीखा ।

"हाँ, सही कहा आपने ! बिल्कुल सही कहा ऑफिसर !"

अभय मल्होत्रा ने यशवंत गवली का चीखना मानो सुना ही नहीं । वह उसकी तरफ देखता हुआ बिल्कुल पागलों की तरह बड़बड़ाया, "सचमुच बहुत बड़ी दुश्मनी थी मेरी उन सबसे, बहुत गहरी दुश्मनी ।"

यशवंत गवली सहित तमाम क्राइम ब्रांच एजेंट को अपने शरीर में सिरहन दौड़ती महसूस हुई ।

जिस्म का मानो एक-एक रोआँ खड़ा होता चला गया ।

अभय मल्होत्रा पागल नजर आ रहा था, बिल्कुल पागल ।

"जानते हो ऑफिसर !" अभय मल्होत्रा कुर्सी पर बैठा-बैठा आगे को झुक गया और बड़बड़ाया, "मेरी उनसे इतनी गहरी दुश्मनी थी कि उस दुश्मनी के मुकाबले मैंने उन्हें बहुत आसान मौत दे दी, बहुत ज्यादा आसान मौत ।"

"अ... आसान मौत !"

यशवंत गवली को झटके पर झटके लग रहे थे ।

"हाँ, ऑफिसर ! मैंने उन्हें आसान मौत ही तो दी ।" अभय मल्होत्रा बड़बड़ाया, "एक गोली लगी, और बस खेल खत्म । सब कुछ कितनी आसानी से निपट गया ! उन्हें पता भी नहीं लगा कि वह कब मर गये । इससे ज्यादा आसान मौत और क्या होगी ?"

सबकी आँखों में खौफ की परछाइयाँ तैर गयीं । यह आदमी जरूरत से ज्यादा डेंजर नजर आ रहा था ।

"तो फिर तुम उन्हें कैसी मौत देना चाहते थे ?" यशवंत गवली ने सिगरेट का एक कश और लगाया । उसकी निगाहें अब अभय मल्होत्रा के चेहरे से हट नहीं रही थीं ।

"मैं उन्हें बहुत खतरनाक मौत देना चाहता था ।" बोलते-बोलते अभय मल्होत्रा मानो कहीं ख्वाबों की दुनिया में खो गया, "जानते हो यशवंत, अगर क्रिमिनोलॉजी (अपराध साहित्य) के इस स्टूडेंट अभय मल्होत्रा को पूरा मौका मिलता ।" उसने एकाएक दाँत किटकिटाये, "तो मैं उनकी बोटी-बोटी कर डालता । चिथड़े-चिथड़े करके उनकी लाश चील-कौव्वों को खिला देता ।"

उसकी आवाज में नफरत झलक रही थी ।

बेपनाह नफरत ।

मानो सचमुच उसका बस नहीं चला था ।

"लेकिन क्यों !" यशवंत गवली बोला, "तुम उन्हें इतनी बुरी मौत क्यों मारना चाहते थे ? तुमने अभी कहा, तुम क्रिमिनोलॉजी के स्टूडेंट हो । अपराध साहित्य के स्टूडेंट । फिर तुम भी एक कातिल बन गए, इतने बड़े खूनी !"

"यह सच है ।" अभय मल्होत्रा जहरीले नाग की तरह फुफकारा, "कि मैं क्रिमिनोलॉजी का स्टूडेंट हूँ । एक वकील बनना चाहता था मैं ! मुंबई शहर का सबसे बड़ा वकील । जो कानून की हिफाजत करे, अपराधियों के खिलाफ लड़े । मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं ऐसे मजबूर और बेसहारा लोगों का केस लड़ूं, जिन्हें इंसाफ नहीं मिल पाता तथा जिनकी सारी उम्र कोर्ट कचहरी के चक्कर काटते गुजर जाती है । लेकिन जानते हो ऑफिसर ! इंसान की जिंदगी में सब कुछ वैसा ही तो नहीं हो जाता, जैसा इंसान सोचा करता है ।" बोलते-बोलते अभय मल्होत्रा भावुक हो उठा, हद से ज्यादा जज्बाती, "हम अपने सपनों का एक अलग खूबसूरत आसमान बनाते हैं । उसमें अपनी कल्पनाओं के नए-नए इंद्रधनुषी रंग सजाते हैं । चांद-सितारों की दुनिया होती है हमारी । लेकिन फिर बदनसीबी की आँधी आकर एक ही झटके में हमारा सब कुछ उजाड़ डालती है, सब कुछ । कुछ नहीं बचता । जिंदगी एक मुट्ठी रेत में सिमट जाती है और वह रेत भी धीरे-धीरे हमारी मुट्ठी से फिसलने लगता है । यही जिंदगी है, यही जिंदगी की फिलॉसफी है ।"

यशवंत गवली हैरानी से अभय मल्होत्रा को देखने लगा ।

न सिर्फ यशवंत गवली, बल्कि रागिनी, सावंत तथा दूसरे क्राइम ब्रांच एजेंट भी । एक हत्यारे के मुँह से इस तरह की बातें सुनने को मिलेंगी, यह उनमें से किसी ने न सोचा था ।

"आप सब लोग शायद मुझे पागल समझ रहे होंगे ।" अभय मल्होत्रा फुसफुसाकर बोला, फिर वह थोड़ा आगे को झुक गया, "एक बात बताऊँ ऑफिसर ?"

उसकी आवाज अभी भी फुसफुसाई हुई थी ।

"क्या ?"

"अब तो खुद मुझे भी लगने लगा है कि मैं पागल हो चुका हूँ । फिर अगर आप लोग ही मुझे पागल समझ रहे हैं तो क्या गलत है ! हा, हा ! समझो-समझो ! मैं पागल हूँ, सबसे बड़ा पागल !"

वह शब्द कहते हुए अभय मल्होत्रा और भी ज्यादा जोर-जोर से खिलखिलाकर हँसने लगा ।

खूब जोर-जोर से खिलखिलाकर ।

उसकी हँसी सचमुच दहला देने वाली थी । उसे मानो इस बात की कोई परवाह न थी कि वह अरेस्ट हो चुका है ।

●●●

यशवंत गवली ने गहरी साँस ली और कुर्सी की पुश्त से पीठ लगा ली ।

सिगरेट का टोटा वह नीचे फर्श पर फेंक चुका था और उसे जूते से रगड़कर मसला । इंटेरोगेशन रूम का माहौल अब और भी ज्यादा रहस्यमई था । इतना ही नहीं, अभय मल्होत्रा भी फिलहाल उन सबके लिए पल-प्रतिपल एक गहरी पहेली बनता जा रहा था ।

सच तो यह है, जेंटलमैन किलर नाम का वह कैरक्टर जितना पकड़े जाने से पहले सस्पेंसफुल था, उतना ही अभी भी सस्पेंस के जाल में उलझा था ।

"लेकिन तुमने यह नहीं बताया ।" यशवंत गवली, अभय मल्होत्रा के चेहरे पर नजरें गड़ाये-गड़ाये वापस पहले वाले सवाल पर लौटा, "कि तुमने यह सभी खून क्यों किए तथा तुम उन्हें और भी ज्यादा बेरहमी के साथ क्यों मारना चाहते थे ?"

"बताता हूँ, यह भी बताता हूँ ।" अभय मल्होत्रा के चेहरे पर वहशीपन बरस रहा था, "ऑफिसर, शायद आपने सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा का नाम सुना होगा ।"

यशवंत गवली चौंका ।

सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा ! यह नाम सुनकर न सिर्फ यशवंत गवली बल्कि वहाँ खड़े दूसरे लोगों के दिमाग की भी घण्टी बजी ।

"क्या वही सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा !" यशवंत गवली बोला, "जो मुम्बई टाइम्स अखबार के मालिक थे ?"

"करेक्ट ! मैं उन्हीं सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा की बात कर रहा हूँ ।"

यशवंत गवली की हैरानी बढ़ी ।

"मगर उन सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा का इस पूरे केस से क्या ताल्लुक है ?"

"ताल्लुक है, बहुत गहरा ताल्लुक है ।"

"क्या ?"

"सबसे पहला ताल्लुक तो यही है ।" अभय मल्होत्रा धमाका-सा करता हुआ बोला, "कि यह जेंटलमैन किलर,यह खतरनाक खूनी, उन्हीं सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा का इकलौता बेटा है ।"

"क्या कह रहे हो तुम ?" सबके नेत्र आश्चर्य से फैले के फैले रह गये, "तुम सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा के बेटे हो, मगर वह तो मुम्बई शहर की एक हस्ती थे ।"

"हाँ, हस्ती थे वो ! मुम्बई शहर की हस्ती ।" अभय मल्होत्रा पुनः खिलखिलाकर हँसा, "लेकिन जानते हो ऑफिसर ! आज से छः महीने पहले उन्हीं सुरेंद्र प्रताप मल्होत्रा को एक रात कुछ दरिंदों ने उन्हीं के घर में घुसकर कत्ल कर डाला, मार डाला उन्हें । न सिर्फ उन्हें, बल्कि उनकी पत्नी को भी, उनकी बेटी को भी । उस रात मुंबई शहर की उस महान हस्ती के घर में तीन-तीन खून हुए थे, तीन-तीन खून । परंतु मुंबई पुलिस किसी अपराधी को नहीं पकड़ पाई, किसी को भी नहीं ।"

यह शब्द कहते-कहते अभय मल्होत्रा की खिलखिलाहट और बुलंद हो गई ।

पहले से भी ज्यादा बुलंद ।

"कितनी हैरानी की बात है यशवंत ?" जबकि अभय मल्होत्रा दीवानगी के आलम में धाराप्रवाह बोलता चला गया, "मुंबई शहर की उस महान हस्ती के घर में इतना बड़ा कांड हो गया, लेकिन पुलिस हाथ पर हाथ रखकर बैठी रही । वह मर्डर केस फाइल सिर्फ इसलिए बंद कर दी गई क्योंकि पुलिस के पास हत्यारों तक पहुँचने के लिए कोई सबूत ही नहीं था । पुलिस ऐसा कोई सुराग पता ही नहीं लगा पाई थी, जिससे वह अपना जाँच कार्य आगे बढ़ा पाती ।"

"लेकिन एक बात समझ नहीं आई मिस्टर अभय !" यशवंत गवली अपलक उसे देखता हुआ बोला, "जब उस रात कुछ दरिंदों ने सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा के घर में घुसकर उसकी पूरी फैमिली का मर्डर कर डाला, तो तुम कैसे बच गये ?"

"अच्छा सवाल है । मैं जानता था कि मुझसे यह सवाल जरूर पूछा जायेगा । मैं इसलिये बच गया ऑफिसर, क्योंकि मैं उस रात अपने कॉलेज के हॉस्टल में था । मुम्बई शहर से बहुत दूर पूना में था ।"

"ओह !"

यशवंत गवली के होंठ सिकुड़ गये ।

"लेकिन अच्छा होता यशवंत, बहुत अच्छा होता ।" अभय मल्होत्रा खोये-खोये स्वर में बोला, "अगर उसी रात यह अभय भी उन दरिंदों की गोलियों का शिकार हो जाता, मर जाता यह अभय ! जानते हो, उस दिन के बाद से इस अभय मल्होत्रा की दुनिया ही बदल गयी थी । यह अभय जो कानून का मुहाफिज बनना चाहता था, मजलूम और बेसहारा लोगों के लिये लड़ना चाहता था, उस अभय मल्होत्रा को अपराधियों से इतनी नफरत हो गयी कि उसने उन्हें मारने के लिये कानून का नहीं, बल्कि खुद अपने रिवॉल्वर का सहारा ले लिया ।"

"यानी तुम जेंटलमैन किलर बन गये ।"

"बिल्कुल ऑफिसर ! क्योंकि अब यही एक रास्ता मेरे सामने था ।" अभय मल्होत्रा पहले की तरह दीवानावार अंदाज में बोला, "मैंने कसम खाई, मैं मुंबई शहर से एक-एक अपराधी को खत्म कर डालूँगा । आखिर उन्हीं में से कोई एक मेरे मम्मी-डैडी का भी कातिल होगा, मेरी बहन का भी कातिल होगा । अगर मैं एक-एक करके मुंबई शहर के तमाम अपराधियों को मार डालूँगा, तो वह दरिंदे खुद-ब-खुद खत्म हो जाएंगे । वह अपने आप मर जाएंगे । मैंने सही सोचा न ऑफिसर ?"

न सिर्फ यशवंत गवली बल्कि रागिनी, सावंत तथा इंटेरोगेशन रुम में खड़े सभी क्राइम ब्रांच एजेंट उसकी बात सुनकर दंग रह गए ।

वह विस्मित निगाहों से उसे देखने लगे ।

इसमें कोई शक नहीं, वह पागल हो चुका था ।

बिल्कुल पागल ।

"और तुम हर लाश के पास प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी क्यों छोड़ते थे ?" यशवंत गवली ने कौतुहलतापूर्वक यह सवाल भी पूछ ही लिया ।

"प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी, प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी ।" वह फिर बहुत जोर से खिलखिलाकर हँसा, "बताऊँ, मैं वह साँप-सीढ़ी क्यों छोड़ता था ?"

"हाँ ।" यशवंत गवली उसकी आँखों में झांकता हुआ बोला, "बताओ !"

" ऑफिसर, मैं छोटा-सा था, बहुत छोटा सा !" अभय मल्होत्रा वहशियाना लहजे में बोला, "तभी से मुझे साँप-सीढ़ी खेलने का बहुत शौक था । और देखो, आज मेरी जिंदगी खुद साँप-सीढ़ी की एक मिसाल बन गई है । ऑफिसर, मैंने जब-जब तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़नी चाही, तब तब मुझे हर खाने पर एक साँप बैठा मिला, जहरीला साँप । जिसने मुझे डसकर वापस पहले से भी ज्यादा नीचे वाले खाने पर धकेल दिया । मैं चार सीढ़ी चढ़ने की कोशिश करता और साँप मुझे डसकर दस से भी ज्यादा सीढ़ी नीचे ले जाकर पटक देता । साँप-सीढ़ी का खेल, जो कभी मैं शौक-शौक में खेलता था, वह आगे चलकर मेरी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गया और अपने सपनों, अपने अरमानों की सीढ़ियाँ चढ़ने की कोशिश करते समय मुझे सबसे बड़ी चोट तो इन दरिंदों ने दी, जिन्होंने मेरे पूरे परिवार का खून कर डाला । वह मेरे लिये सबसे ज्यादा जहरीले साँप साबित हुए । क्योंकि उनकी उस हरकत के बाद तो मेरी जिंदगी में कुछ बचा ही नहीं, कुछ भी नहीं ।"

अभय मल्होत्रा एकाएक बहुत जज्बाती हो उठा, हद से ज्यादा भावुक ।

ऐसा लगा, जैसे वह अभी रो पड़ेगा ।

"जानते हो ऑफिसर !" अभय मल्होत्रा थोड़ा रुककर पुनः बोला, "उन दरिंदों ने साँप-सीढ़ी की बिसात पर धकेलकर मुझे वापस उस पहले खाने में पहुँचा दिया था, जहाँ से मुझे दोबारा अपनी जिंदगी का सफर शुरु करना था और देखो, मैंने जेंटलमैन किलर के रूप में अपनी जिंदगी का दूसरा सफर शुरु किया । मगर इस बार मैंने एक चालाकी की ऑफिसर !" वह आगे को झुक गया और फुसफुसाया, "इस बार मैं सीढ़ी चढ़ने वाली गोट नहीं बना, बल्कि मैं साला खुद ही डसने वाला नाग बन गया । झंझट ही खत्म !"

यह बात कहकर अभय मल्होत्रा एक बार फिर जोर से ठठाकर हँसा ।

बहुत जोर से ।

जैसे उसने कोई बहुत बढ़िया बात कही हो ।

"अब तो आप समझ गये होंगे ऑफिसर !" अभय मल्होत्रा बोला, "मैं हर लाश के पास प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी क्यों छोड़ता था । मैंने उन हरामजादों की जिंदगी को ही एक साँप-सीढ़ी का खेल बना दिया था ।"

वह हँसता रहा ।

जोर-जोर से हँसता रहा ।

जबकि यशवंत गवली सहित सभी को अपने शरीर में सिरहन दौड़ती महसूस हुई ।

●●●

यशवंत गवली चहलकदमी-सी करता हुआ इंटरोगेशन रूम से बाहर निकल आया । वह उस समय बहुत थका-थका-सा नजर रहा था ।

उसके पीछे-पीछे बाकी सब भी बाहर निकल आये । अलबत्ता इंट्रोगेशन रूम में अभय मल्होत्रा के खिलखिलाकर हँसने की आवाज अभी भी गूँज रही थी ।

"क्या सोच रहे हैं ऑफिसर ?" रागिनी उसके नजदीक आकर बोली ।

वह काफी संजीदा थी ।

एकाएक माहौल ही ऐसा बन गया था ।

"कुछ नहीं ।" यशवंत गवली के स्वर में भी उदासी थी ।

उसने एक सिगरेट सुलगा ली ।

"फिर भी, कुछ तो ।"

"सोच रहा हूँ ।" यशवंत गवली सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगाता हुआ बोला, "जेंटलमैन किलर को हम लोग जितना दुर्दांत अपराधी समझ रहे थे, वह शायद उतना है नहीं । आखिर जो कुछ उसने किया, हालातों का शिकार होकर किया । ऐसी परिस्थिति में कोई भी यह कदम उठा सकता है, जो उसने उठाया ।"

"आप ठीक कह रहे हैं ऑफिसर ! अपने परिवार की मौत का उसके दिलो-दिमाग पर जरूरत से ज्यादा सदमा पहुँचा है ।"

"लेकिन अब हम लोगों ने क्या करना है ?" सावंत ने बोला ।

"हमने कुछ नहीं करना ।" यशवंत गवली ने कहा, "जेंटलमैन किलर के अरेस्ट होते ही हमारी तरफ से केस क्लोज हो चुका है । अब जो करेगी, अदालत करेगी ।"

●●●

अगला दिन एक हंगामे से भरा दिन था । जबरदस्त हंगामें से भरा हुआ ।

क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर ने अभय मल्होत्रा को मुम्बई पुलिस के हवाले कर दिया था । जबकि मुम्बई पुलिस ने फाइनल चार्ज शीट लगाकर उसे कोर्ट में पेश किया ।

जब पब्लिक को यह पता चला कि आज अभय मल्होत्रा को कोर्ट में पेश किया जाना है, तो वहाँ हजारों की तादाद में भीड़ जमा हो गयी ।

हर कोई जेंटलमैन किलर को एक नजर देखना चाहता था ।

भीड़ में उसको लेकर गजब की उत्सुकता थी ।

पुलिस ने बैरिकेट्स लगाकर भीड़ को बड़ी मुश्किल के साथ काबू में किया । जबकि अभय मल्होत्रा को एक बख्तरबंद जीप में बिठाकर पिछले गेट से कोर्ट में ले जाया गया । जहाँ वह पुलिस के सख्त पहरे के बीच कोर्ट रूम के अंदर पहुँचा ।

कोर्ट रूम के अंदर का दृश्य भी बेहद विहंगमकारी था ।

खचाखच भरा हुआ ।

वहाँ मानो तिल रखने की भी जगह न थी ।

दर्शक दीर्घा में पुलिसकर्मियों, प्रेस रिपोर्टरों, प्रेस फोटोग्राफरों तथा टीवी चैनलों के विशेष संवाददाताओं की अपार भीड़ थी । अभय मल्होत्रा जैसे ही वहाँ पहुँचा, तुरंत कैमरों की फ़्लैश लाइटें चमकने लगीं ।

टीवी कैमरे ऑन हो गये ।

अभय मल्होत्रा को सीधे कटघरे में ले जाकर खड़ा कर दिया गया ।

दर्शक दीर्घा में अब और भी ज्यादा शोर-शराबा होने लगा ।

"साइलेंस ! साइलेंस !"

जज ने हथौड़ी उठाकर उसे कई मर्तबा अपनी डेस्क पर पटकी ।

फौरन वहाँ पिन ड्राप साइलेंस जैसी स्थिति हो गयी । कहीं कोई आवाज नहीं ।

सन्नाटा ।

जबकि जज ने अपनी ऐनक दुरुस्त करके कटघरे में खड़े अभय मल्होत्रा को गौर से देखा ।

"मिस्टर अभय !" जज की भारी-भरकम आवाज गूँजी, "क्या तुमने अपने डिफेंस (बचाव पक्ष) के लिये कोई वकील नहीं किया है ?"

"नहीं, मैंने अपने बचाव पक्ष के लिये कोई वकील नहीं किया ।" अभय मल्होत्रा का स्वर नपा-तुला था ।

और ।

उसका यह जवाब सुनकर सब चौंके ।

सबकी हैरानी बढ़ी ।

"लेकिन क्यों ?" जज बोला, "तुमने अपने बचाव पक्ष के लिये वकील क्यों नहीं किया ?"

"क्योंकि मैं इसकी जरूरत नहीं समझता ।" कटघरे में खड़े अभय मल्होत्रा का स्वर पहले की तरह धैर्यपूर्ण था, "अपना डिफेंस लड़ने के लिये वकील वह करते हैं, जो यह मानते हैं कि उन्होंने कुछ गलत किया है । जबकि मैं ऐसा नहीं समझता कि मैंने जो कुछ किया, वह गलत था ।"

"मगर ऐसा सोचना तुम्हारी भूल भी तो हो सकती है ?"

"नहीं जज साहब, यह मेरी भूल नहीं, यह एक सच्चाई है !"

अभय मल्होत्रा की बातों से कोर्ट में एक बार फिर पहले की तरह खलबली मच गयी ।

फिर शोर-शराबा होने लगा ।

"साइलेंस ! साइलेंस !"

जज ने डेस्क पर हथौड़ी पटकी ।

कोर्ट रुम में पुनः शांति स्थापित हो गयी ।

गहन शांति ।

●●●

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर (सरकारी वकील) अब अपनी कुर्सी छोड़कर उठा और चहलकदमी-सा करता हुआ अभय मल्होत्रा के सामने पहुँचा ।

उसकी आँखों में ऐसे चालाकी भरे भाव थे, जैसे अपने शिकार को देखकर शिकारी की आँखों में होते हैं ।

उसी पल पेशकार भी गीता ले आया और कटघरे के नजदीक पहुँचा ।

"मिस्टर अभय !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने अपना काला चोगा दुरुस्त करते हुए कहा, "मैं तुमसे कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ, लेकिन उससे पहले तुम कसम खाओ कि तुम जो कहोगे, सच कहोगे ।"

अभय मल्होत्रा ने अब अपना दायाँ हाथ गीता पर रख दिया ।

"मैं गीता पर हाथ रखकर सौगन्ध खाता हूँ ।" अभय मल्होत्रा बोला, "कि मैं जो कहूँगा, सच कहूँगा । सच के सिवाय कुछ नहीं कहूँगा ।"

"गुड !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के होंठों पर यूँ शातिराना मुस्कुराहट दौड़ी, मानो उसने कोई बड़ा किला फतेह कर लिया हो, "हाँ, तो मिस्टर अभय, सबसे पहले मैं तुमसे यह पूछना चाहूँगा कि पिछले दिनों शहर के अंदर अपराधियों के एक के बाद एक जो मर्डर हुए, क्या वह सब तुमने किये ?"

अभय मल्होत्रा कुछ न बोला ।

"मिस्टर अभय !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर पुरजोर लहजे में बोला, "हाँ, मैंने मारा उन सबको, मैंने । वह सब मर्डर मैंने किये ।"

कोर्ट में खलबली मच गयी ।

जबरदस्त खलबली ।

किसी को उम्मीद नहीं थी । वह दुर्दांत हत्यारा इतनी आसानी से भरी अदालत में अपने जुर्म का इकबाल कर लेगा ।

और !

अभय मल्होत्रा का जवाब सुनकर एक पल के लिये पब्लिक प्रॉसीक्यूटर भी हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि इस तरह के जवाब की उम्मीद उसे भी नहीं थी ।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने अपना काला-चोगा दोबारा से दुरुस्त किया ।

"यानी तुम कबूल करते हो ।" इस बार उसकी आवाज दबी-दबी थी, "कि तुम्हीं जेंटलमैन किलर हो ?"

"यस, मैं कबूल करता हूँ ।" अभय मल्होत्रा पुनः बे-धड़क अंदाज़ में बोला, "कि मैं ही जेंटलमैन किलर हूँ ।"

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के अब पसीने छूट गये ।

उसने रुमाल निकालकर जल्दी से अपने माथे पर चुहचुहा आये पसीने साफ किये ।

खुद जज भी अभय मल्होत्रा का जवाब सुनकर आश्चर्यचकित था ।

"लेकिन तुमने वह सब मर्डर क्यों किये, क्या वजह थी ?"

"उसके पीछे एक लम्बी कहानी है, वकील साहब, बहुत लम्बी कहानी ।"

"अदालत वह कहानी जानना चाहती है ।"

"ठीक है, मैं वह कहानी बताऊँगा, सबको बताऊँगा ।"

यह शब्द बोलते-बोलते कटघरे में खड़ा अभय मल्होत्रा मानो कहीं खोता चला गया, अतीत की गहराइयों में ।

जबकि दर्शक दीर्घा में मौजूद टीवी संवाददाताओं ने फौरन अपने टीवी कैमरे ऑन कर दिए थे । वह एक-एक पल की कवरेज अपने टीवी कैमरों में कैद कर लेना चाहते थे ।

"अभी ज्यादा वक्त नहीं गुजरा ।" अभय मल्होत्रा खोये-खोये लहजे में बोला, "सिर्फ साल भर पहले की बात है, जब मेरा भी एक घर था, हँसता-खेलता घर ।"

अभय मल्होत्रा की आवाज लरजने लगी ।

उसके चेहरे पर भावनाओं का समंदर उमड़ आया ।

ऐसा लगा, जैसे उसकी आँखों में अतीत का कोई चलचित्र घूमने लगा हो ।

फिर वह अपने परिवार की तबाही की वही कहानी उन सबको सुनाता चला गया, जो यशवंत गवली को सुनाई थी । सबने बहुत स्तब्ध होकर वह दास्तान सुनी, बेहद विस्मित अंदाज में ।

यह जानकर उन सबको शॉक लगा कि वह सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा का बेटा है ।

मुम्बई टाइम्स अखबार के मालिक का बेटा ।

"दोस्तों, इस तरह यह अभय मल्होत्रा !" वह भावनाओं के प्रवाह में बोला, "सुरेन्द्र प्रताप मल्होत्रा का यह बेटा, जो वकील बनना चाहता था, जो क्रिमिनलॉजी का स्टूडेंट था, वह एक खूनी बन गया, बेरहम खूनी । यही इस जेंटलमैन की कहानी है । आप मेरे बारे में कुछ और पूछना चाहते हैं, तो वह भी बेहिचक पूछें ।"

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के पास अब उससे पूछने के लिये कुछ न था ।

"मिस्टर प्रॉसीक्यूटर !" जज ने अपनी ऐनक दुरुस्त करके सरकारी वकील की तरफ देखा, "डू यू वांट टू आस्क ऐनी क्वेश्चनस टू अभय मल्होत्रा ?"

"नो मीलॉर्ड, आई डोंट वांट टू आस्क ऐनी मोर क्वेश्चनस !"

सरकारी वकील काफी उत्साह से कटघरे की तरफ आया था, मगर अब वह अजीब संशोपंज जैसी स्थिति में चलता हुआ वापस अपनी सीट पर जा बैठा ।

"ठीक है, तो फिर यह अदालत कल तक के लिए बर्खास्त की जाती है ।"

जज कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ ।

उसके साथ-साथ वह पूरी अदालत उठी ।

जिस तरह बेहद हंगामाई माहौल में कोर्ट की कार्यवाही शुरू हुई थी, उसी तरह हंगामाई माहौल में खत्म हो गई ।

●●●

कोर्ट का अगला दिन और भी ज्यादा हंगामें से भरा था, क्योंकि उस दिन जज ने अपना महत्वपूर्ण फैसला सुनाना था ।

सुबह से ही कोर्ट के बाहर भीड़ जमा होनी शुरू हो गई ।

पुलिस ने भी आज की कार्यवाही को मद्देनजर रखते हुए पहले से ही भीड़ को काबू में करने के सारे इंतजाम किए थे । रोड ब्लॉक करने और लोहे के बैरिकेट्स लगाने जैसे तमाम कार्य कर लिए गए ।

फिर भी कोर्ट की कार्यवाही शुरू होने तक वहाँ भारी-भरकम भीड़ जमा हो चुकी थी ।

अभय मल्होत्रा को कल की तरह ही आज भी पिछले गेट से कोर्ट रूम में ले जाया गया, जबरदस्त सुरक्षा व्यवस्था के बीच ।

फिर वह समय भी आया जब न्यायाधीश महोदय ने अपना फैसला सुनाया ।

"तमाम हालातों, सबूतों और गवाहों के बयान सुनने के बाद यह अदालत इस नतीजे पर पहुँची है ।" जज की भारी-भरकम आवाज गूँजी, "कि अभय मल्होत्रा एक खूंखार अपराधी है और उसने वह सभी कत्ल एक सोची-समझी साजिश के तहत किये । हालांकि अभय मल्होत्रा के परिवार के साथ जो कुछ हुआ, उससे अदालत को पूरी हमदर्दी है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अदालत किसी आदमी को कानून अपने हाथ में लेने की इजाजत दे दे । यह अदालत अभय मल्होत्रा को पूरी तरह मुजरिम करार देती है और उसे इंडियन पेनल कोड की दफा 302 के तहत फाँसी की सजा सुनाती है ।"

फाँसी की सजा सुनते ही अभय मल्होत्रा एकाएक जोर से खिलखिलाकर हँस पड़ा ।

बहुत जोर-जोर से, पागलों की तरह ।

"हाँ-हाँ, मैं सचमुच इसी सजा का हकदार हूँ ।" वह कटघरे में खड़ा-खड़ा चिल्लाया, "मुझे मर जाना चाहिए ।"

फिर एकाएक उसे मानो पागलपन का दौरा पड़ गया ।

वह अपना हाथ और सिर जोर-जोर से कटघरे की रेलिंग पर पटककर मारने लगा । तुरंत चार-पाँच पुलिसकर्मियों ने दौड़कर उसे दबोचा, वरना शायद वह खुद को लहूलुहान ही कर लेता ।

पुलिसकर्मी अब उसे दबोचकर कोर्ट रुम से बाहर खींचते हुए ले गए ।

"हाँ-हाँ, मैं फाँसी की सजा का हकदार हूँ । मुझे यही सजा मिलनी चाहिए ।"

अभय मल्होत्रा के खिलखिलाकर हँसने की आवाज लगातार गूँज रही थी । लगातार ।

कोर्ट रुम में सब अपनी-अपनी जगह जड़वत खड़े थे ।

बेहद स्तब्ध ।

कोई नहीं समझ पा रहा था, जेंटलमैन किलर को वह सजा सही मिली है या गलत !

●●●

हरिनारायण आप्टे अपनी रिवाल्विंग चेयर पर बैठे थे और एकदम शांत थे ।

यशवंत गवली उनके सामने बैठा था ।

रागिनी भी वहाँ थी ।

"यह तो तुम्हें मालूम ही होगा ऑफिसर !" हरिनारायण आप्टे बोले, "कि अभय मल्होत्रा को फाँसी की सजा सुनाई जा चुकी है और इस संडे को उसे फाँसी भी दे दी जाएगी ।"

"क्या वह हाईकोर्ट में अपनी सजा के खिलाफ कोई एप्लीकेशन नहीं दे रहा ?" यशवंत गवली बोला ।

"नहीं ।"

"क्यों ?"

यशवंत गवली के स्वर में आश्चर्य था ।

"इस क्यों का जवाब तो अभय मल्होत्रा ही बेहतर दे सकता है ।

"हाँ, इतना तय है कि उसे फाँसी की सजा का कोई खौफ नहीं । वह जैसे खुद आगे बढ़कर मौत को गले लगा रहा है । अगर उसके अंदर जीने की ख्वाहिश होती, तो वह कोर्ट में पहले ही अपना डिफेंस लॉयर नियुक्त करता, मगर उसने ऐसा नहीं किया । इतना ही नहीं, उसने भरी अदालत में बेखौफ इस बात को भी कबूल किया कि वही जेंटलमैन किलर है, उसी ने वह मर्डर किए । इन सब बातों से यह साफ़-साफ़ साबित होता है कि उसका दीन-दुनिया से मोहभंग हो चुका है, अपने परिवार की सामूहिक हत्या के बाद उसकी जिंदगी में ऐसा कुछ भी नहीं बचा जो वह अपनी जिंदगी से प्यार करे । अलबत्ता अभय मल्होत्रा की एक बात मुझे बड़ी हैरान कर रही है ।"

"क्या ?"

"अभय मल्होत्रा से जब उसकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो उसने कहा कि वह मरने से पहले एक बार यशवंत गवली से मिलना चाहता है ।"

"क्या कह रहे हैं आप ?" यशवंत गवली, अभय मल्होत्रा की अंतिम इच्छा सुनकर बुरी तरह चौंका ।

और ।

चौंकी रागिनी भी थी ।

"यशवंत गवली से मिलना चाहता है ।" रागिनी के स्वर में भी सस्पेंस था, "लेकिन क्यों ?"

"यह बात तो मुझे भी नहीं मालूम कि वह क्यों मिलना चाहता है । अलबत्ता उसने यशवंत गवली से मिलने की काफी तीव्र इच्छा जाहिर की है । उसका कहना है कि उसे यशवंत गवली से कोई बहुत जरूरी बात करनी है ।"

"वह मुझसे कोई जरूरी बात नहीं करना चाहता होगा ।" यशवंत गवली बोला, "वह मुझसे मिलकर फिर कोई नया शगूफा छोड़ेगा । फिर कोई ऐसी बात बताएगा जो दिमाग की घंटी बज जाए । मैंने कहा

न, वह आदमी पागल हो चुका है। अब जबकि वह भरी अदालत में अपने जुर्म का इकबाल कर चुका है, खुद अपने जबान से कह चुका है कि वह जेंटलमैन किलर है और वह खून उसने किए, तो वह मुझसे मिलकर क्या करेगा ? उसके पास अब कहने को बचा ही क्या है ?"

"शायद कुछ बचा हो।" हरिनारायण आप्टे बोले, "शायद कुछ ऐसा हो जिसका जिक्र वह तुम ही से करना चाहे।"

"मुझे नहीं लगता कि ऐसा कुछ होगा सर !"

"यानी आप उससे मिलने नहीं जाओगे ऑफिसर ?" यह स्वर रागिनी का था।

"नहीं।" यशवंत गवली ने एकदम स्पष्ट इनकार किया।

हरिनारायण आप्टे और रागिनी अब एक-दूसरे की तरफ देखने पर विवश हो गए। उनकी खामोशी भी जैसे कुछ कह रही थी।

फिर हरिनारायण आप्टे ने गहरी साँस लेकर रिवाल्विंग चेयर की पुश्त से पीठ लगा ली और अपना हवाना सिगार सुलगाया।

"ऑफिसर !" वह बोले, "जहाँ तक मैं समझता हूँ, तुम्हें उससे मिलने जाना चाहिए। भले ही वह पागल इंसान ही सही। उसके पास तुमसे कहने के लिए कुछ न हो, लेकिन मत भूलो, यह एक फाँसी पर चढ़ने वाले इंसान की आखिरी ख्वाहिश है।"

"सर सही कह रहे हैं ऑफिसर !" रागिनी भी बोली, "आपने सचमुच उससे एक बार मुलाकात करनी चाहिए और फिर वह वैसे भी पूरी तरह नफरत के लायक इंसान तो नहीं।"

"ओके अगर आप लोगों की इच्छा है तो मैं उससे मिलने चला जाऊँगा।"

"गुड।"

हरिनारायण आप्टे और रागिनी मुस्कुराने लगे।

●●●

बहरहाल, यशवंत गवली और अभय मल्होत्रा की वह मुलाकात कहानी में एक विहंगमकारी मोड़ साबित हुई। इस मुलाकात में अभय मल्होत्रा ने सचमुच एक ऐसा शगूफा छोड़ा, जिसने पूरी कहानी को पहले से भी ज्यादा दिलचस्प बना डाला।

सुबह के उस समय दस बज रहे थे जब यशवंत गवली सेंट्रल जेल पहुँचा।

वहाँ पहुँचकर उसने सबसे पहले जेलर से मुलाकात की।

जेलर का नाम विट्ठलराव चव्हाण था। वह लगभग पचास-पचपन के पेटे में पहुँचा हुआ आदमी था, मगर अपनी उम्र से कहीं अधिक ही लगता था। इसकी सबसे बड़ी वजह शायद उसका मोटापा था, तोंद किसी घड़े की तरह फूलकर बाहर निकल आई थी। पैंट का घेरा फैलकर तंबू-डेरे जैसा हो गया था और सिर के आधे से ज्यादा बाल उड़ चुके थे।

कुल मिलाकर वह काफी भोंडा लगता था।

मगर दिल का साफ था।

एकदम क्लीन।

"आइये ऑफिसर !" यशवंत गवली का उसने पूरी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया, "आइए।"

उसने यशवंत गवली से कसकर हाथ मिलाया।

"बैठिए ऑफिसर !" वह यशवंत गवली को अपने सामने देखकर काफी खुश नजर आ रहा था।

यशवंत गवली वहीं एक कुर्सी पर बैठ गया। जेलर विट्ठलराव चव्हाण भी उसके सामने बैठा।

"और बताइए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

"यह तो आप जानते ही हो ।" यशवंत गवली बेहद नपे-तुले शब्दों में बोला, "कि मैं अभय मल्होत्रा से मिलने आया हूँ ।"

"जी हाँ, बिल्कुल ।"

"तो मुझे अभय मल्होत्रा के बारे में ही ज्यादा से ज्यादा जानकारी दो । आखिर वह पिछले दो दिन से आपकी जेल के अंदर है ।"

"कैसी जानकारी ?"

"जैसे वह मुझसे क्यों मिलना चाहता है, या फिर जेल के अंदर उसका व्यवहार कैसा है ?"

विट्ठलराव चव्हाण ने गहरी साँस ली ।

"ऑफिसर !" वह बोला, "देखिए, जहाँ तक इस सवाल का जवाब है कि वह आपसे क्यों मिलना चाहता है, तो यह जवाब तो यहाँ किसी को भी नहीं मालूम । हाँ, वह अपनी सेल के एक कोने में बैठा बड़बड़ाता जरूर रहता है कि वह यशवंत से मिलना चाहता है, उसे एक बार यशवंत से मिला दो । बल्कि कल तो उसने एक बड़ी अजीबोगरीब हरकत की ।"

"क्या ?"

"रात के वक्त जब एक कॉन्स्टेबल उसे सेल में खाना देने गया तो उसने उसे वहीं पकड़ लिया । इतना ही नहीं, वह उसे पकड़कर जोर-जोर से चिल्लाने लगा, तुम मुझे यशवंत के पास ले जाओगे, तुम मुझे यशवंत के पास ले जाओगे । वह कॉन्स्टेबल बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर भागा ।"

यशवंत गवली के नेत्र सिकुड़ गए, "ऐसी कोई और घटना ?"

"नहीं, ऐसी कोई और घटना तो नहीं । अलबत्ता अभय मल्होत्रा की हरकतें सचमुच काफी अजीब हैं । जैसे कभी-कभी वह बैठा हुआ एकाएक जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगता है, या फिर रात को कभी-कभी उसके रोने की आवाज भी गूँजती है । कुल मिलाकर वह काफी अजीबोगरीब-सा करैक्टर है । लगता ही नहीं, उसने इतने कोल्ड ब्लडेड मर्डर भी किए होंगे । एक समय में वह इतना दुर्दांत हत्यारा भी रहा होगा कि उसके नाम से पूरी मुंबई थर्राती थी ।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"मैं... मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ ऑफिसर !" जेलर की आवाज थोड़ी सकुचाई हुई थी, "कि उसकी हरकतें बिल्कुल बच्चों जैसी हैं । कभी-कभी लगता है, मानो उसे उसके किए की बहुत बड़ी सजा मिल गई है ।"

यशवंत गवली उसकी बात सुनकर चौंका ।

उसका आश्चर्य बढ़ा ।

"यानी तुम्हारी निगाह में अभय मल्होत्रा को जो फाँसी की सजा सुनाई गई ।" वह बोला, "वह गलत है ?"

"नहीं, मैं ऐसा कुछ नहीं कहना चाहता । उसने बेहद दुर्दांत अंदाज में जो मर्डर किए हैं, उनके नज़रिये से देखा जाए तो उसे वही सजा मिलनी चाहिए थी, जो मिली, लेकिन जब अभय मल्होत्रा की बच्चों जैसी हरकतें देखता हूँ तो उस पर तरस आता है, दया आती है । तब लगता है, अगर उसकी सजा थोड़ी कम हो जाती तो शायद बेहतर था ऑफिसर !"

यशवंत गवली अपलक जेलर के चेहरे को देखता रहा ।

जेलर का चेहरा, जिस पर भावनाओं का समंदर उमड़ रहा था ।

●●●

वह सेल सेंट्रल जेल के तहखाने में बनी हुई थी, जहाँ उस समय अभय मल्होत्रा को कैद करके रखा गया था ।

वहाँ उस वक्त घुप्प अंधेरा फैला था, काजली अंधेरा । सिर्फ सेल की छत में एक पच्चीस वाट का बल्ब लटका था, जिसका धूल-धूसिर प्रकाश चारों तरफ बिखरा था और वही उस अंधेरे को थोड़ा कम कर रहा था । इसके अलावा वह पूरी सेल सीलन और उससे पैदा हुई बदबू से भरी थी, मगर अभय मल्होत्रा पर जैसे उस बदबू का कोई असर न था । उसने कैदियों वाले सफेद कपड़े पहने हुए थे और उसके कपड़ों पर आगे-पीछे सौ नंबर लिखा था ।

सौ, यानी कैदी नम्बर सौ ।

उस समय अभय मल्होत्रा सेल के अंदर बने चबूतरे के पास बैठा था और सफेद चाक से उस पर जल्दी-जल्दी कुछ लिख रहा था ।

क्या ?

यह मानो खुद उसे भी मालूम न था ।

तभी एकाएक अभय मल्होत्रा ने कुछ आवाज सुनी और उस आवाज को सुनकर वह एकदम से पलटा । वह भारी-भरकम बूटों की आवाज थी, जो सामने वाले गलियारे में से उसी तरफ आ रही थी ।

अभय मल्होत्रा ने शीघ्रतापूर्वक चबूतरे पर जो कुछ लिखा था, उसे अपनी हथेली से रगड़कर मिटा दिया और उठकर खड़ा हुआ । उसने सामने गलियारे में से यशवंत गवली और जेलर विट्ठलराव चव्हाण को आते देखा ।

कुछ सेकंड बाद ही यशवंत गवली सींखचों के परली तरफ अभय मल्होत्रा के एकदम सामने खड़ा था ।

"तो यह तुम्हारी आखिरी ख्वाहिश थी ।" यशवंत गवली अपलक उसकी आँखों में झांकता हुआ बोला, "कि तुम फाँसी पर चढ़ने से पहले एक बार मुझसे मिलो ?"

"हाँ ऑफिसर !" अभय मल्होत्रा के चेहरे से दीवानगी झलक रही थी, "मैं एक बार आपसे मिलना चाहता था । मुझे आपसे बहुत जरूरी काम है ।"

"पूछ सकता हूँ, क्या काम है ?" फिर बोलते-बोलते यशवंत गवली ने एकाएक चबूतरे की तरफ निगाह उठाई, "और हम लोगों के आने से पहले तुम चबूतरे पर क्या लिख-लिखकर मिटा रहे थे ?"

"हिसाब लगा रहा था ऑफिसर !" अभय मल्होत्रा जोर से खिलखिलाकर हँसा, "बहुत जरूरी हिसाब लगा रहा था ।"

"हिसाब !"

यशवंत गवली की मानो खोपड़ी घूम गई ।

उसके चेहरे पर ढेर सारे सवाल उमड़े ।

"हिसाब, ल... लेकिन कैसा हिसाब ?"

"जानते हो, मुझे फाँसी होने में अब सिर्फ दो दिन बचे हैं ऑफिसर ! दो दिन । नहीं-नहीं, बल्कि पूरे दो दिन भी नहीं । दो दिन में एक घंटा पचास मिनट कम । यह देखो, मेरे पास घड़ी है । मैं एक-एक सेकंड का हिसाब रखता हूँ ।"

यह शब्द कहकर वह फिर जोर से खिलखिलाकर हँसा ।

जबकि उसकी हँसी में ऐसा कुछ था जिससे यशवंत गवली के शरीर में सिहरन दौड़ती चली गई ।

एक-एक रोआँ खड़ा हो गया ।

"लेकिन तुमने मुझे बुलाया क्यों ?"

"मैंने कहा न, मुझे आपसे एक बहुत जरूरी काम है ।" अभय मल्होत्रा सींखचों की तरफ आगे को झुक गया और फुसफुसाया, "मालूम है ऑफिसर ! मैं आपको एक बड़े राज की बात बताना चाहता हूँ । ऐसी बात जिसे सुनकर आप भी चौंक उठोगे ।"

"क्या ?"

यशवंत गवली के स्वर में सस्पेंस था ।

"पहले इस मुच्छड़ जेलर को यहाँ से भगाओ, भगाओ इसे । मुझे इसकी शक्ल पसंद नहीं है ।" इतना कहकर वह फिर बहुत जोर से हँसा ।

जोर से ।

"वैसे एक बात बताऊँ ऑफिसर !" अभय मल्होत्रा पुनः धीमे स्वर में फुसफुसाया, "मेरे को इसने नंबर अच्छा दिया । सौ नंबर । साँप-सीढ़ी की बिसात पर भी आखिरी नंबर सौ ही होता है और इसने भी मुझे यही नंबर दिया । यानी सौ नंबर के बाद खेल ही खत्म । और देखो, मेरा खेल भी खत्म हो गया । साँप-सीढ़ी की बिसात पर यह आखिरी चाल चली जा रही है और उसके बाद कुछ नहीं बचेगा, कुछ भी नहीं ।"

यशवंत गवली सींखचों के इस पार अपनी जगह सकते जैसी हालत में खड़ा था । अभय मल्होत्रा को मानो इस बात का अहसास ही नहीं था कि उसे कितनी खौफनाक सजा सुनाई गई है !

तभी यशवंत गवली ने जेलर विट्ठलराव चव्हाण को आँख से इशारा करके चले जाने के लिए कहा ।

विट्ठलराव चव्हाण मुड़ा और अपने जूते ठकठकाता हुआ वहाँ से चला गया ।

●●●

सेल में अब सिर्फ यशवंत गवली और अभय मल्होत्रा बचे थे । दोनों सींखचों के इधर-उधर खड़े हुए ।

जेलर विट्ठलराव चव्हाण के जाते ही यशवंत गवली ने होंठों से लगाकर एक सिगरेट सुलगाई ।

"एक मुझे भी दोगे ?" अभय मल्होत्रा के चेहरे पर प्यास झलकी ।

"क्या ?"

"सिगरेट ।"

यशवंत गवली एक पल के लिए फैसला नहीं कर सका कि उसे अभय मल्होत्रा जैसी खिसकी हुई खोपड़ी वाले आदमी को सिगरेट देनी चाहिए या नहीं, क्योंकि वह अगले ही पल क्या कर गुजरे, कुछ नहीं कहा जा सकता था ।

मगर फिर यशवंत गवली ने एक सिगरेट सुलगाकर उसे दे ही दी । उस आदमी में ऐसा कुछ था जो उस पर तरस आता था । सिगरेट हाथ में आते ही अभय मल्होत्रा ने जोर से उसका यू कश खींचा मानो कोई चरसी हो ।

"मजा आ गया । तुम सचमुच अच्छे आदमी हो ।" उसने सिगरेट का एक कश और लगाया, "वैसे एक बात बोलूँ ।"

"क्या ?"

"साली, यह जगह अच्छी नहीं है ! बदबू-ही-बदबू, सीलन-ही-सीलन । लेकिन मेरे को क्या ! बस दो दिन गुजारने हैं । कोई हमेशा तो इधर रहना नहीं है । मैं सही कह रहा हूँ न ऑफिसर !"

यशवंत गवली को अपने पूरे शरीर में सिहरन दौड़ती महसूस हुई ।

फाँसी का उसे सचमुच कोई खौफ नहीं था । विट्ठलराव चव्हाण ने उसके बारे में यह टिप्पणी गलत नहीं की थी कि कभी-कभी उसकी हरकतें बिल्कुल बच्चों जैसी हो जाती हैं ।

"जानते हो ऑफिसर !" सिगरेट का कश लगाते हुए वह फिर आगे की तरफ झुका, "मैं आपको एक राज की बात बताना चाहता हूँ ।"

"हाँ, बोलो।"

"देखो, यह तो मैं भरी अदालत में कबूल कर ही चुका हूँ कि मैं खूनी हूँ, मैं ही जेंटलमैन किलर हूँ, लेकिन एक बात अभी किसी को नहीं पता, किसी को भी नहीं।"

"क्या ?"

यशवंत गवली की आवाज और सस्पेंसफुल हो उठी।

"मालूम है ऑफिसर !" अभय मल्होत्रा और धीमी आवाज में फुसफुसाया, "मैंने सिर्फ पहले सात खून किए थे, मगर महेश खोखा के जिस आठवें खून को करते हुए तुमने मुझे पकड़ा, वही खून मैंने नहीं किया था। महेश खोखा को मैंने नहीं मारा था।"

"क्या बकवास कर रहे हो तुम ?" यशवंत गवली चीख उठा।

सिगरेट उसके होंठों तक पहुँचते-पहुँचते रुकी।

"मैं बकवास नहीं कर रहा हूँ ऑफिसर ! मैं सच कह रहा हूँ।"

अभय मल्होत्रा एकाएक बड़े डरावने अंदाज में जोर से कहकहा लगाकर हँसने लगा, फिर सींखचों के पीछे खड़े-खड़े उसने अपनी गर्दन पागलों की तरह इधर-उधर हिलाई, "जानते हो ऑफिसर ! मैं महेश खोखा का मर्डर करने जसलोक हॉस्पिटल में गया जरूर था, डॉक्टर के रुप में ही गया था और अगर मुझे मौका मिलता तो मैं उसे मार भी डालता, लेकिन मालूम है, मैंने उसे क्यों नहीं मारा ?"

"क्यों नहीं मारा ?"

"क्योंकि मैं तुम्हें पहचान गया था। मुझे पता चल गया था कि तुमने मुझे वहाँ फाँसने के लिए पूरे बंदोबस्त किए हुए हैं।"

यह कहकर वह और भी ज्यादा जोर से ठठाकर हँसा।

जबकि यशवंत गवली अपनी जगह सन्नाटे में खड़ा रह गया।

स्तब्ध।

भौचक्का-सा।

वह अभय मल्होत्रा को यूँ देखने लगा मानो उसका कोई नया रुप देख रहा हो।

"लेकिन अगर महेश खोखा का मर्डर तुमने नहीं किया।" यशवंत गवली सनसनाये स्वर में बोला, "तो फिर किसने किया ?"

"यह तो मुझे नहीं मालूम ऑफिसर !" उसने सिगरेट के फिर दो-तीन और कश लगाएँ और उसका टोटा सींखचों से रगड़कर बुझाया, "मगर वह जो भी है बहुत चालाक आदमी है। देखा ऑफिसर, उसने बिल्कुल मेरे स्टाइल में ही महेश खोखा को मार डाला ! बिल्कुल मेरी तरह। इतना ही नहीं, उसने उसकी लाश के पास बिल्कुल वैसे ही प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी भी छोड़ी जैसी मैं छोड़ता था।"

यशवंत गवली के दिमाग में अनार छूटने लगे।

धमाके वाले अनार।

"माय गॉड !" यशवंत गवली का लहजा विस्फोटक था, "अगर खून तुमने नहीं किया तो यह बात अभी तक सबसे छुपाकर क्यों रखी ? तुमने कोर्ट में ही सब कुछ क्यों नहीं उगल दिया ?"

"उससे क्या होता ? अगर मैं कोर्ट में यह बात बता भी देता तो फाँसी तो मुझे तब भी होनी थी। आदमी सात खून करे या आठ, सजा तो उसकी एक ही है, फाँसी ! मैं सही कह रहा हूँ न ऑफिसर ?"

यशवंत गवली अब साफ-साफ विचलित नजर आने लगा।

वह आदमी हर पल एक पहेली बनता जा रहा था।

खतरनाक पहेली।

"नहीं, मुझे तुम्हारी बात पर यकीन नहीं हो रहा है ।" यशवंत गवली की गर्दन इंकार की सूरत में हिली, "तुम जरूर झूठ बोल रहे हो ।"

"लेकिन मुझे झूठ बोलकर क्या मिलेगा ?" अभय मल्होत्रा का चेहरा सवालिया हो उठा, "वैसे भी कानून की किताबों में लिखा है कि मरता हुआ आदमी कभी झूठ नहीं बोलता, या बोलता है ऑफिसर ?"

यशवंत गवली अब निरुत्तर हो गया ।

अभय मल्होत्रा के मानो किसी भी सवाल का उसके पास कोई जवाब न था ।

"लेकिन एक बात समझ नहीं आ रही है मिस्टर अभय !"

"क्या ?"

"जब तुमने यह राज कोर्ट तक से छुपाया तो फिर इसे मेरे सामने ही क्यों उजागर कर रहे हो ?"

"अच्छा सवाल है, बहुत अच्छा सवाल है ।" अभय मल्होत्रा एक बार फिर जोर से खिलखिलाकर हँसा ।

यशवंत गवली ने भी अब अपनी सिगरेट फेंकी ।

"मैं क्रिमिनोलॉजी का स्टूडेंट रहा हूँ न ऑफिसर ! इसलिए कीड़ा है मेरे दिमाग में, बहुत बड़ा वाला कीड़ा । मैं खुद हालातों का शिकार होकर अपराधी बन गया, लेकिन अपराध से वही नफरत करने का जज्बा अभी भी मेरे अंदर है, जो एक क्रिमिनोलॉजी के स्टूडेंट में होता है । मुझे यह बर्दाश्त ही नहीं होता कि कोई अपराधी सजा से बचे । चाहे वह कोई भी क्यों न हो ! मैं भी क्यों न हूँ ।"

उसके चेहरे से अभी भी दीवानगी झलक रही थी ।

पागलपन ।

"जरा सोचो ऑफिसर !" उसने जेल की सलाखें कसकर पकड़ ली, "इस समय वह अपराधी कितना खुश होगा जिसने हकीकत में महेश खोखा का मर्डर किया है । मर्डर उसने किया, लेकिन फाँसी पर कोई और चढ़ने जा रहा है । वह इस समय अपने आपको कितनी शाबाशी दे रहा होगा ! उसके हौसले कितने बुलंद होंगे ! मैं एक बात बोलूँ ऑफिसर ?"

अभय मल्होत्रा की आवाज अब और भी ज्यादा रहस्यमई हो उठी ।

वह बड़बड़ाया ।

"क्या ?"

"जिस आदमी ने महेश खोखा का खून किया है, वह आदमी अभी और भी खून करेगा । आप देख लेना, वह खामोश बैठने वाला नहीं है । उसके हौसले बहुत बुलंद है न, इसलिए वह और लोगों को मारेगा । तुमने एक जेंटलमैन किलर को तो फाँसी पर चढ़ा दिया, लेकिन दूसरा जेंटलमैन किलर इस शहर में जन्म लेने जा रहा है । पकड़ो उसे ऑफिसर, पकड़ो !"

यह बात कहकर अभय मल्होत्रा और जोर-जोर से खिलखिलाकर हँसने लगा ।

खूब जोर-जोर से ।

"मैं एक बात बोलूँ ?" यशवंत गवली गुर्राया ।

"बोलो ।"

"तुम पागल हो चुके हो मिस्टर अभय, बिल्कुल पागल !" यशवंत गवली के चेहरे पर शोले से भड़के, "मुझे तुम्हारी किसी बात पर यकीन नहीं है । तुम सफेद झूठ बोल रहे हो । मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि महेश खोखा का मर्डर भी तुम्हीं ने किया है । मैं अब चलता हूँ ।"

वह शब्द कहकर यशवंत गवली पलटा और तेज-तेज कदमों से तहखाने से ऊपर जाने वाली सीढ़ियों की तरफ बढ़ा ।

"ऑफिसर !" पीछे से अभय मल्होत्रा गला फाड़कर चिल्लाया, "तुम मेरी बात पर यकीन न करके अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती कर रहे हो । मेरी बात मानो, महेश खोखा का मर्डर मैंने नहीं किया । उसका खूनी अभी खुला घूम रहा है ।"

मगर फिर यशवंत गवली ने उसकी कोई बात न सुनी । वह तहखाने की सीढ़ियाँ चढ़ता चला गया ।

पीछे अभय मल्होत्रा के चीखने-चिल्लाने का स्वर अभी भी गूँज रहा था ।

●●●

यशवंत गवली विट्ठलराव चव्हाण के सामने बैठा था ।

विट्ठलराव चव्हाण के चेहरे पर भी अब बेहद आश्चर्य के चिन्ह थे ।

"यानी वह यह कहता है ।" विठ्ठलराव चव्हाण सनसनीखेज स्वर में बोला, "कि जिस आठवें खून को करते हुए आपने उसे पकड़ा, वही खून उसने नहीं किया था ?"

"बिल्कुल ।"

"बड़ी हैरत की बात है ।" विट्ठलराव चव्हाण के नेत्र से फैलते जा रहे थे, "परंतु अगर महेश खोखा का खून उसने नहीं किया तो फिर किसने किया ?"

"यह उसे भी नहीं मालूम । उसका कहना है कि महेश खोखा का कातिल शहर में खुला घूम रहा है और अब हमें उसे पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए । एनीवे, मैं समझता हूँ कि उसकी बातों की तरफ ध्यान देना समय बर्बाद करना है । वह मरने से पहले फिर एक नया ड्रामा क्रिएट करने की कोशिश कर रहा है । ड्रामा उसकी फितरत में शामिल है । ही इज ए कंपलीट ड्रैमेटिक पर्सन !"

"यानी आप की निगाह में महेश खोखा का मर्डर भी उसी ने किया है ?"

"हंड्रेड परसेंट ।" यशवंत गवली पूरी दृढ़ता के साथ बोला ।

उसके स्वर में सख्ती थी ।

"लेकिन अगर वह खून उसने किया है तो फिर उसे यह नाटक रचने की क्या जरूरत है ?"

"मैंने कहा न, ही इज कंप्लीट ड्रैमेटिक पर्सन । उसे नए-नए शगूफे छोड़ने की आदत है । वह मरने से पहले भी कुछ ऐसा करना चाहता है, जो सुर्खियों में बना रहे ।"

जेलर विट्ठलराव चव्हाण कुछ न बोला ।

लेकिन यशवंत गवली की बात सुनकर उसके चेहरे पर सोचनीय भाव जरूर उभर आए थे ।

वह मानो कहीं खो गया था ।

"फिलहाल मैं चलूँगा मिस्टर चव्हाण !" यशवंत गवली कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया, "अगर मेरे जाने के बाद अभय मल्होत्रा से संबंधित कोई खबर हो तो मुझे जरूर इन्फॉर्म करना ।"

विट्ठलराव चव्हाण भी उसके साथ-साथ कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ ।

"अवश्य ऑफिसर ! बल्कि एक खबर तो मैं आपको अभी बताना चाहता हूँ । अलबत्ता मैं यह नहीं कह सकता कि वह आपके किसी काम की है या नहीं ।"

"क्या ?"

"आज सुबह अभय मल्होत्रा से मिलने एक लड़की यहाँ आई थी और उसकी अभय से मुलाकात भी हुई ।"

"लड़की !" यशवंत गवली चौंका ।

"यस ऑफिसर !"

"वह कौन थी ?"

"वह खुद को अभय की फ्रेंड बता रही थी और उसका कहना था, वह अभय के कॉलेज की दोस्त है ।"

"नाम क्या था उसका ?"

"शुभांगी !"

यशवंत गवली ने गहरी साँस ली ।

"हूँ, शुभांगी !" वह होंठों-ही-होंठों में बड़बड़ाया ।

वह नाम मानो उसके दिमाग की डिक्शनरी में कहीं जाकर फीड हो गया ।

"ओके, मैं चलता हूँ ।"

यशवंत गवली वहीं सेंट्रल जेल के प्रांगण में खड़ी अपनी कार की तरफ बढ़ गया ।

●●●

रात्रि का प्रथम पहर था ।

चंद्रमा की रोशनी उस समय चारों तरफ फैली हुई थी और वह रात के सन्नाटे में बड़ा अलौकिक-सा माहौल पैदा कर रही थी ।

वह सेंट्रल जेल के अंदर का दृश्य था ।

वहाँ सुरक्षा के भरपूर इंतजाम थे जेल के अलग-अलग कोने पर दो ऊँचे सिक्योरिटी टावर बनाए गए थे जिन पर घूमने वाले हैलोजन बल्ब लगे हुए थे, जो घूम-घूमकर अपना प्रकाश चारों तरफ बिखेर रहे थे । इसके अलावा जेल के चारों तरफ ऊँची बाउंड्री वॉल भी बनी थी हुई थी । जिस पर लोहे के कटीले तार लगे थे और उनमें करंट दौड़ रहा था । इसके अलावा पूरी जेल में हथियारबंद पुलिस कर्मियों की गश्त भी जारी थी ।

सुरक्षा व्यवस्था इतनी सटीक कि अगर कोई भागना चाहता तब भी न भाग पाता ।

मगर इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच जेलर विट्ठलराव चव्हाण की आँखों में नींद नहीं थी वह अपने बेडरूम में बेचैनीपूर्वक इधर से उधर टहल रहे थे ।

विट्ठलराव चव्हाण की आँखों में बार-बार अभय मल्होत्रा का चेहरा आकर ठहर जाता । ऐसा नहीं था उन्हें अभय मल्होत्रा के जेल से भाग निकलने का अंदेशा हो मगर पिछले 20 साल के पुलिस जीवन में यह पहला कैदी था जिससे उन्हें हमदर्दी हो गई थी । कभी-कभी वह सोचते क्या उस जैसे दुर्दांत हत्यारे से हमदर्दी होना जायज है जिसने एक के बाद एक आठ खून बेहद निर्ममतापूर्वक किए हों और उसे वह खून करने का कोई अफसोस भी न हो ।

मगर फिर अभय मल्होत्रा में ऐसा कुछ था जो उससे हमदर्दी पैदा करता था ।

क्या ?

यह खुद विट्ठलराव चव्हाण को भी मालूम न था ।

जब काफी देर तक इधर से उधर टहलते रहने के बावजूद भी उन्हें नींद न आई, तो वह बेडरूम से बाहर निकल आए और तहखाने में बनी उस सेल की तरफ बढ़े जिसमें अभय मल्होत्रा को बंद करके रखा गया था ।

सेल में 25 वाट का बल्ब अभी भी जल रहा था और सींखचों के उस पार चबूतरे पर अभय मल्होत्रा इत्मीनान से लेटा था ।

नींद उसकी आँखों में भी नहीं थी ।

“आओ जेलर !” उसने चबूतरे पर लेटे-लेटे छत को निहारते हुए कहा, “आओ, क्या बात है ? मैं तो सोच रहा था कि आज की रात सिर्फ मैं ही जाग रहा हूँ ।”

विट्ठलराव चव्हाण सींखचों नजदीक जाकर खड़ा हो गया ।

“मैं तुमसे कुछ बात करने आया हूँ अभय !”

हँसा अभय मल्होत्रा ।

जोर से हँसा ।

"हैरानी है, मुझसे पुलिस वाले भी कुछ बात करना चाहते हैं ! बोलो ।" उसने चबूतरे पर लेटे-लेटे बड़ा एहसान-सा जताया, "क्या बात करने आए हो ?"

"अभय, शायद तुम्हें मालूम नहीं है ।" विट्ठलराव चव्हाण बोला, "कानून ने तुम्हें कितनी खौफनाक सजा सुनाई है । फाँसी । कानून की किताब में इससे खतरनाक सजा कोई नहीं होती । आज तुम जिंदा हो, लेकिन दो दिन बाद तुम्हारा यह हँसता-खेलता शरीर अग्नि की भेंट चढ़ चुका होगा । खत्म हो चुका होगा सब कुछ ।"

"2 दिन बाद ।" अभय मल्होत्रा झटके के साथ चबूतरे से उठ खड़ा हुआ और फिर लपककर सींखचों के पास आया, "नहीं-नहीं जेलर । लगता है, तुमसे हिसाब करने में कुछ गड़बड़ हुई है । 2 दिन नहीं, 2 दिन में 5 घंटे 40 मिनट कम । यह देखो, घड़ी देखो । वैसे भी मैंने अभी-अभी हिसाब लगाया था और मालूम है जेलर, मैं हिसाब कभी गलत नहीं लगाता । ठीक 42 घंटे 20 मिनट बाद मुझे फाँसी पर लटका दिया जाएगा और फिर मेरा खेल खत्म एक झटके में खत्म ।"

विट्ठलराव चव्हाण को अपने पूरे शरीर में चीटियाँ रेंगती महसूस हुई ।

सचमुच वह उसकी जिंदगी में आया सबसे अजीबोगरीब कैदी था ।

"अभय, क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि तुम्हें अपनी सजा के खिलाफ हाई कोर्ट में अपील करनी चाहिए !" विट्ठलराव चव्हाण ने सीधे अपने दिल की बात कही ।

आखिर यही बात कहने तो वह चलकर यहाँ तक आया था ।

"हाई कोर्ट में अपील !" अभय मल्होत्रा के नेत्र सिकुड़ गए । वह गौर से सींखचों के उस पार खड़े जेलर विट्ठलराव चव्हाण को देखने लगा ।

"हाँ ।"

"उससे क्या होगा जेलर ? क्या उससे मेरी सजा माफ हो जाएगी ? क्या मैं रिहा कर दिया जाऊँगा ?"

"नहीं, तुम रिहा तो नहीं होगे ।" विट्ठलराव चव्हाण बोला, "हाँ, अगर तुमने अपील की तो तुम्हारी फाँसी की सजा उम्र कैद में जरूर तब्दील हो सकती है ।"

"यानी फिर जेल की इसी चारदीवारी के अंदर मुझे एड़ियाँ रगड़-रगड़कर मरना होगा । नहीं जेलर, नहीं ! अगर मरना ही है तो मैं एक झटके से मरना चाहूँगा ।" बोलते-बोलते अभय मल्होत्रा एकाएक बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाया, "हाँ, अगर तुम मेरी मदद करना चाहते हो तो एक मदद करो ।"

"क्या ?"

"मुझे किसी तरह रिहा करा दो जेलर !" अभय मल्होत्रा की आवाज पहले की तरह दृढ़ थी, "या फिर इस जेल से भाग निकलने में मेरी मदद करो । आखिर यहाँ ऐसा कोई-न-कोई रास्ता तो जरूर होगा, जिससे फरार हुआ जा सके ।"

विट्ठलराव चव्हाण विस्मय से उस आदमी को देखता रह गया ।

उसने कितनी आसानी से यह बात एक जेलर से कह दी थी । उसे जरा डर नहीं लगा ।

एक पल के लिए तो विट्ठलराव चव्हाण के दिमाग में आया कि वह अभी सेल का दरवाजा खोले और उस आदमी को मारते-मारते भूत बना दे मगर फिर उसने उस जालिम ख्याल को अमल में लाने से रोका ।

"लेकिन जब तुम्हें इस जिंदगी से कोई प्यार नहीं है ।" जेलर विट्ठलराव चव्हाण उसके दिल की थाह लेता हुआ बोला, "तो तुम जेल से रिहा होकर क्या करोगे ?"

"बता दूँ ?" अभय मल्होत्रा फुसफुसाया, "बता दूँ कि मैं जेल से रिहा होकर क्या करूँगा ?"

"हाँ, बता दो ।"

अभय मल्होत्रा ने एक क्षण के लिए यूँ घूरकर देखा जैसे फैसला कर रहा हो कि वह उसे बताएँ या नहीं ।

"ठीक है, अपना कान मेरे नजदीक लाओ।"

विट्ठलराव चव्हाण ने कान सींखचें के नजदीक किया।

"मालूम है जेलर!" अभय मल्होत्रा उसके कान में धीरे से बोला, "अगर मैं जेल से भाग निकला तो मैं बाहर जाते ही एक और मर्डर करूँगा। एक आदमी का खून अभी मेरे हाथों से और लिखा है।"

और।

अभय मल्होत्रा के यह शब्द सुनते ही विट्ठलराव चव्हाण के दिमाग में धमाका हो गया।

जबरदस्त धमाका।

"क्या बकवास कर रहे हो तुम?" विट्ठलराव चव्हाण के नेत्र फट पड़े, "लेकिन तुम किसका खून करना चाहते हो?"

"इतना बेवकूफ नहीं हूँ मैं। यह मैं किसी को नहीं बताऊँगा जेलर, किसी को नहीं। उस आदमी का तो तभी पता चलेगा जब वह मेरे हाथों से मर चुका होगा।"

अभय मल्होत्रा अब जोर-जोर से खिलखिलाकर हँसने लगा।

और भी ज्यादा जोर-जोर से।

"इसके अलावा मैं आपको एक राज की बात और बताऊँ जेलर!" अभय मल्होत्रा पुनः सींखचों के नजदीक आ खड़ा हुआ।

"क... क्या?"

"अगर तुम लोगों ने मुझे फाँसी पर चढ़ा भी दिया न, तो मैं तब भी उस आदमी का खून कर दूँगा। यह बात अलग है, फिर वह खून मेरे मरने के बाद होगा।"

"यह कैसी बेहूदा बात है?" जेलर चिल्लाया, "एक मरा हुआ आदमी खून कैसे कर सकता है?"

"करेगा। इस बार एक मरा हुआ आदमी ही खून करेगा।" अभय मल्होत्रा की आवाज में विश्वास कूट-कूटकर भरा था, "और तुम यह सब अपनी जागती आँखों से इस हैरतअंगेज कारनामे को होते हुए देखोगे।"

"लगता है, तुम सचमुच पागल हो चुके हो। मैं ही बेवकूफ था जो एक सही सलाह देने यहाँ चला आया।"

विट्ठलराव चव्हाण पलटा और फिर जिस तरह लंबे-लंबे डग रहता हुआ वहाँ आया था उसी तरह लौट गया।

●●●

वह हरिनारायण आप्टे का केबिन था जिसमें उस समय बड़ी गहरी खामोशी व्याप्त थी।

हरिनारायण आप्टे के अलावा केबिन में यशवंत गवली, रागिनी और सावंत भी मौजूद थे।

वह सुबह का समय था।

"मैं समझती हूँ सर!" रागिनी ने उस खामोशी को तोड़ा, "हमें अभय मल्होत्रा की इस बात को इतना सीरियस नहीं लेना चाहिए, जितना ले रहे हैं। वह एक बेवकूफ आदमी है और बेवकूफ आदमी कुछ भी कहता है।"

"और फिर वैसे भी, अभय मल्होत्रा को फाँसी होने में अब सिर्फ एक दिन बचा है।" सावंत ने गहरी साँस लेकर कहा, "कल उसे फाँसी हो जाएगी। उसके बाद सभी किस्से-कहानियों का खुद-ब-खुद पटाक्षेप हो जाएगा।"

"तुम लोग उसकी फाँसी को उसकी कहानी का पटाक्षेप मानकर चल रहे हो।" हरिनारायण आप्टे एक-एक शब्द नाप-तोलकर बोले, "जबकि शायद तुमने उसके शब्दों पर गौर नहीं किया। उसका कहना है कि अगर उसे फाँसी हो भी गई तब भी वह एक मर्डर और करेगा, मरने के बाद करेगा।"

"लेकिन सवाल तो यह है सर !" रागिनी बोली, "कोई आदमी मरने के बाद मर्डर कैसे कर सकता है ? हाउ इज़ इट पॉसिबल ?"

हरिनारायण आप्टे खामोश बैठे रहे ।

उनके पास इस सवाल का कोई जवाब न था ।

जबकि यशवंत गवली तो पहले ही चुप बैठा था, अलबत्ता उसके चेहरे पर सोचनीय भाव जरूर थे ।

"ऑफिसर !" हरिनारायण आप्टे ने हवाना सिगार का छोटा-सा कश लगाते हुए यशवंत गवली की तरफ देखा, "क्या तुम कुछ नहीं बोलोगे ?"

"मैं इस सबसे हटकर एक दूसरी ही बात सोच रहा हूँ सर !" यशवंत गवली ने अपना मौन भंग किया ।

"क्या ?"

"मैं सोच रहा हूँ, वह कौन आदमी है जिसका अभय मल्होत्रा मरने के बाद भी मर्डर करना चाहता है ? उसकी इस बात से कम-से-कम एक बात तो साफ जाहिर है कि वह जो भी है, अभय मल्होत्रा का बहुत बड़ा दुश्मन है । क्योंकि एक बहुत बड़े दुश्मन के लिए ही आदमी इस कदर पागल होता है कि वह मरने के बाद भी उसके कत्ल की बात करने लगे ।"

यशवंत गवली की उस सोच ने सबको चौंकाया ।

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है सर !" यशवंत गवली ने खोये-खोये से लहजे में कहा, "कि अभी इस केस के ऊपर से पूरी तरह पर्दा नहीं उठा है । अभी ऐसा कुछ है जो हम नहीं जानते । जो रहस्य की तह में छुपा हुआ है ।"

"यानी ऐसा कोई राज बाकी है जो अभय मल्होत्रा ने हमें नहीं बताया ?"

"बिल्कुल ।"

हरिनारायण आप्टे ने अब रागिनी और सावंत की तरफ देखा ।

"यह तो तुम बड़ी खतरनाक बात कह रहे हो ऑफिसर !"

"बात खतरनाक जरूर है सर, लेकिन सच्चाई से भरपूर है । हकीकत के आसपास है ।"

हरिनारायण आप्टे अब हवाना शिकार के छोटे-छोटे कश लगाने पर मजबूर हो गए ।

"एक बात कहूँ ऑफिसर !" हरिनारायण आप्टे दूर कहीं ख्यालों में गुम थे ।

"क्या ?"

"सचमुच अभय मल्होत्रा से तुम्हारी मुलाकात के बाद केस काफी उलझ गया है । शायद तुम ही सही थे, तुम्हें उस आदमी से बात करने जाना ही नहीं चाहिए था, बल्कि अब मुझे तुम्हारी इस बात में भी काफी दम नजर आता है कि वह एक ड्रामेटिक पर्सन है । तुम इस वक्त अपनी ही एक बात भूल रहे हो ऑफिसर ! संभव है, मरने से पहले उसने एक नया शिगूफा छोड़ा हो । वास्तव में ऐसा कुछ हो ही नहीं ।"

यशवंत गवली कुछ न बोला ।

मगर उसे किसी बड़े तूफान का अंदेशा लगातार हो रहा था । उसे लग रहा था कि जल्दी कुछ होने वाला है ।

क्या ?

यह अहसास उसे भी न था ।

●●●

बहरहाल अभय मल्होत्रा को बहुत शांति के साथ फाँसी हो गई और तब तक कोई बड़ा हंगामा न हुआ ।

जिस दिन अभय मल्होत्रा को फाँसी होनी थी, वह उस दिन भी शांत था । खामोश ।

अलबत्ता सुबह से ही उसने गीता का पाठ करना जरूर शुरु कर दिया था और उसके चेहरे पर ऐसा आध्यात्मिक तेज उभर आया था, जैसा संत महात्माओं के चेहरे पर होता है ।

शाम के 4:30 बजे उसने तांबे का लोटा मंगाकर वैदिक रीति से स्नान किया ।

नए कपड़े पहने ।

उसके बाद वह फाँसी के तख्ते की तरफ बढ़ गया ।

“तुम्हारी डेड बॉडी किसे सौंपी जाए ?” जेलर विट्ठलराव चव्हाण ने उस दिन उससे पहला और आखरी सवाल किया ।

“किसी को नहीं ।” अभय मल्होत्रा का जवाब था, “एक लावारिस लाश समझकर मेरा क्रिया-कर्म आप लोग ही कर देना ।”

फिर उस समय ठीक 5:00 बज रहे थे जब अभय मल्होत्रा फाँसी पर झूल गया ।

उसकी आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई ।

●●●

उस कमरे में अंधेरा छाया हुआ था । काजली अंधेरा । वहाँ के सभी खिड़की दरवाजे अंदर से कसकर बंद थे और उन पर पर्दे झूल रहे थे । एक लड़की जिसकी उम्र मुश्किल से 25-26 साल थी, एक बिस्तर पर लेटी हुई थी और अभय मल्होत्रा की तस्वीर को सीने से चिपटाए खूब फफक-फफककर रो रही थी ।

लड़की काफी खूबसूरत थी । उसका रंग एकदम गोरा-चिट्टा था । उसने सुर्ख रेशमी गाउन पहना हुआ था, जिसमें उसकी कुंदन-सी काया और भी चमक उठी थी । काले घने लंबे बाल थे और होंठ ऐसे गुलाबी थे जैसे वह लिपस्टिक लगाए हुए हो ।

मगर उसके फफककर रोने के स्वर में पूरे वातावरण को बेहद गमजदा कर दिया था । उसी फ्लैट में एक बूढ़ी औरत भी थी जो उसे चुप कराने की काफी देर से कोशिश कर रही थी, मगर उसके आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे ।

“अब उसकी याद में कब तक रोओगी शुभांगी !” वह बूढ़ी औरत उसके नजदीक आकर बैठ गई और उसने बड़े प्यार से उसके बालों में हाथ फेरा, “आखिर कब तक ? कल से तुमने अन्न का एक दाना तक नहीं खाया है । इस तरह कब तक चलेगा ?”

लड़की ।

जिसका नाम शुभांगी था ।

शुभांगी ने अब अपना सिर उस बूढ़ी औरत की गोद में रख लिया और वह पहले से भी ज्यादा जोर से फफक-फफककर रोई ।

“मैं उसे नहीं भुला पा रही हूँ माँ, नहीं भुला पा रही ! जरा सोचो, कल तक वो जिंदा था । कल तक वह बोल सकता था, कल तक उसे हर उस चीज की जरूरत थी जिसकी हमें जरूरत है ।”

“अगर सच बोलना गुनाह नहीं होता शुभांगी !” माँ की आवाज में भी पीड़ा छुपी हुई थी, “तो उस सच के पीछे मौजूद सजा को कबूल करने के लिए भी इंसान को तैयार रहना चाहिए ।”

“मगर वह आठवां खून तो उसने नहीं किया न, जिसे करते हुए कानून ने उसे पकड़ा ?”

“उससे क्या फर्क पड़ता है ? इंसान सात खून करे या आठ, सजा तो उसकी एक ही है और वही सजा अभय को मिली । अगर सिर्फ एक खून उसने नहीं किया तो इससे उसके बाकी जुर्म तो कम नहीं हो जाते ।”

“यह ठीक है कि अभय को उसके किए की सजा मिली ।” शुभांगी मानो बहस पर उतर आई, “लेकिन उस अपराधी के बारे में आप क्या कहेंगी जिसने कि वास्तव में महेश खोखा का खून किया । वह तो अभी भी खुला घूम रहा है । उसे भी तो फाँसी की वही सजा मिलनी चाहिए जो अभय को मिली ?”

"मिलेगी ।" माँ बोली, "उसे भी फाँसी की वही सजा मिलेगी । कानून की पकड़ से वह बहुत ज्यादा देर तक आजाद नहीं रहेगा ।"

"नहीं माँ !" शुभांगी के चेहरे पर गंभीरता उभर आई, "नहीं, उस अपराधी को सजा नहीं मिलेगी ।"

"लेकिन क्यों ?"

माँ चौंकी ।

उसके चेहरे पर हैरत के चिन्ह उभरे ।

"क्योंकि कानून अभय की उस बात पर यकीन ही नहीं कर रहा है कि वह आठवां खून उसने नहीं किया । कानून यही मानकर चल रहा है कि महेश खोखा का खून भी उसी ने किया था और अब कानून के मुताबिक उन आठों मर्डर केस की केस फाइल बंद हो चुकी है । जब कानून ने यह सोच लिया है कि वह सभी खून अभय ने किए थे तो कानून अब उस आठवें केस की रि-इन्वेस्टिगेशन क्यों करेगा और जब महेश खोखा के कत्ल की इन्वेस्टिगेशन ही नहीं होगी, तो उसका असली कातिल कैसे पकड़ा जाएगा ?"

"तू कहना क्या चाहती है ?"

"मैंने एक फैसला किया है माँ !"

शुभांगी ने एकाएक अपने आँसू पोंछ डाले ।

वह बेड पर उठकर बैठ गई और उसके चेहरे पर दृढ़ता नजर आने लगी ।

"फैसला ।" माँ चौंकी, "कैसा फैसला ?"

"जानती हो माँ, अभय मल्होत्रा के अधूरे काम को अब यह शुभांगी पूरा करेगी ! उसकी इस बात पर किसी ने यकीन नहीं किया न कि महेश खोखा का कातिल वह नहीं है । इसे अब मैं साबित करूँगी । मैं सबको चीख-चीखकर बताऊँगी, महेश खोखा का कातिल सचमुच आज भी मुंबई शहर में खुला घूम रहा है । एक मरते हुए आदमी ने झूठ नहीं बोला था । सच कहा था अभय ने, सच ।"

माँ के चेहरे पर अब कौतूहलता के भाव उभर आए ।

आश्चर्य के ।

"लेकिन तू इस बात को साबित कैसे करेगी मेरी बच्ची ?"

"माँ, मैं महेश खोखा मर्डर केस की फाइल दोबारा से रि-ओपन कराऊँगी । उस केस की जाँच अब दोबारा से होगी ।"

"मगर कैसे ? तू उस मर्डर केस की फाइल दोबारा से रि-ओपन कैसे कराएगी ?"

"कुछ-न-कुछ तो मैं जरूर करूँगी माँ !" शुभांगी की आवाज दहकते अंगारों की भांति भभक उठी, "खामोश तो मैं बैठने वाली नहीं हूँ । अभय मल्होत्रा की यह बात एक दिन सबको माननी होगी कि वह आठवां खून उसने नहीं किया था । एक दिन महेश खोखा का असली कातिल सलाखों के पीछे खड़ा होगा ।"

"लेकिन तू इतने बड़े मुंबई शहर में उस हत्यारे को कहाँ ढूंढेगी ?"

"मैं नहीं माँ, कानून ढूंढेगा उसे, कानून ।"

"कानून ।"

"हाँ माँ !"

शुभांगी के चेहरे पर अब ऐसे भाव थे मानो वह किसी फैसले पर पहुँच चुकी हो । फिर उसने खड़े होकर परमिट में झूल रहा पर्दा एक तरफ सरका दिया । फौरन रोशनी छनकर अंदर कमरे में आने लगी ।

●●●

यशवंत गवली उस समय शूटिंग क्लब में था ।

पिछले कुछ दिन उसने जेंटलमैन किलर के पीछे जो भागा-दौड़ी करते हुए गुजरे थे, उसके बाद वह अब खुद को काफी रिलैक्स महसूस कर रहा था। उसकी नजर में वह फाइल फिलहाल पूरी तरह से बंद हो चुकी थी और उसके सोचने लायक कुछ न था।

शायद इसीलिए अब वह पूरे मनोयोग से शूटिंग क्लब में फायरिंग प्रैक्टिस में हिस्सा ले रहा था।

यह यशवंत गवली का मनपसंद शौक था।

जब वह खाली होता तो फायरिंग प्रैक्टिस करता।

इस समय यशवंत गवली के हाथ में एक गन थी। नजदीक ही ढेर सारे कारतूस रखे थे और वह गन से सामने लगे अलग-अलग पॉइंट्स को निशाना बना रहा था।

यशवंत गवली का हर निशाना अचूक था।

परफेक्ट।

प्रत्येक गोली बिल्कुल ठीक निशाने पर जाकर लगती।

पीछे शैड के नीचे यशवंत गवली की फायरिंग देखने के लिए काफी सारे लोग जमा थे। वह यशवंत गवली के हर निशाने पर बेहद उत्साहपूर्वक जोर-जोर से तालियाँ बजाते।

उसी पल चिंतामणि क्लब के अंदर से यशवंत गवली का सेलफोन लेकर दौड़ता हुआ कोई ट्रैक के पास आया।

"ऑफिसर !" उसने जल्दी से कहा, "आपका फोन।"

"कौन लाइन पर है ?"

"क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर से सर बोल रहे हैं।"

निशाना लगाते यशवंत गवली के हाथ ठिठक गए।

उसने गन एक तरफ रखी और सेलफोन हाथ में लिया।

"हेलो सर !"

"ऑफिसर ?"

"यस, आई एम स्पीकिंग।"

"ऑफिसर, तुम फौरन एक काम करो !" हरिनारायण आप्टे की भारी-भरकम आवाज सुनाई पड़ी, "जितना जल्द-से-जल्द हो सके हेडक्वार्टर आ जाओ।"

यशवंत गवली चौंका।

यह उसके लिए बड़ी अप्रत्याशित खबर थी।

"हेडक्वार्टर ! क्या फिर कोई गड़बड़ हो गई ?"

"नहीं, गड़बड़ कुछ नहीं हुई है परंतु एक लड़की अभी-अभी हेडक्वार्टर पहुँची है और वह तुमसे मिलना चाहती है।"

"लड़की !"

यशवंत गवली के चेहरे पर उत्सुकता के भाव उभरे।

"हाँ।"

" लेकिन वह लड़की मुझसे क्यों मिलना चाहती है ?"

"वह दरअसल जेंटलमैन किलर केस के सिलसिले में तुमसे कुछ बात करने को इच्छुक है।"

यशवंत गवली फिर चौंका।

"मगर उस केस के सिलसिले में अब क्या बात करनी है सर ! वह केस फाइल तो बंद हो चुकी है। इतना ही नहीं, उसके मुख्य अभियुक्त अभय मल्होत्रा को फाँसी दी जा चुकी है।"

"वह लड़की तुमसे फिर भी एक बार मिलना चाहती है। उसका कहना है कि वह उस केस के सिलसिले में कुछ ऐसे नए राज खोल सकती है जो सबको चौंकाकर रख देंगे।"

"नए राज !"

"हाँ ऑफिसर !"

यशवंत गवली अब सोचने पर मजबूर हुआ।

"लड़की का नाम क्या है ?"

"वह शुभांगी नाम बताती है।"

"शुभांगी !"

तुरंत यशवंत गवली के दिमाग में जेलर विट्ठलराव चव्हाण के शब्द घंटे की तरह बज उठे।

'जानते हो ऑफिसर, आज अभय से एक लड़की मिलने आई थी, शुभांगी नाम था उसका। शुभांगी !'

"सर !" यशवंत गवली तुरंत बोला, "आप उस लड़की को बिठाकर रखें, मैं अभी हेडक्वार्टर पहुँच रहा हूँ।"

●●●

शुभांगी ने उस समय लाइट ग्रे कलर का लाउजिंग पजामा और फुल स्लीव्स की काली टॉप पहन रखी थी। बाल उसने पोनीटेल की शक्ल में बाँधे हुए थे।

मगर उसकी आँखें सूजी हुई थीं और उन्हें देखकर ऐसा लगता था, मानो वह कई रातों से सोई नहीं है।

"तो तुम्हारा नाम शुभांगी है ?"

यशवंत गवली ने एक नजर बहुत गौर से शुभांगी को देखा और फिर सिगरेट का लंबा कश लगाकर उसका ढेर सारा धुआँ छत की तरफ उछाला।

वह क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर का एक केबिन था जिसमें यशवंत गवली के सामने शुभांगी बैठी हुई थी। रागिनी और सावंत भी उस समय वहाँ थे।

"जहाँ तक मैं समझता हूँ, वह भी तुम ही थीं, जो अभय मल्होत्रा से मिलने जेल गई थीं ?"

"हाँ, वह भी मैं ही थी।"

"हूं।"

यशवंत गवली ने गहरी हुंकार भरी।

रागिनी और सावंत की निगाहें भी उसी के चेहरे पर टिकी थी।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम अभय मल्होत्रा को कैसे जानती थीं ?"

"वह दोस्त था मेरा।" शुभांगी खोये-खोये स्वर में बोली, "कॉलेज का दोस्त।"

"सिर्फ दोस्त ?"

"नहीं ऑफिसर, वह दोस्त से भी बढ़कर था मेरा !" शुभांगी का लहजा गुमसुम था, "हालांकि मैं नहीं जानती कि यह दोस्त से भी बढ़कर रिश्ते का क्या नाम होता है लेकिन वह जो भी नाम होता होगा, अभय मल्होत्रा वही था। इस दोस्ती को किसी छोटे से शब्द में बाँधना मुश्किल है। कम-से-कम मेरे लिए तो मुश्किल ही है, क्योंकि उस बेनाम रिश्ते की गहराई मैं समझती थी।"

"हूँ।"

यशवंत गवली ने पुनः हुंकार भरी।

सिगरेट के छोटे-छोटे कश वह अभी भी लगा रहा था।

"जानते हो ऑफिसर !" शुभांगी थोड़ा रुककर पुनः बोली, "ऐसे ढेरों सपने थे जो हम दोनों ने एक साथ मिलकर देखे थे। जिंदगी किस कदर हसीन होती है यह मैंने अभय के पास आकर ही जाना। लेकिन... लेकिन अब एक ही झटके में मेरा सबकुछ खत्म हो चुका है, सबकुछ।"

शुभांगी बोलते बोलते एकाएक बहुत भावुक हो उठी।

ऐसा लगा मानो वह अभी फूट-फूटकर रोने लगेगी।

"रिलैक्स, रिलैक्स।" उसके बराबर में बैठी रागिनी ने उसकी पीठ थपथपाई, "धैर्य रखो। यू कान्ट फाइट अगेंस्ट फेथ, इट वाज़ गॉडस विल।"

शुभांगी ने धीरे-धीरे अपनी आँखों में छलछला आए आँसू साफ किये।

यशवंत गवली अभी भी गौर से उसके चेहरे को देखता हुआ सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगा रहा था।

"कहीं ऐसा तो नहीं।" वह बोला, "तुम भी कॉलेज में अभय मल्होत्रा की तरह क्रिमिनोलॉजी की स्टूडेंट थीं ?"

"आपने बिल्कुल सही कहा ऑफिसर !" शुभांगी के चेहरे पर वितृष्णा के भाव थे, "मैं भी अभय मल्होत्रा की तरह कॉलेज में क्रिमिनोलॉजी की स्टूडेंट थी। क्लासमेट थी मैं उसकी। मगर सिर्फ क्लासमेट होने से ही कोई किसी के बराबर का दर्जा तो नहीं पा लेता। मालूम अभय मल्होत्रा कॉलेज का सबसे ब्रिलियंट स्टूडेंट था। वह हमेशा पूरा कॉलेज टॉप करता। अभी आप लोगों ने अभय मल्होत्रा का सिर्फ एक रुप देखा था ऑफिसर ! एक किलर का रुप। मगर उसका दूसरा रुप तो आप देख ही नहीं पाए जो शायद उसका असली रुप था।"

"दूसरा रुप !"

"यस ऑफिसर !" बोलते बोलते शुभांगी मानो फिर कहीं ख्यालों में खो गई थी, "आप जानते हो, वह कॉलेज में सबका हीरो था, सबका चहेता। हर कोई सोचता था कि एक दिन वह बहुत बड़ा वकील बनेगा। लॉ की दुनिया में उसका एक नाम होगा। मगर नहीं, यह किस्मत नाम की जो चीज होती है न, यह इंसान के साथ ऐसे-ऐसे खेल खेलती है कि कोई सोच भी नहीं पाता ऑफिसर ! ऐसा ही खेल किस्मत ने अभय मल्होत्रा के साथ भी खेला, जो कानून की किताब हाथ में लेकर कानून का मुहाफिज बनने की बात करता था, वही एक खूनी बन गया। जानते हो, मैं आज भी जब अभय मल्होत्रा के बारे में सोचती हूँ तो मुझे एकाएक यकीन नहीं होता कि यह सारे मर्डर उसने किए थे।"

यशवंत गवली ने सिगरेट का टोटा एश-ट्रे में रगड़कर बुझाया।

"इसके बावजूद भी यकीन नहीं होता।" यशवंत गवली का लहजा शांत था, "जबकि उसने खुद भरी अदालत में अपने जुर्म का इकबाल किया था ?"

"बस-बस, यही एक वह पॉइंट है जिसकी वजह से मैं न चाहते हुए भी इस बात को मानने के लिए मजबूर हो जाती हूँ। वरना आप खुद सोचिए, जो क्रिमिनोलॉजी का सबसे ब्रिलियंट स्टूडेंट हो वह एक कातिल कैसे बन सकता है ? आप खुद इस बात पर कैसे यकीन करेंगे ? इसके अलावा मैं आपको अभय मल्होत्रा की एक खूबी और बताना चाहती हूँ ऑफिसर !"

"क्या ?"

"अभय मल्होत्रा कभी झूठ नहीं बोलता था।"

यशवंत गवली ने अब चौंककर शुभांगी की तरफ देखा।

रागिनी और सावंत के चेहरे पर भी ऐसे ही भाव उभरे।

"यह बात कहकर तुम साबित क्या करना चाहती हो ?"

“मैं कुछ साबित नहीं करना चाहती ऑफिसर !” शुभांगी भाव विहीन ढंग से बोली, “मैं सिर्फ यह कहना चाहती हूँ कि अगर अभय मल्होत्रा ने मरते-मरते यह कहा है कि महेश खोखा का मर्डर उसने नहीं किया तो आपको उसकी इस बात पर यकीन करना चाहिए कि उसने नहीं किया ।”

“यह सब बकवास बात है ।”

“यह बकवास बात नहीं है ऑफिसर !” शुभांगी एक-एक शब्द पर जोर देकर बोली, “यह सच है हकीकत है । आप खुद सोचिए, जो आदमी खुशी-खुशी फाँसी चढ़ गया, जो सात कत्ल कबूल कर रहा था, उसे महेश खोखा का एक और कत्ल कबूल करने में क्या एतराज था ? आखिर फाँसी की जो सजा उसे मिली तब भी उससे बड़ी सजा तो कानून उसे नहीं दे सकता था, या फिर दे सकता था ?”

यशवंत गवली कुछ न बोला ।

वह खामोश बैठा रहा ।

●●●

सच तो यह है, शुभांगी के उस सवाल का उनमें से किसी के पास कोई जवाब न था ।

आखिर वही एक प्रश्न तो था, जो उन्हें शुरु से लेकर अभी तक परेशान कर रहा था कि अगर अभय मल्होत्रा ने वह झूठ बोला, तो क्यों बोला ?

या फिर सचमुच उसने वह आठवां खून नहीं किया था ?

क्या माजरा था ?

वे जितना उस सवाल के बारे में सोचते, उतनी उनकी उलझने बढ़तीं, उतने नए-नए पेंच उनके दिमाग में जन्म लेते । अभय मल्होत्रा तो इस दुनिया से जा चुका था, मगर उसके द्वारा छोड़े गए सवाल अभी भी उन्हें झंझोड़ रहे थे ।

"ऑफिसर ! आप माने या न माने !" शुभांगी पुनः बोली, "लेकिन वह आठवां खून उसने नहीं किया था, कम-से-कम इस मामले में वह निर्दोष था ।"

"ऑफिसर !" सावंत थोड़ा हिचकिचाते हुए बोला, "मैं भी कुछ कहूँ ।"

"बोलो ।"

"न जाने क्यों मुझे भी यही लगता है ऑफिसर, शुभांगी ठीक कह रही है । सचमुच वह आठवां खून अभय मल्होत्रा ने नहीं किया था ।"

"मगर सवाल ये है ।" यशवंत गवली बोला, "अगर वह आठवां खून अभय मल्होत्रा ने नहीं किया, तो फिर किसने किया ?"

"हमें अब यही तो पता लगाना होगा ऑफिसर !" शुभांगी के चेहरे पर दृढ़ता के भाव उभरे, "कि वह खून किसने किया, कौन कातिल है ? वह चाहे जो भी हो, लेकिन फिलहाल मुम्बई शहर में खुला घूम रहा है और अब हमने जल्द-से-जल्द उस तक पहुँचना होगा ।"

"यानी तुम यह कह रही हो कि हमें इस केस की री इन्वेस्टिगेशन करनी चाहिये ?"

"बिल्कुल ऑफिसर ! लेकिन पूरे केस की री इन्वेस्टिगेशन नहीं ।"

"फिर ?"

"हमें सिर्फ महेश खोखा मर्डर केस की री इन्वेस्टिगेशन करनी होगी ।" शुभांगी अपना तर्क प्रस्तुत करते हुए बोली, "सिर्फ उस आठवें खून की री इन्वेस्टिगेशन करनी होगी, जिसे करने हुए अभय पकड़ा गया ।"

यशवंत गवली एक बार फिर गहरी सोच में डूब गया ।

वह फैसला नहीं कर पा रहा था, क्या करे ?

क्या न करे ?

"ऑफिसर, मुझे भी यही लगता है !" रागिनी ने भी काफी देर की खामोशी के बाद कहा, "कि हमें उस आठवें मर्डर की केस फाइल दोबारा से रिओपन करनी चाहिए । हो सकता है, कोई नया सुराग हमारे हाथ लग जाए । वैसे भी न जाने क्यों मुझे ऐसा लगता है कि इस बात की संभावना काफी ज्यादा है कि अभय मल्होत्रा ने मरने से पहले झूठ नहीं बोला होगा ।"

"ओके ।" यशवंत गवली ने गहरी साँस छोड़ी, "अगर तुम सब लोगों की यही इच्छा है तो यही सही । हम महेश खोखा मर्डर केस की दोबारा से इन्वेस्टिगेशन करेंगे ।"

"थैंक यू, थैंक यू वेरी मच ऑफिसर !"

शुभांगी का चेहरा एकाएक ताजे हो गुलाब की तरह खिल उठा ।

ऐसा लगा मानो उसने कोई बड़ा किला फ़तेह कर लिया हो ।

जबकि यशवंत गवली ने एक सिगरेट और सुलगाई ।

"मगर सवाल यह है ।" यशवंत गवली विचारपूर्ण लहजे में बोला, "कि हम इस केस की इन्वेस्टिगेशन कहाँ से शुरु करेंगे ? क्योंकि महेश खोखा की तो फैमिली में भी कोई नहीं है जिससे हम पूछताछ कर सकें और उसके किसी दुश्मन के बारे में जान सकें ।"

"इन्वेस्टिगेशन शुरु करने का एक रास्ता मैं आप लोगों को बताती हूँ ।" शुभांगी की आवाज में अब जोश कूट-कूटकर भरा था ।

"क्या ?"

"महेश खोखा चाल के जिस कमरे में रहता था, वह कमरा अभी भी पहले की तरह लॉक्ड पड़ा हुआ है । मैं समझती हूँ, हमें उस कमरे की तलाशी लेनी चाहिए । हो सकता है कि हमें वहाँ से उस चालाक खूनी के खिलाफ कोई सबूत मिले ।"

"आइडिया बुरा नहीं ।" यशवंत गवली प्रभावित लहजे से में बोला, "तो फिर हम सबसे पहले उसी के कमरे की तलाशी लेते हैं ।"

"ऑफिसर !" शुभांगी सकुचाते हुए बोली, "मैं आपसे एक रिक्वेस्ट और करना चाहती हूँ ।"

"बोलो ।"

"हालांकि मैं एक प्रोफेशनल जासूस तो नहीं हूँ, परंतु क्रिमिनोलॉजी की एक स्टूडेंट मैं भी रही हूँ । अपराध साहित्य का काफी अध्ययन किया है मैंने । मेरी इच्छा है कि इस केस की इन्वेस्टिगेशन के दौरान मैं भी आपके साथ रहूँ ।"

यशवंत गवली ने अब एक नजर रागिनी और सावंत की तरफ देखा ।

"ओके, आई हैव नो ऑब्जेक्शन !"

"थैंक यू, थैंक यू वेरी मच ऑफिसर !"

शुभांगी का चेहरा एक बार फिर उत्साह से खिल उठा ।

●●●

शाम के उस समय पाँच बज रहे थे जब यशवंत गवली की कार एक बार फिर नागपाड़ा की उसी चाल के सामने पहुँचकर रुकी जहाँ कभी महेश खोखा रहता था ।

चार मंजिली उस चाल में आज भी बिल्कुल वैसा ही हंगामा था जैसा पहले था ।

हर तरफ से चिल्ल-पों की आवाजें आ रही थीं । टीवी चलने, स्टीरियो बजने, बर्तन खड़कने और बच्चों के खूब शोर-शराबा मचाने की आवाजें । किसी एक इंसान के रहने या न रहने से इस दुनिया पर कोई फर्क नहीं पड़ता यह बात उस चाल को देखकर अच्छी तरह समझी जा सकती थी ।

यशवंत गवली के साथ उस समय रागिनी और सावंत के अलावा शुभांगी भी थी ।

कुल मिलाकर वह चारों महेश खोखा के रुम के सामने पहुँचे। वहाँ उस वक्त भी पहले की तरह ताला पड़ा हुआ था।

“ताला तोड़े ?” सावंत ने यशवंत गवली की तरफ देखा।

“नहीं, मैं समझता हूँ ताला तोड़ने से पहले हमें चाल के किन्हीं दो मुअजिज आदमियों को यहाँ बुला लेना चाहिए।”

“ऑफिसर, बिल्कुल ठीक कह रहे हैं!” शुभांगी ने भी यशवंत गवली की बात के प्रति सहमति दर्शाई।

तब तक उन चारों को देखकर चाल के काफी सारे लोग एक-एक करके उनके आसपास जमा होने लगे थे जिनमें बच्चे, बूढ़े, आदमी, औरतें सब शामिल थे। यशवंत गवली ने उस भीड़ में सबसे बुजुर्ग से जो दो आदमी थे उन्हें आगे बुला लिया।

“क्या आप इसी चाल में रहते हैं ?”

“जी हाँ।”

“आपको मालूम है।” यशवंत गवली बोला, “यह रुम किसका है ?”

“जी, महेश का है।”

“सिर्फ महेश ?”

“नहीं, महेश खोखा।” उनमें से एक बूढ़े ने जल्दी से संशोधन किया।

“महेश खोखा इस वक्त कहाँ है ?”

उन्होंने बड़े अफसोस के साथ अपनी नजरें झुका ली।

“मैं आप लोगों से कुछ पूछ रहा हूँ ?”

“जी, अब वह इस दुनिया में नहीं है। वह मारा जा चुका है।”

“यानी उसके साथ जो कुछ गुजरा आपको सब मालूम है।”

“जी हाँ।”

“गुड।” यशवंत गवली की आँखें चमकी, “तो फिर अब कुछ और बातें अच्छी तरह समझो। हम क्राइम ब्रांच के आदमी हैं। हम यहाँ महेश खोखा के फ्लैट की तलाशी लेने के लिए आए हैं और तलाशी के दौरान आप लोगों का यहाँ उपस्थित रहना जरुरी है।”

"क्यों ?"

"क्योंकि बाद में एकाएक कुकुरमुत्ते की तरह कहीं से महेश खोखा के सामान का कोई वारिस पैदा हो सकता है और वह खामखाह पंगा लेने के खातिर कोई ड्रामा पैदा कर सकता है जो कि हम नहीं चाहते कि ऐसा कोई ड्रामा पैदा हो। इसीलिये हमारी इच्छा है कि रुम की तलाशी आप लोगों के सामने ली जाये। ठीक ?"

"ठीक है।"

दोनों बुजुर्गवार ने सहमति से गर्दन हिलाई।

●●●

उसके बाद तलाशी अभियान शुरु हुआ।

सबसे पहले तो उनके सामने ही रुम का ताला तोड़ा गया और फिर एक-एक करके वह चारों रुम के अंदर दाखिल हुए।

वह बड़े सस्पेंस के क्षण थे। कोई नहीं जानता था कि अगले ही पल रहस्य की कौन-सी नई गुत्थी खुलने वाली है।

उन्होंने देखा रुम के अंदर अव्यवस्था का भारी बोलबाला था। ज्यादातर सामान इधर से उधर बिखरा पड़ा था। कोई चीज सलीके से अपनी जगह नहीं थी। आधे कपड़े कवर्ड के अंदर थे, तो आधे बाहर थे। इसी तरह कुछ गंदे बर्तन भी वहाँ फैले हुए थे।

तभी यशवंत गवली की निगाह बिस्तर पर जाकर अटक गई। बिस्तर पर उस समय कुछ इस तरह की सिलवटें थी जिसने यशवंत गवली को चौंकाया।

उसने फ्रिज खोलकर देखा। फ्रिज में दूध का पैकेट, बटर की बड़ी वाली टिकिया और ब्रेड रखी थी जो शायद महेश खोखा ने अपने लिए ही रखी हुई थी परंतु उसे वह सब खाना नसीब नहीं हुआ था।

फिर यशवंत गवली ने उसके कवर्ड की तलाशी ली।

महेश खोखा के कपड़ों को उसने जैसे ही इधर-उधर हटाया उसके हाथ में दो ब्रा आ गई।

एक काली।

दूसरी क्रीम।

उन दोनों ब्रा को देखकर न सिर्फ यशवंत गवली बल्कि रागिनी, शुभांगी और सावंत भी चौंके।

36 नंबर की ब्रा थी।

"एक बात समझ नहीं आई ऑफिसर !" सावंत के स्वर में विस्मय का पुट था।

"क्या ?"

"जब महेश खोखा यहाँ अकेला रहता था तो यह दोनों चीजें यहाँ कैसे आ गई ?"

"वही मैं सोच रहा हूँ।"

यशवंत गवली ने फौरन ही उस कवर्ड की और तलाशी ली। उस तलाशी के दौरान यशवंत गवली को एक काली लेडीज पेंटी और बरामद हुई, जो झीने जालीदार कपड़े की बनी हुई थी। इसके अलावा उसी कवर्ड में से एक छोटी ज्वेलरी किट भी बरामद हुई जिसमें मंगलसूत्र रखा था।

उस ज्वेलरी किट में रखें मंगलसूत्र ने यशवंत गवली को सबसे ज्यादा चौंकाया।

"एक बात मैं अब गारंटी के साथ कह सकता हूँ।" यशवंत गवली बेहद गौर से उस मंगलसूत्र को देखता हुआ बोला।

"क्या ?" रागिनी के नेत्र सिकुड़े।

"महेश खोखा यहाँ अकेला नहीं था बल्कि उसकी जिंदगी में जरूर कोई औरत थी।"

"यानी आप यह कहना चाहते हैं ऑफिसर !" शुभांगी बोली, "कि वह शादीशुदा आदमी था ?"

"नो, नेवर। मैं यह बात तो दावे के साथ नहीं कह सकता कि वह एक शादीशुदा आदमी था या नहीं था।" यशवंत गवली बोला, "अलबत्ता एक बात जरूर कहूँगा।"

"क्या ?"

"वह औरत जो भी है उसके साथ महेश खोखा के संबंध कमोबेश एक पत्नी जैसे ही थे। अगर वह उसकी पत्नी नहीं दी थी तो बहुत जल्द वह उसकी पत्नी बनने वाली थी।"

"लेकिन अगर महेश खोखा के किसी औरत के साथ इतने घनिष्ठ संबंध थे तो चाल वालों को इसकी खबर क्यों नहीं थी ?"

"हो सकता है, महेश खोखा ने अपने संबंधों को बहुत छिपाकर रखा हो।"

"मगर वह औरत कौन हो सकती है ?" सावंत बोला।

"फिलहाल हमें यही पता लगाना है क्योंकि एक वही औरत है जो हमारी इन्वेस्टिगेशन को आगे बढ़ाने में हमें मदद दे सकती है। शायद उसे ही उस रहस्यमई कातिल के बारे में कोई जानकारी हो जिसके बारे में अभी तक कोई कुछ नहीं जानता।"

"लेकिन हम उस औरत को ढूँढ़ंगे कहाँ ऑफिसर ?" रागिनी बोली।

"फिलहाल हमें अब यही सोचना है ।"

उन सबके चेहरे पर अब कशमकश के भाव उभर आए ।

वह सब जानते थे, उस औरत को ढूंढ निकालना भी कोई आसान काम नहीं है ।

●●●

शुभांगी का दिमाग इस समय सबसे ज्यादा सक्रिय था ।

वह बड़ी तेजी के साथ कुछ सोच रही थी । कॉलेज पीरियड में उसने जो अपराध साहित्य पड़ा था उसका एक-एक सिद्धांत उसके मानस पटल पर ताजा होने लगा ।

"ऑफिसर !" वह एकाएक मानो ट्रांस की कंडीशन में बड़बड़ाई, "मुझे न जाने क्यों ऐसा लग रहा है कि मैं उस औरत के बारे में काफी कुछ बता सकती हूँ जिसके महेश खोखा के साथ संबंध थे ।"

सब चौंके ।

सबकी निगाह शुभांगी की तरफ उठी ।

जबकि शुभांगी के चेहरे पर उस समय ऐसे भाव थे मानो वह किसी अलग ही दुनिया में खो चुकी है ।

"आप सब लोग बेड से पीछे हट जाइए ।" शुभांगी तेजी से बोली ।

उसके कहने की देर थी फौरन वह तीनों बेड से पीछे हट गए ।

जबकि शुभांगी अब बेड के पास जाकर खड़ी हो चुकी थी और वह बेहद गौर से बिस्तर को देखने लगी ।

"एक बात मैं कह सकती हूँ ।" शुभांगी बिस्तर को देखते हुए बड़बड़ाई ।

"क्या ?"

"वह औरत जो भी है इसी चाल में रहती है ।"

धमाका हो गया ।

सबके चेहरे पर गहन उत्कंठा के भाव भरे ।

"लेकिन तुमने इस बात को कैसे जाना शुभांगी ?" यशवंत गवली के स्वर में भी हैरत थी ।

"बिस्तर को देखो ऑफिसर !" शुभांगी ट्रांस की कंडीशन में ही बोली, "इस बिस्तर पर पड़ी सिलवटें बता रही हैं कि वह औरत इस रूम में अक्सर आती-जाती थी । जबकि चाल में किसी को इस बात की कानों-कान भनक नहीं है कि महेश खोखा के किसी औरत के साथ संबंध भी थे । यानी वह औरत रात को खामोशी के साथ आती थी और चली जाती थी । उसके आने-जाने का किसी को पता नहीं चलता था और उस औरत को भी रात के वक्त आने-जाने में कोई प्रॉब्लम नहीं थी । इससे साफ जाहिर है कि वह औरत इसी चाल में कहीं रहती है ।"

सबने अब एक-दूसरे की तरफ देखा ।

शुभांगी के तर्क में जान थी ।

जबकि शुभांगी अब बेड के पास से हटकर कवर्ड के पास पहुँच चुकी थी । फिर उसने कवर्ड में रखी ब्रा-पेंटी को गौर से देखा तथा फिर उनमें से एक ब्रा उठाकर उसके कप को सूंघा ।

"ऑफिसर, इसके अलावा मैं उस औरत की विषय में एक बात और कहूँगी !"

"क्या ?"

"वह औरत जो भी है पहले से शादीशुदा है ।"

धमाका हो गया ।

पहले से भी ज्यादा प्रचंड धमाका ।

"य... यानी तुम यह कहना चाहती हो ।" यशवंत गवली बोला, "कि शादीशुदा होने के बावजूद उसके महेश खोखा के साथ संबंध थे ?"

"बिल्कुल ।" शुभांगी की आवाज में उस समय विश्वास कूट-कूटकर भरा था ।

"और तब भी उसके संबंध सबसे छुपे हुए थे ?"

"जाहिर-सी बात है ।" शुभांगी ने कहा, "संबंध छिपे ही हुए थे वरना यह बात पूरी चाल को मालूम होती । इसके अलावा उस औरत से जुड़ी एक बात और मुझे हैरान कर रही है ।"

"क्या ?"

"वह औरत न सिर्फ शादीशुदा थी ऑफिसर !" शुभांगी रहस्य के नए-नए विस्फोट करते हुए बोली, "बल्कि उसकी गोद में एक दूध मुंहा बच्चा भी है जिसे वह अपना दूध पिलाती है ।"

शुभांगी की इस बात ने उन सबको एक नया झटका दिया ।

"गोद में एक बच्चा भी है !" सावंत बोला, "यह बात तुम इतने दावे के साथ कैसे कह सकती हो ?"

"इस ब्रा के कप को सूंघकर देखो । इसमें दूध की खुशबू बसी हुई है । इससे साफ जाहिर है कि जिसकी भी यह ब्रा है, उसकी गोद में एक बच्चा है और चूंकि वह एक बच्चे वाली औरत है तो स्वाभाविक है कि वह शादीशुदा भी होगी । जबकि महेश खोखा शादीशुदा नहीं था । इससे साफ जाहिर है कि वह औरत किसी दूसरे की बीवी थी जबकि महेश खोखा के साथ उसके संबंध थे ।"

यशवंत गवली के साथ-साथ अब रागिनी और सावंत अभी शुभांगी के तर्कों से प्रभावित हो उठे ।

जिस तरह से उसने उस अनदेखी औरत के व्यक्तित्व की एक-एक करके बखिया उधेड़ी थी, वह वाकई काबिले तारीफ थी । शुभांगी ने साबित कर दिया था कि वह सचमुच अपराध साहित्य (क्रिमिनोलॉजी) की एक अच्छी स्टूडेंट रही है ।

फिर शुभांगी ने उस रूम की कुछ और चीजों को भी बेहद ध्यानपूर्वक देखा ।

परंतु उसके बाद उसने उस रहस्यमई औरत के बारे में कोई और ऐसी नई घोषणा नहीं की, जो सबको चौंकाती या रहस्य के कुछ नए पर्दे खोलती ।

●●●

वह चारों अब महेश खोखा के रूम से बाहर निकल आए ।

बाहर अभी भी भीड़ जमा थी, बल्कि अब वह भीड़ पहले से भी कहीं ज्यादा बढ़ चुकी थी ।

कुल मिलाकर उस रूम का दरवाजा पूर्व की भांति कसकर बंद कर दिया गया और ताला डाल दिया गया ।

फिर यशवंत गवली एक बूढ़े के पास पहुँचा और उसे लेकर भीड़ से अलग एक कोने में गया ।

"बुजुर्ग वार !" यशवंत गवली बोला, "क्या आप इस चाल में रहने वाली किसी ऐसी औरत को जानते हैं जिसके पास महेश खोखा काफी आता-जाता हो ?"

"महेश खोखा !"

"हाँ ।"

"नहीं ।" बुजुर्ग की गर्दन इनकार में हिली, "मैं ऐसी किसी औरत को नहीं जानता और जहाँ तक मैं समझता हूँ, ऐसी कोई औरत इस चाल में होगी भी नहीं ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि सबसे पहले तो महेश खोखा इस चाल में आता ही बहुत कम था और कभी रात बे-रात को आता भी था, तो चंद घंटे गुजारकर चला जाता था । यानी बस झपकी मारने के लिए ही इधर आता था । इसके अलावा महेश खोखा को हम लोगों ने कभी किसी के घर आते-जाते भी बहुत कम देखा था ।"

"यानी वह अपने में ही मस्त रहने वाला आदमी था ?"

"मस्त क्या, बस टपोरी टाइप का आदमी था। हमेशा चुपचाप रहता था। उसकी शक्ल देखकर ही ऐसा लगता था कि अगर वह कुछ बोलेगा तो अभी कोई राज खुल जाएगा।"

"यानी जबरदस्त रहस्यमई करैक्टर था ?"

"हाँ, वह तो वो था।"

अभी शुभांगी, रागिनी और सावंत भी उसके पास आ गए।

"कुछ पता चला ?" रागिनी बोली।

"नहीं। इनका कहना है, महेश खोखा के किसी औरत के साथ संबंध है, इसकी इन्हें कोई जानकारी नहीं है।"

"जहाँ तक मैं समझती हूँ।" शुभांगी बोली, "हमें यह बात चाल में रहने वाली किसी औरत से पूछनी चाहिए। इस तरह की बातें औरतों को ज्यादा मालूम होती हैं और वह उनके बीच फैलती भी ज्यादा तेजी से हैं।"

यशवंत गवली को एक बार फिर शुभांगी का तर्क ठीक दिखाई पड़ा।

बहरहाल फिर उस चाल में रहने वाली एक औरत से भी वह बात पूछी गई।

मगर उसने भी वही जवाब दिया जो उस बूढ़े ने दिया था। वह भी ऐसी किसी औरत को नहीं जानती थी। इसका भी यही कहना था कि महेश खोखा तो किसी के घर आता-जाता ही नहीं था।

सारा मामला फिर पेचीदा रूप धारण करने लगा था।

लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने कुछ और औरतों से पूछताछ की।

मगर नतीजा फिर भी कुछ न निकला।

उन सबका भी वही जवाब था।

थक-हारकर वह सब वहाँ से वापस लौट गए।

●●●

रात के 8:00 बज रहे थे। शुभांगी अभी भी उनके साथ ही थी। उस समय वह चारों क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर के पहले वाले केबिन में ही सिर से सिर जोड़े बैठे थे और महेश खोखा के असली कातिल तक किस तरह पहुँचा जाए, इस पर गंभीरता से सलाह-मशवरा कर रहे थे।

"देखिए, सबसे पहले तो एक बात मुझे बड़ी परेशान कर रही है।" रागिनी बोली।

"क्या ?"

"सवाल यह है, अभय मल्होत्रा ने तो महेश खोखा का खून किया नहीं है, तो फिर और कौन ऐसा शख्स हो सकता है जो महेश खोखा का मर्डर करेगा ? जो उस जैसे टपोरी आदमी को मारने के लिए इतना बड़ा नाटक रचेगा। उसने न सिर्फ जेंटलमैन किलर स्टाइल में उसका मर्डर किया, बल्कि उसकी डेड बॉडी के पास बिल्कुल वैसी ही प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी भी छोड़ी जैसी साँप-सीढ़ी जेंटलमैन किलर छोड़ता था।"

"मुझे तो लगता है।" सावंत बोला, "यह आपसी रंजिश का मामला है। किसी ने आपसी दुश्मनी के चलते उसे मार डाला है।"

"करेक्ट।" शुभांगी के स्वर में उत्साह झलका, "ऐसा हो सकता है।"

"मगर सवाल तो यह है।" यशवंत गवली बोला, "महेश खोखा जैसे टपोरी से किसी की दुश्मनी भी क्या हो सकती है ?"

"ऐसी बात नहीं कि उस जैसे टपोरी आदमी से किसी और की दुश्मनी न हो।" शुभांगी बोली, "बल्कि ऐसे टपोरी आदमियों से तो कई लोगों की दुश्मनी होगी क्योंकि उसने सारी उम्र दूसरे लोगों को सताया ही

तो था। देखिए ऑफिसर, अपराध साहित्य के मुताबिक किसी भी अपराधी की सिर्फ तीन कारणों से मौत होती है।"

"किन-किन कारणों से ?"

"नंबर एक, या तो वह आपसी रंजिश का शिकार बनते हैं।" शुभांगी अपराध साहित्य के ब्रह्म ज्ञान का बखान करते हुए बोली, "और उन जैसा ही कोई बदमाश किसी आपसी फूट या किसी आपसी दुश्मनी के चलते उन्हें मार डालता है, या फिर नंबर दो, महेश खोखा जैसे टपोरी इसलिए भी मारे जाते हैं क्योंकि वह किसी बड़े आदमी के लिए काम कर रहे होते हैं और फिर उस आदमी के लिए काम करते-करते उनकी नियत मैली हो जाती है। वह उस बड़े आदमी के कुछ राज जान जाते हैं जिससे बड़े आदमी का सोशल स्टेटस या मार्केट वैल्यू कभी भी खतरे में पड़ सकती थी और उन्हीं राज की बदौलत बदमाश उस बड़े आदमी को ब्लैकमेल करने लगता है। हालांकि बड़ा आदमी एक हद तक ब्लैकमेल होता भी है क्योंकि वह एकदम से कूदकर खून-खराबे जैसे किसी बड़े फैसले पर नहीं पहुँचना चाहता। मगर जब ब्लैकमेलिंग हद से ज्यादा बढ़ती जाती है तो वह अपना पिंड छुड़ाने के लिए उस बदमाश की किसी दूसरे बदमाश को सुपारी दे डालता है।"

"यानी तुम्हारे कहने का मतलब यह है।" यशवंत गवली बोला, "कि कभी-कभार कोई बड़ा आदमी भी किसी बदमाश की मौत की वजह बनता है ?"

"करेक्ट ! मैं यही कहना चाहती हूँ। यही अपराध साहित्य में लिखा है।"

"और किसी बदमाश के मरने की तीसरी वजह क्या होती है ?" यशवंत गवली गौर से शुभांगी को देख रहा था।

"तीसरी वजह जो होती है, कम-से-कम उस वजह से महेश खोखा का मर्डर नहीं हुआ है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तीसरी वजह पुलिस एनकाउंटर है। पुलिस जब किसी बदमाश से तंग आ जाती है तो उसे एनकाउंटर करके मार डालती है। यह तो ओपन एंड शट मामला है कि कम-से-कम महेश खोखा का एनकाउंटर नहीं किया गया है। इसके अलावा किसी बदमाश के मरने की कोई और वजह नहीं होती। बहुत कम ही खुशकिस्मत बदमाश ऐसे होते होंगे जो अपनी स्वाभाविक मौत मरते हैं।"

"यानी तुम्हारे मुताबिक।" यशवंत गवली पूरी तरह मामले की तह तक पहुँचता हुआ बोला, "महेश खोखा का मर्डर सिर्फ पहली किन्हीं दो वजह से हुआ है। या तो उसके किसी भाई बंद ने, उस जैसे किसी बदमाश ने उसे आपसी किसी दुश्मन की वजह से मार डाला है, या फिर किसी बड़े आदमी ने उसके कत्ल की सुपारी दी है।"

"बिल्कुल।"

"लेकिन अब यह कैसे पता चले।" सावंत बोला, "कि दोनों में से कौन-सी वजह से महेश खोखा की हत्या हुई है ?"

"यह पता लगाने का सिर्फ एक ही तरीका है।"

"क्या ?"

"किसी प्रकार उस औरत तक पहुँचा जाए जिससे महेश खोखा मिलता था।"

सावंत ने अपना सिर पकड़ लिया।

"यानी सुई फिर उसी जगह आकर अटक गई जहाँ से चली थी।"

"देखिए, एक बात तो तय है।" शुभांगी बोली, "जब तक हम उस औरत को नहीं ढूंढ निकालते तब तक यह केस आगे नहीं बढ़ सकेगा।"

उन सबके बीच खामोशी तारी हो गई।

गहरी खामोशी ।

●●●

रात के 10:00 बज रहे थे जब वह एक बार फिर नागपाड़ा की उसी चाल पर इस उम्मीद के साथ पहुँचे कि शायद इस बार उन्हें उस औरत के बारे में कोई जानकारी मिल जाए ।

वह वहाँ पहुँचकर वापस पूछताछ शुरू करते तभी पीछे सड़क की तरफ से एक औरत लंबे-लंबे डग रखते हुए वहाँ आई । उसके हाथ में एक पॉलीबैग था जिसमें काफी सारे अंडे और कुछ पाव थे । वह मराठी औरत थी और उसने साड़ी भी उसी स्टाइल में बाँधी हुई थी ।

"साहब !" यशवंत गवली के नजदीक आकर वह बोली, "आप क्राइम ब्रांच के वही अफसर है न जो कुछ घंटे पहले महेश खोखा के बारे में पूछताछ करने आए थे ?"

"हाँ ।" यशवंत गवली बोला, "हम वही लोग हैं ।"

"साहब !" उस मराठन औरत की आवाज एकाएक बहुत रहस्यमई हो उठी और वह फुसफुसाकर बोली, "मैं चाल में रहने वाली उस औरत के बारे में बता सकती हूँ जिससे महेश खोखा मिलता था ।"

न सिर्फ यशवंत गवली, बल्कि शुभांगी, रागिनी और सावंत भी एकदम से चौकन्ने हो उठे । उन्होंने सोचा भी नहीं था कि उस औरत के विषय में उन्हें इतनी आसानी से जानकारी मिल जाएगी ।

"कौन है वह ?"

"उसका नाम रत्ना है साहब ! अपुन ने कई बार रात को उसे महेश खोखा की खोली में आते-जाते देखा है और... ।"

"और क्या ?"

यशवंत गवली का दिमाग एकदम से खड़क उठा ।

"और वह क्या है साहब !" उस मराठन औरत ने नजरें झुका ली तथा वह पहले से भी ज्यादा रहस्यमई स्वर में फुसफुसाई, "अपुन ने उनके बीच वह सब भी होते देखा है ।"

"वह क्या ?"

"वही साहब, जो रात को बिस्तर पर हस्बैंड-वाइफ के बीच होता है ।" उस औरत ने वह बात कहते हुए अपनी नजरें और झुकाई ।

जबकि यशवंत गवली आश्चर्यजनक नेत्रों से उस औरत को देखता रह गया ।

"तुमने उन दोनों के बीच वह सब होते हुए छिपकर देखा ?"

"हाँ साहब !"

"कैसे ?"

"खिड़की की झिरी में से साहब ! क्या है, अपुन को दमे अस्थमा की बीमारी है, इसलिए रात बे-रात को जब अपुन को दमे का धसका उठता है तो अपुन को डॉक्टर ने बोला हुआ है कि फ्रेश हवा लेने के लिए खोली से बाहर निकल आया करूँ । उस रात भी अपुन को दमे का धसका उठा था और अपुन बाहर आई थी । बस तभी अपुन ने उस रत्ना को अपनी खोली से निकलकर महेश खोखा की खोली में घुसते देखा । इतना ही नहीं उसके बाद अपुन ने खिड़की की झिरी में से उनके बीच सबकुछ होते हुए भी देखा । बाबा-रे-बाबा, उस रात से पहले तो अपुन यह सोचती थी कि रत्ना बड़ी भलमनसाहत औरत है । कैसे अच्छे बोलबचन हैं उसके । लेकिन वह तो पक्की तिरिया निकली, एकदम छत्तीसी छिनाल । अपुन ने तो सोचा भी नहीं था, वह ऐसी होगी ।"

"क्या तुमने यह बात चाल में किसी और को बोली ?"

"नहीं ।"

"क्यों ?"

यशवंत गवली चौंका ।

वह बात सचमुच हैरानी में डाल देने वाली थी कि उसने इतनी बड़ी बात को अपने पेट में कैसे पचाई थी । जबकि इस तरह की बातें तो वैसे ही औरतों के पेट में नहीं पचती ।

"बस बोली ही नहीं अपुन ने वह बात किसी को ।" वह औरत भारी दयानददारी दर्शाते हुए बोली, "अपुन ने सोचा, खामखा चाल में उसकी थू-थू होगी । उसका अपनी खोली से बाहर निकलना भी मुश्किल हो जाएगा ।"

"क्या रत्ना के घर में उसके साथ कोई और भी रहता है ?"

"नहीं, वह अकेली ही रहती है । उसके साथ बस उसका एक बच्चा है ।"

"यानी वह ऑलरेडी शादीशुदा है ?" यशवंत गवली अब चौंका ।

"बिल्कुल ।"

"फिर उसका हस्बैंड कहाँ रहता है ?"

"वहाँ ।" मराठन औरत ने खुले आसमान की तरफ उंगली उठाई, "गणपति बप्पा के पास । साल भर पहले उसके मर्द का स्वर्गवास हो गया था । अब यह तो राम जाने स्वर्गवास हुआ या नरक वास हुआ, मगर जो हुआ हो गया । उसी के बाद से रत्ना के पैर फिसलने शुरु हुए तो आज इस अंजाम तक पहुँच गए । वह फुल तिरिया बन गई । ऊपर से वह रहती भी बिल्कुल महेश खोखा के बराबर वाली खोली में ही है, इसलिए जल्द ही उसका उसके साथ टांका भिड़ गया ।"

"बराबर वाली खोली में ।" सावंत अब बुरी तरह चौंका ।

तुरंत उसकी आँखों के गिर्द उस तूफानी औरत का चेहरा घूमा जिसके साथ उसकी भिड़ंत हो चुकी थी ।

"हे भगवान !" सावंत आश्चर्यपूर्वक बोला, "कहीं तुम उस औरत की बात तो नहीं कर रही जो बोलने-चालने में बड़ी तीर-कमान औरत है और जिसकी गोद में एक बच्चा भी है ?"

"हाँ वही । वही तो रत्ना है ।"

सब सन्न रह गए ।

किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि महेश खोखा की इतनी जबरदस्त अंदाज में बुराई करने वाली वह औरत ही उसके साथ यूँ बिस्तर पर फिट निकलेगी ।

●●●

तुरंत वह चारों रत्ना के रुम के सामने पहुँचे ।

"ऑफिसर !" सावंत अभी भी हतप्रभ था, "मैं यकीन नहीं कर पा रहा हूँ, यह औरत ऐसी होगी ।"

"दुनिया का यही दस्तूर है कि उसी जगह हमें गहरे-गहरे गड्ढे मिलते हैं जहाँ हम एक साफ-सुथरी सड़क की कल्पना कर रहे होते हैं ।"

"लेकिन फिर भी यह औरत... ।"

"मैं समझती हूँ ।" शुभांगी बोली, "हम बिल्कुल ठीक जगह आ चुके हैं और अब यहीं से हमारी इन्वेस्टिगेशन शुरु होगी ।"

रत्ना के रुम का दरवाजा उस समय बंद था ।

चाल में भी सन्नाटा था । सब लोग अपने अपने घरों में बंद होकर बिस्तर में लेट चुके थे और टीवी वगैरह देख रहे थे ।

यशवंत गवली ने आगे बढ़कर रत्ना के रुम का दरवाजा खटखटाया ।

अंदर शांति रही ।

यशवंत गवली ने फिर दरवाजा खटखटाया ।

"कौन है ?" इस बार एक नारी स्वर उभरा ।

जरूर वह रत्ना की आवाज थी ।

"दरवाजा खोलिए ।" यशवंत गवली की कड़कड़ाती आवाज ।

"मगर कौन हो ?"

"पहले दरवाजा खोलें ।"

रत्ना अब चलती हुई दरवाजे तक आई और फिर सिटकनी गिरने की आवाज हुई ।

सावंत, जो अभी तक हर काम में सबसे आगे था अब थोड़ा पीछे को खिसक गया ।

उसी पल बंदूक से छूटी गोली की तरह धाड़ से दरवाजा खुला और चौखट के उस पार वही बड़ी दबंग औरत रत्ना प्रकट हुई ।

उसकी छातियाँ तब भी हिमालय की चोटियों की तरह तनी थीं और वह फुल सेक्सी नजर आ रही थी ।

उसने एक नजर पीछे दुबके खड़े सावंत को देखा और फिर गुर्राई, "अब क्या है ?"

"हमें आपसे महेश खोखा के बारे में कुछ पूछताछ करनी है ।"

"मैं पहले ही बता चुकी हूँ ।" वह थोड़े तेवर तरेरकर बोली, "कि मैं उस बदजात आदमी के बारे में कुछ नहीं जानती । वह जरा भी मुँह लगाने लायक नहीं था । पड़ोस की औरतों को हमेशा यूँ टुकुर-टुकुर देखता था जैसे वह सब-की-सब उसकी जनानी हो ।"

"सही कहा आपने ।" यशवंत गवली एक-एक शब्द नाप-तौलकर बोला, "वह था ही गलत आदमी । बहुत बड़ा हरामी था साला ! बल्कि मुझे तो यहाँ तक पता चला है कि वह सिर्फ पड़ोस की औरतों को अपनी जनानी नहीं समझता था, बल्कि उनमें से एक औरत ऐसी थी जो फुल तौर पर उसकी जनानी बन भी चुकी थी और रात-बे-रात को बाकायदा उसके बिस्तर पर जाकर एक बीवी का फर्ज भी अदा करती थी ।"

रत्ना अब सकपका उठी ।

उसकी सारी हेकड़ी फुर्र हो गई ।

"क... कौन है वह औरत ?"

"क्या अब यह भी मुझे ही बताना पड़ेगा !" यशवंत गवली ने उसे चुभती निगाहों से घूरा, "कि कौन है वह औरत ?"

रत्ना की नजरे अपराधबोध से झुक गईं ।

वह पानी-पानी होती नजर आने लगी ।

"अब अगर तुम्हारी इजाजत हो ।" यशवंत गवली पूरी तरह उस तीर-कमान औरत पर हावी होता हुआ बोला, "तो हम लोग तुम्हारी खोली के अंदर आकर तुमसे कुछ पूछताछ करना चाहते हैं ।"

रत्ना चौखट से एक तरफ हट गई ।

वह चारों एक-एक करके उसकी खोली में दाखिल हुए ।

सावंत वापस शेर बन चुका था और वह खोली में घुसने से पहले एक बार रत्ना के सामने यूँ तनकर खड़ा हुआ, मानो उसने कोई बहुत बड़ा कारनामा अंजाम दिया हो और फिर अंदर घुसा ।

अंदर घुसते ही वह सब चौंके ।

हालांकि वह सिर्फ एक कमरे की खोली थी मगर वहाँ शानो-शौकत पूरी थी । सुख-सुविधा का ऐसा कोई सामान नहीं था जो उस कमरे में न हो । टीवी, फ्रिज, टेलीफोन, बेड यहाँ तक कि एयर कंडीशन तक लगा हुआ था । सबसे बड़ी बात यह है कि वह तमाम चीजें नई थीं, जिन्हें मुश्किल से तीन-चार महीने के पीरियड में ही खरीदा गया था ।

सामने बिछे बेड पर ही रत्ना का बच्चा सोया था ।

फिलहाल उन दोनों के अलावा वहाँ कोई न था।

सावंत अंदर आते ही लपककर किचन में गया और फिर वापस लौटा।

“तुम वहाँ क्या करने गए थे ?” रागिनी बोली।

“देखने गया था, अंदर कोई दूसरा महेश खोखा तो नहीं है।”

रागिनी ने अपने होंठों पर पैदा होने वाली मुस्कुराहट को बड़ी मुश्किल से रोका। जबकि इस बात को सुनकर रत्ना की भृकुटि तन गई, मगर वह बोली कुछ नहीं।

“इंटरेस्टिंग।” यशवंत गवली पूरे रूम के नए साजों-सामान पर दृष्टिपात करता हुआ बोला, “सब कुछ काफी नया-नया नजर आ रहा है। क्या मैं पूछ सकता हूँ, इस सब सामान को खरीदने के लिए तुम्हारे पास रुपया कहाँ से आया ?”

रत्ना कुछ न बोली।

वह सिर्फ अपराधिक भाव से नजरें झुकाए खड़ी रही।

“मैं तुमसे कुछ पूछ रहा हूँ मैडम ! मेरे सवाल का जवाब दो।” यशवंत गवली की आवाज में सख्त उभरी।

“मुझे यह पैसा महेश खोखा से प्राप्त हुआ था।” रत्ना बे-हिचक बोली, “महेश खोखा मुझे पैसा देता था और मैं उस पैसे से एक-एक करके यह सामान खरीद कर लाती थी।”

“ऑफिसर !” तभी शुभांगी, यशवंत गवली के नजदीक आई और उसके कान में धीरे से फुसफुसाई, “इस रुम की हालत देखकर मैं एक बात दावे के साथ कह सकती हूँ।”

“क्या ?”

“क्रिमिनोलॉजी का सिद्धांत कहता है कि महेश खोखा जैसा साधारण अपराधी जब इतना ढेर सारा रुपया कमाता हो, तो गारंटीड वह किसी बड़े आदमी के लिए काम करता होगा।”

“यानी तुम्हारे मुताबिक महेश खोखा के संबंध किसी बड़े आदमी के साथ थे ?”

“एब्सोल्यूटली करेक्ट।”

यशवंत गवली अब सोचने पर मजबूर हो गया।

“ऑफिसर !” रागिनी भी आहिस्ता से बोली, “मुझे भी यही लगता है। इतना ही नहीं, मुझे तो यह भी लगता है कि जरूर उसी बड़े आदमी का महेश खोखा के मर्डर में हाथ है।”

रत्ना अभी भी अपनी जगह शॉक्ड-सी खड़ी थी।

सच तो यह है, वह नहीं समझ पा रही थी कि वह लोग आपस में क्या बातें कर रहे हैं।

उल्टे उनकी खुसर-पुसर ने उसके दिमाग में कन्फ्यूजन पैदा कर दिया था।

“देखिए।” रत्ना हिम्मत जुटाकर बोली, “मैं नहीं समझ पा रही हूँ कि आप लोग यहाँ किसलिए आए हैं। महेश खोखा की मर्डर की तो केस फाइल भी बंद हो गई है और जिस अपराधी ने उसका मर्डर किया था उसे फाँसी भी लग चुकी है। फिर इस सारी पूछताछ का क्या मतलब है ?”

“मतलब है। दरअसल हम महेश खोखा के मर्डर केस की दोबारा से जाँच-पड़ताल कर रहे हैं।”

“दोबारा से जाँच पड़ताल !”

“हाँ।”

“मगर क्यों ?”

“क्योंकि हमें शक है, महेश खोखा का मर्डर अभय मल्होत्रा ने नहीं किया था।”

“यह आप क्या कह रहे हैं।” रत्ना अब बुरी तरह चौंकी, “अगर अभय मल्होत्रा ने महेश खोखा का मर्डर नहीं किया, तो फिर किसने किया ?”

"हम अब यही पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं ।" यशवंत गवली बोला, "इसीलिए यहाँ आए हैं कि शायद यहाँ से उस हत्यारे के बारे में कोई सुराग मिल जाए और हमें उम्मीद है कि इस केस की जाँच-पड़ताल करने में आप हमारी मदद करेंगी ।"

"अगर ऐसी बात है ।" रत्ना एकाएक अपने हाव-भाव बदलते हुए बोली, "तो मैं जरूर आपकी मदद करूँगी । पूछिए, आप क्या पूछना चाहते हैं ?"

"सबसे पहले हमें यह बताइए ।" यशवंत गवली बोला, "कि महेश खोखा तुम्हें जो इतना रुपया देता था, उसके पास से यह सारा रुपया आता कहाँ से था ?"

"इस बारे में तो मुझे कुछ नहीं मालूम ।" रत्ना बोली, "हाँ, मैं इतना जरूर जानती हूँ कि महेश खोखा की जेबों में हमेशा नोट भरे रहते थे और वह उन्हें बड़ी बेदर्दी के साथ लुटाता था । मैंने कम-से-कम रुपयों के लिए उसे कभी परेशान नहीं देखा बल्कि रुपयों की तो जैसे उसकी निगाह में कोई कीमत ही न थी ।"

"फिर भी वह इतने ढेर सारे रुपए लाता कहाँ से है, इस बारे में तुमने कभी तो उससे कुछ पूछा होगा ?"

"हाँ, मैंने इस सिलसिले में उससे एक-दो बार पूछा था ।"

"फिर ?"

"लेकिन वह हर बार मेरे इस सवाल को टाल गया ।" रत्ना बोली, "वह मेरे इस सवाल के जवाब में हर बार बस एक ही बात कहता था कि तुम्हें इस बात से क्या मतलब है, मैं रुपए लाता कहाँ से हूँ । तुम सिर्फ उन्हें खर्च करने से मतलब रखो और फिर यह बात तो तुम अच्छी तरह जानती ही हो कि मैं कोई शरीफ आदमी नहीं हूँ । जहाँ से भी रुपया लाता होऊँगा किसी का गला काटकर ही लाता होऊँगा, किसी को चोट पहुँचाकर ही लाता होऊँगा ।"

"यह बात वह इतनी ही सफाई के साथ बोलता था ?" यशवंत गवली के साथ-साथ सबके नेत्र आश्चर्य से फैले ।

"हाँ । और सच तो यह है ।" रत्ना की नजरें फिर झुकी, "मुझे महेश खोखा की वह बात पसंद थी । मुझे लगता था, वह भले गलत आदमी सही मगर उस गलत काम को कबूल करने का हौसला उसमें है, जो बड़े-बड़े तुर्रेखां में नहीं होता ।"

"यानी एक तरह से तुम उसकी मुरीद थीं ?" यशवंत गवली एक सिगरेट सुलगाता हुआ बोला ।

वह रहस्य की एक-एक गुत्थी को बड़े इत्मीनान के साथ खोल रहा था ।

"हाँ, थी तो ।"

"जब तुम उसकी मुरीद थीं ।" यशवंत गवली बोला, "तो फिर एकाएक यह परिवर्तन क्यों हुआ ? आज तुम उसके नाम से इस कदर भड़कती क्यों हो ? उसे इतना बुरा-भला क्यों कहती हो ?"

"क्योंकि जब मैं उसकी मुरीद थी तो मुरीद थी ।" रत्ना के तेवर वापस सख्त हो गए, "तब मैं समझती थी कि उससे ज्यादा भला मानस आदमी इस पूरी दुनिया में कोई नहीं है । तब मेरा यह मानना था कि वह बेहद ईमानदार आदमी है जो इतना बड़ा गुनाह कबूल करने का दिल-गुर्दा रखता है । सच तो यह है, मैं उसे धीरे-धीरे पसंद करने लगी थी ।"

"क्या वह भी तुम्हें पसंद करता था ?" यशवंत गवली ने सिगरेट का कश लगाते हुए पूछा ।

"खूब । बल्कि पहले तो वही मेरी तरफ आकर्षित हुआ था । उसी ने मेरे आगे पीछे भभके भभूत की तरह मंडराना शुरु किया था । वरना मैं कहाँ उसे घास डालने वाली थी । हम दोनों मिलकर शादी तक करने का प्लान बना चुके थे और एक-दो महीने में शादी भी करने वाले थे ।"

"फिर गड़बड़ कहाँ हुई ?"

"गड़बड़ तब हुई ।" रत्ना पहले की तरह गुस्से में भभकते हुए बोली, "जब उस हराम के जने की कलई खुली । जब उसका असली रूप मेरे सामने आया ।"

"असली रूप !"

"और नहीं तो क्या । पक्का औरतखोर था सूअर ! औरत देखते ही भभके भभूत की तरह उसके आगे-पीछे कुत्ते की तरह लार टपकाता घूमने लगता था और उसकी लल्लो-चप्पो में जुट जाता था । मैं समझती थी, वह ईमानदार है । मगर वह तो अव्वल नंबर का फंदेबाज आदमी था । इधर वह मुझे लाइन मार रहा था तो उधर और भी ऐसी कई औरतें थीं, जिनको वह मेरी तरह ही अच्छी-अच्छी बातें करके फुसलाता था । उनके साथ वही सबकुछ करता था जो मेरे साथ करता था ।"

"ऐसा ?"

"बिल्कुल ऐसा । और जब यह बात मुझे पता चली तो मेरा दिमाग फिर गया । तब कहीं मेरा यह भ्रम टूटा कि वह हरामजादा मुझसे प्यार नहीं करता था । प्यार नाम की चिड़िया से तो वह वाकिफ ही नहीं था । वह तो सिर्फ ऊपरी चोंचलेबाजी में यकीन रखता था ।"

यशवंत गवली के साथ-साथ रागिनी, शुभांगी और सावंत भी बड़े आश्चर्य के साथ रत्ना की वह बातें सुन रहे थे ।

"तुम्हें यह बात कैसे पता चली ?" रागिनी बोली, "कि महेश खोखा के दूसरी औरतों के साथ सम्बन्ध थे ?"

"चाल में दूसरे माले पर ही एक औरत रहती है, शान्ता बाई । मराठन औरत है । मैंने दो-तीन दफा महेश खोखा को रात के वक्त शांताबाई के साथ भी चिपके देखा था और वह उससे भी उसी तरह मीठी-मीठी बात कर रहा था, जैसी मुझसे करता था । तब कहीं मेरे दिमाग की चकरी घूमी । तब उन्हीं मेरी उम्मीदों का धड़नतख्ता हुआ । इसीलिए मैंने उस बंदर भूत के मुँह पर कसकर चमाट मारी थी ।"

"यानी इस चाल में एक मराठन औरत और थी ।" यशवंत गवली ने सिगरेट का छोटा-सा कश लगाया, "जिससे महेश खोखा मिलता था !"

"बिल्कुल ।"

"कहीं वो वही मराठन औरत तो नहीं ।" यशवंत गवली ने पूछा, "जिसकी उम्र तीस-इकत्तीस साल है और जो मराठियों की तरह ही साड़ी बाँधती है ?"

"हाँ, वही है ।"

"इसके अलावा वह जुड़ा बाँधती है ?" यशवंत गवली व्यग्रतापूर्वक बोला, "माथे पर बड़ी-बड़ी गोल बिंदी लगाती है ? हाथों में रंगबिरंगी भरी-भरी चूड़ियाँ पहनती है ?"

"वही, वही तो शांताबाई है ।"

"ओह !"

यशवंत गवली ने गहरी साँस छोड़ी ।

वह मानो सारा माजरा समझ गया ।

"लेकिन आप उसे कैसे पहचानते हैं ?" रत्ना हैरानी से बोली ।

"अभी बाहर मैंने एक मराठन औरत देखी थी । तुम्हारी बातों से मुझे लगा, हो सकता है वही वह हो । इसलिए मैंने उसका नक्शा खींच दिया ।"

"हंड्रेड परसेंट वही औरत है । बल्कि सच तो यह है कि महेश खोखा और मेरे बीच फसाद की जड़ ही वह बनी । न मैं उसे महेश खोखा के साथ देखती, न हमारे बीच झगड़ा होता ।"

यशवंत गवली के दिमाग में पूरी तस्वीर एकदम क्लियर हो गई कि शांताबाई नामक उस मराठन औरत ने क्यों यह बात पूरी चाल वालों से छुपाई थी कि महेश खोखा और रत्ना के एक-दूसरे से अनैतिक संबंध हैं । दरअसल उसने छुपकर महेश खोखा को रत्ना के साथ सेक्स करते देखा था और उसका भी महेश खोखा

पर दिल आ गया था। उसके बाद उसने महेश खोखा को अपने फंदे में फाँसना शुरू कर दिया और लुके-छुपे ढंग से उसके साथ सेक्स के सागर में गोते लगाने लगी।

असल में महेश खोखा उतना बड़ा फंदेबाज नहीं था जितनी बड़ी फंदेबाज वह शांताबाई थी।

●●●

यशवंत गवली को अब महसूस होना शुरू हुआ कि सचमुच यह केस अभी बंद नहीं हुआ था। वह जितना उस केस में घुस रहा था, उतनी उसकी नई-नई कलई खुलकर सामने आ रही थी।

रहस्य के नए-नए पर्दे खुल रहे थे।

यशवंत गवली ने सिगरेट के दो-तीन लंबे कश लगाएँ तथा फिर गौर से रत्ना की तरफ देखता हुआ बोला, "क्या तुम किसी ऐसे बड़े आदमी के बारे में जानती हो जिसके लिए महेश खोखा काम करता हो, या फिर किसी ऐसे आदमी के बारे में न भी जानती हो, तो किसी ऐसे बड़े आदमी के बारे में जानती हो जिसका महेश खोखा अक्सर जिक्र करता था ?"

"नहीं।" रत्ना की गर्दन इनकार में हिली, "मैं दोनों में से किसी भी तरह के बड़े आदमी को नहीं जानती। दरअसल अपने काम-धंधे के सिलसिले में महेश खोखा मुझसे ज्यादा बात करता ही नहीं था। और सच तो यह है, मेरा भी उसके काम-धंधे में कोई बहुत ज्यादा इंटरेस्ट नहीं था। वह क्या करता है, कहाँ जाता है, किससे मिलता है, मुझे इन सब बातों से क्या मतलब था !"

यशवंत गवली समझ गया, रत्ना गलत नहीं कह रही थी।

सचमुच उस जैसी औरत का उसके काम में क्या इंटरेस्ट हो सकता था ?

यशवंत गवली सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगाता हुआ अब रूम में इधर-उधर टहलने लगा तथा एक-एक चीज को बेहद ध्यानपूर्वक देखने लगा।

फोन के नजदीक पहुँचकर वह ठिठका।

"जब वो यहाँ आता था।" यशवंत गवली बोला, "तो क्या यहाँ से फोन भी करता था ?"

"हाँ, अक्सर करता था। फोन मैंने लगाया ही उसके कहने से था।"

"गुड।"

यशवंत गवली की आँखें चमक उठीं।

"जब वो यहाँ से फोन करता था।" रागिनी, यशवंत गवली का मंतव्य भाँपकर बोली, "तो तुम उसकी बातें भी सुनती होगी ?"

"बिल्कुल सुनती थी।" रत्ना बोली, "अब ऐसा कैसे हो सकता है कि वह यहाँ से फोन करे और आवाज मेरे कानों में न आए।"

"वह किस तरह की बातें करता था ?" रागिनी की आवाज में उत्सुकता का पुट था।

"यही मरने-मारने या किसी को लूटने-खसोटने की बातें। बात करते हुए वह बीच-बीच में गाली गलौज पर भी उतर आता था। उसकी गालियाँ बड़ी नंगी और भद्रता को पार किए होती थी। सच तो यह है, मुझे महेश खोखा की उस तरह की बातों से चिढ़ थी।"

"हूं !" यशवंत गवली के चेहरे पर सोचनीय भाव छाए रहे, "क्या कोई ऐसा खास आदमी था जिससे महेश खोखा ज्यादा बात करता हो ?"

"हाँ, एक आदमी था। ज्यादातर वह फोन पर उसी से बात करता था। महेश खोखा का उससे बात करने का अंदाज भी ऐसा था कि वह उससे काफी घुला-मिला है।"

"नाम क्या था उसका ?"

"नाम तो मुझे उस आदमी का नहीं मालूम ।" रत्ना बोली, "हाँ उसका फोन नंबर जरूर पता है । महेश खोखा ने टेलीफोन के नजदीक दीवार पर ही उसका नंबर लिखा था । वह अभी भी वहीं लिखा है ।"

यशवंत गवली के साथ-साथ रागिनी, शुभांगी और सावंत भी अब तेजी से कॉर्नर पर रखे टेलीफोन इंस्ट्रूमेंट की तरफ बढ़े और उन्होंने गौर से दीवार को देखा ।

वहाँ सचमुच एक नंबर लिखा था ।

"यह तो किसी का मोबाइल नंबर है ।" शुभांगी उस नंबर को देखते ही फौरन बोली ।

"हाँ, मोबाइल नंबर ही है । इसका मतलब वह जो भी आदमी है, महेश खोखा के काफी नजदीक था ।"

"बिल्कुल ।"

"मैं पता करता हूँ ।" सावंत ने आगे बढ़कर टेलीफोन का रिसीवर उठाया, "कि वह कौन आदमी है ।"

●●●

यशवंत गवली ने अब अपनी सिगरेट फेंक दी थी और उसका दिमाग काफी तेज स्पीड से कुछ सोचने लगा था ।

"जस्ट ए मिनट ।" इससे पहले कि सावंत वह मोबाइल नंबर डायल करता यशवंत गवली ने उसे रोका, "इस टेलीफोन से यह नंबर ट्राई मत करो ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि अगर वह आदमी महेश खोखा से ज्यादा करीब था, तो हो सकता है कि उस आदमी ने यहाँ का नंबर अपने मोबाइल में फीड किया हो । जबकि अब तुम इसी टेलीफोन से यह नंबर डायल करोगे तो उसके मोबाइल की स्क्रीन पर महेश खोखा का नाम आ जाएगा, और महेश खोखा का नाम देखकर वह चौंकेगा क्योंकि महेश खोखा तो मर चुका है । और यही एक बात उसके दिमाग में खतरे की घंटी बजा देगी । फिर वह शायद कॉल रिसीव भी न करें, या फिर यह संभव है कि वह कुछ महीनों के लिए मोबाइल का इस्तेमाल करना ही छोड़ दे ।"

मोबाइल का नंबर डायल करते-करते सावंत के हाथ रुक गए ।

यशवंत गवली गलत नहीं कह रहा था ।

"फिर आप यह कैसे पता लगाओगे ऑफिसर !" शुभांगी बोली, "कि यह मोबाइल नंबर किसका है ?"

"मैं इसे अपने मोबाइल से ट्राई करूँगा ।"

यह शब्द कहते हुए यशवंत गवली ने अपना मोबाइल निकाल लिया और उस पर दीवार पर लिखे नंबर डायल किए ।

फौरन दूसरी तरफ घंटी जाने लगी ।

"हेलो ।" शीघ्र ही यशवंत गवली के कानों में एक भारी-भरकम आवाज पड़ी ।

"मैं क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर से यशवंत गवली बोल रहा हूँ ।" यशवंत गवली की आवाज सनसनाई हुई थी, "क्या आप अपना नाम बता सकते हैं ?"

"क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर !" दूसरी तरफ मौजूद व्यक्ति के होश उड़ गए, "क... यशवंत गवली ! ल... लेकिन आप लोग मेरा नाम क्यों जानना चाहते हैं ?"

"दरअसल हम एक केस की इन्वेस्टिगेशन कर रहे हैं ।" यशवंत गवली बोला, "उसी की सर्चिंग के दौरान हमें कहीं से आपका मोबाइल नंबर मिला है ।"

"म... मेरा मोबाइल नंबर ।"

"हाँ । और प्लीज, आप हमारा ज्यादा वक्त बर्बाद मत कीजिए ! फौरन हमें अपना नाम और एड्रेस बताइए, वरना हम मोबाइल सेंटर से भी आपकी पूरी डिटेल पता कर सकते हैं ।"

"ज... जी ।" दूसरी तरफ मौजूद व्यक्ति की आवाज साफ-साफ बौखलाई हुई थी, "म... मेरा नाम ज्ञान प्रकाश डोगरा है और मैं दवाइयों की एक बहुत बड़ी कंपनी डोगरा ड्रग्स का मालिक हूँ ।"

"ज्ञान प्रकाश डोगरा ?"

"जी हाँ ।"

"डोगरा ड्रग्स के मालिक हैं आप ?"

"ज... जी हाँ ।"

यशवंत गवली ने लाइन कट कर दी ।

डोगरा ड्रग्स का उसने भी काफी नाम सुना हुआ था ।

वह सचमुच दवाइयों की एक बहुत बड़ी कंपनी थी और उसका ऑफिस मुंबई के नरीमन प्वाइंट जैसे बेहद पॉश एरिये में था ।

●●●

सुबह के 10:00 बज रहे थे जब वह चारों डोगरा ड्रग्स के नरीमन प्वाइंट स्थित ऑफिस पहुँचे ।

ज्ञान प्रकाश डोगरा पहले से ही अपने बेहद आलीशान एयर कंडीशंड ऑफिस में मौजूद था । वह तकरीबन 50-55 साल का एक अधेड़ आदमी था । उसका शरीर स्थूलकाय था । आँखों पर आई साइट का ऐनक चढ़ा हुआ था । सिर के आधे से ज्यादा बाल उड़ चुके थे । मगर फिर भी उसके व्यक्तित्व में ऐसा कुछ था जो उसे प्रभावपूर्ण बनाता था । जिससे यह साबित होता था कि वह सचमुच कारपोरेट फील्ड की एक हस्ती है ।

ज्ञान प्रकाश डोगरा की आँखें उस समय गुलाबी हो रही थी और उसका चेहरा देखकर साफ-साफ अंदाजा लगाया जा सकता था, वह सारी रात सोया नहीं है ।

यशवंत गवली ने उसे अपना परिचय दिया ।

"ऑफिसर !" ज्ञान प्रकाश डोगरा तुरंत रिवाल्विंग चेयर छोड़कर खड़ा हो गया, "आप लोग आखिर क्यों मुझे इस तरह ढूंढते फिर रहे हैं ? मुझसे आखिर क्या गलती हो गई ?"

यशवंत गवली ने उसे महेश खोखा के बारे में बताया और रत्ना की खोली से मिले मोबाइल नंबर के बारे में बताया ।

"म... महेश खोखा !"

यह नाम सुनते ही ज्ञान प्रकाश डोगरा के चेहरे की रंगत एकदम हल्दी की तरह पीली जर्द पड़ गई ।

"क्यों ?" यशवंत गवली मुस्कुराया, "क्या तुम अब यह कहोगे कि तुमने यह नाम पहले कभी नहीं सुना ?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं ऑफिसर ! मैं इतना बड़ा झूठ नहीं बोलूँगा ।"

"यानी तुम कबूल करते हो ।" यशवंत गवली बोला, "कि तुम महेश खोखा को जानते थे, उससे खूब अच्छी तरह वाकिफ थे ?"

"जी हाँ ।" ज्ञान प्रकाश डोगरा शर्मिंदगी के साथ नजरें झुकाकर बोला, "मैं कबूल करता हूँ कि मैं उसे जानता था, उससे वाकिफ था । बट यू बिलीव मी ऑफिसर, मेरे उसके साथ कोई बहुत गहरे संबंध नहीं थे !"

"प्लीज मिस्टर डोगरा !" यशवंत गवली ने उसकी बात बीच में ही काटी, "जितना सवाल आपसे पूछा जाए सिर्फ उतना जवाब दीजिए । आपसे पूछा जा रहा है कि आप उससे वाकिफ थे या नहीं ?"

“ज... जी हाँ ।” ज्ञान प्रकाश डोगरा अपने भीतर हिम्मत जुटाता हुआ बोला, “मैं उससे वाकिफ था ।”

“हैरानी है, आप इतने बड़े इंडस्ट्रियलिस्ट आदमी हैं, इतने बड़े मिलेनियर मैन है, फिर भी आपकी महेश खोखा जैसे निहायत मामूली आदमी से जान-पहचान थी । ऐसे सड़कछाप गिरहकट आदमी से जान-पहचान थी, जो चाल में रहता था । लोगों को लूटता-खसोटता था । जिसका अपना कोई सोशल स्टेटस था ही नहीं, बल्कि वह दूसरे लोगों के सोशल स्टेटस के लिए खतरा था । इतना ही नहीं, ऐसे गैर मामूली आदमी से आपकी जान-पहचान भी ऐसी थी कि वह आपका मोबाइल नंबर अपने दीवार पर लिखकर रखता था । पूछ सकता हूँ, जान-पहचान के पीछे क्या वजह रही होगी ?”

ज्ञान प्रकाश डोगरा अब उन चारों से नजरें चुराने लगा ।

उसकी हालत ऐसी थी मानो वह जमीन में गड़ा जा रहा हो ।

“मिस्टर डोगरा !” यशवंत गवली का लहजा सख्त हो उठा, “मैं आपसे कुछ पूछ रहा हूँ, मेरे इस सवाल का जवाब दीजिए ।”

"द... दरअसल मुझे बहुत मजबूरी में महेश खोखा से संबंध बनाने पड़े थे ।" ज्ञान प्रकाश डोगरा नजरे झुकाए-झुकाए बोला ।

"एक बदमाश आदमी से सम्बन्ध बनाने के पीछे क्या मजबूरी हो सकती है ?"

"थी मेरी मजबूरी !"

"क्या वह मजबूरी बयान करोगे ?"

ज्ञान प्रकाश डोगरा फिर बेचैन दिखाई पड़ा ।

"अगर तुम मजबूरी नहीं बताओगे, तो तुम्हारे फँसने के और भी ज्यादा चान्सेस हैं मिस्टर डोगरा ! इसलिये तुम्हारे हक में यही सही है कि सबकुछ साफ-साफ बता दो ।"

"ठीक है ।" ज्ञान प्रकाश डोगरा अपने गले का थूक सटकता हुआ बोला, "मैं तुम्हें सबकुछ बताता हूँ ।"

"एकदम साफ-साफ !" वह आवाज सावंत की थी ।

"हाँ, एकदम साफ-साफ !"

ज्ञान प्रकाश डोगरा एक पल के लिये खामोश हुआ, फिर उसने पूरी कहानी बयान की ।

“दरअसल पिछले दिनों मैं बहुत परेशान था ऑफिसर !” ज्ञान प्रकाश डोगरा अपनी व्यथा बयान करता हुआ बोला, “मेरी दवाइयों की कंपनी में आए दिन मजदूर हड़ताल करते रहते थे और इस सबकी वजह यूनियन लीडर था जो निहायत बदमाश आदमी था और हमेशा डंडे-गोली की जबान में बात करता था । वह आए दिन हड़ताल करने की धमकी दे-देकर मुझसे रुपए ऐंठता । सच तो यह है कि मैं उस यूनियन लीडर से तंग आ चुका था और किसी प्रकार उसके हाथों ब्लैकमेल होने से बचना चाहता था ।”

“और इसके लिए तुमने महेश खोखा की मदद ली ?”

“हाँ, भले मजबूरी में ली, मगर ली ऑफिसर ! इसके अलावा मैं और क्या कर सकता था । लोहा ही लोहे को काटता है और इसके लिए मैंने महेश खोखा को चुना ।”

"यानी तुम महेश खोखा को पहले से जानते थे ?" रागिनी एक-एक शब्द पर जोर देकर बोली ।

"नहीं ।"

"नहीं ।' शुभांगी तपाक से बोली, "अगर नहीं जानते थे, तो तुमने उससे सम्पर्क स्थापित कैसे किया ? हाऊ डिड यू कम अक्रॉस महेश खोखा ?"

ज्ञान प्रकाश डोगरा अब उन सबके सवाल-जवाबों से बुरी तरह बौखला उठा ।

वह एकाएक काफी बेचैन नजर आने लगा । डोगरा ने अपनी जेब से रुमाल निकाला और चेहरे का पसीना साफ किया ।

"बैठिये !" डोगरा कुछ सन्तुलित स्वर में बोला, "पहले आप लोग बैठिये ।"

वह चारों टेबल के इधर पड़ी विज़िटर्स चेयर पर बैठ गये ।

डोगरा भी अपनी कुर्सी पर बैठ गया ।

"दरअसल आप लोग शायद मेरी बात का यकीन नहीं करेंगे ।" ज्ञान प्रकाश डोगरा बोला, "मगर यह सच है कि मैं महेश खोखा को पहले से नहीं जानता था । उसकी शक्ल तक मैंने नहीं देखी थी ।"

"मिस्टर डोगरा !" यशवंत गवली बोला, "अगर आपने उसकी शक्ल तक नहीं देखी थी तो फिर आपने उससे संपर्क स्थापित कैसे किया ? आखिर आपके पास ऐसा कोई-न-कोई जरिया तो रहा होगा जिसके द्वारा आप महेश खोखा तक पहुँचे ?"

"हाँ, ऐसा एक जरिया मेरे पास था ।"

"क्या ?"

"बलदेवराज टण्डन !" ज्ञान प्रकाश डोगरा धमाका-सा करता हुआ बोला, "बलदेवराज टंडन ने मेरी महेश खोखा से मुलाकात करायी ।"

और ।

बलदेवराज टंडन का नाम सुनकर न सिर्फ यशवंत गवली बल्कि रागिनी, शुभांगी तथा सावंत भी बुरी तरह चौंके ।

"कहीं तुम उन्हीं बलदेवराज टंडन की बात तो नहीं कर रहे ।" सावंत आश्चर्य मिश्रित स्वर में बोला, "जो मुम्बई टाइम्स अखबार के मालिक हैं ?"

"बिल्कुल सही । मैं उन्हीं बलदेवराज टंडन की बात कर रहा हूँ । वे मेरे काफी घनिष्ठ मित्रों में से एक हैं । जब मैंने उन्हें अपनी प्रॉब्लम बताई, तो वह फौरन मेरी मदद करने को तैयार हो गये और उन्होंने ही मुझे महेश खोखा का नाम सुझाया ।"

"लेकिन बलदेवराज टंडन ही महेश खोखा को कैसे जानते थे ?"

"अब यह तो मुझे नहीं मालूम ।"

यशवंत गवली के चेहरे पर सोचनीय भाव उभर आये ।

●●●

इसमें कोई शक नहीं केस हर पल नए-नए रंग बदल रहा था ।

शुभांगी ने क्रिमिनोलॉजी (अपराध साहित्य) की रोशनी में यह जो अनुमान लगाया था कि महेश खोखा का जरूर बड़े आदमियों से संपर्क है, वह अनुमान गलत नहीं था । बल्कि महेश खोखा के उनकी उम्मीद से कहीं ज्यादा बड़े-बड़े लोगों के साथ संपर्क निकल रहे थे ।

खास तौर पर बलदेवराज टंडन के नाम ने तो सबको चौंकाया था ।

आखिर बलदेवराज टंडन मुंबई शहर की एक हस्ती था । न सिर्फ प्रिंट मीडिया में बल्कि पॉलिटिकल लेवल पर भी उसकी अच्छी पहुँच थी ।

ज्ञान प्रकाश डोगरा से मुलाकात करने के बाद यशवंत गवली की वह पूरी टीम मुम्बई टाइम्स अखबार के दफ्तर पहुँची ।

उस केस के सिलसिले में उन्हें सचमुच काफी भागा-दौड़ी करनी पड़ रही थी ।

जब वह अखबार के दफ्तर पहुँचे, तो उस समय वहाँ बहुत गहमागहमी थी । सुबह का अखबार तो निकल चुका था मगर अगले दिन के अखबार की सरगर्मियाँ चल रही थीं । टेलीप्रिंटर और इंटरनेट सर्विस से दूर-दराज के शहरों तथा विश्व भर की खबरें आ रही थीं । न्यूज़ एडिटर उन खबरों को अलग ही रंग देने में जुटे थे । अलग-अलग पेज का ले-आउट तैयार हो रहा था । टेलीफोन की घंटी बज रही थी । कुल मिलाकर वहाँ खूब गहमागहमी थी ।

बलदेवराज टंडन भी उस समय अपने केबिन में था ।

हालांकि टंडन भी ज्ञान प्रकाश डोगरा की तरह अधेड़ उम्र का आदमी था । मगर टंडन, डोगरा की तरह स्थूलकाय शरीर का मालिक नहीं था बल्कि वह काफी चुस्त-दुरुस्त व्यक्ति था । हमेशा सूटेड-बूटेड रहता था । इसके अलावा बलदेवराज टंडन के व्यक्तित्व की एक और खासियत यह थी कि वह फिल्म अभिनेता नसीरुद्दीन शाह से काफी मिलता था ।

वह किस कदर मिलता था, इसका एहसास इसी बात से लगाया जा सकता है कि सड़क पर आते-जाते लोग कई बार उसे देखकर धोखा खा जाते थे और नसीरुद्दीन शाह समझकर उससे ऑटोग्राफ तक मांग बैठते थे ।

बलदेवराज टंडन, जो मुंबई शहर में खुद किसी सेलिब्रिटी से कम नहीं था, उसे हालांकि यह बात बहुत पिंच करती ।

मगर ।

उसने यह बात कभी किसी के ऊपर जाहिर नहीं होने दी ।

वह अपने ऐसे कथित फैन्स को सिर्फ मुस्कुराकर टाल जाता और वह उन्हें बताता वह वास्तव में वह नहीं है जो वह समझ रहे हैं ।

●●●

वह चारों केबिन में जाकर बलदेवराज टंडन से मिले और उन्हें अपने वहाँ आने का मकसद बताया ।

बलदेवराज टंडन पर कोई प्रतिक्रिया न हुई ।

न वह चौंका ।

न हैरान हुआ ।

बल्कि बेहद शांति के साथ उसने यशवंत गवली की सारी बात सुनी ।

“बैठो ।” उसने उन चारों से बैठने के लिए कहा ।

वह चारों उसके सामने अलग-अलग कुर्सियों पर बैठ गए ।

“यह सच है ।” बलदेवराज टंडन ने बेहद नपे-तुले अंदाज में बोलना शुरू किया, “मैं महेश खोखा को जानता था और यह भी सच है कि मैंने ही ज्ञान प्रकाश डोगरा से उसकी मीटिंग कराई थी । मगर ऑफिसर, आप मेरे और महेश खोखा के बीच में जिस तरह के संबंध समझकर चल रहे हैं, हमारे बीच ऐसे कोई संबंध नहीं थे ।”

“फिर ।” यशवंत गवली उसकी आँखों में झांकता हुआ बोला, “फिर कैसे संबंध थे ?”

“एक साधारण-सी मेल-मुलाकात थी ।” बलदेवराज टंडन बोला, “मुझे अच्छी तरह याद है, वह एक बार मेरे अखबार में नौकरी मांगने आया था । दरअसल वह जुर्म की दुनिया छोड़कर कुछ अच्छे काम करने का इच्छुक था । एक ड्राईक्लीन सिटीजन की तरह जिंदगी जीने का ख्वाहिशमंद था । पहली ही मुलाकात में मुझे महेश खोखा की एक बात बहुत अच्छी लगी ।”

“क्या ?”

“उसने अपने बारे में मुझसे कुछ नहीं छुपाया । सबकुछ बिल्कुल साफ-साफ बता दिया । हालांकि अगर वह चाहता तो मुझसे सबकुछ छुपा सकता था क्योंकि मैं उसके बारे में जानता ही क्या था ? मुझे तो उसके नाम तक के बारे में जानकारी नहीं थी । मगर नहीं, उसने ऐसा नहीं किया । उसने अपने और मेरे बीच में कोई पर्दा नहीं रखा । दरअसल वह मेरे अखबार का तथा मेरा बहुत बड़ा फैन था और उसका कहना था, मेरे आर्टिकल पढ़-पढ़कर उसे सुधरने की प्रेरणा मिली है ।”

“फिर क्या आपने उसे अपने अखबार में नौकरी दी ?”

"नहीं ।"

"क्यों ?"

यशवंत गवली चौंका ।

वह बात हैरानी वाली थी ।

"बस मेरा उस आदमी पर विश्वास ही नहीं जमा । हालांकि वह मुझे एक सच्चा इंसान लग रहा था लेकिन फिर भी एक क्रिमिनल्स को मुझे अपने अखबार के दफ्तर में जगह देना ठीक नहीं लगा । मुझे लगा, ऐसा आदमी वहाँ के माहौल को बिगाड़ सकता था । इतना ही नहीं, न्यूज़पेपर की दुनिया में हमारे जो कंपटिटर थे, उन्हें भी हमारे ऊपर उंगली उठाने का मौका मिल सकता था ।"

"फिर आपने क्या कहा ?" शुभांगी तत्परतापूर्वक बोली, "क्या आपने उसे नौकरी देने से साफ इनकार कर दिया ?"

"नहीं, साफ इनकार करने का तो मतलब ही नहीं था ।" बलदेवराज टंडन के शब्दों में वाक चातुर्य छिपा था, "आखिर वह इतनी ईमानदारी के साथ मुझसे आकर मिला था और फिर मेरा तथा मेरे अखबार का बहुत बड़ा फैन था । फैंस के साथ तो वैसे भी इस हर तरह की हरकतें नहीं की जातीं । मैंने उसे इनकार करने के लिए एक बीच का रास्ता निकाला ।"

"क्या ?"

"मैंने उससे कहा, फिलहाल तो ऑफिस में कोई जॉब नहीं है । तुम अपना एड्रेस छोड़ जाओ, जब कोई काम होगा तो मैं तुम्हें बुला लूँगा ।"

"फिर उसने छोड़ा एड्रेस ?"

"बिल्कुल छोड़ा । एड्रेस न छोड़ने का मतलब ही नहीं था ।" बलदेवराज टंडन बोला, "अलबत्ता महेश खोखा के जाने के बाद वह बात मेरे लिए बिल्कुल आई-गई हो गई । मैं महेश खोखा को एकदम भूल गया । फिर एक दिन ज्ञान प्रकाश डोगरा मुझसे मिला और उसने अपनी यूनियन लीडर वाली प्रॉब्लम बताई । फौरन मेरे दिमाग में महेश खोखा का नाम आया । मुझे लगा, ऐसी कंडीशन में महेश खोखा, डोगरा की हेल्प कर सकता है । इसलिए मैंने उसे महेश खोखा के पास भेज दिया ।"

"यानी एक आदमी जो साफ-सुथरी जिंदगी बसर करने का तमन्नाई था ।" यशवंत गवली बोला, "जो गुनाहगार की एक गलीच जिंदगी छोड़कर ड्राईक्लीन सिटीजन बनना चाहता था, एक अच्छा इंसान बनना चाहता था, आपने उसे वापस गुंडे-मवालियों का वही काम पकड़ा दिया । वेरी गुड टंडन साहब ! सचमुच जम्हूरियत और सोशलिजम की बड़ी-बड़ी बात करने वाले आपके अखबार के दफ्तर से महेश खोखा को बड़ा अच्छा रास्ता देखने को मिला । उसे वाकई इस बात से कोई-न-कोई सबक तो हासिल हुआ होगा, भले उसने न कहा हो मगर फिर भी हासिल हुआ होगा ।"

बलदेवराज टंडन ने गहरी साँस छोड़ी और कुर्सी की पुश्त से पीठ लगा ली ।

"मैं तुम्हारा कटाक्ष समझ सकता हूँ ऑफिसर !" बलदेवराज टंडन अपेक्षाकृत शांत स्वर में बोला, "मैं जानता हूँ, तुम अपनी जगह सही हो । सचमुच एक अखबार के एडिटर पर यह जिम्मेदारी आयद होती है कि वह सोशलिज्म और जम्हूरियत की बड़ी-बड़ी बातें सिर्फ अपने आर्टिकलों में लिखे नहीं बल्कि उन्हें सोसाइटी में फैलाए भी । लेकिन नारेबाजी करना या किसी को सीख देना अलग होता है ऑफिसर और उस पर खुद अमल करना अलग । मैं मानता हूँ, उस क्षण मैं गलत था । मगर ज्ञान प्रकाश डोगरा की भी अपनी मजबूरी थी और जायज मजबूरी थी । उसे भी किसी तरह हल करना था । इसके अलावा महेश खोखा को भी काम की तलाश थी । फिर ज्ञान प्रकाश डोगरा का काम महेश खोखा के उन कामों से से तो बेहतर ही था जो वह आए दिन करता था । इसके अलावा डोगरा ने उसे उस यूनियन लीडर से पिंड छुड़ाने का पैसा भी अच्छा-खासा दिया ।"

"हूँ।" यशवंत गवली गौर से बलदेवराज टंडन को देखता हुआ बोला, "यानी आप यह कहना चाहते हैं कि महेश खोखा ने ज्ञान प्रकाश डोगरा के लिए जो कुछ किया गलत नहीं किया ?"

"मेरी निगाह में तो गलत नहीं किया। अगर मुश्किल में फंसे किसी आदमी की मदद करना गलत है तो शायद उसने गलत किया हो। यह बात अलग है, उसकी मदद करने का तरीका कुछ अलग था, स्टाइल थोड़ी जुदा थी।"

यशवंत गवली, बलदेवराज टंडन को देखता रहा। रागिनी, शुभांगी और सावंत भी उस समय चुप थे।

"आप महेश खोखा से कुल कितनी बार मिले थे ?" यशवंत गवली बेहद खुर्दबीन अंदाज में तफ्तीश करता हुआ बोला।

"सिर्फ एक बार।"

"एक बार !"

अब उन सबके चौंकने की बारी थी।

सबकी आँखों में उत्कंठा के भाव उभरे।

"जी हाँ। मैं उससे बस तभी मिला था ऑफिसर !" बलदेवराज टंडन बोला, "जब महेश खोखा मेरे ऑफिस में मुझसे नौकरी मांगने आया था।"

"और दूसरी बार आप ज्ञान प्रकाश डोगरा साहब के साथ नहीं मिले ?" रागिनी जल्दी से बोली।

"नहीं।" टंडन ने पूरी दृढ़ता के साथ इनकार में गर्दन हिलाई, "तब तो मैंने डोगरा को सिर्फ उसका एड्रेस दे दिया था और डोगरा ने खुद ही उसे फोन करके बुलाया था।

केबिन में फिर सन्नाटा छा गया।

गहरा सन्नाटा।

किसी के पास कोई सवाल न था।

●●●

यशवंत गवली ने अब एक सिगरेट सुलगा ली और वह काफी बेचैनी महसूस करने लगा।

बड़ा अजीब केस था। हर नया क्लू उनके बीच उम्मीद की किरण रोशन करता था परंतु जब वह क्लू के पास पहुँचते तब उन्हें पता चलता कि अभी तो वह अपनी मंजिल से कोसों दूर हैं।

वह वापस खुद को अंधी गलियों में भटकता हुआ महसूस करते।

"मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली काफी सोचने-विचारने के बाद बोला, "अच्छा आप एक बात बताइए।"

"पूछो।"

"महेश खोखा का खून 3 अप्रैल की शाम 7:00 बजे हुआ था।" यशवंत गवली बोला, "जिस समय जसलोक हॉस्पिटल में महेश खोखा का खून हुआ उस समय आप कहाँ थे ?"

"उस दिन मैं मराठा मंदिर सिनेमा हॉल में बैठा 6:00 से 9:00 वाला इवनिंग शो देख रहा था।"

यशवंत गवली सहित उन सबकी नजरें अब एक-दूसरे से मिलीं।

"क्या बात है मिस्टर टंडन !" शुभांगी बोली, "आपने इस सवाल का काफी जल्दी जवाब दिया, जैसे आप जानते थे कि यह सवाल आपसे पूछा जाने वाला है ?"

टंडन एकाएक हड़बड़ा उठा।

उसके चेहरे पर सकपकाहट के भाव उभरे।

"नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।"

"लगा तो ऐसा ही था।" शुभांगी बोली, "जैसे आप इस सवाल का जवाब देने के लिए पहले से तैयार बैठे थे।"

"यह सच है, मैंने इस सवाल का काफी जल्दी में जवाब दिया।" बलदेवराज टंडन बोला, "मगर इसके पीछे भी एक वजह थी।"

"क्या ?"

"दरअसल 3 अप्रैल को मेरी शादी की 25वीं सालगिरह थी, यानी मेरी मैरिज एनिवर्सरी का सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन।"

"इस पूरे वाकई का इस बात से क्या संबंध है ?"

"संबंध है।" बलदेवराज टंडन बोला, "गहरा संबंध है। दरअसल मैं और मेरी पत्नी ने शादी के बाद पहली फिल्म मराठा मंदिर सिनेमा हॉल में ही देखी थी, इसलिए हमने प्रोग्राम बनाया कि अपनी शादी की 25वीं सालगिरह पर भी हम उसी सिनेमा हॉल में जाकर फिल्म देखेंगे और पुराने दिनों की याद ताजा करेंगे। मेरी यह बात मेरी पत्नी को भी काफी अच्छी लगी। वह खुद अपने पुराने दिनों की याद ताजा करना चाहती थी। इस तरह हम लोग मराठा मंदिर में फिल्म देखने पहुँच गए। वैसे भी इन दिनों वहाँ 'हम आपके हैं कौन' चल रही है जिसे देखने की हमारे काफी दिनों से इच्छा थी और यही एक वजह है जो मैंने 3 अप्रैल के बारे में इतनी जल्दी अपना बयान दे दिया।"

"यानी 3 अप्रैल को जिस समय महेश खोखा का मर्डर हुआ।" यशवंत गवली बोला, "तब आप मराठा मंदिर के अंदर थे और 'हम आपके हैं कौन' फिल्म देख रहे थे।"

"यस इट्स ट्रू।"

"क्या आपके पास इस बात का कुछ सबूत होगा कि उस समय आप मराठा मंदिर के अंदर थे ?"

"क्यों नहीं ! मेरे पास पक्का सबूत है। दरअसल मराठा मंदिर का मैनेजर मेरा दोस्त है और मैंने उसी को बोलकर इवनिंग शो के अपने दो टिकट बुक कराए थे, बल्कि वह टिकट शायद अभी भी मेरी जेब में होंगे।"

यह शब्द कहकर टंडन ने अब बड़ी तेजी के साथ अपनी जेब में टिकट तलाश करने शुरु किए।

जबकि वह चारों पुनः एक-दूसरे को देखने के लिए विवश हो गए।

केस में रहस्य की एक नई गुत्थी जुड़ने जा रही थी।

ऐसी गुत्थी।

जिससे अभी शायद बलदेवराज टंडन भी वाकिफ नहीं था।

उसने सबसे पहले पैंट की जेबों में टिकट तलाश की। कोट की जेब में की, फिर पॉकेट-पर्स वगैरह को भी देखा लेकिन अंततः कोट के अंदर वाली जेब से उसे वह टिकट बरामद हो ही गए।

"यह देखिए।" बलदेवराज टंडन थोड़ा उत्साहपूर्वक बोला, "यह रहे मराठा मंदिर की टिकट। ध्यान से देख लीजिए, यह 3 अप्रैल के ही टिकट हैं और इवनिंग शो के हैं।"

यशवंत गवली के होंठों पर अब ऐसी मुस्कुराहट उभरी, जैसे किसी बच्चे की बचकानी बात सुनकर वह मुस्कुरा रहा हो।

और।

शुभांगी के होंठों पर भी ऐसी ही मुस्कुराहट पैदा हुई थी।

जबकि उन्हें यूँ मुस्कुराते देखकर बलदेवराज टंडन थोड़ा सकपकाया। दोनों टिकट अभी भी उसके ही हाथ में थे।

"क... क्या बात है ?" वह कुछ बौखलाए स्वर में बोला, "आप इस तरह मुस्कुरा क्यों रहे हैं ?"

"इंटरेस्टिंग टंडन साहब, वेरी इंटरेस्टिंग !" यशवंत गवली वह टिकट टंडन के हाथ से लेता हुआ बोला, "मानना पड़ेगा यह टिकट तो सचमुच 3 अप्रैल के ही हैं मगर एक बात समझ में नहीं आई।"

"क्या ?"

आमतौर पर फिल्म देखने के बाद हर कोई टिकट फेंक दिया करता है मगर यह समझ नहीं आता कि आप जैसे बड़े आदमी ने इन टिकटों को अभी तक संभालकर क्यों रखा हुआ है ?"

"अ... आप कहना क्या चाहते हैं ऑफिसर ?"

"मैं जो कहना चाहता हूँ, वह आप मुझसे ज्यादा अच्छी तरह समझ रहे हैं। फिलहाल मैं चलूँगा लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि बहुत जल्द आपसे वापस मुलाकात होगी।"

यशवंत गवली ने बलदेवराज टंडन से कसकर हाथ मिलाया और फिर कुर्सी छोड़ दी।

उसके साथ-साथ बाकी सब भी कुर्सी छोड़कर खड़े हुए।

बलदेवराज टंडन हतप्रभ-सी अवस्था में अभी भी अपनी जगह बैठा था, मानो वह कुछ समझ न पा रहा हो।

●●●

उसके बाद यशवंत गवली, रागिनी, शुभांगी और सावंत सीधे मराठा मंदिर सिनेमा हॉल पहुँचे और उस सिनेमा हॉल के मैनेजर से मिले। वहाँ तब भी 'हम आपके हैं कौन' ही चल रही थी।

मराठा मंदिर का मैनेजर एक सिंधी आदमी था।

उम्र 50 वर्ष।

मोटा ताजा।

ठिगने से कद का आदमी।

वह शक्ल-सूरत से गूढ़ सिंधी नजर आता था मगर उसका रखरखाव काफी आधुनिक था।

वह चारों केबिन में पहुँचते ही मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने के लिए मैनेजर को चारों तरफ से घेरकर खड़े हो गए और उसे अपने वहाँ आने की वजह बताई।

मैनेजर अब एकाएक काफी बौखलाया हुआ नजर आने लगा।

"वडी साईं !" सिंधी मैनेजर शुष्क स्वर में बोला, "यह सच है कि 3 अप्रैल को मिस्टर टंडन के लिए मैंने ही टिकट बुक कराए थे नी, और वह यहाँ पिक्चर देखने भी आए थे।"

"अपनी वाइफ के साथ ?"

"हाँ, अपनी वाइफ के साथ। वडी, मैंने उनके लिए दो ही टिकट बुक कराए थे नी।"

"ओके। यानी तुम्हारी मुताबिक मिस्टर टंडन 3 अप्रैल को मराठा मंदिर में 6:00 से 9:00 वाला शो देखने के लिए आए थे और अपनी वाइफ के साथ आए थे। करेक्ट ?"

"करेक्ट।"

"यह बताओ, क्या यहाँ आने के बाद वह पूरे 3 घंटे तक सिनेमा हॉल के अंदर बैठे भी रहे थे या नहीं ? क्या उन्होंने फिल्म पूरी देखी थी ?"

अब सिंधी सकपकाया।

उसके चेहरे पर व्याकुलता के भाव उभरे।

यशवंत गवली ने वह उससे एक अलग तरह का प्रश्न किया था।

"यशवंत साईं !" सिंधी झिझकता हुआ बोला, "वडी, मैं झूठ क्यों बोलूँ ! वडी, यह तो मैं एकदम फुल गारंटी के साथ नहीं बोल सकता कि फिर मिस्टर टंडन पूरे टाइम इधर थे या नहीं थे क्योंकि मैं शो के दौरान भी उनके साथ चिपका तो नहीं बैठा रहा था नी। वडी, मैंने तो उन्हें टिकट भिजवाए थे फिर जब वह यहाँ आए तो मैंने उनकी अगवानी की और उन्हें बालकनी तक लेकर गया। बस वडी, उसके बाद मैं अपने दूसरे

कुछ जरूरी काम में मगन हो गया था नी । अब आप ही बताओ, मैं यह कैसे कह सकता हूँ वह फुल टाइम इधर थे या नहीं थे ?”

यशवंत गवली समझ गया सिंधी गलत नहीं बोल रहा था ।

वह अपनी जगह राइट था ।

एकदम राइट ।

यशवंत गवली अब अपने दिमाग पर जोर डालकर सोचने लगा कि वह हकीकत की तह तक कैसे पहुँचे ?

रागिनी, शुभांगी और सावंत भी अपने दिमागी घोड़े दौड़ा रहे थे ।

“क्या आपके अलावा इस सिनेमा हॉल में कोई और ऐसा आदमी है ।” इस मर्तबा सावंत बोला, “जो यह बता सके कि मिस्टर टंडन और उनकी वाइफ पूरे टाइम सिनेमा हॉल में बैठे रहे थे या नहीं ?”

सिंधी अब सोचने के लिए मजबूर हुआ ।

“हाँ ।” फिर वह एकाएक उत्साहपूर्वक बोला, “वडी, यहाँ एक आदमी ऐसा जरूर है जो आप लोगों की शायद कुछ हेल्प कर सकता है ।”

“कौन ?”

यशवंत गवली के साथ-साथ सब अलर्ट हुए ।

चौकन्ने ।

“वडी उशर ।” सिंधी बोला, “वडी, जो थिएटर के अंदर टॉर्च लेकर घूमता है और टिकटें चैक करता है । साईं, मैंने उसको टंडन साहब का खास ख्याल रखने के लिए बोला था । हो सकता है, वह इस सिलसिले में कुछ बता दे ।

"उस उशर का क्या नाम है ?"

"अब्बास !"

●●●

फिर अब्बास को भी वहाँ बुलाया गया ।

अब्बास मुश्किल से 24-25 साल का एक बेहद गर्मजोश नौजवान था । वह हालांकि मराठा मंदिर में टिकट चैक करने का मामूली काम करता था मगर उसके सपने बहुत बड़े थे ।

इसी कारण वह हमेशा उत्साह में भरा रहता ।

वह हमेशा यही सोचता अभी तो उसने बहुत कुछ करना है ।

बहुत आगे जाना है ।

अब्बास जब मैनेजर के केबिन में दाखिल हुआ तो टॉर्च उस समय भी उसके हाथ में थी । उसने घिसी हुई डेनिम की जींस पहन रखी थी और ऊपर से टीशर्ट डाली हुई थी ।

केबिन में दाखिल होते ही पहले तो वह चार अजनबी लोगों को वहाँ देखकर सकपकाया ।

“आपने मुझे बुलाया साहब ?” अब्बास मैनेजर से संबोधित होकर बोला ।

“हाँ ।” यशवंत गवली उसकी तरफ बढ़ा, “हमने तुम्हें बुलाया है अब्बास !”

“आपने !”

“हाँ ।”

यशवंत गवली ने सबसे पहले अब्बास को अपना परिचय दिया और फिर अपने साथियों के बारे में बताया । अब्बास यह सुनते ही काँप उठा कि उसके सामने यशवंत गवली जैसा आदमी खड़ा है ।

"अब्बास !" यशवंत गवली उसकी आँखों में झांकता हुआ वहीं एक कुर्सी पर टांग पर टांग रखकर बैठ गया, "हमें तुमसे कुछ सवाल पूछने हैं ।"

"म... मुझसे !"

"हाँ अब्बास ! घबराओ मत, तुमने ऐसा कुछ नहीं किया जिससे तुम्हें डरने की जरूरत हो । हम दरअसल किसी और के बारे में तुमसे कुछ सवाल पूछना चाहते हैं ।"

"किसके बारे में ऑफिसर ?" अब्बास का स्वर काफी सस्पेंसफुल था ।

"अगर तुम्हें याद हो ।" यशवंत गवली कुर्सी पर बैठा-बैठा बोला, "तो 3 अप्रैल को तुम्हारे मैनेजर साहब के एक दोस्त ही यहाँ इवनिंग शो में फिल्म देखने आए थे जिनका नाम बलदेवराज टंडन है और जो मुम्बई टाइम्स अखबार के मालिक हैं ।"

"कहीं आप उन साहब की बात तो नहीं कर रहे हैं ऑफिसर !" अब्बास जल्दी से बोला, "जिनकी शक्ल और पर्सनालिटी हूबहू फिल्म अभिनेता नसरुद्दीन शाह से मिलती है और जो अपनी वाइफ के साथ यहाँ आए थे ?"

"करेक्ट, एब्सोल्यूटली करेक्ट !" यशवंत गवली गर्मजोशी के साथ बोला, "मैं उन्हीं बलदेवराज टंडन की बात कर रहा हूँ ।"

"एक बार देखने के बाद उन साहब को कौन भूल सकता है ऑफिसर !" अब्बास बोला, "उनकी तो शकल ही ऐसी है कि जो देख ले याद रखे ।"

यशवंत गवली भाँप गया, अब्बास गलत नहीं कह रहा है । सचमुच उसकी शक्ल ऐसी थी ।

"बोलो साहब !" अब्बास ने कहा, 'आप उनके बारे में क्या पूछना चाहते हैं ?"

"अब्बास, क्या तुम बता सकते हो जब मिस्टर बलदेवराज टंडन और उनकी वाइफ यहाँ फिल्म देखने आए तो क्या फिर उन्होंने पूरे 3 घंटे तक थिएटर के अंदर बैठकर फिल्म देखी । वह शो को बीच में छोड़कर कहीं गए नहीं ?"

अब्बास के चेहरे पर अब उलझनपूर्ण भाव उभरे ।

"यह तो आप बड़ा मुश्किल सवाल पूछ रहे हैं ऑफिसर !"

"क्यों ?"

"यह अपुन कैसे बता सकता है कि वह साहब फुल टाइम थिएटर के अंदर मौजूद थे या नहीं ? वह क्या है, अपुन टिकट चैक करने वाला आदमी है ऑफिसर ! पूरे थिएटर के टिकट अपुन को ही चैक करने पड़ते हैं । ऐसे में अपुन कैसे बोल सकता है कि थिएटर में बैठा कोई आदमी कहाँ जाता है, क्या करता है ? 3 घंटे तक अपुन किसी पर नजर तो नहीं रख सकता ?"

"यह बात कहते हुए तुम एक बात भूल रहे हो अब्बास !" यशवंत गवली बोला ।

"क्या ?"

"तुम्हारे मैनेजर साहब ने तुम्हें मिस्टर टंडन का खास ख्याल रखने को बोला था । तुमसे स्पेशली कहा था कि यह उनके दोस्त हैं और उन्हें किसी तरह की परेशानी न हो ।"

"बिल्कुल ठीक ऑफिसर, मैनेजर साहब ने अपनी से यही बोला था । लेकिन टंडन साहब ने ही मुझसे कह दिया कि फिल्म देखते टाइम मैं उन्हें बीच में डिस्टर्ब न करूँ, फिर मैं दोबारा उनके पास नहीं गया ।"

"यानी उन्होंने खुद तुम्हें फिल्म के दौरान अपने पास आने के लिए मना किया था ?"

"हाँ ऑफिसर !"

यशवंत गवली के दिमाग में अब शक का कीड़ा और कुलबुलाने लगा ।

बलदेवराज टंडन के खिलाफ संदेह का घेरा और तंग हुआ ।

जबकि यशवंत गवली अब कुर्सी छोड़कर पहले की तरह खड़ा हो गया और बेचैनीपूर्वक इधर से उधर टहलने लगा ।

कोई रास्ता खुलता नजर नहीं आ रहा था ।

मुश्किलें कदम-कदम पर थीं ।

“अब्बास !” यशवंत गवली, अब्बास के सामने जाकर खड़ा हुआ । वह मानो हिम्मत न हारने की कसम खा चुका था, “क्या तुम्हारी निगाह में कोई ऐसा आदमी है जो बलदेवराज टंडन के बारे में गारंटी के साथ यह बता सके कि वह पूरी फिल्म के दौरान थिएटर में मौजूद था या नहीं ?”

अब्बास एक बार फिर सोचने पर मजबूर हुआ ।

“हाँ ऑफिसर !” अब्बास शीघ्र ही बोला, “ऐसा एक आदमी मेरी निगाह में है ।”

“कौन ?”

“रंगीला !”

“यह रंगीला कौन है ?” यशवंत गवली ने आश्चर्य पूर्ण नजरों से उसकी तरफ देखा ।

“एक ऑटो रिक्शा ड्राइवर है साहब ! उसको ‘हम आपके हैं कौन’ फिल्म बहुत पसंद है । जब से इधर थिएटर पर यह पिक्चर लगी है तब से वह रोजाना इवनिंग शो में फिल्म देखने जरूर आता है और वह फिल्म देखता भी बालकनी में बैठकर है ।”

“वह रोजाना फिल्म देखने आता है ?” यशवंत गवली हैरान हुआ ।

“हाँ साहब ! वह रोजाना फिल्म देखने आता है ।” अब्बास बोला, “और मुझे खूब याद है कि 3 अप्रैल को भी वह फिल्म देखने आया था और वह टंडन साहब के बिल्कुल बराबर वाली सीट पर ही बैठा था । जहाँ तक मैं समझता हूँ, रंगीला ही यह बात अच्छी तरह बता सकता है कि बलदेवराज टंडन साहब पूरी फिल्म के दौरान थिएटर में मौजूद थे या नहीं थे ।”

“यह रंगीला इस वक्त कहाँ होगा ?”

एक नई उम्मीद की किरण जाग उठी । फिर एक नया सूत्र उनके हाथ में था ।

“मालूम नहीं कहाँ होगा साहब ! लेकिन इतना मेरा दावा है कि शाम को इवनिंग शो में फिल्म देखने वह जरूर आएगा ।”

“यानी अगर हमने रंगीला से मुलाकात करनी है ।” सावंत गहरी साँस लेकर बोला, “तो उसके लिए हमें शाम के 6:00 बजे का इंतजार करना होगा ।”

“बिल्कुल ।”

यशवंत गवली ने अपनी रिस्टवॉच देखी, तब सिर्फ 12:10 हो रहे थे ।

●●●

शाम के 5:30 बजे वह चारों वापस मराठा मंदिर पहुँच गए ।

उस समय तक ‘हम आपके हैं कौन’ का जो छूटा नहीं था । अलबत्ता इवनिंग शो के लिए वहाँ अच्छी-खासी भीड़ लगनी शुरू हो गई थी ।

सिंधी मैनेजर ने शाम के वक्त यशवंत गवली का बहुत उत्साहपूर्वक स्वागत किया ।

अब्बास भी तब मैनेजर के साथ था ।

“वडी, आओ यशवंत साईं !” सिंधी अपनी चिर-परिचित टोन में बोला, “वडी, मैं आप लोगों का ही इंतजार कर रहा था नी ।”

“क्या रंगीला आ गया ?”

"नहीं, लेकिन वडी वह भी बस पहुँचने ही वाला होगा ।" सिंधी मैनेजर बोला, "वडी, जब उसने आज तक कोई शो मिस नहीं किया नी, तो आज का ही शो वह क्यों मिस करेगा ?"

खुद यशवंत गवली को भी यही उम्मीद थी ।

रंगीला आएगा ।

जरूर आएगा ।

फिर भी यशवंत गवली ने एक सावधानी बरती । उसने रागिनी, शुभांगी और सावंत को मेन गेट के आसपास इधर-उधर फैला दिया ।

वह अलग-अलग खड़े हो गए ।

जबकि खुद यशवंत गवली, अब्बास के साथ सिनेमा हॉल में लगी उन जालियों के नजदीक जा खड़ा हुआ जहाँ से मेन गेट बिल्कुल साफ-साफ नजर आता था और जिन जालियों में फिल्म के पोस्टर लगे हुए थे ।

उस समय सिनेमा हॉल के अंदर आने जाने वाले तमाम लोग उन्हें दिखाई पड़ रहे थे ।

"रंगीला को तुम पहचान तो लोगे ?" यशवंत गवली धीमी आवाज में फुसफुसाया ।

"कैसी बात करते हो साहब !" अब्बास बोला, "अपुन एकदम गोली की माफिक उसको पहचानेगा । आखिर अपुन रोजाना उसका टिकट चैक करता है और रोज-रोज फिल्म देखने को लेकर उसके साथ मस्ती-मजाक करता है ।"

"फिर ठीक है ।"

समय गुजरता रहा ।

6:00 बज गए ।

उसी पल थिएटर के अंदर जोर से फिल्म छूटने का सायरन बजा और फिर बालकनी तथा फर्स्ट क्लास से भारी तादाद में भीड़ बाहर निकली ।

"क्या बात है ?" यशवंत गवली बोला, "फिल्म भी छूट गई लेकिन अभी तक तुम्हारा यह रंगीला नहीं आया ?"

अब्बास भी अब कंफ्यूज होने लगा ।

उसने भी अपनी रिस्टवॉच देखी ।

"सचमुच अभी तक आ तो जाना चाहिए था उसे ।"

"कहीं ऐसा तो नहीं ।" यशवंत गवली की आवाज में संशय के भाव उभरे, "कि वह अब आए ही नहीं ?"

"ऐसा होना तो नहीं चाहिए ऑफिसर लेकिन अपुन क्या बोल सकता है ? वह खिसकी हुई खोपड़ी का आदमी है । न मालूम कब कहाँ पलटी खा जाए ?"

यशवंत गवली के चेहरे पर निराशा के बादल घिर आए ।

●●●

थिएटर में अब सारी पब्लिक बाहर जा चुकी थी और इवनिंग शो देखने आए लोग अब बालकनी तथा फर्स्ट क्लास में समा गए थे ।

रागिनी, शुभांगी और सावंत उन तीनों के चेहरे पर भी संशय के भाव थे ।

कोई कुछ नहीं समझ पा रहा था ।

उनकी वह निराशा और बढ़ती तभी एकाएक यशवंत गवली को एक नौजवान थिएटर के अंदर दाखिल होता दिखाई पड़ा ।

वह बड़ी रंगीन तबीयत का आदमी मालूम हो रहा था। उसने सफेद पैंट पहनी हुई थी। खून जैसे लाल रंग की एकदम सुर्ख चमकदार टी-शर्ट पहन रखी थी। सिर पर सुर्ख रंग का ही चमचमाता हैट था और आँखों पर ब्लैक गॉगल्स थे। वह चल भी बड़ी स्टाइल के साथ रहा था। कुल मिलाकर वह पूरी तरह फिल्मी रंग में डूबा हुआ आदमी था।

"ऑफिसर !" उसे देखते ही अब्बास तोप से छूटे गोले की तरह बोला, "रंगीला आ गया।"

अगर अब्बास न भी बताता तब भी यशवंत गवली उसे देखकर भाँप गया था कि यही रंगीला है।

उसका व्यक्तित्व था ही ऐसा।

उसके नाम पर फिट।

यशवंत गवली तेजी के साथ रंगीला की तरफ बढ़ा। इसके साथ-साथ अब्बास भी बढ़ा।

उधर यशवंत गवली को उसकी तरफ बढ़ता देखकर रागिनी, शुभांगी और सावंत भी भाँप गए, यह कौन है। वह भी उसकी तरफ बढ़े।

रंगीला अब टिकट लेने के लिए टिकट विंडो के नजदीक पहुँच चुका था, जब यशवंत गवली के साथ-साथ उन सबने उसे जा घेरा।

"हाय अब्बास !" उसने अब्बास को देखकर शाहरुख स्टाइल में हाथ हिलाया।

"हाय !" अब्बास सिर्फ इतना ही बोला।

"वैसे मुझसे भी मुलाकात कर लो। मुझे यशवंत कहते हैं।" यशवंत गवली बोला, "यशवंत गवली !"

"यशवंत !" रंगीला की आँखें आलू बुखारे की तरफ फट पड़ी, "वो ईच यशवंत गवली ?"

"हाँ, वो ईच यशवंत गवली !"

"हे गणपति बप्पा !"

रंगीला का मुँह खुला-का-खुला रह गया।

उसकी वह स्टाइल भी फिल्मी थी।

जॉनी लीवर स्टाइल।

सचमुच फिल्मी रंग उसके ऊपर पूरी तरह चढ़ा था।

"दरअसल मैं सुबह से ही तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।" यशवंत गवली बोला, "ताकि तुम यहाँ आओ और मैं तुमसे कुछ पूछताछ कर सकूं।"

"मेरे से पूछताछ।" रंगीला ने जॉनी लीवर की तरह ही झटका खाया, "लेकिन मेरे से क्या गलती हो गई बाप ?"

"तुम्हारे से कोई गलती नहीं हुई। हमें एक दूसरे आदमी के बारे में तुमसे कुछ सवाल-जवाब करने हैं।"

"दूसरा आदमी ?"

वह अब शत्रुघ्न सिन्हा स्टाइल में खड़ा था।

"हाँ।"

"कौन दूसरा आदमी बाप ?"

"सबसे पहले यह बताओ।" यशवंत गवली उसे अच्छी तरह इन्वेस्टिगेशन के दायरे में कसता हुआ बोला, "तुम 3 अप्रैल को इवनिंग शो में फिल्म देखने आए थे या नहीं ?"

"3 अप्रैल !"

रंगीला अपने होंठों पर उंगली रखकर सोच में डूब गया।

यह दिलीप कुमार स्टाइल थी।

"खास 3 अप्रैल के बारे में तो मुझे कुछ नहीं मालूम साहब !" रंगीला दिलीप कुमार के अंदाज में ही बोला, "हाँ, मैं इतना जरूर जानता हूँ कि जब से यह फिल्म इधर लगी है तब से मैं रोजाना इसका इवनिंग शो देखने आता हूँ ।"

"कभी कोई दिन मिस नहीं किया ?"

"न, बिलकुल नहीं ।"

"तब तो स्वाभाविक है, तुम 3 अप्रैल का भी इवनिंग शो देखने यहाँ जरूर आए होगे ?"

"बिल्कुल आया होऊँगा साहब ! न आने का कोई मतलब ही नहीं है ।"

"गुड । तो फिर 3 अप्रैल का दिन याद करने की कोशिश करो ।" यशवंत गवली उसे कुरेदता हुआ बोला, "याद करो, उस दिन कोई 50-55 साल का अधेड़ आदमी अपनी वाइफ के साथ तुम्हारे बराबर में बैठा हुआ था । उसकी सबसे बड़ी पहचान यह है कि उसकी शक्ल फिल्म अभिनेता नसीरुद्दीन शाह से काफी कुछ मिलती है ।"

"अच्छा, वह । जो अपने नसीर भाई की एकदम डुप्लीकेट कॉपी था । जिसकी हर हरकत नसीर भाई से मैच करती थी ?"

"एकदम परफेक्ट ।" यशवंत गवली उत्साहपूर्वक बोला, "मैं उसी आदमी की बात कर रहा हूँ ।"

"बावा बावा !" रंगीला की आवाज राजकुमार की तरह हो गई, "अपुन उस आदमी को कैसे भूल सकता है ! बहुत बड़ा हराम का तुखम था साला ! मालूम बाप, सबसे पहले तो मैं उसे देखकर यही समझ बैठा था कि आज अपने नसीर भाई सिनेमा देखने आ गए । अपुन उसको देखते ही एकदम फ्लैट हो गया । अपुन पानी भरने लगा साहब ! शुक्र मानो अपुन खींसे निपोरते हुए उस आदमी के चरणों में नहीं बैठ गया था । वह क्या है साहब, अपुन नसीर भाई का एकदम पक्का फैन है । क्या ग्रेट एक्टर हैं अपने नसीर भाई । उनकी मोहरा फिल्म अपुन ने 1436 मर्तबा देखी थी और उस दिन जब अपुन ने देखा, वो ईच नसीर भाई अपुन के बराबर में बैठे हैं तो अपुन के हार्ट का क्या हाल हुआ होएगा साहब, आप अंदाजा लगा सकते हो । अपुन तो बस खुशी के मारे पागल होता होता बचा । मगर... ।"

"मगर क्या ?"

"मगर जल्द ही अपुन के ऊपर यह राज खुल गया साहब !" रंगीला बोला, "कि वो वह आदमी नहीं है, जो दिखाई दे रहा है ।"

"तुम्हें यह कैसे पता चला ?"

यशवंत गवली की निगाहें अपलक रंगीला के चेहरे पर टिकी थीं ।

रागिनी, शुभांगी और सावंत भी उस अजीबोगरीब कैरेक्टर को देख रहे थे ।

"वह जिस अंदाज में अपनी वाइफ से बात कर रहा था उसी से अपुन को अंदाजा हुआ कि वह नसीर भाई जैसा ग्रेट आदमी नहीं हो सकता । फिर उसकी वाइफ भी उसे बलदेव-बलदेव करके बोल रही थी ।"

"बलदेवराज टंडन !" रागिनी एकदम से बोली ।

"फुल नाम तो मेरे को उसका नहीं मालूम । बस वह बलदेव करके ही उसे बुला रही थी ।"

"उसी का पूरा नाम बलदेवराज टंडन था ।" यशवंत गवली बोला, "क्या तुम बता सकते हो रंगीला, वह आदमी पूरे 3 घंटे तक सिनेमा हॉल में बैठा रहा था या नहीं ?"

"क्या बात करते हो बाप ?" रंगीला की आवाज अब धर्मेंद्र की तरह भारी हो उठी, "3 घंटे ! नको । वह आदमी तो आधा घंटा इधर नहीं रुका था । पिक्चर शुरु होने के ठीक आधे घंटे बाद उसके मोबाइल की घंटी बजी थी और फिर वह अपनी वाइफ से यह बोलकर चला गया था कि वह अभी आधे घंटे में आ रहा है ।"

शुभांगी अब आगे बढ़ी ।

"यानी तुम यह कहना चाहते हो रंगीला !" शुभांगी उसकी आँखों में झांकते हुए बोली, "कि टंडन कॉल आते ही अपनी वाइफ को वहाँ अकेला छोड़कर चला गया था ?"

"हाँ मैडम !"

रंगीला की गर्दन इधर-उधर हिली ।

अब उसका फिल्मी भूत थोड़ा कम हो गया था । शायद मामले की गंभीरता को वह भी भाँप चुका था । फिर भी गाहे-बगाहे किसी एक्टर की नकल उससे हो ही जाती थी ।

"टंडन अपनी वाइफ को सिनेमा हॉल में अकेला छोड़कर कहाँ गया था ?" यशवंत गवली ने पूछा ।

"यह मेरे को क्या मालूम साहब !" रंगीला बोला, "मेरे को क्या पड़ी थी जो मैं उन हस्बैंड-वाइफ के पचड़े में पड़ता" मेरे को तो वह आदमी याद भी इस वजह से रह गया क्योंकि उसकी शक्ल नसीर भाई से मिलती थी । पन एक बात जरूर बोलूँगा बाप, ठोक के बोलूँगा ।" रंगीला अब नसीरुद्दीन शाह की स्टाइल पर ही उतर आया, "वह आदमी टंडन-शंडन जो भी था, था बहुत खाना खराब आदमी । वह तो अपने नसीर भाई के नाम पर भी फुल तौर पर बट्टा लगा रहा था । पता नहीं, भगवान ने भी उसकी शक्ल ऐसे ग्रेट आदमी की जेरोक्स कॉपी क्यों बना दी थी ।"

"क्यों, तुमने उसके अंदर ऐसा क्या देखा ?" यशवंत गवली ने पूछा, "जो वह तुम्हें इतना खाना खराब आदमी लगा ?"

"यह पूछो बाप, अपुन ने उसके अंदर ऐसा क्या नहीं देखा ! वह अपनी वाइफ से आधे घंटे में आने को बोलकर गया था, ठीक ?"

"ठीक ।"

"लेकिन आया कहाँ वह आधे घंटे में ।"

"फिर ?"

"वह तो घंटे भर से भी ऊपर में आया । उसकी वाइफ तो बड़ी हलकान हो रही थी साहब ! फिल्म-विल्म देखना तो उसका सब कूड़ा-करकट हो गया था ।"

यशवंत गवली ने अब अपने साथियों की तरफ देखा ।

उनके चेहरे पर भी उस समय बड़े सस्पेंस के भाव थे ।

"एक घंटा उसने कहाँ गुजारा ?"

"अपुन को क्या मालूम कहाँ गुजारा ? उसने वापस आने के बाद यह बात तो अपनी वाइफ को भी नहीं बताई थी ।"

यशवंत गवली सोचने पर मजबूर हो गया ।

बलदेवराज टंडन हर पल शक के ज्यादा गहरे दायरे में घिरता जा रहा था ।

जरूर कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ थी ।

जरूर कुछ लफड़ा था ।

क्या ?

फिलहाल यशवंत गवली ने यही पता लगाना था ।

●●●

महेश खोखा मर्डर केस को लेकर फिर क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर में एक गंभीर मीटिंग हुई जिसमें इस बार हरिनारायण आप्टे ने भी हिस्सा लिया ।

"मुझे न जाने क्यों अब साफ-साफ लग रहा है ।" शुभांगी बोली, "महेश खोखा के असली खूनी तक हम पहुँच चुके हैं । आपका इस विषय में क्या ख्याल है ऑफिसर ?"

"शायद तुम ठीक कह रही हो।"

"यानी तुम लोग यह कहना चाहते हो।" हरिनारायण आप्टे हवाना शिकार का एक कश लगाते हुए बोले, "कि मुम्बई टाइम्स अखबार के मालिक बलदेवराज टंडन ने वास्तव में महेश खोखा का खून किया था ?"

"करेक्ट।"

"मगर सवाल यह है।" हरिनारायण आप्टे बोले, "कि बलदेवराज टंडन जैसा बड़ा आदमी महेश खोखा का खून क्यों करेगा ?"

"क्रिमिनोलॉजी का सिद्धांत कहता है सर !" शुभांगी बोली, "कि जब कोई इतना बड़ा आदमी किसी साधारण अपराधी का मर्डर करे तो साफ जाहिर है, वह अपराधी उसका कोई-न-कोई राज जानता था। कोई ऐसा राज जिसके खुल जाने से उस आदमी की सारी इज्जत धूल में मिल सकती थी, जिससे उसकी पूरी सोसाइटी में थुक्का-फजीहत संभव थी।"

"लेकिन बलदेवराज टंडन का ऐसा क्या राज हो सकता है ?" हरिनारायण आप्टे बोले, "जो महेश खोखा जान गया था।"

"हमने अब यही तो पता लगाना है।"

"देखिए, इसमें तो कोई शक ही नहीं है सर !" यशवंत गवली भी बोला, "कि कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ तो जरूर है। जरा सोचिए, जिस समय महेश खोखा का मर्डर हुआ, ठीक उसी समय वह मराठा मंदिर सिनेमा हॉल में बैठा इवनिंग शो में फिल्म देख रहा था। इतना ही नहीं, ठीक 6:30 बजे वह सिनेमा हॉल के अंदर से गायब हो गया जबकि 7:00 बजे महेश खोखा का मर्डर हुआ। रंगीला का बयान है कि कोई एक घंटे बाद बलदेवराज टंडन सिनेमा हॉल में वापस लौटा। यानी लगभग 7:30 बजे। एक घंटा वह कहाँ गायब रहा, अब इस सिलसिले में किसी को कुछ पता नहीं है। इसके अलावा यह भी कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं कि 3 अप्रैल को बलदेवराज टंडन ने मराठा मंदिर में इवनिंग शो में बैठकर जो फिल्म देखी उसके टिकट अभी तक उसके पास हैं। जबकि फिल्म के टिकट एक मामूली आदमी भी इतने लंबे समय तक अपने पास नहीं रखता। क्या यह सब बातें हैरानी में डाल देने वाली नहीं हैं सर ?"

हरिनारायण आप्टे भी अब सोचने पर मजबूर हुए।

उन्हें भी लगा, यशवंत गवली के तर्कों में काफी हद तक जान है।

"मगर तुम एक बात भूल रहे हो ऑफिसर !" हरिनारायण आप्टे ने हवाना सिगार का एक कश और लगाया।

"क्या ?"

"बलदेवराज टंडन कोई छोटा आदमी नहीं है। प्रिंट मीडिया की वह एक हस्ती है। पॉलिटिकल लेवल पर भी उसकी एक ग्राउंड है। जबकि हमारे पास अभी उसके खिलाफ ऐसे कोई सबूत नहीं जिनके आधार पर हम उसे सीधे-सीधे महेश खोखा के कत्ल के इल्जाम में फंसा सके। यह सच है, यह सारे पॉइंट बलदेवराज टंडन की तरफ ही संदेह का इशारा कर रहे हैं, मगर हम इन सबूतों के आधार पर उसे अरेस्ट नहीं कर सकते।"

"आई एग्री विद यू सर ! मैं मानता हूँ आपकी बात ! लेकिन अगर हमारे पास सबूत नहीं है तो हमने अब वह सबूत पैदा करने होंगे।"

"कैसे ?"

हरिनारायण आप्टे के नेत्र गोल दायरे में सिकुड़े।

वह गौर से यशवंत गवली की तरफ देखने लगे।

“सर, मैं समझता हूँ !” यशवंत गवली बोला, “कि अगर बलदेवराज टंडन इन गलत कार्यों में लिप्त है तो वह अभी भी लिप्त होगा। बुरी आदतें इंसान का एकदम से पीछा नहीं छोड़ती। इसलिए अगर हम दो जासूस बलदेवराज टंडन के पीछे लगा दे जो उस पर चौबीसों घंटे निगाह रखें, तो मैं समझता हूँ कि हमें बलदेवराज टंडन के खिलाफ कोई-न-कोई सबूत मिल जाएगा।”

“दो जासूस।”

“यस सर !”

“मगर वह दो जासूस कौन होंगे ?”

“जहाँ तक मैं समझती हूँ सर !” रागिनी तुरंत बोली, “यह काम सावंत और मैं अच्छी तरह कर सकते हैं।”

“मेरा भी यही खयाल है सर !” यशवंत गवली ने भी स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

“ओके। अगर आप लोग बलदेवराज टंडन पर हाथ डालने से पहले यह कदम उठाना चाहते हो तो मुझे कोई एतराज नहीं।”

वह मीटिंग वहीं बर्खास्त हो गई।

●●●

उसके बाद रागिनी और सावंत ने बहुत आनन-फानन बलदेवराज टंडन पर निगाह रखने के लिए कुछ तैयारियाँ कीं।

जैसे उन दोनों ने ही अपने पास एक-एक मिनिएचर कैमरा रखा ताकि जरूरत पड़ने पर वह टंडन की कुछ खास तस्वीरें उतार सकें।

दो ट्रांसमीटर सेट लिए।

एक डिक्टाफोन लिया।

इसके अलावा अपना मेकअप भी किया। आखिर वह दोनों ही बलदेवराज टंडन से पहले मिल चुके थे और अब उससे छिपना उनके लिए जरूरी था।

इसके लिए उन्होंने अपनी हेयर स्टाइल चेंज की।

नाक में स्प्रिंग फिट की जिससे उनकी नाक फैलकर मोटी हो गई।

गालों में पैड फंसाए।

आँखों पर ब्लैक गॉगल्स लगाए।

शीघ्र ही वह दोनों पूरी तरह बदल चुके थे और अब वह बलदेवराज टंडन की निगरानी करने के लिए एकदम तैयार थे।

●●●

फिर लुका-छुपी का खेल शुरु हुआ।

अगले दिन सुबह से ही रागिनी और सावंत ने अपना काम शुरु कर दिया।

सबसे पहले उन्होंने बलदेवराज टंडन की दिनचर्या के बारे में जानना चाहा। वह क्या करता है ? कहाँ जाता है ? किस किससे मिलता है ? वगैरा-वगैरा।

इसके लिए वह दोनों सुबह 8:00 बजे ही बलदेवराज टंडन के बंगले के सामने पहुँच गए। वह दोनों उस समय सफेद मारुति कार में सवार थे और काफी रंगीन तबीयत का जोड़ा नजर आ रहे थे जो आज फुल मस्ती के मूड में निकला था।

बलदेवराज टंडन का बंगला अंधेरी के वर्सोवा इलाके में था।

उन्होंने पहले अपनी कार को दो बार टंडन के बंगले के सामने घुमाया ।

"लगता है ।" रागिनी बोली, "टंडन अभी बंगले के अंदर ही है ।"

"कैसे जाना ?"

सावंत के स्वर में सस्पेंस था ।

वह कार की फ्रंट सीट पर ही रागिनी के बराबर में बैठा था ।

"सामने की तरफ देखो ।" रागिनी बहुत मंथर गति से कार ड्राइव कर रही थी, "बंगले की पोर्च में एक टाटा क्वालिस खड़ी है और अगर मेरा अनुमान गलत नहीं तो जिस दिन हम मुम्बई टाइम्स अखबार के दफ्तर आए थे तो उस दिन भी यह गाड़ी यहाँ खड़ी थी । इसका मतलब यह बलदेवराज टंडन की गाड़ी ही है ।"

"करेक्ट ।" सावंत की आँखें भी चमक उठीं, "तुमने बिलकुल सही अंदाजा लगाया रागिनी ! मैंने भी उस दिन यह गाड़ी यहाँ दफ्तर के नीचे खड़ी देखी थी । हमें अब यही कहीं रुककर टंडन के बाहर निकलने का इंतजार करना चाहिए ।"

"बिल्कुल ।"

रागिनी ने इधर-उधर देखा ।

बलदेवराज टंडन के बंगले के एकदम सामने वाली लाइन में चाय का एक खोखा रखा हुआ था जो पान-सिगरेट भी बेचता था । उन्होंने अपनी कार उसी खोखे के पास ले जाकर खड़ी की ।

"कुछ चाहिए साहेब ?" खोखे वाला अपने फड़ पर बैठे-बैठे थोड़ा रुककर बोला ।

"हाँ, दो चाय कटिंग !" सावंत ने भी उसी जैसी टोन में जवाब दिया, "फर्स्ट क्लास ।"

"अभी देता हूँ साहेब !"

वह चाय बनाने में जुट गया ।

जबकि सावंत ने एक सिगरेट निकालकर सुलगा ली । उन दोनों की निगाहें अभी भी बंगले के अंदर की तरफ ही लगी थीं ।

"मैं समझता हूँ ।" सावंत सिगरेट का धुआँ विंडो से बाहर फुंकता हुआ बोला, "इंतजार करना इस दुनिया का सबसे बोरियत भरा काम है ।"

"तुम शायद एक बात नहीं जानते ।"

"क्या ?"

"इंतजार के बाद जब इंसान को अपनी मनचाही मुराद मिलती है तो दुनिया में उससे अच्छा भी कुछ नहीं होता ।"

सावंत एकाएक प्रभावित निगाहों से रागिनी की तरफ देखने लगा ।

"क्या हुआ ?" रागिनी बोली ।

"बात में दम है ।"

रागिनी मुस्कुराई ।

"लगता है, ऑफिसर की संगत का तुम्हारे ऊपर कुछ ज्यादा ही असर होने लगा है ।"

"अगर ऐसा है तो यह अच्छी बात है ।"

रागिनी की निगाहें एक बार फिर बंगले के अंदर का जायजा लेने लगी ।

वहाँ पहले की तरह खामोशी थी ।

सन्नाटा ।

ऐसा लगता था जैसे वहाँ कोई हो ही नहीं ।

सिर्फ एक गोरखा गेट पर खड़ा था जिसने अपनी बेल्ट के साथ खुखरी बाँधी हुई थी और वह खैनी खा रहा था ।

"बंगले को देखकर तो ऐसा लग रहा है ।" सावंत बोला, "जैसे वहाँ सब मुर्दों से शर्त लगा कर सोए हों । क्या बंगले में कोई है भी या नहीं ?"

"अगर बंगले में कोई न होता ।" रागिनी बोली, "तो टाटा क्वालिस वहाँ खड़ी न दिखाई पड़ती ।"

सावंत खामोश हो गया ।

वह भी बंगले की तरफ देखने लगा ।

उसी पल खोखे वाला कांच के गिलास में दो गरमा-गरम चाय ले आया ।

"यह लो साहेब !" उसने चाय की गिलास कार के अंदर बढ़ाते हुए कहा, "यह लो मेमसाहेब !"

दोनों ने अपने-अपने गिलास पकड़ लिए ।

सावंत ने अब सिगरेट फेंक दी और फिर उसने चाय का घूंट भरा ।

चाय वाकई लाजवाब थी ।

एक ही घूंट में अंदर तक ताजगी दौड़ती चली गई ।

रागिनी ने भी चाय का घूंट भरा ।

समय धीरे-धीरे गुजरने लगा ।

उन्होंने चाय पीकर अब चाय के गिलास भी खोखे वाले को लौटा दिए थे और उसका भुगतान भी कर दिया । मगर बलदेवराज टंडन का तब भी कहीं कुछ पता नहीं था ।

धीरे-धीरे करके पूरा एक घंटा गुजर गया ।

"क्या बात है साहेब !" खोखे वाला वह आदमी पहले की तरह थोड़ा नीचे झुककर अपने ही टोन में बोला, "क्या आप लोग किसी का इंतजार कर रहे हैं ?"

"हाँ ।" सावंत ने कहा, "किसी ने हमें यहीं मिलने का टाइम दिया था मगर वह अभी तक नहीं आया । न मालूम कहाँ मर गया कमबख्त !"

खोखे वाला हँसा ।

अपने मुँह में किसी चीज की जुगाली करते हुए बड़े अजीब तरह से हँसा ।

"इधर मुंबई के आदमी बड़े एंटीफलॉजिस्टिक होते हैं साहेब ! कभी कहीं टेम से नहीं पहुँचते क्योंकि अगर वह टेम से पहुँच गए तो उनकी पूजीशन में बट्टा नहीं लग जावेगा । मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा ?"

सावंत कुछ न बोला ।

उसी पल खोखे वाले के पास भी एक ग्राहक आ गया था और वह उसके लिए पान लगाने लगा ।

इसी प्रकार इंतजार करते-करते आधा घंटा और गुजरा ।

अब 9:30 बज चुके थे ।

उन दोनों के सब्र का प्याला छलकने लगा ।

"एक बात कहूँ रागिनी !" सावंत थोड़े सशंकित लहजे में बोला ।

"क्या ?"

"कहीं ऐसा तो नहीं टंडन को इस बात का शक हो गया हो कि हम उसके ऊपर नजर रखे हुए हैं ।"

"नहीं ।" रागिनी बोली, "मुझे नहीं लगता कि ऐसा हुआ होगा क्योंकि हमने अभी ऐसी कोई हरकत ही नहीं की है ।"

वह दोनों अभी आपस में बातचीत कर ही रहे थे कि तभी एकाएक सावंत चौंक उठा ।

उसकी निगाहें बंगले के अंदर गड़कर रह गई ।

"रागिनी !"

वह धीमी आवाज में फुसफुसाया ।

"क्या हुआ ?"

"बंगले की तरफ देखो ।"

रागिनी की निगाहें भी अब बंगले की तरफ उठीं ।

और ।

अगले ही पल वह भी चौंक पड़ी ।

बलदेवराज टंडन अभी-अभी बंगले के अंदर से बाहर निकला था और अब वह अपनी टाटा क्वालिस के पास खड़ा होकर गोरखा से कुछ बात कर रहा था ।

उसके चेहरे पर कुछ गंभीर भाव थे ।

जैसे किसी बात को लेकर वह चिंतित हो ।

"क्या बात है ?" सावंत बोला, "वह गोरखा से क्या बातें कर रहा है ?"

"क्या कहा जा सकता है ? मगर लगता है वह किसी उलझन में है ।"

"कहीं महेश खोखा मर्डर केस की ही तो कोई उलझन नहीं ?"

रागिनी ने थोड़ी हैरानी के साथ सावंत की तरफ देखा परंतु वह बोली कुछ नहीं ।

तभी बंगले के अंदर से सफेद वर्दी में सजा-धजा टंडन का शोफर एक ब्रीफकेस लेकर बाहर आ गया । उसने ब्रीफकेस टाटा क्वालिस की पिछली सीट पर रखा । टंडन भी गाड़ी के अंदर बैठा । जबकि शोफर ने ड्राइविंग सीट संभाली । अगले ही पल वह गाड़ी बंगले से बाहर की तरफ लपकी ।

"चलो, जल्दी पीछा करो ।"

रागिनी ने भी आनन-फानन मारुति स्टार्ट की और पलक झपकते ही वह थोड़ा फासला बनाकर टंडन की गाड़ी का पीछा करने लगी ।

वह इस बात का खास ख्याल रखे थी कि बलदेवराज टंडन को अपना पीछा किए जाने का शक न हो ।

●●●

टाटा क्वालिस बंगले से रवाना हुई तो फिर सीधे मुम्बई टाइम्स अखबार के दफ्तर पहुँचकर रुकी ।

गाड़ी पहले की तरह दफ्तर के नीचे पार्क कर दी गई जबकि बलदेवराज टंडन ऊपर चला गया ।

"अब क्या करें ?" सावंत के स्वर में फिर उलझन थी ।

"हमें सिर्फ इंतजार करना होगा । वैसे भी इंतजार करने के सिवाय हम कर क्या सकते हैं ?"

एक बार फिर समय गुजरने लगा ।

इस बार का उनका इंतजार काफी लंबा था ।

उन्हें इंतजार करते-करते शाम हो गई मगर बलदेवराज टंडन अपने दफ्तर से बाहर नहीं निकला । कार के अंदर बैठे-बैठे ही उन दोनों ने सैंडविच वगैरह खाकर पेट भरा । वह क्योंकि ऑन रोड खड़े थे इसलिए ट्रैफिक हवलदार भी डंडा फटकारते हुए उनके पास आ पहुँचा और उन्हें वहाँ से जाने के लिए कहने लगा । तब उन्होंने मजबूरी में उसे अपने क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर का आई कार्ड निकालकर दिखाया तथा उससे कहा कि वह एक जरूरी काम से वहाँ खड़े हैं । तब कहीं जाकर वह टला ।

उसी पल रागिनी की रिस्टवॉच में से ब्लिप-ब्लिप की आवाज निकलने लगी ।

वह एक ट्रांसमीटर सेट था ।

रागिनी ने तुरंत घड़ी की नॉब खींचकर ट्रांसमीटर सेट ऑन किया और एक हेडफोन उठाकर सिर पर लगाया ।

"हेलो-हेलो !" वह ट्रांसमीटर पर धीमी आवाज में बोलने लगी, "रागिनी स्पीकिंग ओवर ।"

"मैं यशवंत गवली बोल रहा हूँ, ओवर ।" हेडफोन पर यशवंत गवली की आवाज उभरी ।

"हेलो ऑफिसर !"

"हेलो, कोई खास रिपोर्ट ? ओवर ।"

"नो ऑफिसर ! अभी तक कोई खास रिपोर्ट नहीं । हम मुम्बई टाइम्स अखबार के दफ्तर के सामने खड़े हैं और बलदेवराज टंडन दफ्तर के अंदर है, ओवर ।"

"यानी अभी ऐसा कोई सूत्र तुम लोगों के हाथ नहीं लगा जो हमारे काम आए ओवर ?"

"नहीं ऑफिसर !" रागिनी पहले की तरह ट्रांसमीटर सेट के स्पीकर पर बोली ।

"कोई बात नहीं । तुम टंडन की निगरानी जारी रखो । मैं समझता हूँ, ऐसा कोई-न-कोई सूत्र हमारे हाथ जरूर लगेगा । ओके ?"

"ओके ऑफिसर !"

"ओवर एंड आउट ।"

संबंध विच्छेद हो गया ।

रागिनी ने गहरी साँस लेकर हेडफोन अपने सिर से उतारा और रिस्टवॉच की नॉब अंदर धकेली ।

तब 5:20 हो रहे थे ।

आज का पूरा दिन उनका उस दफ्तर के सामने खड़े-खड़े ही गुजर गया था ।

जैसी ही 6:00 बजे तभी उन्हें बलदेवराज टंडन के वापस दर्शन हुए ।

उसकी शक्ल कमाल थी । उसे देखकर एक पल के लिए तो सचमुच यही धोखा होता था नसीरुद्दीन शाह आ गया ।

उसकी चुस्ती-फुर्ती, कद-काठी, चलने-फिरने का अंदाज सबकुछ एकदम नसीरुद्दीन शाह से मैच करता था ।

दफ्तर से नीचे आते ही वह फिर अपनी टाटा क्वालिस में बैठा । शोफर ने सीट संभाली । उसके बाद गाड़ी वापस उसी रास्ते की तरफ बढ़ी जिस रास्ते से सुबह आई थी ।

रागिनी ने भी फौरन कार स्टार्ट करके उसके पीछे लगा दी ।

"लगता है, यह घर जा रहा है ।" सावंत बोला ।

"देखो, कहाँ जाता है !"

टाटा क्वालिस दौड़ती रही ।

वह भी उसका पीछा करते रहे ।

अभी तक रास्ता वही था जो बंगले की तरफ जाता था ।

मगर टाटा क्वालिस जैसे ही आधे रास्ते में पहुँची तभी एकाएक वह सीधे जाने की बजाय बाई तरफ मुड़ गई ।

"अरे !" सावंत चौंका, "यह किस तरफ जाने लगा ?"

"लगता है, यह अब घर नहीं जा रहा ।" रागिनी ने भी जल्दी से उसी दिशा में अपनी कार मोड़ी, "यह अब कहीं और जा रहा है ।"

"कहाँ ?"

"जहाँ भी जा रहा होगा अभी पता चल जाएगा । वैसे यह हमारे लिए अच्छी बात है क्योंकि अगर टंडन फिर बंगले पर पहुँच जाता, तो हमारे वास्ते निगरानी करने के लिए एक बार फिर कुछ न बचता ।"

"यानी अब कुछ उम्मीद है ?"

"है तो ।"

"आमीन ।"

सावंत ने थोड़ी संतोष की साँस ली ।

●●●

और रागिनी ने गलत नहीं कहा था ।

बलदेवराज टंडन की गाड़ी दफ्तर से निकली तो फिर वह सीधे जुपिटर क्लब पहुँची ।

जुपिटर क्लब सात बंगला इलाके में था और मुंबई शहर का काफी बदनाम क्लब था । वहाँ जुए से लेकर जिस्मफरोशी तक का सारा धंधा होता था और खुलेआम होता था । वह एक हाई स्टैंडर्ड क्लब था और उस क्लब के बारे में प्रसिद्ध था कि वहाँ मुंबई शहर के बड़े-बड़े लोग आते थे जो सोसाइटी की जान थे, नाक थे और जिनके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था कि वह इस तरह की अय्याशियाँ भी करते होंगे । मुंबई में जितना जुपिटर क्लब मशहूर था उतनी ही उस क्लब की लड़कियाँ भी मशहूर थीं । सबकी सब एक से एक खूबसूरत, एक से बढ़कर एक । खासतौर पर सेक्स के मामले में उन्हें हरामीपन्तियाँ तो ऐसी सिखाई गई थीं कि बड़े से बड़ा तुर्रेखां मर्द बिस्तर पर पहुँचकर उनके सामने घुटने टेकता नजर आता था ।

मानो कामसूत्र के सारे आसन उन्हें कंठस्थ थे ।

होंठ, नाभि, ठुड्डी, नितंब सबकी कलाएँ वह खूब जानती थीं ।

उन दोनों ने जब बलदेवराज टंडन को अपनी गाड़ी से उतरकर जुपिटर क्लब में घुसते देखा तो वह चौंके ।

"यह आदमी इस क्लब में क्या करने जा रहा है ?" सावंत के स्वर में कौतूहलता के भाव थे ।

"इस क्लब में लोग अय्याशियाँ करने जाते हैं ।" रागिनी मुस्कुराकर बोली, "वही यह भी करने जा रहा होगा ।"

"इस उम्र में !"

"क्यों, उम्र को क्या हुआ ? तुम शायद एक बात नहीं जानते, बुड्ढा अगर रंगीन तबीयत हो तो वह ज्यादा बड़ा बदमाश होता है ।"

सावंत कुछ न बोला ।

अलबत्ता वह कार की फ्रंट सीट पर अभी भी अपनी जगह स्तब्ध बैठा था । शायद उसने कल्पना नहीं की थी कि बलदेवराज टंडन जैसा कलमकार आदमी ऐसी जगह आएगा ।

"मैं समझता हूँ ।" सावंत सनसनाए स्वर में बोला, "हमें जल्दी मंजिल मिल गई ।"

"क्या मतलब ?"

"जहाँ तक मेरा अनुमान है, अब जरूर इस क्लब के अंदर से हमें टंडन के खिलाफ ऐसा कोई सबूत मिल जाएगा जिसकी बदौलत हम उसके ऊपर हाथ डाल सकें । इसके लिए हमें ज्यादा भटकना नहीं पड़ेगा ।"

"शायद तुम ठीक कह रहे हो ।" रागिनी को भी यही लग रहा था ।

"अब हमारा अगला कदम क्या होगा ?"

"हम क्लब के अंदर जायेंगे ।" रागिनी बोली, "और अगर बलदेवराज टंडन कोई गलत कदम उठाता है तो हम अपने मिनिएचर कैमरे से चुपचाप उसके फोटो खींचेगे । करेक्ट ?"

"करेक्ट ।"

उन दोनों ने अब अपनी मारुति कार क्लब की पार्किंग में ले जाकर खड़ी की और फिर वह भी जुपिटर क्लब के अंदर दाखिल हुए ।

क्लब में वाकई जबरदस्त रौनक थी ।

अंदर से क्लब का दृश्य देखकर तो ऐसा लगता था जैसे यहाँ दीपावली मनाई जा रही हो । चारों तरफ रंग-बिरंगे बल्ब जल रहे थे । बहुत मध्यम शास्त्रीय संगीत की स्वर लहरियाँ गूँज रही थीं, जिन्होंने सारे वातावरण को और भी ज्यादा अलौकिक बना दिया था ।

क्लब में घुसते ही कैसीनो नजर आता था ।

उस कैसिनो में सब तरह का जुआ हो रहा था । रोलेट मशीनों से लेकर टेबल पर खेला जाने वाला ब्रिज तक ।

कैसीनो में एक बहुत खास किस्म की सफ़ेद ड्रेस पहने कुछ लंबे कद की लड़कियाँ भी दिखाई दे रही थीं, जो ट्रे हाथ में पकड़े इधर से उधर घूम रही थीं । इन ट्रे में टोकन रखे हुए थे और उन लंबी लड़कियों का काम ग्राहकों को टोकन सप्लाई करने का था ।

लड़कियाँ फुल सेक्सी थीं ।

एकदम गदरीले बदन की मालिक ।

जिन्हें देखते ही बस हमबिस्तर होने का जालिम ख्याल मन में पैदा होता था ।

उन्हें पकड़ो और तियाँ-पांचा कर डालो ।

वह खुद भी स्पेशल तौर पर मानो इसी काम के लिए बनी थीं ।

रागिनी और सावंत ने वहाँ आते ही इधर-उधर नजर दौड़ाई तो उन्हें तुरंत बलदेवराज टंडन नजर आ गया ।

वह एक ग्रीन टेबल पर बैठा ब्रिज खेल रहा था ।

“वाओ ।” सावंत के होंठ गोल दायरे में सिकुड़े, “ग्रेट । समाजवाद की बड़ी-बड़ी बातें करने वाला यह आदमी एक जुआरी होगा, कोई सोच भी नहीं सकता ।”

“तुम्हें देखते जाओ, अभी इस आदमी के चेहरे से और भी कई मुखोटे उतरेंगे ।”

उन दोनों ने अपने-अपने मिनिएचर कैमरे से बलदेवराज टंडन की जुआ खेलते हुए तस्वीरें उतार लीं ।

यह काम उन्होंने इतनी सावधानी के साथ किया कि क्लब के अंदर किसी को कुछ पता न चला ।

फिर वह भी टंडन के नजदीक वाली टेबल पर जाकर बैठ गए और आपस में ही जुआ खेलने लगे मगर उनकी निगाहों का केंद्र बिंदु पूरी तरह बलदेवराज टंडन ही बना हुआ था ।

कुछ सेकंडो में ही उन्होंने भांप लिया, टंडन जुआ खेलने में काफी सिद्धहस्त है ।

वह एक-एक चाल काफी चतुराई के साथ चल रहा था । बेहद सोच-समझकर । जो एक मंझे हुए जुआरी की पहचान होती है । यह बात अलग है कि टंडन के सामने जो जुआरी बैठा था, वह उसका भी बाप था ।

वह तो मानो बना ही पत्ते लगाने और पत्ते खेलने के लिए था ।

जुआ होता रहा ।

इसके अलावा उन दोनों ने एक बात और भाँपी थी । जिस प्रकार उस क्लब की जुआरी तथा टोकन सप्लाई करती लड़कियाँ टंडन से मस्ती-मजाक में पेश आ रही थीं, उससे साफ जाहिर था कि टंडन वहाँ रुटीन में आता है ।

वह उस क्लब का परमानेंट कस्टमर था ।

“मुझे तो अब इस बात में कोई शक ही नहीं बचा ।” सावंत पत्ते फेंटने का ड्रामा करते हुए बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाया, “जरूर महेश खोखा का मर्डर इसी हरामी ने किया था । अभय मल्होत्रा गलत नहीं बोलता था कि महेश खोखा का कातिल अभी भी सड़क पर खुला घूम रहा है । जी में तो आता है अभी झापड़ों से साले का मुँह चपेट डालूँ ।”

“खामोश बैठे रहो ।”

सावंत ने अपना गुस्सा पीया ।

वह एकाएक आंदोलित हो उठा था ।

बलदेवराज टंडन ने काफी देर तक जुआ खेला । एक बाजी वह जीता, जबकि दो बाजियाँ उसके सामने बैठे शख्स ने जीती ।

“गुड ।” बलदेवराज टंडन ने हारने के बावजूद उस आदमी की तारीफ की, “मानना पड़ेगा तुम एक अच्छे जुआरी हो ।”

“थैंक्यू टंडन साहब !”

उस आदमी ने टेबल पर फैले अपने टोकन समेटे ।

“क्या आप और खेलेंगे ?”

“नहीं, आज हारने का बस इतना ही कोटा था ।”

टंडन की बात सुनकर वह आदमी बड़े फरमाइशी ढंग से हँसा ।

“सचमुच आप बड़े दिलवाले हैं टंडन साहब !”

“ऐसी कोई बात नहीं ।” बलदेवराज टंडन बोला, “मैं तो सिर्फ टाइम पास करने के लिए यहाँ आ जाया करता हूँ ।”

बलदेवराज टंडन अपनी कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ और फिर उसने एक चीज निकालकर उस आदमी की तरफ बढ़ाई ।

और ।

उस चीज पर जैसे ही रागिनी तथा सावंत की निगाह पड़ी उनके दिमाग में बिजली कड़कड़ा उठी ।

वह प्लास्टिक की एक साँप-सीढ़ी थी ।

बिल्कुल वैसी ही साँप-सीढ़ी, जैसी साँप-सीढ़ी जेंटलमैन किलर कत्ल करने के बाद मर्डर स्पॉट पर छोड़ता था ।

उस साँप-सीढ़ी को देखकर वह आदमी भी कुछ सकपकाया ।

"य... यह क्या है टंडन साहब ?"

"यह साँप-सीढ़ी है ।” बलदेवराज टंडन बहुत दार्शनिक पूर्ण लहजे में बोला, “बचपन में तुम साँप-सीढ़ी का खेल जरूर खेलते होओगे । दरअसल जिन लोगों से मैं प्रभावित होता हूँ उन्हें प्लास्टिक की यह साँप-सीढ़ी देना नहीं भूलता । हमारी जिंदगी भी कमोबेश एक हिसाब से उन्हीं की तरह ही है । हम जिंदगी में जब-जब सीढ़ी चढ़ने की कोशिश करते हैं तब तब हमारा सामना किसी साँप से होता है । इसलिए सीढ़ी चढ़ते हुए हमें हमेशा उस डसने वाले साँपों से होशियार रहना चाहिए । अब जब तक प्लास्टिक की यह साँप-सीढ़ी तुम्हारे पास रहेगी तुम्हें मेरी यह बात याद दिलाती रहेगी और मेरा दावा है इस फिलोसॉफी से तुम्हें बहुत फायदा होगा ।”

“वाह टंडन साहब, वाह !” उस जुआरी के मुँह से बरबस ही निकला, “अभी तक मैं सोचता था कि आपकी इस कदर कामयाबी के पीछे राज क्या है लेकिन आज मुझे वजह समझ आ गई ।”

टंडन हल्के से मुस्कुरा दिया ।

उसकी मुस्कुराहट किसी बच्चे जैसी निष्पाप थी । जबकि रागिनी ने अपने मिनिएचर कैमरे से तुरंत साँप-सीढ़ी के साथ टंडन का एक फोटो और खींच लिया ।

उसके बाद टंडन जुपिटर क्लब के बार रुम की तरफ बढ़ गया था ।

“हे भगवान !” सावंत विस्मित लहजे में बोला, “अब तो मेरा यह विश्वास और भी बढ़ गया है कि जरूर महेश खोखा का मर्डर इसी हरामजादे ने किया था । देखो, प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी यह कितने रौब से अपनी जेब में रखकर घूम रहा है ।”

रागिनी के चेहरे पर भी सस्पेंस के भाव दिखाई पड़ने लगे ।

●●●

कैसीनो के आखिरी सिरे पर टॉयलेट था ।

इधर बलदेवराज टंडन बाथरूम की तरफ गया उधर रागिनी अकेली ही उस टॉयलेट के अंदर दाखिल हो गई और वहाँ पहुँचकर उसने ट्रांसमीटर सेट पर पुनः यशवंत गवली से बात की ।

“ऑफिसर, मैं रागिनी बोल रही हूँ, ओवर !”

"बोलो रागिनी, क्या रिपोर्ट है और तुम इस वक्त कहाँ हो, ओवर ?"

"मैं और सावंत इस समय जुपिटर क्लब में हैं ऑफिसर, ओवर ।"

"जुपिटर कलर !" यशवंत गवली का चौंकता हुआ स्वर हेडफोन पर सुनाई पड़ा, "तुम वहाँ क्या कर रहे हो ?"

"दरअसल बलदेवराज टंडन थोड़ी देर पहले ही यहाँ पहुँचा है और उसी का पीछा करते-करते हम भी यहाँ आए हैं ।"

"जुपिटर क्लब में !"

"यस ऑफिसर !"

"टंडन वहाँ क्या कर रहा है ?" यशवंत गवली के स्वर में विस्मय के भाव थे ।

"उसने जहाँ पहुँचकर सबसे पहले जुआ खेला है और अब वह बार रुम की तरफ गया है ।"

"टंडन ने जुआ खेला ?"

"यस ऑफिसर ! और टंडन से संबंधित एक खबर तो ऐसी है जिसे सुनकर आप और भी ज्यादा हैरान होंगे ।"

"क्या ?"

हेडफोन पर आती यशवंत गवली की आवाज में अब साफ-साफ कौतूहलता दिखाई पड़ रही थी ।

"दरअसल टंडन ने जिस आदमी के साथ जुआ खेला ।" रागिनी बोली, "बाद में उससे खुश होकर उसे बिल्कुल वैसी ही प्लास्टिक की एक साँप-सीढ़ी भेंट की, जैसी साँप-सीढ़ी जेंटलमैन किलर मर्डर करने के बाद घटनास्थल पर छोड़कर जाया करता था ।"

"ओह माय गॉड !" यशवंत गवली उस खबर को सुनकर सचमुच आंदोलित हो उठा ।

एक पल के लिए ट्रांसमीटर पर खामोशी छा गई ।

सन्नाटा ।

"क्या सोच रहे हैं ऑफिसर ?"

"लगता है, हम बिल्कुल सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं । तुम टंडन पर निगाह रखना जारी रखो ।"

"ओके ऑफिसर !"

"क्या तुमने उसके कुछ फोटोग्राफ भी खींचे हैं ?"

"यस ऑफिसर !"

"गुड । अगर वह कोई और खास हरकत करता दिखाई पड़े तो उसके भी फोटोग्राफ्स खींचने से मत चूकना ।"

"जरूर ऑफिसर !"

"एनीथिंग ऐल्स ?"

"नो ऑफिसर ! मैंने सिर्फ यही इंफॉर्मेशन देने के लिए आपको कॉल की थी ।"

"ओके । ओवर एंड आउट ।"

●●●

जुपिटर क्लब का बार रुम और भी ज्यादा रंगीन जगह थी ।

वहाँ छोटे-छोटे बहुत खूबसूरत बार काउंटर बने थे जिनके सामने कुर्सियाँ पड़ी थीं । उन बार काउंटर के रैक में एक से एक कीमती शराब मौजूद थी । वहाँ भी शास्त्रीय संगीत की स्वर लहरियाँ गूँज रही थी तथा पूरे बार रुम में हल्का नीला प्रकाश बिखरा था, जो वहाँ के वातावरण को पूरी तरह तिलिस्मी बना रहा था ।

जिस तरह कैसीनो में टोकन सप्लाई लड़कियाँ कर रही थीं, उसी प्रकार वहाँ भी काफी सारी लड़कियाँ थीं, जो शराब सर्व करती घूम रही थीं ।

वह लड़कियाँ भी फुल मॉड थी ।

एकदम सेक्सी ।

बल्कि बाहर वाली लड़कियों से भी वह कई कदम आगे की चीज थीं ।

उन्होंने ड्रेस भी ऐसी पहनी हुई थी जो उनके अंग-प्रत्यंग दिखाई पड़े । बड़े-बड़े गले वाली लो-कट टॉप थी जिनमें उनकी दूधिया भरी-भरी छातियाँ एकदम साफ दृष्टिगोचर हो रही थीं और गले को देखकर साफ पता चल रहा था कि उन्होंने निश्चय ब्रा भी नहीं पहनी हुई है । आधी से ज्यादा छातियाँ उनकी बाहर झांक रही थीं बल्कि कुछ लड़कियाँ तो उनमें ऐसी थीं, जिनके भूरे-भूरे निप्पल का गोल दायरा तक गले से झांकता स्पष्ट चमक रहा था ।

रागिनी और सावंत अंदर बार रूम में दाखिल हुए तो उन्हें बलदेवराज टंडन के वहाँ भी तुरंत दर्शन हुए ।

टंडन एक बार काउंटर के सामने बैठा था और स्कॉच धीरे-धीरे सिप कर रहा था ।

जबकि एक 25-26 साल की लंबे कद की भरे-भरे बदन वाली लड़की थी जो बलदेवराज टंडन को स्कॉच सर्व कर रही थी ।

सोफिया ।

हाँ, यही नाम था उस लड़की का ।

सोफिया फिल्मों में हीरोइन बनने आई थी । यह बात अलग है, वह हीरोइन तो न बन सकी, अलबत्ता हीरोइन बनाने का लालच दे-देकर प्रोड्यूसर्स-डायरेक्टर ने उसका शारीरिक शोषण इतना किया कि उसके पास बचाने या छुपाने लायक कुछ न रहा ।

आज की तारीख में वह सोसाइटी गर्ल बन चुकी थी ।

हाँ, इस फील्ड में उसकी खूब धूम थी ।

वह खूबसूरत इतनी थी, ऊपर से उसकी कातिल अदायें यौवन के भूखे मर्दों को उसके आगे-पीछे मंडराने के लिये मजबूर कर देतीं ।

“एक पैग और बनाऊँ टंडन साहब ?” सोफिया टेबल पर इतना झुक गई कि लो-कट गले के अंदर से उसकी 38 इंच साइज की छातियों का पूरा भूगोल साफ-साफ नजर आने लगा ।

"बनाओ ।"

सोफ़िया ने उसी मुद्रा में झुके-झुके टंडन के लिये स्कॉच का एक पैग और तैयार किया ।

टंडन उसकी छातियों पर नजर गड़ाये मुस्कुराने लगा ।

"क्या देख रहे हैं टंडन साहब ?" सोफ़िया ने भी होंठ चुभलाते हुए अपनी कातिल अदा का जादू बिखेरा ।

वह यूँ मासूम बनी हुई थी, जैसे उसे टंडन की नजरों का कुछ अंदाज ही न हो ।

"देख रहा हूँ ।" टंडन अपलक उसकी गोरी-चिट्टी छातियों को ही घूरता बोला, "कि ऊपर वाला भी कभी-कभी किसी के ऊपर कितना मेहरबान हो जाता है कि खूबसूरती का सारा खजाना एक ही के ऊपर लुटा बैठता है ।"

सोफ़िया अपने होंठ चुभलाते हुए बड़े खनकदार ढंग से हँसी ।

उसकी हँसी बहुत मादक थी ।

शोखी से भरी ।

"जहेनसीब ! यह शब्द आप किस खुशकिस्मत के बारे में कह रहे हैं टंडन साहब ?"

"जैसे तुम जानती नहीं ।" बलदेवराज टंडन ने उसकी आँखों में झाँकते हुए स्कॉच का एक लम्बा घूँट भरा ।

"बाई गॉड !" सोफ़िया बड़ी मासूमियत से बोली, "मुझे नहीं मालूम !"

"तुम्हारी यह अदा मुझे और अच्छी लगती है ।"

सोफ़िया अब पहले से भी ज्यादा जोर से खिलखिलाकर हँसी ।

बलदेवराज टंडन ने स्कॉच का एक घूँट और भरा ।

रागिनी और सावंत उन दोनों से बस थोड़े ही फासले से बैठे थे और दिखावे के लिए बियर पी रहे थे । अलबत्ता उनका सारा ध्यान उन्हीं की तरफ था और उनकी बातें भी उनके कानों तक पहुँच रही थीं ।

"बुड्ढे को देखो ।" सावंत धीमी आवाज में फुसफुसाया, "क्या जवानों की तरह पेश आ रहा है !"

"मैं इसके कुछ फोटो और खींचती हूँ ।"

रागिनी ने वहीं टेबल पर बैठे-बैठे मिनिएचर कैमरे से टंडन के स्कॉच पीते तथा सोफिया से बात करते हुए तीन-चार फोटो और खींच लिए ।

अगर वह फोटोग्राफ्स कहीं प्रेस के बीच रिलीज कर दिये जाते तो पूरे मीडिया में तहलका मच जाना था ।

बलदेवराज टंडन की असली तस्वीर सबको मालूम हो जाती ।

"एक बात बोलूँ डार्लिंग !" टंडन ने अब सोफिया का हाथ अपने हाथ में ले लिया था ।

"क्या ?"

"तुम्हें देखकर कभी-कभी लगता है ।" टंडन ने पहले की तरह उसकी आँखों में झांका, "कि तुम्हारे साथ बहुत बड़ी नाइंसाफी हुई है ।"

"कैसी नाइंसाफी ?"

"मेरी गारंटी है !" टंडन के ऊपर अब नशा हावी होने लगा था, "कि अगर तुम्हें किसी फिल्म में हीरोइन का चांस मिलता तो तुम माधुरी दीक्षित, करीना कपूर या दीपिका पादुकोण की तरह करोड़ों दिलों पर राज करती ।"

सोफिया हँसी ।

उसने बलदेवराज टंडन के लिए एक नया पैग बनाया ।

"मजाक आप अच्छा कर लेते हैं टंडन साहब !"

"नो, नेवर ! रियली आई एम वेरी सीरियस !"

सोफिया भी अब गम्भीर हुई ।

"आप सच कह रहे हैं ?"

"ऑफकोर्स !"

"ओह, टंडन साहब !"

सोफ़िया ने कसकर बलदेवराज टंडन का एक चुम्बन ले डाला ।

जबकि टंडन उसके यूँ सरेआम चुम्बन लेने से कुछ सकपकाया और फिर वह भी खुलकर हँसा ।

"शरारत तुम खूब कर लेती हो !"

इस बीच बलदेवराज टंडन का पैग फिर खाली हो चुका था । सोफ़िया ने एक पैग और बनाने के लिये बोतल उठाई ।

"नहीं ।" टंडन ने उसे रोका, "अब और नहीं ।"

"क्या बात है टंडन साहब ! क्या ज्यादा नशा करने से डरते हैं ?""

"ऐसी कोई बात नहीं ।" टंडन की आँखों में भी शरारत झलक उठी, "बल्कि अब शराब से भी ज्यादा गहरा नशा करना चाहता हूँ ।"

"ओह !"

सोफ़िया के होंठों पर मुस्कान खिल उठी ।

उसे मानो मुँह मांगी मुराद मिल गयी थी ।

"क्या ख्याल है, क्या मुझे शराब से भी ज्यादा गहरा नशा करने का अवसर मिलेगा ?”"

"क्यों नहीं टंडन साहब, नेकी और पूछ-पूछ !"

"तो फिर चलें ?"

"चलो ।"

"टंडन लड़खड़ाते कदमों से उठ खड़ा हुआ । एक पल के लिये ऐसा लगा, वह अभी लड़खड़ाकर गिर जाएगा, मगर तभी सोफ़िया ने उसे सहारा दे दिया ।

"थैंक्यू !" टंडन उसके कंधों पर हाथ रखता हुआ मुस्कुराया ।

उसके बाद वह दोनों बार-रूम में ही एक कोने में बनी सीढ़ियों की तरफ बढ़ गये ।

सीढ़ियाँ, जो ऊपर की तरफ जाती थीं ।

रागिनी और सावंत की निगाहें अब एक-दूसरे से टकराईं ।

"यह ऊपर किसलिये गये हैं ?" सावंत बोला ।

"चलकर देखते हैं ।"

वह दोनों भी उनके पीछे-पीछे सीढ़ियों की तरफ बढ़े ।

●●●

ज्यूपिटर क्लब का फर्स्ट फ्लोर पूरी अय्याशगाह था ।

वहाँ जिस्मफरोशी का धंधा इतना खुलेआम होता था, जैसे वह कोई रेड लाइट एरिया हो ।

वहाँ छोटे-छोटे लकड़ी के केबिन बनाये गए थे जहाँ सिर्फ एक सिंगल बेड पड़ा रहता था । क्योंकि सेक्स करते समय औरत-मर्द को सिंगल बेड से ज्यादा जगह भी नहीं चाहिये होती । हालांकि वह दो जिस्म होते हैं, मगर सेक्स करते समय यूँ आपस में गुत्थमगुत्थ होते हैं कि एक ही बन जाते हैं ।

जिस समय रागिनी और सावंत फर्स्ट फ्लोर पर पहुँचे, तो उस समय वहाँ आधे से ज्यादा केबिनों के दरवाजे बंद थे और उसके अंदर से बड़े अजीबोगरीब तरह की मादक आवाजें आ रही थीं ।

बेड के चरमराने के स्वर ।

कहीं-कहीं से खिलखिलाहट भी गूँजती ।

सारा वातावरण बेहद उत्तेजक था, जो किसी के अंदर भी उत्तेजना का संचार कर सकता था ।

रागिनी तथा सावंत के देखते-ही-देखते बलदेवराज टंडन और सोफ़िया भी एक केबिन में घुस गये ।

इतना ही नहीं, अंदर पहुँचते ही उन्होंने केबिन का दरवाजा भी बन्द कर लिया ।

कसकर ।

"यह आदमी तो हद से ज्यादा बढ़ता जा रहा है ।" सावंत की कौतूहलता और बढ़ी ।

"लगता है आज का दिन हमारे लिये बेहद महत्वपूर्ण साबित होने वाला है ।" रागिनी बोली, “और आज ही हमारे हाथ बलदेवराज टंडन के विरुद्ध ऐसे सबूत लग जाएंगे जो हम उसके ऊपर हाथ डाल सकें ।”

वह दोनों नि:शब्द ढंग से चलते हुए उस केबिन के नजदीक पहुँचे जिसमें अभी-अभी बलदेवराज टंडन और सोफिया बंद हुए थे । उस केबिन के अंदर से अब सोफिया के खिलखिलाकर हँसने की आवाज आ रही थी । वह बड़ी चंचल लड़की थी और अब फिर टंडन के साथ कोई मस्ती कर रही थी । उस केबिन की सबसे

बड़ी खूबी यह थी कि वह बिल्कुल कोने में बना हुआ था और वैसे भी उस वक्त वहाँ लोगों की आवाजाही एकदम न के बराबर थी ।

केबिन में दरवाजे की बगल में ही एक छोटी-सी विंडो लगी हुई थी ।

रागिनी ने उस विंडो को अंदर की तरफ धकेलकर देखा तो किस्मत की बदौलत वह उन्हें खुली मिली ।

जरा-सा धक्का देते ही वह किरकिर करके खुलती चली गई ।

रागिनी ने विंडो के दोनों पल्लों के बीच में मुश्किल से आधा इंच की झिरी पैदा किया । अब उस आधा इंच की झिरी के मार्फत वह अंदर का सारा दृश्य देख सकती थी ।

वहाँ क्या हो रहा है ?

वह लोग क्या कर रहे हैं ?

सबकुछ साफ-साफ दिखाई पड़ रहा था ।

सोफिया केबिन में पहुँचते ही टंडन के साथ बिस्तर पर ढेर हो गई और फिर उसके ऊपर चढ़ बैठी । नीचे बार रूम में थोड़ी देर पहले तक जो सोफिया बलदेवराज टंडन को एक बॉस की तरह ट्रीटमेंट दे रही थी, वह बंद कमरे में पहुँचते ही उसकी घुड़सवारी करने पर आमादा हो गई ।

यही औरत की फितरत है ।

बिस्तर पर पहुँचते ही वह अपने असली रंग में आ जाती है ।

फिर तो उसका एक ही टारगेट होता है, खुद शेरनी बनना और मर्द को चूहा बना देना ।

"क्या बात है !" जैसे ही सोफ़िया उसके ऊपर चढ़ी, टंडन हँसा, "क्या आज मेरा कचूमर निकाल देने का इरादा है ?"

"हाँ, कुछ ऐसा ही समझो ।"

सोफ़िया भी हँसी और उसने टंडन का एक कसकर चुम्बन ले डाला ।

बलदेवराज टंडन अब पूरी तरह बिस्तर पर था और सोफ़िया घुटनों के बल उसके पेट पर बैठी थी । फिर वह उसके ऊपर लेट गयी ।

केबिन का माहौल धीरे-धीरे गरम होने लगा था ।

वहाँ रोमांस का खेल चलने लगा ।

"ओह डार्लिंग, आई लव यू !"

टंडन भी व्यग्र होने लगा ।

उसकी हथेलियाँ, उसके पैरों के तलुवे, उसकी साँसें अब भभक उठीं ।

सोफ़िया ने अपने बालों का रबड़ बैंड निकालकर दूर उछाल दिया, तो उसके बाल बलदेवराज टंडन के चेहरे पर बिखर गये । वह अब और भी ज्यादा खूबसूरत नजर आने लगी ।

कयामत ।

उसके होंठ दहकते अंगार बन चुके थे ।

आँखों में सुर्ख-सुर्ख डोरे तैरने लगे ।

उधर टंडन के हाथ भी सरसराते हुए अब उसकी टॉप के अंदर सरक गये थे ।

"ओह, टंडन साहब !"

सोफ़िया ने होंठ आनंदातिरेक कसकर अपने दाँतों के नीचे भींच लिये ।

फिर दोनों की संयुक्त खिलखिलाहट गूँजी ।

दोनों फूल मस्ती में थे ।

पूरा मजा लूटने के मूड में ।

तभी बलदेवराज टंडन ने आनन-फानन उसकी टॉप उतार डाली ।

वह अब और खूबसूरत नज़र आने लगी ।

दोनों के जिस्म अब अग्निकुंड बन चुके थे ।

"आई लव यू टंडन साहब, आई लव यू !" सोफिया की आवाज में बेचैनी साफ झलक रही थी, "मैं सचमुच आपसे बहुत प्यार करने लगी हूँ ।"

टंडन हँसा ।

फिर उसने सोफिया के गाल का एक कसकर चुंबन लिया ।

"क्यों मजाक करती हो ।" टंडन बोला, "मेरे जैसे अधेड़ उम्र के आदमी से तुम क्या प्यार करोगी ?"

"नहीं टंडन साहब !" सोफिया मानो दिल से बोल रही थी । उसके स्वर में विश्वास कूट-कूट कर भरा था, "आप नहीं जानते, प्यार में उम्र मायने नहीं रखता ।"

सोफिया के हाथ भी अब टंडन की पीठ पर सरसराने लगे ।

"यह सब किताबी बातें हैं डार्लिंग !" बलदेवराज टंडन के होंठ अब सोफिया की गर्दन पर सरसरा रहे थे ।

"नहीं, ऐसी बात नहीं ।" सोफिया भावुक हो उठी, "जानते हो, जिस आदमी की शक्ल आपने पाई है, उसकी मैं शुरु से ही फैन रही हूँ । जब मैंने सबसे पहली बार आपको देखा था तो यही समझी थी कि आप नसीरुद्दीन शाह हैं, लेकिन फिर असलियत पता चली मगर फिर भी मन-ही-मन मेरा आपसे कुछ जुड़ाव हो गया ।"

टंडन ने अब अपना चेहरा सोफिया की दोनों छातियों के बीच में छिपा लिया ।

"मुझसे नहीं माय स्वीटहार्ट, बल्कि मेरे चेहरे से तुम्हें लगाव हो गया था !"

"अब आप इसे चाहे कुछ भी समझे ।" सोफिया बोली, "मगर मुझे आपसे लगाव हो गया ।"

"जो आज तक जारी है ?"

"हाँ ।"

उन दोनों के ऊपर वासना की गर्मी चढ़ती जा रही थी ।

वह हर बार आनंद के नए सागर में हिलोरे ले रहे थे ।

टंडन काफी देर तक उसके साथ खेलता रहा ।

खूब अठखेली करता रहा ।

फिर जल्द ही उन दोनों के प्रेम का बाँध टूट गया और वह दोनों एक-दूसरे को बुरी तरह बाँहों में जकड़े हाफने लगे ।

उनकी साँसें अब अव्यवस्थित थीं ।

"इस उम्र में भी आपकी मर्दानगी सचमुच कमाल है टंडन साहब !" सोफिया हाँफते हुए बोली, "मानना पड़ेगा इतनी गर्मी आजकल के नौजवानों में भी देखने को नहीं मिलती ।"

"त... तुमने शायद एक कहावत नहीं सुनी ।" टंडन की साँसें अभी भी अव्यवस्थित थीं ।

"क्या ?"

"पुराने चावलों में कहीं ज्यादा जान होती है ।"

सोफिया के होंठों पर एक बार फिर मुस्कान थिरक उठी और उसने पूरी गर्मजोशी के साथ प्यार से बलदेवराज टंडन का चुंबन ले डाला ।

●●●

रागिनी तथा सावंत अभी भी विंडो के बाहर थे और उन्होंने वह पूरी ट्रिपल एक्स फिल्म अपनी नंगी आँखों से देखी थी ।

इसके अलावा उन्होंने एक महत्वपूर्ण कार्य और किया । अपने-अपने मिनिएचर कैमरे से टंडन और सोफिया की कुछ तस्वीरें उतार ली ।

यह तस्वीरें उनके सबसे ज्यादा काम आने वाली थीं ।

फिलहाल यह भी शुक्र था कि केबिनों के बीच बने उस कॉरीडोर में पहले की तरह शांति थी और किसी की निगाह उनके ऊपर नहीं पड़ी थी । अलबत्ता एक केबिन के अंदर से एक जोड़ा निकलकर अभी-अभी वहाँ से गया था मगर वह जोड़ा आपस में ही इतना मगन था कि उसे अपने इर्द-गिर्द देखने की फुर्सत ही न थी ।

बलदेवराज टंडन और सोफिया अभी भी बिस्तर पर थे परंतु अब वह कुछ रिलैक्स नजर आ रहे थे ।

"एक बात बोलूँ ?" सोफिया ने अब पहले जैसी शरारत के साथ टंडन की तरफ देखा ।

उसकी बाहों का दायरा अभी भी टंडन की कमर के गिर्द कसा था ।

"क्या ?"

"अगर कोई तुम्हारा यह रूप देख ले ।" सोफिया मुस्कुराकर बोली, "तो कौन यकीन करेगा कि अखबार में ऐसी बड़ी-बड़ी सोशलिजम की बातें लिखने वाला बलदेवराज टंडन इस उम्र में बिस्तर पर ऐसी हरकतें भी करता होगा ?"

टंडन हँस पड़ा ।

उसने सोफिया का एक और प्रगाढ़ चुम्बन लिया तथा बड़े प्यार से उसके बालों में उंगलियों की कंघी-सी फेरी ।

"माई डैलीशस डार्लिंग !" बलदेवराज टंडन सीधे उसकी आँखों में झांकता हुआ बोला, "तुम शायद एक बात नहीं जानती ! हिटलर हो या नेपोलियन, बिस्तर पर पहुँचने के बाद दुनिया के तमाम मर्द एक जैसी ही हरकतें करते हैं । जंगलियों जैसी हरकतें ।"

टंडन से चिपटे-चिपटे सोफिया एकाएक खिलखिलाती हुई बिस्तर पर पलटी खा गई ।

एक बार फिर टंडन नीचे था, सोफिया ऊपर ।

शायद उसे मर्दों की सवारी करने का कुछ ज्यादा ही शौक था ।

"माय डियर, तुम भी शायद एक बात नहीं जानते !"

"क्या ?"

"बिल्कुल यही बात औरतों पर भी लागू होती है ।"

दोनों का अब संयुक्त कहकहा गूँजा ।

सचमुच वह फुल मस्ती कर रहे थे ।

फुल इंजॉय ।

जिंदगी की कोई खुशी वह मानो हासिल करने से चूकना नहीं चाहते थे ।

सेक्स करने के बाद भी वह बिस्तर पर काफी देर तक अठखेली करते रहे । फिर उन्होंने धीरे-धीरे कपड़े पहनने शुरू किए ।

इस बीच रागिनी ने अपने मिनिएचर कैमरे से उनके दो फोटोग्राफ्स और खींचे ।

अभी तक टंडन को इस बात की कानों-कान भनक न थी, वह कितनी बड़ी मुश्किल में गिरफ्तार होता जा रहा है ।

फिर एक घटना और घटी । जब उन दोनों ने अपने सारे कपड़े पहन लिए तो टंडन ने अपनी जेब में हाथ डालकर वही प्लास्टिक की एक साँप-सीढ़ी निकाली और उसे सोफिया की तरफ बढ़ाया ।

उस साँप-सीढ़ी को देखकर सोफिया भी चौंकी ।

"यह क्या टंडन साहब !" सोफिया ने कहा, "आप हमेशा सेक्स करने के बाद मुझे प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी का यह तोहफा जरूर देते हैं । आज यह बताएँ, हम दोनों में साँप कौन है और सीढ़ी कौन है ?"

"साँप भी मैं ही हूँ और सीढ़ी भी मैं ही हूँ ।" बलदेवराज टंडन का स्वर पुनः दार्शनिकतापूर्ण हो उठा, "अगर तुम मुझे जिंदगी में प्यार से इस्तेमाल करोगी डार्लिंग, तो तुम्हारे लिए मैं सबसे अच्छी और सबसे मजबूत सीढ़ी साबित होऊँगा । लेकिन... ।"

"लेकिन क्या ?"

"लेकिन अगर तुमने जरा भी मेरे खिलाफ जाने की कोशिश की ।" टंडन की आवाज सख्त हो उठी, "तो तुम्हें मेरे से ज्यादा खतरनाक और जहरीला साँप भी दूसरा कोई नहीं मिलेगा, समझी ।"

और ।

बलदेवराज टंडन के स्वर में ऐसा कुछ था जिसे सुनकर सोफिया के शरीर में अंदर तक खौफ की सिहरन दौड़ गई ।

रोमांस का सारा नशा उसके दिमाग के ऊपर से एक ही झटके में छूमंतर हो गया ।

"इसके अलावा मैं तुम्हें एक बात और बता दूँ सोफिया डार्लिंग !"

"क्या ?"

"साँप-सीढ़ी का यह खेल ही इस जिंदगी की सबसे बड़ी सच्चाई भी है । इस बिसात पर वही जीतता है जो अपने दुश्मन रुपी साँपों से बचने की कला में माहिर हो ।"

सोफिया अपलक बलदेवराज टंडन को देखती रह गई ।

प्लास्टिक की वह साँप-सीढ़ी अभी टंडन के हाथ में थी । रागिनी ने तुरंत अपने मिनिएचर कैमरे से साँप-सीढ़ी के साथ टंडन का एक फोटो और खींच लिया ।

उसके आसपास सबूतों का शिकंजा सख्त होता जा रहा था ।

मजबूत ।

●●●

"यानी वह फुल अय्याश आदमी है ।"

यशवंत गवली ने सिगरेट का एक लंबा कश लगाया और उसका ढेर सारा धुआँ छत की तरफ उछाला ।

इस समय बलदेवराज टंडन के वह सारे फोटोग्राफ्स उसके सामने टेबल पर फैले हुए थे, जो रागिनी और सावंत ने खींचे थे । यशवंत गवली ने सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगाते हुए उन सभी फोटोग्राफ्स का अच्छी तरह अवलोकन किया ।

हर फोटोग्राफ्स चौंका देने वाला था ।

आश्चर्य से भरा ।

रागिनी और सावंत के अलावा शुभांगी भी उस वक्त वहाँ मौजूद थी ।

शुभांगी ने भी वह सभी फोटोग्राफ्स एक-एक करके देखे ।

"इन सभी फोटोस को देखकर एक बात तो एकदम क्लियर समझ में आ रही है ।" यशवंत गवली का लहजा शांत था ।

"क्या ?"

"टंडन वैसा आदमी तो हरगिज भी नहीं है, जैसा पब्लिक उसे समझती है ।"

"इसमें तो कोई शक ही नहीं ऑफिसर !" सावंत ने फौरन अपनी ही टोन में कहा, "सच तो यह है जब हमने सबसे पहले उसे जुपिटर क्लब में घुसते देखा तो हम ही चौंक उठे थे और ऊपर से वहाँ पहुँचकर जो-जो कारस्तानियाँ उसने की, जो-जो गुल उसने खिलाएँ, वह सब तो बल्ले-बल्ले थे । उन सबके जिंदा सबूत तो आपके सामने हैं ही ।"

यशवंत गवली कुर्सी से खड़ा होकर अब बेचैनी के साथ इधर से उधर टहलने लगा ।

उसके साथ-साथ बाकी सबने भी कुर्सियाँ छोड़ी ।

"मैं एक बात कहूँ ऑफिसर ?" शुभांगी, यशवंत गवली के नजदीक आई ।

"क्या ?"

"मैं समझती हूँ ।" शुभांगी बोली, "अब हमारे पास सोचने-विचारने के लिए कुछ नहीं बचा है ऑफिसर ! मराठा मंदिर के रंगीला और अब्बास के बयान से लेकर यह फोटोग्राफ्स तक, सबके सब बलदेवराज टंडन के खिलाफ गवाही दे रहे हैं । हर बात से यही जाहिर होता है कि महेश खोखा के मर्डर के पीछे टंडन का ही हाथ था ।"

"मगर एक पहेली अभी भी अनसुलझी है ।" रागिनी बोली ।

"क्या ?"

"महेश खोखा का मर्डर अगर बलदेवराज टंडन ने किया, तो क्यों किया ?"

"जहाँ तक मैं समझती हूँ ।" यह शब्द शुभांगी के थे, "इस राज के ऊपर से पर्दा अब सिर्फ टंडन ही उठा सकता है ।"

यशवंत गवली सिगरेट के कश लगाता हुआ बेचैनीपूर्वक इधर से उधर टहलता रहा ।

मानो वह किसी निर्णय तक पहुँच जाना चाहता हो । फिर एकाएक वह ठिठका और उसने पलटकर शुभांगी की तरफ देखा, "शायद तुम ठीक कह रही हो शुभांगी ! इस राज के ऊपर से पर्दा अब सिर्फ बलदेवराज टंडन ही उठाएगा ।"

●●●

अगला दिन काफी हंगामे से भरा था ।

सुबह के 10:00 बज रहे थे जब क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर में शोर-शराबा मचा । दरअसल कुछ क्राइम ब्रांच एजेंट बलदेवराज टंडन को अरेस्ट करके वहाँ लाए थे और अब उसी वजह से यह सारा हंगामा मच रहा था ।

टंडन को सीधे हेडक्वार्टर के इंटेरोगेशन रुम में ले जाया गया और उसे वहाँ लोहे की एक कुर्सी के साथ कसकर बाँध दिया गया ।

"यह क्या हरकत है ?" बलदेवराज टंडन बार-बार गला फाड़कर चिल्ला रहा था, "मुझे इस तरह यहाँ पकड़कर क्यों लाया गया है । तुम शायद जानते नहीं कि मैं कौन हूँ ?"

क्राइम ब्रांच एजेंट शांत थे ।

चुप ।

मानो उन्हें कुछ भी बोलने के लिए मना किया गया हो ।

"मैं तुम लोगों से कुछ पूछ रहा हूँ ।" बलदेवराज टंडन का कर्कश लहजा, "तुम लोग मुझे यहाँ क्यों लेकर आए हो, जवाब दो ?"

"जवाब आपको मैं देता हूँ टंडन साहब !" इंटेरोगेशन रुम में एक बिल्कुल नई आवाज गूँजी ।

और ।

उस आवाज को सुनते ही चौंक उठा बलदेवराज टंडन ।

उसने एकदम गर्दन उठाकर दरवाजे की तरफ देखा ।

वह यशवंत गवली की आवाज थी जो अभी-अभी इंटेरोगेशन रुम में दाखिल हुआ था ।

उसके पीछे-पीछे रागिनी, शुभांगी और सावंत भी वहाँ आए ।

"ऑफिसर, आप !" बलदेवराज टंडन के मुँह से यही एक शब्द निकला ।

यशवंत गवली कुछ न बोला ।

उस समय वहाँ 3 क्राइम ब्रांच एजेंट थे जो टंडन को पकड़कर लाए थे ।

"तुम्हारा काम खत्म हुआ ।" वह तीनों एजेंट से बोला, "तुम अब जा सकते हो ।"

तुरंत वह तीनों क्राइम ब्रांच एजेंट वहाँ से जो छूमंतर हो गए, जैसे वो वहाँ थे ही नहीं ।

इंटेरोगेशन रूम में अब बलदेवराज टंडन के अलावा सिर्फ वह चारों ही बचे थे ।

बलदेवराज टंडन पहले की तरह लोहे की कुर्सी पर बँधा बैठा था ।

"ऑफिसर !" वह फिर कुर्सी पर पड़े-पड़े पहले की तरह चिल्लाया, "मैं पूछ रहा हूँ, मुझे इस तरह यहाँ क्यों पकड़कर लाया गया है ? आप लोग शायद जानते नहीं मेरे साथ इस तरह के बर्ताव की कितनी खतरनाक कीमत आपके डिपार्टमेंट को भुगतनी पड़ सकती है । सारा प्रेस मीडिया आपके खिलाफ हो जाएगा । जो प्रेस आज तक यशवंत गवली की तारीफ करते नहीं थकती, वही प्रेस यशवंत के खिलाफ चिल्लाती नजर आएगी ।"

"मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली के चेहरे पर सख्त भाव उभर आए और वह उसकी तरफ थोड़ा झुक गया, "सबसे पहले तो यह कान खोलकर सुन लो कि मुझे धमकी देने की आइंदा कभी कोशिश मत करना और न ही मेरे ऊपर इस बात का कभी रौब गाँठना कि तुम किसी अखबार के मालिक हो या एडिटर हो, क्योंकि अगर तुमने फिर कभी ऐसी हरकत दिखाई तो अभी तक तो तुम्हारे साथ फिर भी शराफत से पेश आया जा रहा है, लेकिन फिर मैं तुम्हें बताऊँगा कि यशवंत गवली किस बला का नाम है । समझे मिस्टर बलदेवराज टंडन ?"

टंडन अब थोड़ा सहम गया और वह डरी-डरी आँखों से यशवंत गवली की तरफ देखने लगा ।

"ल... लेकिन मुझे यहाँ लाया क्यों गया है ?" वह फिर हिम्मत जुटाकर बोला ।

परंतु इस वक्त उसकी आवाज दबी-दबी थी ।

"हमें तुमसे कुछ सवाल पूछने हैं ।"

"क्या वह सवाल पूछने के लिए मेरा यही लाया जाना जरूरी था ?" टंडन की निगाह यशवंत गवली के चेहरे पर ही गड़ी थी ।

"हाँ, तुम्हारा यहीं लाया जाना जरूरी था मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली बोला, "क्योंकि हर काम तरीके के साथ होता है, सिस्टम के साथ होता है ।"

"मगर आप लोग मुझसे क्या सवाल पूछना चाहते हैं ?"

"आपका कहना है कि 3 अप्रैल को शाम 7:00 बजे जब महेश खोखा का मर्डर हुआ, तो उस समय आप अपनी वाइफ के साथ मराठा मंदिर सिनेमा हॉल में बैठे 'हम आपके हैं कौन' फिल्म देख रहे थे, करेक्ट ?"

"करेक्ट ।"

"मगर इन्वेस्टिगेशन करने के बाद हमें पता चला है कि फिल्म शुरू होने के ठीक आधे घंटे बाद, यानी ठीक 6:30 बजे आप अपनी वाइफ को वहाँ अकेला छोड़कर कहीं चले गए थे और फिर उसी दिन शाम को ठीक 7:00 बजे महेश खोखा का जसलोक हॉस्पिटल के अंदर मर्डर हो गया ।"

टंडन चौंका ।

उसकी भृकुटि तनी ।

"तो आप यह कहना चाहते हैं ।" उसकी आवाज पहले की तरह कर्कश थी, "कि वह मर्डर मैंने किया है ?"

"हम कुछ नहीं कहना चाहते मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली गुर्राया, "बल्कि जो कहेंगे सबूत कहेंगे और प्लीज, मैं आपको फिर आगाह कर दूँ, थोड़ी नीची आवाज में बात करो, वरना आपको ज्यादा सख्ती भुगतनी पड़ सकती है ।"

"लेकिन मेरे खिलाफ क्या सबूत हैं आपके पास ?"

"क्या यह सबूत कुछ कम है कि जिस समय मर्डर हुआ ठीक उसी समय तुम अपनी एलीबी पुख्ता करने के लिए मराठा मंदिर सिनेमा हॉल में फिल्म देखने गए। इतना ही नहीं, तुमने उस शो के टिकट भी अपने पास संभालकर रखे। जबकि अमूमन इस प्रकार कोई भी टिकट अपने पास संभालकर नहीं रखता। फिल्म देखने के बाद सभी लोग टिकट फाड़कर फेंक देते हैं, मगर तुम्हारे पास उस शो के टिकट कई दिन बाद भी सुरक्षित थे। क्या यह सारे सबूत ही चीख-चीखकर इस बात की तरफ इशारा नहीं कर रहे हैं कि महेश खोखा का खून तुम्हीं ने किया है मिस्टर टंडन ? और फिल्म शुरू होने के ठीक आधे घंटे बाद, यानी 6:30 बजे तुम कहाँ चले गए थे ? याद रहे, उसके बाद ही महेश खोखा का मर्डर हुआ था।"

लोहे की कुर्सी पर बंधा बलदेवराज टंडन अब कुछ बेचैन दिखाई पड़ा।

उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे मानो कोई कांटा उसके गले में आकर अटक गया हो।

"देखिए, आप लोग चाहे कुछ भी कहें।" बलदेवराज टंडन कातर स्वर में बोला, "मगर इनमें से किसी भी बात से यह हरगिज़ साबित नहीं होता कि महेश खोखा का खून मैंने किया है। आप सिर्फ इन मामूली सबूतों की बिना पर शहर के एक इतने इज्जतदार और प्रेस मीडिया के इतने सशक्त आदमी पर उंगली नहीं उठा सकते।"

"इज्जतदार आदमी !" यशवंत गवली उपहासपूर्ण अंदाज में मुस्कुराया, "प्रेस मीडिया का सशक्त आदमी ! हम यह भी बताते हैं कि तुम कितने बड़े इज्जतदार आदमी हो। रागिनी !"

यशवंत गवली ने रागिनी को इशारा किया।

रागिनी तुरंत आगे बढ़ी और उसने एक लिफाफे में से कुछ फोटोग्राफ्स निकालकर बलदेवराज टंडन के सामने रखे।

और।

उन फोटोग्राफ्स पर जैसे ही बलदेवराज टंडन की नजर पड़ी, उसके चेहरे का रंग एकदम फक्क से उड़ गया।

वह अब साफ-साफ दहशतजदा नजर आने लगा।

"य... यह तस्वीरें आपको कहाँ से मिली ?"

"वहीं से मिली।" यशवंत गवली का स्वर नाटकीय हो उठा, "जिस जगह रात आप मौज-मेला करने गए थे।"

●●●

पत्ते अब पूरी तरह यशवंत गवली के हाथ में आ चुके थे और बलदेवराज टंडन उसके सामने बिल्कुल भीगी बिल्ली बना नजर आने लगा।

उसकी सारी हेकड़ी, सारी दिलेरी उन तस्वीरों पर एक नजर पड़ते ही फुर्र हो चुकी थी।

उसकी नजरें अपराध बोध से झुक गई।

"मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली पूरी तरह उस पर हावी होता हुआ बोला, "जरा सोचिए, अगर यह सारी तस्वीरें प्रेस के बीच रिलीज कर दी जाएँ तो कितनी इज्जत रह जाएगी आपकी। जिस प्रेस मीडिया के सशक्त आदमी होने की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं आप, तस्वीरें रिलीज होने के बाद वही प्रेस मीडिया आपको सड़क पर पटक-पटककर मारेगा कि आप प्रेस का जिंदगी में नाम लेना भी भूल जायेंगे।"

बलदेवराज टंडन का चेहरा लटक गया। वह अपनी करतूतों का सामना नहीं कर पा रहा था।

"ऑफिसर !" वह अपने शुष्क अधरों पर जुबान फिराता हुआ बोला, "पूछिए क्या पूछना चाहते हैं आप ?"

"गुड । अब आप सही रास्ते पर आए हैं । सबसे पहले तो आप यह कुबूल कीजिए ।" यशवंत गवली बोला, "कि 3 अप्रैल को फिल्म शुरू होने के ठीक आधे घंटे बाद आप सिनेमा हॉल से कहीं गए थे, अपनी वाइफ को अकेला छोड़कर गए थे ?"

"यह सच है ।" बलदेवराज टंडन नजरें झुकाए-झुकाए बोला, "कि मैं फिल्म शुरू होने के ठीक आधे घंटे बाद चला गया था । ल... लेकिन उसके पीछे ऐसी कोई वजह नहीं है जैसी आप सोच रहे हैं ।"

यशवंत गवली मुस्कुराया ।

"फिर कैसी वजह है ?"

"दरअसल उस दिन जब मैं सिनेमा हॉल में बैठा फिल्म देख रहा था ।" बलदेवराज टंडन ने सफाई दी, "तो मेरे ऑफिस से मोबाइल पर न्यूज़ एडिटर का फोन आया था ।"

"न्यूज़ एडिटर का फोन ।"

"हाँ ।"

"क्यों ?"

"बात सिर्फ इतनी थी ।" टंडन बोला, "कि मैं अपना संपादकीय लिखकर उसे भूल से अपनी टेबल की ड्राअर में बंद कर आया था और उसकी चाबी मेरे पास थी । जबकि उस संपादकीय का अखबार में फौरन छपना बहुत जरूरी था । फिर अभी उसकी कंपोजिंग भी होनी बाकी थी और उसी एक आर्टिकल की वजह से अखबार के पूरे पेज का लेआउट बनने से भी रुका हुआ था ।"

"ऐसी जटिल स्थिति में फिर आपने क्या किया ?" यशवंत गवली की वेधक निगाहें टंडन के चेहरे पर ही टिकी थीं ।

"फिर मैंने वही किया ।" टंडन लोहे की कुर्सी पर मुजरिमों की भांति बैठे-बैठे बोला, "जो आप सबको पहले से ही मालूम है । मैंने अपनी वाइफ से कहा कि वह वहीं सिनेमा हॉल में बैठकर फिल्म देखें और मैं ऑफिस से बस आधे घंटे में गया और आया ।"

"आधे घंटे में !" यशवंत गवली की आवाज सनसनायी हुई थी ।

"हाँ ।"

"मगर जहाँ तक मुझे जानकारी है, आप आधे घंटे में लौटकर आए तो नहीं ?"

"हाँ, यह सच है ।" टंडन की निगाहें पुनः नीचे झुकी, "मैं आधे घंटे से भी बाद में वापस लौटा था । उस समय फिल्म का इंटरवल बस होने ही वाला था ।"

"इतनी देर आपको कहाँ लगी क्योंकि सिर्फ ऑफिस आने-जाने में तो इतना वक्त नहीं लगना था ।"

"इसमें कोई शक नहीं, सिर्फ ऑफिस आने-जाने में मुझे इतना वक्त नहीं लगना था । दरअसल जब मैं ऑफिस से लौट रहा था तो बीच रास्ते में मेरे साथ एक घटना घट गई ।

"कैसी घटना ?"

"मेरी कार एकाएक खराब हो गई थी ।" बलदेवराज टंडन रहस्य के नए-नए पर्दे खोलता हुआ बोला, "अकस्मात खराब हुई कार ने एक पल के लिए तो मुझे उलझन में डाल दिया और मैं एकाएक यही फैसला न कर सका कि मैं क्या करूँ ? मैं अभी किसी मैकेनिक वगैरा के पास जाने के बारे में सोच ही रहा था कि फिर मुझे खयाल आया, क्यों न एक बार खुद ही कार को चेक करके देखा जाए ।"

"फिर आपने कार चेक की ?" यशवंत गवली एक-एक सवाल अच्छी तरह खोदकर पूछ रहा था ।

"बिल्कुल की । मैंने कार का इंजन खोलकर देखा तो पता चला कि उसके कार्बोरेटर में कचरा भर गया था और उसकी वजह से कार चलते-चलते रुक गई थी । मैंने कचरा वगैरह निकाला तो इंजन वापस घरघराकर जाग उठा ।"

"उसी वजह से आपको इतनी देर हुई ?"

"हाँ।"

यशवंत गवली सहित सबकी निगाहें एक-दूसरे से टकराईं।

उनकी आँखों में और भी ज्यादा संदेह के भाव जाग उठे।

"यानी इस आधा-पौन घंटा आप कहाँ थे टंडन साहब !" रागिनी बोली, "इसका कोई गवाह, कोई सबूत आपके पास नहीं है।"

"हाँ।"

बलदेवराज टंडन की नजरें झुक गई।

जबकि यशवंत गवली अब बेचैनीपूर्वक इधर से उधर टहलने लगा।

उसका दिमाग काफी तेज स्पीड से चल रहा था।

वह सोच रहा था, किसी ऐसे पॉइंट के बारे में जिससे एक ही झटके में इस पूरे केस के ऊपर से पर्दा उठाया जा सके।

मगर।

काफी सोचने-विचारने के बावजूद भी उसके दिमाग में कोई पॉइंट नहीं आया। तभी उसकी निगाहें फिर जूपिटर क्लब की तस्वीरों पर जाकर ठहर गयीं।

"मैं आपसे एक सवाल और पूछना चाहता हूँ मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली उन तस्वीरों पर नजर गड़ाए-गड़ाए बोला।

"पूछो।"

"आप प्लास्टिक की यह साँप-सीढ़ी हर किसी को गिफ्ट में क्यों देते हैं ?"

"इसके पीछे कोई खास वजह नहीं।"

"फिर भी कुछ तो वजह होगी ?"

टंडन के चेहरे पर पुनः हिचकिचाहट के भाव उभरे।

"द... दरअसल मुझे साँप-सीढ़ी का खेल बहुत पसंद है।" बलदेवराज टंडन बोला, "मुझे साँप-सीढ़ी के इस खेल में जिंदगी की पूरी सच्चाई, पूरी फिलॉसफी नजर आती है। जिंदगी का अपना दर्शनशास्त्र भी तो यही है कि दुश्मनों के बीच से गुजरते हुए सीढ़ियाँ चढ़ते चले जाओ और कामयाबी हासिल करो।"

"सिर्फ इसीलिए जो लोग आपको पसंद आते हैं आप उन्हें साँप-सीढ़ी देते हैं ?"

"हाँ।"

"क्या आप जानते हैं मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली, बलदेवराज टंडन की आँखों में झांकता हुआ जहरीले नाग की तरह फुंफकार उठा, "जेंटलमैन किलर भी कत्ल करने के बाद मर्डर स्पॉट पर बिल्कुल ऐसी ही प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी छोड़ जाता था ?"

"मुझे मालूम है। मैं आखिर एक इतने बड़े अखबार का मालिक हूँ और जेंटलमैन किलर से संबंधित यह खबरें रोजाना खुद मेरे ही अखबार में छपती थीं।"

"तब भी आपने अपना यह खतरनाक शौक जारी रखा ?"

"आप भूल रहे हैं, यह मेरा शौक नहीं था, बल्कि यह मेरी जिंदगी की फिलॉसफी थी, मेरी जिंदगी का दर्शन था। साँप-सीढ़ी की इसी फिलासफी के कारण तो मैं कामयाबी के इस पायदान पर पहुँचा। फिर मैं इतनी आसानी से इस फिलॉसफी को कैसे छोड़ सकता था ? बल्कि मैं तो एक दूसरी बात कहूँगा।"

"क्या ?"

"हो सकता है, जेंटलमैन किलर को किसी तरह मेरी इस फिलासफी के बारे में पता चल गया हो और उसने भी प्रभावित होकर मेरे इस दर्शनशास्त्र को अपना लिया। यह बात अलग है अब यही दर्शनशास्त्र मेरे गले की हड्डी बन रहा है।"

"हूँ।"

यशवंत गवली सोच में डूब गया।

"ओके, तुम जा सकते हो मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली ने थोड़ा रुककर कहा, "इन्हें खोल दो।"

रागिनी और सावंत एक पल के लिए सकपकाए।

मगर आदेश का पालन उन्हें करना था।

उन्होंने आगे बढ़कर बलदेवराज टंडन को लोहे की कुर्सी से खोल दिया। टंडन ने थोड़ी राहत की साँस ली और वह उठ खड़ा हुआ।

"क्या मैं यह फोटोग्राफ्स भी अपने साथ ले जा सकता हूँ ?" टंडन बोला।

"नहीं।" यशवंत गवली ने बलदेवराज टंडन के फोटोग्राफ्स की तरफ बढ़ते हाथों को रोका, "इन्हें फिलहाल यहीं रहने दो।"

"लेकिन...।"

"बेफिक्र रहो, हमारा डिपार्टमेंट इन फोटोग्राफ्स का कोई गलत इस्तेमाल नहीं करेगा और समय आने पर आपको आपके यह फोटोग्राफ्स लौटा दिए जाएंगे।"

टंडन के चेहरे पर फिर भी संशय के भाव छाए रहे।

वह उसी सशंक हालत में इंटेरोगेशन रुम से बाहर निकल गया।

●●●

वह चारों एक बार फिर क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर के एक केबिन में सिर से सिर जोड़े बैठे थे।

काफी मेहनत-मशक्कत करने के बावजूद उनमें से किसी को बेल मुंडेर पर चढ़ती नजर नहीं आ रही थी। सबूत उनके हाथ में आ-आकर निकल रहे थे और सबसे बड़ी बात यह थी कि अब वह यह भी नहीं कह सकते थे कि उन्हें इसकी रि-इन्वेस्टिगेशन करने के लिए सही दिशा नहीं मिली है।

वह बड़ी तेज रफ्तार से अपनी मंजिल की तरफ बढ़ रहे थे। उनकी हर चोट सही पड़ती।

मगर हाथ में तब भी कुछ नहीं था।

"मैं एक बात नहीं समझ पा रहा हूँ ऑफिसर !" सावंत बेचैनीपूर्वक बोला, "आपने इस टंडन को इतनी आसानी के साथ जाने क्यों दिया ?"

जब से टंडन गया था तब से सावंत सबसे ज्यादा बेचैन था।

परेशान।

"क्योंकि इसके अलावा मेरे सामने दूसरा कोई हल नहीं था।" यशवंत गवली ने सिगरेट का कश लगाते हुए कहा।

"क्यों ?"

"क्योंकि किसी भी आदमी को बंधक बनाए रखने के लिए सबूत चाहिए होते हैं, मजबूत दलीलें चाहिए होती हैं जबकि टंडन के खिलाफ हमारे पास ऐसा क्या है जो हम उसे महेश खोखा मर्डर केस में फंसा सकें ?"

"क्या जुपिटर क्लब की यह तस्वीरें उसके खिलाफ पुख्ता सबूत नहीं है ऑफिसर !" सावंत बोला, "क्या सिनेमा हॉल से ठीक मर्डर के वक्त उसका एक घंटे तक गायब रहना और उस एक घंटे की उसके पास कोई ऐलीबाई न होना क्या यह भी कोई पुख्ता सबूत नहीं ?"

"मैं मानता हूँ, यह सब बलदेवराज टंडन के खिलाफ सबूत हैं। यह सारी बातें टंडन के ऑपोजिट जाती हैं और उसके ऊपर शक की उंगली उठाती है, मगर मैं एक बात और कहूँगा।"

"क्या ?"

"यह पुख्ता सबूत नहीं है ।" यशवंत गवली बोला, "यह ऐसे सबूत नहीं हैं जिनकी बिना पर हम बलदेवराज टंडन जैसे आदमी को बंधक बनाकर रख सके और उसके खिलाफ अदालत में जुर्म साबित कर सकें । जरा सोचो, जुपिटर क्लब की यह जो तस्वीरें हैं उनसे हम अदालत में क्या साबित कर पाएंगे ? सिर्फ यही तो साबित कर पाएंगे कि बलदेवराज टंडन एक निहायत अय्याश आदमी है, जुआरी है, शराबी है, वुमेनाइजर है । वह अपने अखबार में सोशलिस्म की बड़ी-बड़ी बातें करता है, वेश्यावृत्ति के खिलाफ आंदोलन छेड़ता है, बाल मजदूरों के पक्ष में खड़ा होता है । मगर हकीकत में वह क्या है ? हकीकत में उससे ज्यादा नंगा आदमी कोई नहीं, उससे ज्यादा बदमाश आदमी कोई नहीं । वह दोहरी जिंदगी बसर कर रहा है जो ऊपर से कुछ और है तथा अंदर से कुछ और है । इन तस्वीरों को लेकर हम कितना ही बवाल क्यों न मचाए लेकिन इससे अधिक हम टंडन के विरुद्ध कुछ साबित नहीं कर सकते । खासतौर पर इन तस्वीरों की मार्फत यह तो हम किसी भी हालत में साबित नहीं कर सकते कि महेश खोखा मर्डर केस में बलदेवराज टंडन का कैसा भी कोई हाथ है, या बताओ हम साबित कर सकते हैं ?"

पप्पू पॉलिस्टर कुछ न बोला ।

उसने सिर्फ बेचैनीपूर्वक पहलू बदला ।

वह भाँप गया, यशवंत गवली गलत नहीं कह रहा था ।

उन तस्वीरों का महेश खोखा मर्डर केस से कैसा भी कुछ लेना-देना नहीं था ।

यह तस्वीरें तो सिर्फ बलदेवराज टंडन के कैरेक्टर को ही आईना बनाकर पेश करती थीं ।

"और मराठा मंदिर से बलदेवराज टंडन एक घंटे तक जो गायब रहा ।" शुभांगी बोली, "उस संबंध में आप क्या कहेंगे ऑफिसर ?"

"अच्छा सवाल है ।" यशवंत गवली ने सिगरेट का एक छोटा-सा कश और लगाया, "इसमें कोई शक नहीं, टंडन का वहाँ से एक घंटे तक गायब रहना कई सवाल खड़े कर रहा है । फिर टंडन के पास भी इस बात की अपने आपमें कोई एलीबाई नहीं है कि उसने अपनी कार खराब होने की जो कहानी सुनाई, वह सही है या गलत ? अगर वह अपनी कार ठीक कराने किसी मैकेनिक के पास गया होता तब भी बात किसी हद तक ठीक थी क्योंकि उस हालत में वह मैकेनिक ही उसकी गवाही देता कि आधा-पौन घंटे तक वह उसके साथ था मगर ऐसी कोई गवाही भी टंडन के पास नहीं है ।"

"तो क्या यही एक बात इस बात को साबित नहीं कर देती ऑफिसर !" शुभांगी थोड़ा-सा उत्साहित होकर बोली, "कि जिस एक घंटे की बलदेवराज टंडन के पास कोई एलिबाई नहीं है, उसी एक घंटे के दौरान उसने महेश खोखा का मर्डर किया और सच तो यह है, मर्डर हुआ भी उसी टाइम पीरियड में था ।"

"बात अपनी जगह बिल्कुल ठीक है ।" यशवंत गवली बोला, "एक घंटे तक टंडन का यूँ गायब रहना और खासतौर पर उसी टाइम पीरियड में गायब रहना जिस टाइम पीरियड में कत्ल हुआ, अपने आप में कई सवाल खड़े कर रहा है । यह साफ-साफ इस बात की तरफ भी इशारा करता है कि जरूर महेश खोखा के कत्ल में टंडन का ही हाथ है । मगर ध्यान रहे ।" यशवंत गवली शब्दों के साथ खेलता हुआ बोला, "यह इशारा करता है, सिर्फ इशारा । टंडन के पास उस एक घण्टे की कोई ऐलीबाई नहीं है, सिर्फ इस बात से डंके की चोट पर यह हरगिज साबित नहीं हो जाता कि महेश खोखा का खून बलदेवराज टंडन ने ही किया है और जब यह बात टंडन का वकील कोर्ट में चीख-चीखकर कहेगा तो हमारे पास जवाब देने के लिए कुछ नहीं होगा । हम मूर्खों की तरह खामोश खड़े रहेंगे । जबकि बलदेवराज टंडन बेनिफिट आफ डाउट की बिना पर फौरन बाइज्जत बरी हो जाएगा ।"

वह तीनों अब अपनी-अपनी जगह स्तब्ध बैठे रहे ।

कोई कुछ न बोला ।

"या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ ?" यशवंत गवली बोला ।

"नहीं ऑफिसर !" शुभांगी ने स्वीकार किया, "आपकी बात में दम है । सचमुच सिर्फ इन सबूतों की बिना पर हम बलदेवराज टंडन को महेश खोखा मर्डर केस का दोषी नहीं ठहरा सकते ।"

"तो क्या आप लोग यह कहना चाहते हैं ।" सावंत बोला, "कि महेश खोखा का खून टंडन ने नहीं किया है ?"

"नहीं, हम ऐसा कुछ नहीं कहना चाहते ।" यशवंत गवली ने सिगरेट की राख इत्मीनान के साथ एश-ट्रे में झाड़ी, "बल्कि इन सबूतों ने तो मेरा उसके ऊपर शक बढ़ाया ही है । मेरा यह विश्वास कहीं ज्यादा बढ़ा है कि जरूर महेश खोखा के मर्डर में बलदेवराज टंडन का ही हाथ है परंतु उसे अरेस्ट करने के लिए अभी हमें और ज्यादा पावरफुल सबूत चाहिए ।"

"मगर वह सबूत हमें किस प्रकार हासिल होंगे ऑफिसर ?"

"अब हमने बस यही सोचना बाकी है ।"

चारों की नजरें फिर एक-दूसरे पर गड़ गई ।

वह केस सचमुच नए-नए मोड़ ले रहा था ।

नए-नए पेंच उसमें पैदा हो रहे थे ।

क्या होगा ?

क्या होने वाला है ?

कोई कुछ नहीं जानता था ।

●●●

आधी रात का समय था, कोई दो बज रहे थे ।

सड़क भी पूरी तरह सन्नाटे में डूबी हुई थी । बस कभी-कभार पुलिस की कोई पेट्रोलिंग कार जोर-जोर से सायरन बजाती हुई सड़क से गुजर जाती या फिर कभी-कभार जोर से सीटी बजने का स्वर सुनाई पड़ता ।

जब सड़क पर ऐसा निस्तब्ध माहौल था तब उस निस्तब्ध माहौल को भंग करती हुई एक कार मुम्बई टाइम्स अखबार के दफ्तर के सामने पहुँचकर रुकी ।

वह दफ्तर भी अंधकार में डूबा हुआ था ।

फिलहाल उस दफ्तर में सारी गतिविधियाँ एकदम ठप थी । दरअसल वह मुम्बई टाइम्स अखबार का सिर्फ संपादकीय विभाग था । प्रेस उस दफ्तर से कोई आधा किलो मीटर के फासले पर लगी हुई थी । यही वजह थी, जो वह दफ्तर रात के बारह बजे तक खुलता था और इस बीच सभी पेजों के लेआउट बनकर छपने के लिए प्रेस में चले जाते ।

उसके बाद वहाँ कोई काम न बचता ।

ठीक 12:00 बजे संपादकीय विभाग के उच्च स्तर पर ताला पड़ जाता था जो फिर सुबह 10:00 बजे खुलता ।

ग्रे कलर की स्कोर्पियो थी जो अभी-अभी मुम्बई टाइम्स अखबार के दफ्तर के सामने जाकर रुकी थी और उसकी बिल्कुल बाउंड्री वॉल से सटकर खड़ी हो गई । फिलहाल उस स्कोर्पियो में 4 साये मौजूद थे, यशवंत गवली, रागिनी, शुभांगी और सावंत ।

"आपको लगता है ऑफिसर !" सावंत फुसफुसाया, "कि हमें यहाँ से बलदेवराज टंडन के खिलाफ कुछ सबूत हासिल होंगे ।"

"होने तो चाहिये ।" यशवंत गवली के शब्द बहुत नपे तुले थे ।

उसके बाद कार में फिर पहले की तरह सन्नाटा छा गया ।

“अंदर घुसने से पहले देख ले ।” शुभांगी फुसफुसाई, “कि यहाँ कोई सिक्योरिटी गार्ड वगैरह तो नहीं है ।”

सबकी निगाहें दफ्तर के मेन गेट की तरफ उठी ।

परंतु ।

वहाँ उन्हें कोई नजर न आया ।

उस जगह भी घोर सन्नाटा था ।

"आश्चर्य है !" रागिनी बोली, “यहाँ कोई सिक्योरिटी गार्ड भी नहीं है ।"

“इसमें आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं ।” यशवंत गवली बोला, “यह कोई ज्वेलरी शॉप नहीं है और न ही सुपरमार्केट जैसी कोई जगह, जहाँ से कुछ लूट जाने का खतरा हो ।”

रागिनी खामोश हो गई ।

उसी पल जोर-जोर से सायरन बजाती पुलिस की एक और पेट्रोलिंग कार उनके बराबर में से गुजरी परंतु किसी का ध्यान स्कोर्पियो की तरफ न गया । वहाँ इस प्रकार सड़क के किनारे गाड़ियाँ खड़ी होना आम बात थी । अलबत्ता उन्होंने कार की सभी लाइटें पहले से ही बंद कर दी थीं, जिससे किसी को यह अंदाजा न हो सके कि उसके अंदर कोई है भी ।

कार अंधेरे में डूबी खड़ी हुई थी ।

“तुम लोग कार के अंदर बैठो ।” यशवंत गवली बोला, “सबसे पहले मैं मेन गेट के पास जाकर ताला खोलता हूँ और जब मैं सिग्नल दूँ तभी तुम यहाँ आना । ओके ?”

“ओके ऑफिसर !”

यशवंत गवली ने अब ड्राइविंग डोर खोला तथा फिर वह बाहर निकलकर मुम्बई टाइम्स के मेन गेट की तरफ बढ़ा ।

उसने इधर-उधर देखा ।

किसी की नजर उसके ऊपर नहीं थी ।

हर तरफ पहले की भांति सन्नाटा छाया था ।

खामोशी ।

यशवंत गवली मेन गेट के नजदीक पहुँचा । वहाँ सचमुच काफी मोटा ताला पड़ा था ।

“सबकुछ काफी तेजी से करना होगा ।” यशवंत गवली होंठों ही होंठों में बुदबुदाया ।

अगले ही पल उसके हाथ में मास्टर की दिखाई पड़ने लगी ।

मास्टर की जो मजबूत से मजबूत ताले को खोलने में सक्षम थी ।

यशवंत गवली ने एक नजर ताले के की होल पर डाली तथा फिर उसी के अनुरूप मास्टर की के स्प्रिंग सिस्टम को ऊपर नीचे किया । पलक झपकते ही उसी के साइज की चाबी बनकर तैयार थी ।

यशवंत गवली ने चाबी की हॉल में डालकर घुमाई ।

परंतु ।

वह चाबी टस से मस न हुई ।

अलबत्ता उस मास्टर की के ऊपर एक छोटा-सा मीटर लगा हुआ था । उसकी लाल सुई थरथराती हुई जरुर आधा इंच ऊपर सरकी । चाबी में अभी किस जगह डिफेक्ट है, वह सुई इस बात को दर्शाती थी ।

यशवंत गवली ने चाबी की होल से बाहर निकाल ली तथा फिर उसके स्प्रिंग सिस्टम को कुछ और इधर-उधर सरकाया ।

मीटर का एक बटन पुश करके देखा ।

“गुड ।” यशवंत गवली के चेहरे पर संतोष झलका, “अब ठीक है ।”

उसने वह मास्टर की फिर की होल में डाली और उसे घुमाया।

पलक झपकते ही ताला खुल गया।

और।

ताला खुलते ही यशवंत गवली की आँखें भी चमक उठी थीं।

तुरंत उसके होंठ गोल दायरे में सिकुड़ गए और उनसे सीटी जैसी आवाज निकली।

वह सिग्नल था जो रागिनी, शुभांगी और सावंत के लिए था।

यशवंत गवली अब मेन गेट खोलकर अंदर दाखिल हो गया। उसके पीछे-पीछे बाकी सब भी दाखिल हुए।

वह छोटा-सा कंपाउंड था जहाँ कागज के बड़े-बड़े रद्दी बंडल तथा कुछ ऑफसेट मशीनों के बेकार पार्ट्स पड़े हुए थे। कंपाउंड के आखिरी सिरे पर ही कुछ सीढ़ियाँ थीं जो ऊपर की तरफ चली गई थीं।

वह चारों सीढ़ियाँ चढ़कर फर्स्ट फ्लोर पर पहुँचे। संपादकीय विभाग वहीं पर था।

मगर उन्होंने देखा ऑफिस के हॉल में घुसने का जो दरवाजा था वह भी लॉक्ड था।

"ये तो यहाँ पर भी ताला पड़ा हुआ है।" शुभांगी बोली।

"कोई बात नहीं। यह भी अभी खुल जाता है।"

यशवंत गवली ने पुनः अपनी जेब से मास्टर की निकाली। स्प्रिंग सिस्टम ऊपर-नीचे करके उसे सेट किया फिर चाबी की-होल में डाली।

वह ताला एक ही बार में खुल गया।

"आइये।"

सब एक-एक करके दफ्तर में दाखिल हुए।

सामने ही हॉल कमरा था, जहाँ दर्जनों की संख्या में डेस्क पड़ी हुई थीं। उन पर कागज फैले हुए थे। डस्ट बिन भी कागजों से भरे हुए थे। कई कंप्यूटर भी वहाँ पड़े हुए थे। पिछली साइड में ही दो टेलीप्रिंटर भी थे।

यह वही जगह थी जहाँ दिनभर खबरों की गहमागहमी रहती थी।

लोग इधर से उधर दौड़ते नजर आते थे।

मगर फिलहाल वहाँ शांति थी। मुम्बई शहर के साथ-साथ खबरों की वह दुनिया भी मानो सोई हुई थी।

"जहाँ तक मेरा ख्याल है।" रागिनी बोली, “हमें अपने काम का कोई भी सबूत बलदेवराज टंडन के केबिन से ही मिल सकता है।"

"करेक्ट!"

हॉल कमरे को पार करते हुए वह सीधे टंडन के केबिन में दाखिल हुए। अगले ही पल वह चारों मिलकर वहाँ एक-एक सामान की बड़े खुर्दबीन अंदाज में तलाशी लेने लगे।

"जो सामान जिस जगह से उठाओ।" यशवंत गवली एक रैक की किताबों में झाँकता हुआ बोला, "उसे वापस उसी जगह रखना। कोई सामान इधर-उधर न होने पाए।"

"आप बेफिक्र रहें ऑफिसर!" शुभांगी भी उस तलाशी में भरपूर सहयोग दे रही थी।

केबिन ज्यादा बड़ा नहीं था। वह मुश्किल से आठ बाई दस का था।

वहीं एक छोटी-सी लकड़ी की अलमारी भी थी।

शुभांगी ने उस अलमारी को भी खोला। उसमें भी काफी सारी किताबें भरी थीं।

शुभांगी एक-एक करके उन किताबों को इधर-उधर करके देखने लगी।

"किसी को कुछ नहीं मिला?”" वह सावंत की आवाज थी।

"नहीं ।"

"मुझे तो लगता है, हम लोग खामखाह सबूत इकट्ठा करने में अपना वक्त बर्बाद कर रहे हैं । सबूत इकट्ठे करने का बस एक ही तरीका है और बढ़िया तरीका है । टंडन को पकड़कर उस साले के मुँह पर कसकर तीन-चार चमाट मारो वह खुद-ब-खुद सबकुछ बकने लगेगा ।"

"तुम अपने यह आइडिये अपने पास ही रखो ।" यशवंत गवली गुर्राया, "और खामोशी के साथ तलाशी लेते रहो ।"

सावंत चुप हो गया ।

उसी पल शुभांगी जिस अलमारी की तलाशी ले रही थी उसने उस अलमारी की सबसे नीचे वाली ड्रॉवर खोली ।

और ।

उस ड्रॉवर को खोलते ही वह चौंक उठी । उसमें एक रिवॉल्वर रखी हुई थी ।

"ऑफिसर !" शुभांगी के मुँह से तेज सिसकारी छूटी, "यहाँ आइए ।"

न सिर्फ यशवंत गवली, बल्कि रागिनी और सावंत भी लपककर वहाँ पहुँचे तथा रिवॉल्वर पर नजर पड़ते ही वह भी चौंके ।

"यह किसकी रिवॉल्वर है ?" तुरंत सावंत की जबान से निकला ।

"अगर टंडन की ड्रॉवर में रखी हुई है ।" रागिनी बोली, "तो टंडन की ही होगी ।"

"यह बात भी ठीक है ।"

जबकि यशवंत गवली अपलक उस रिवॉल्वर को देख रहा था ।

"तुमने इसे छुआ तो नहीं शुभांगी ?"

"नो ऑफिसर !"

"वेरी गुड ।"

यशवंत गवली ने फौरन अपनी जेब से रुमाल निकाला तथा उस रुमाल से पकड़कर रिवॉल्वर को उठाया ।

उसने उसका मेक देखा ।

स्मिथ एंड वैसन ।

"इतना ही नहीं, यह पॉइंट 32 कैलिबर की स्मिथ एंड वैसन रिवॉल्वर है ऑफिसर !" शुभांगी उत्साहपूर्वक बोली, "और अगर आपको याद हो तो अभय भी पॉइंट 32 कैलिबर की रिवॉल्वर से ही मर्डर किया करता था ।"

"तुम कहना क्या चाहती हो ?"

"मैं सिर्फ यह कहना चाहती हूँ कि जरूर इसी रिवॉल्वर से महेश खोखा का मर्डर किया गया है और अब एक बहुत महत्वपूर्ण सबूत हमारे हाथ लग चुका है ।"

यशवंत गवली की आँखें भी उत्साह के साथ चमक उठी ।

"शायद तुम ठीक कह रही हो शुभांगी ! सचमुच अगर महेश खोखा का मर्डर इसी रिवॉल्वर से किया गया है तो हमारे हाथ बहुत महत्वपूर्ण सबूत लग गया है ।"

फिर उन चारों ने मिलकर उस केबिन की और भी ज्यादा खुर्दबीन अंदाज में तलाशी ली ।

मगर उसके बाद उन्हें कोई और महत्वपूर्ण वस्तु न मिली ।

वह जिस तरह खामोशी से मुम्बई टाइम्स के दफ्तर में दाखिल हुए थे उसी तरह खामोशी के साथ वहाँ से निकल गए ।

●●●

बलदेवराज टंडन उस दिन सुबह से ही टेंशन में था। रात उसे नींद भी ढंग से नहीं आई थी।

दरअसल वह रोजाना सुबह ही सुबह मॉर्निंग वॉक के लिए जाया करता था मगर उस दिन वहाँ भी नहीं गया था। कल यशवंत गवली ने जिस तरह उसे अरेस्ट किया था और फिर जुपिटर क्लब की न्यूड तस्वीरें उसके सामने रखी थीं, उससे टंडन अंदर तक बुरी तरह हिल गया था और वह खुद को बहुत बुरी तरह फंसा महसूस कर रहा था। सच तो यह है, अगर जुपिटर क्लब की तस्वीरें यशवंत गवली के पास न होती तो टंडन ने अपनी गिरफ्तारी का प्रेस की मार्फत इतना बड़ा बखेड़ा खड़ा करना था जो पूरा क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर हिल जाता।

जिससे उन्हें पता चलता कि उन्होंने कितनी गलत जगह हाथ डाल दिया था।

परंतु अब स्थिति उल्टी थी। अब बलदेवराज टंडन खुद अपनी गिरफ्तारी को छुपाता फिर रहा था। उसे डर था कि अगर कहीं यह बात प्रेस को पता चल गई और ऊपर से उसका तस्वीरों वाला राज भी खुल गया तो उसकी पूरी साफ-सुथरी छवि का बेड़ा गर्क हो जाना था।

बलदेवराज टंडन उन्हीं टेंशनों में घिरा अपने दफ्तर पहुँचा।

केबिन में पहुँचते ही उसने बेल बजाई तुरंत प्यून अंदर दाखिल हुआ।

"यस सर !"

"देखो, आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है।" टंडन बुझे-बुझे से स्वर में बोला, "बाहर स्टाफ से कह दो, वह आज सभी पेज वगैरा के मैटर खुद ही फाइनल कर लें और मुझे डिस्टर्ब न करें। मैं थोड़ा रिलैक्स होना चाहता हूँ।"

"ओके सर !"

प्यून बाहर निकल गया।

जबकि टंडन अब अपनी रिवाल्विंग चेयर पर थोड़ा पसरकर अधलेटी मुद्रा में बैठ गया था और उसने आँखें बंद कर ली।

वह अब सचमुच आराम करने के मूड में था।

मगर।

वहाँ आराम करना भी मानो उसके नसीब में नहीं था।

न जाने क्यों जब से बलदेवराज टंडन ने अपने केबिन में कदम रखा था उसे वहाँ कुछ अजीब अजीब-सा लग रहा था। उसे महसूस हो रहा था जैसे उसका केबिन आज कुछ बदला-बदला है।

टंडन ने आँखें खोल दीं।

उसने केबिन में इधर-उधर नजर दौड़ाई मगर एकाएक उसे वहाँ कहीं कुछ अजीब न लगा।

"सबकुछ तो अपनी जगह है।"" टंडन बड़बड़ाया, "कुछ भी तो बदला हुआ नहीं है।"

और टंडन अभी यह सोच ही रहा था कि एकाएक वह चौंक उठा।

नजदीक ही बनी छोटी-सी बुक सेल्फ के ऊपर कारनेशन के फूलों से सजा जो फ्लावर पॉट रखा रहता था, वह फ्लावर पॉट आज अपनी जगह नहीं था।

टंडन हमेशा उसे दाएँ रखता था मगर आज वह बाएँ था।

"य... यानी।" टंडन फिर बड़बड़ा उठा, "किसी ने उसे छेड़ा था। कोई आया था उसके पीछे केबिन में।"

"कौन ?"

"क्या प्यून ?"

"नहीं-नहीं।" टंडन ने खुद ही जवाब दिया, "प्यून फ्लावर पॉट की जगह नहीं बदल सकता।"

"फिर कौन आया ? कोई और तो नहीं आ सकता।"

टंडन की आँखों ने केबिन का और वस्तुओं का भी बड़ी सूक्ष्मता के साथ अवलोकन किया। तुरंत उसे और भी ऐसी कई चीजें दिखाई पड़ी जो अपनी जगह नहीं थीं, या अपनी जगह से सरकी हुई थीं।

जैसे बुक्शेल्फ की किताबें इधर-उधर थीं।

केबिन में पड़ी एक टेबल भी उसे अपनी जगह से सरकी हुई लगी और कुर्सियाँ भी अपनी जगह नहीं थीं।

टंडन ने जल्दी से अपनी मेज की ड्राइवर खोलकर देखी। उसका सारा सामान भी इधर-उधर था।

"माय गॉड !"

"यानी हंड्रेड परसेंट कोई मेरे केबिन में बाहर का आदमी घुसा था।"

"कौन ?"

बलदेवराज टंडन अब फौरन अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया तथा उसने आनन-फानन केबिन की दूसरी जगहों को भी बड़े खुर्दबीन अंदाज में देखना शुरू किया।

उसने अलमारी की नीचे वाली ड्रॉवर खोली। वह और चौंका।

"यानी अब इस बात में शक की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं।" टंडन का जबड़ा कस गया, "कि यहाँ कोई आया था।"

"क्या यशवंत गवली ?"

उस नाम में ऐसा कुछ था जो टंडन को अपनी रीढ़ की हड्डी तक में सिहरन दौड़ती महसूस हुई।

वह अभी बदहवास-सा खड़ा ही हुआ था कि उसी क्षण जोर-जोर से बजती टेलीफोन की घंटी ने उसके मानस पटल पर और भी ज्यादा भीषण कुठराघात किया।

"हेलो।" उसने चील की तरह झपटकर टेलीफोन का रिसीवर उठाया, "हेलो।"

उसे लगा वह यशवंत गवली का फोन है।

जबकि दूसरी तरफ से खिलखिलाते नारी स्वर ने उसकी समस्त इंद्रियों को शिथिल कर दिया।

"त... तुम !" वह शुष्क स्वर में बोला।

"यस माय स्वीटहार्ट !" यह बेहद खनकता हुआ मादक स्वर था, "मैं सोफिया बोल रही हूँ।"

"बोलो सोफिया, क्या कहना चाहती हो ?"

"रात तुम जुपिटर क्लब नहीं आए माय डियर, इसलिए यहाँ सबकुछ काफी सूना-सूना लग रहा था। मैंने सोचा तुमसे बात करके ही अपना दिल बहला लूँ।"

"देखो सोफिया, मेरा मूड आज कुछ ठीक नहीं है ! मुझसे फिर कभी बात करना।"

"ओह डियर ! इतनी भी क्या नाराजगी ! प्लीज, थोड़ी देर तो बात करो न।"

"मैंने कहा न, मुझसे फिर कभी बात करना।" टंडन ने जोर से रिसीवर पटक देना चाहा।

"सुनो-सुनो।" सोफिया चिल्लाई।

टंडन के हाथ ठिठके।

"क्या बात है ?"

"आज शाम को तुम क्लब तो आओगे न ?"

"नहीं, आज मैं क्लब नहीं आऊँगा और संभव है मैं अब कभी भी क्लब न आऊँ।"

सोफिया चौंक उठी।

उसे पहली बार लगा मामला काफी सीरियस है।

"आखिर बात क्या है स्वीटहार्ट ? कुछ तो बताओ ?"

"कभी मिलूँगा तो बताऊँगा।"

"लेकिन...।"

"तुम एक काम करो। आज शाम को 7:00 बजे पुराने वाले ठिकाने पर मिलो।"

सोफिया कोई और सवाल पूछती बलदेवराज टंडन ने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया ।

दूसरी तरफ से सोफिया हेलो-हेलो करके चिल्लाती रह गई ।

टंडन धम से वापस अपनी रिवाल्विंग चेयर पर बैठ गया ।

यह बात अभी भी उसे किसी बड़े खतरे का अहसास करा रही थी यहाँ उसके पीछे यशवंत गवली आया था ।

क्यों आया था वह ?

क्यों ?

क्या उसे अभी भी इस बात का शक था कि महेश खोखा का मर्डर मैंने किया है ?

टंडन के माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा आई । उसने रुमाल निकालकर अपना पसीना साफ किया ।

●●●

वह दिन बलदेवराज टंडन का सचमुच बड़ा भारी गुजरा ।

न तो उसने दफ्तर का ही कोई काम किया और न वह इत्मीनान से सो ही सका ।

किसी तरह कछुए जैसी रफ्तार से सात बजे और सात बजते ही बलदेवराज टंडन अपने ऑफिस से निकलकर उस ठिकाने की तरफ रवाना हुआ जहाँ उसने सोफिया को मिलने के लिए बोला था ।

सबसे बड़ी बात यह है कि उस समय शोफर को भी अपने साथ नहीं ले गया था । वह अकेला ही अपनी टाटा क्वालिस में सवार हुआ और एक अनजानी दिशा की तरफ बढ़ा । अलबत्ता वह आज इस बात का खास ख्याल रखे हुए था कि उसका कोई पीछा तो नहीं कर रहा है ।

जल्द ही वह भाँप गया, कोई उसके पीछे नहीं था ।

उसकी टाटा क्वालिस आदर्श नगर की तरफ दौड़ी जा रही थी । दरअसल आदर्श नगर में बलदेवराज टंडन ने एक बड़ा आलीशान टू रुम सेट लिया हुआ था, जिसकी किसी को कानोंकान भनक नहीं थी । उसके फैमिली मेंबर्स को भी नहीं थी । वह पूरी तरह टंडन का लव स्पॉट था, जहाँ वह सेक्स की गुटर-गू करता था और उसके उस लव स्पॉट का सिर्फ उसकी सहेलियों को ही पता होता था । फिलहाल सोफिया टंडन के जाल में फंसी नई-नई चिड़िया थी जिसका रंग टंडन के ऊपर पूरी तरह चढ़ा हुआ था ।

टंडन जब अपने उस फ्लैट में पहुँचा तो सोफिया वहाँ पहले से मौजूद थी ।

"आओ माय स्वीटहार्ट !" सोफिया ने बहुत चहकते हुए उसके लिये दरवाजा खोला ।

उस फ्लैट की एक चाबी पिछले पंद्रह दिन से सोफिया के पास भी थी ।

सोफिया उस समय एकदम खिली-खिली नजर आ रही थी ।

बिल्कुल ताजे गुलाब की तरह ।

ऊपर से जिस तरह की उसने ड्रेस पहनी हुई थी उसमें वह खूबसूरत भी कुछ ज्यादा ही दिखाई पड़ रही थी । उसने लाल चेक का टॉप पहना हुआ था जिसमें से उसका आधा पेट बाहर झांक रहा था । खासतौर पर उसकी चिकनी तथा साफ-सुथरी नाभि बहुत ही आकर्षक थी । इसके अलावा उसने नीचे बिल्कुल खून जैसे लाल रंग का कपड़ा लुंगी की तरह लपेटा हुआ था जिसमें से उसकी एक दूध जैसी गोरी-चिट्टी टांग बाहर निकली हुई थी और वह सेक्स का खुला आमंत्रण दे रही थी ।

“वेलकम, वेलकम इन योर ड्रीम हाउस मिस्टर टंडन !” सोफिया की आवाज पूरी गर्मजोशी से भरी थी ।

टंडन ने बुझे-बुझे मन से अपने उस फ्लैट में कदम रखा ।

उस समय वह पूरा फ्लैट शीशे की तरह चमचमा रहा था । लगता था, सोफिया वहाँ काफी देर पहले आ गई थी और वहाँ आने के बाद उसने एक-एक चीज की अच्छी तरह सफाई कर डाली थी ।

रुम फ्रेशनर की सुगंध से ड्राइंग हॉल तक महका हुआ था ।

"यह देखिए टंडन साहब !" सोफिया ने टेबल की तरफ इशारा किया, "मैंने आपकी पसंदीदा ड्रिंक का पहले से ही पूरा इंतजाम करके रखा है ।"

टंडन ने देखा टेबल पर कटिंग वाले दो बेहद खूबसूरत कांच के चमचमाते गिलास रखे थे । सोडा साइफन की बोतल थी, आइस क्यूब की ट्रे थी और एक मार्टिनी की बोतल थी ।

"आइए बैठिए ।" उसने एक कुर्सी की तरफ इशारा किया ।

"नहीं ।" टंडन बोला, "मेरी पीने की इच्छा नहीं है ।"

सोफिया एक बार फिर चौंकी ।

उसे आज नए-नए झटके लग रहे थे ।

"आखिर बात क्या है टंडन साहब ? आज आप काफी उखड़े-उखड़े हैं । वरना पहले तो कभी आपने ड्रिंक के लिए मना नहीं किया ।"

बलदेवराज टंडन वहीं पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया ।

उसने गहरी साँस ली ।

"बात ही कुछ ऐसी है ।"

"क्या ?"

टंडन ने उसे अपनी गिरफ्तारी से लेकर जूपिटर क्लब की नंगी तस्वीरों तक का पूरा किस्सा बताया ।

"ओह माय गॉड !" सोफिया के नेत्र फटे-के-फटे रह गए, "इतना बड़ा हंगामा हो गया और किसी को कुछ पता तक नहीं ।"

"मैंने ही सबकुछ छुपाकर रखा है ।" टंडन ने गहरी साँस ली, "क्योंकि अगर मेरे जुपिटर क्लब जाकर रंगरेलियाँ मनाने की खबर लीक आउट हो गई तो मैं सोसाइटी में किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं बचूँगा ।"

सोफिया के चेहरे पर भी अब घबराहट तैरी ।

वह भी वहीं पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गई ।

"मुझे तो अब एक बात का डर लग रहा है ।" सोफिया बोली ।

"किस बात का ?"

"अगर कहीं यशवंत गवली ने मेरी और आपकी वह तस्वीरें प्रेस के बीच रिलीज कर दी तो क्या होगा ?"

"चिंता मत करो, तुमसे ज्यादा मुझे अपनी इज्जत की परवाह है ।"

टंडन की वह बात सुनकर सोफिया हँस पड़ी ।

उसकी हँसी खनकती हुई थी ।

"ओह माय स्वीटहार्ट ! तुम्हारे साथ रहते हुए मैं भी खुद को शरीफजादी समझने लगी हूँ । यह तो मैं भूल ही गई कि मैं एक रंडी हूँ । मेरी तो साली कोई इज्जत ही नहीं, फिर उतरेगी क्या ? चलो, अब थोड़ी देर के लिए यह सारी बात भूलकर रिलैक्स हो जाओ ।"

"मुझे नहीं लगता, मैं अब कभी रिलैक्स हो पाऊँगा ।"

"माय डियर ! एक रंडी ही किसी मर्द को सही मायनों में रिलैक्स करती है और रिलैक्स होने का सबसे खूबसूरत तरीका है बिस्तर पर पहुँचकर कलाबाजियाँ खाओ । जब एक नंगी औरत जिस्म के नीचे होती है तो सारे दुख दर्द अपने आप हवा हो जाते हैं ।"

यह बात कहकर सोफिया फिर हँसी ।

उसके बाद उसने कुर्सी पर बैठे-बैठे आगे को झुककर मार्टिनी के दो पैग तैयार किये ।

"लो ।" उसने एक पेग टंडन की तरफ बढ़ाया, "दर्द की दवा समझकर पी लो । जब शराब और शबाब करीब हों, तो दुख को गले नहीं लगाना चाहिए ।"

वह फिर हँसी ।

हँसती हुई वह सचमुच बहुत अच्छी लगती थी ।

टंडन ने अब पैग पकड़ लिया और एक ही घूँट में उसे खाली किया ।

“और बनाऊँ ?”

“बनाओ ।”

टंडन भी अब सबकुछ भूलकर थोड़ा रंग में आ चुका था ।

सोफिया ने एक पैग और बनाया । टंडन उसे भी जल्द ही खाली कर गया ।

उसके बाद उन दोनों के बीच मार्टिनी के पैगों का सिलसिला चला तो चल पड़ा ।

वह तब तक पैग बना-बनाकर पीते रहे जब तक पूरी बोतल खाली न हो गई ।

“और बनाओ ।” टंडन बोला ।

सोफिया पुनः हँसी ।

“माय स्वीटहार्ट, यह बोतल तो खाली हो चुकी हैं !” वह नशे में झूमते हुए मादक स्वर में बोली, “हाँ अब यह बड़ी बोतल बची है इसे पीओगे ?”

“क्यों नहीं !”

टंडन भी मुस्कुराया ।

सुबह से शायद पहली बार उसके होंठों पर मुस्कुराहट आई थी ।

“मगर इस बड़ी बोतल को हाथ लगाने से पहले एक शर्त है ।” सोफिया को शरारत सूझी ।

“क्या ?”

“आज इस बड़ी बोतल को पूरी तरह पीना होगा । कतरा-कतरा पीना होगा ।”

“बेफिक्र रहो ।”

टंडन ने सोफिया के ऊपर जंप लगा दी ।

वह पूरी तरह नशे की तरंग में था ।

इधर उसने सोफिया के ऊपर जंप लगाई उधर सोफिया अपनी जगह से उठकर भागी ।

खिलखिलाती हुई ।

वह सचमुच बहुत शरारती थी ।

चंचल ।

टंडन उसके पीछे-पीछे झपटा ।

सोफिया दौड़ती हुई अंदर वाले बेड रुम में पहुँच गई । वह बैडरुम भी रुम फ्रेशनर से पूरी तरह महक रहा था ।

बेडरुम में पहुँचते ही टंडन ने फिर उसके ऊपर जंप लगाई मगर सोफिया फिर उसके हाथ आते-आते बची ।

बैडरुम के बीचो-बीच बेड पड़ा हुआ था । सोफिया अब उस बेड के चारों तरफ भागने लगी ।

टंडन दायीं तरफ से भागता तो वह हँसती हुई बायीं तरफ भाग जाती ।

वह बायीं तरफ से आता तो वह दायीं तरफ भागती ।

“सोफिया !” टंडन चिल्लाया, “यह क्या हरकत है ?”

“बड़ी बोतल को पीने के लिए कुछ तो कसरत करनी ही पड़ती है माय डियर !”

टंडन ने इस बार एकाएक बिस्तर के ऊपर चढ़कर उस पर जंप लगाई लेकिन सोफिया फिर उसके हाथ से आते-आते ही निकल गई ।

“ओफ्फो ! अगर पहले ही इतना थका दोगी तो बाद में करने को क्या बचेगा ?”

“क्यों, एक रंडी इतने मर्दों को झेलती है, क्या तुम एक रंडी की इतनी शरारत नहीं झेल सकते ?”

टंडन अब एक जगह ठिठककर यूँ हाँफने लगा जैसे उसकी साँस बुरी तरह फूल-पिचक रही हो ।

मगर ।

वह नाटक कर रहा था ।

ड्रामा ।

सोफिया भी अब थक गई ।

“क्यों !” वह शरारती लहजे में बोली, “क्या इसी दम पर पूरी बोतल खाली करने की बात कर रहे थे ?”

और सोफिया के मुँह से अभी शब्द भी पूरी तरह नहीं निकले थे कि टंडन ने बेपनाह फुर्ती के साथ उसके ऊपर जंप लगा दी ।

इस उम्र में भी उसके अंदर गजब की फुर्ती थी ।

सोफिया ने एक बार फिर बचकर भाग निकलने की कोशिश की मगर इस बार वह टंडन के शिकंजे में फंस गई ।

पलक झपकते ही वह बिस्तर पर चित होकर गिरी ।

“अब देखता हूँ, मैं इस बोतल को और इसमें भरी शराब को यह कितना नशा करती है ।”

टंडन ने सोफिया के गाल का कसकर चुंबन ले डाला ।

फिर टंडन का हाथ सीधे उसकी खुली जांघ पर पहुँचा और एक ही झटके में उसने लुंगी की तरह बंधा लाल कपड़ा पकड़कर खींच लिया । सेकंड के सौवें हिस्से में सोफिया नीचे से निर्वस्त्र हो गई ।

“क्या कर रहे हो ?”

“बोतल के अंदर भरी शराब को कतरा-कतरा करके पीने की तैयारी कर रहा हूँ ।”

टंडन ने अपने होंठ अब सोफिया के होंठों पर रख दिए ।

उफ्फ !

सोफिया के होंठ भभक रहे थे ।

जैसे दहकता अंगारा ।

जल्द ही टंडन के हाथ सरसराती हुए उसकी टॉप के अंदर भी दाखिल हो गए और उसने उसकी टॉप भी उतार डाली ।

अब सोफिया पूरी तरह निर्वस्त्र थी ।

सेक्स का खेल एक बार शुरू हुआ तो फिर अपने पूरे जोश के साथ आगे बढ़ता ही चला गया ।

टंडन उस क्षण सबकुछ भूल चुका था, सबकुछ । न उसे यशवंत गवली याद था, न महेश खोखा मर्डर केस में फंसना याद था । न जुपिटर क्लब की अपनी नंगी तस्वीरें याद थी, न किसी का अपने केबिन में आना याद था ।

उसे तब सिर्फ एक चीज याद थी ।

खालीस एक चीज ।

सोफिया ।

सोफिया, जो उसके दिल दिमाग पर पूरी तरह हावी थी ।

सेक्स का खेल चलता रहा ।

बलदेवराज टंडन की निगाह में दुनिया के अंदर औरतों की तीन क्वालिटी थीं ।

नंबर एक क्वालिटी, ऐसी औरत जो एक क्षण के लिए भी आपकी नजरों से दूर होती है, तो आपका कलेजा मुँह को आने लगता है ।

नंबर दो क्वालिटी, ऐसी औरत जो आपके साथ रहना चाहती है मगर आप उसके साथ रहना पसंद नहीं करते।

नंबर तीन क्वालिटी, ऐसी औरत जिसके साथ आपको अपना मन मारकर मजबूरी में रहना पड़ता है।

मगर इन कमबख्त औरतों में एक और शिफ्त होती है तथा वह सबसे ऊँची शिफ्त है। एक बार औरत, मर्द के साथ बिस्तर पर पहुँची नहीं फिर चाहे वह किसी भी क्वालिटी की हो, काली-पीली-हरी कैसी भी हो, झटके से मलिकाएँ आलिया बन जाती है और मर्द भूखे कुत्ते की तरह उसके तलवे चाटते नजर आता है।

कुछ इसी तरह सोफिया भी उस समय मलिकाएँ आलिया बनी हुई थी।

कमरे में सेक्स का तूफान आया हुआ था जो फिर अपनी चरम सीमा पर पहुँचकर ही रुका।

●●●

"प्रोफेसर, फिंगर प्रिंट बहुत ध्यान से उठाओ।" यशवंत गवली एक कुर्सी पर बैठा-बैठा बोला, "क्योंकि इस स्मिथ एंड वैसन रिवॉल्वर के ऊपर से बरामद फिंगरप्रिंट केस को सुलझाने में हमारी हेल्प कर सकते हैं।"

"आप बेफिक्र रहे ऑफिसर!"

उस समय वह चारों क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर के फॉरेंसिक डिपार्टमेंट में थे जहाँ उस रिवॉल्वर के ऊपर से फिंगरप्रिंट उठाए जा रहे थे जो रिवॉल्वर उन्हें टंडन के केबिन से बरामद हुई थी।

वह डार्क रूम था।

जहाँ एकदम घुप्प काजली अंधेरा फैला था।

फिंगरप्रिंट उठाने वाला एक अनुभवी प्रोफेसर भी वहाँ था।

प्रोफ़ेसर की उम्र साठ साल के लपेटे में थी। उसकी आँखों पर आई साइट के गॉगल्स चढ़े थे। हाथों पर सफेद दस्ताने थे। इसके अलावा उसके आसपास ऐसे कई उपकरण फैले थे, जो फिंगरप्रिंट उतारने के काम आते थे।

उस समय चार एक्सरे सिंथेलाइजामा (synthelyzama) केमिकल से भरी ट्रे में पड़े हुए थे और धीरे-धीरे क्लियर होते जा रहे थे।

"फोटोग्राफ्स तो मैंने रिवॉल्वर के सभी हिस्सों के उठा लिए हैं।" प्रोफेसर अंधेरे का एक हिस्सा बना हुआ ही बोला, "अब देखना यह है कि फिंगरप्रिंट कहाँ-कहाँ से बरामद होते हैं।"

चारों मूकदर्शक बने बैठे रहे।

वह सस्पेंस के क्षण थे।

किसी को नहीं मालूम था अगले पल रहस्य का कौन-सा नया द्वार खुलने वाला है।

तभी प्रोफेसर ने आगे बढ़कर एक स्विच ऑन किया तो पूरे डार्क रूम में ट्यूबलाइट का दूधिया प्रकाश बिखर गया।

"क्या एक्स-रे क्लियर हो गए हैं?"

"हाँ।"

प्रोफेसर ने एक-एक करके चारों एक्स-रे ट्रे में से निकाले और उन्हें पानी में धोकर साफ किया।

उसके बाद उसने उन एक्स-रों को चार अलग-अलग प्लेटों पर कस दिया तथा उनके पीछे मौजूद लाइट जलाई। फौरन वह सभी एक्स-रे सफेद रोशनी में जगमगा उठे।

यशवंत गवली, रागिनी, शुभांगी सावंत वह चारों अब उन एक्सरों के नजदीक सिमट आए। एक्सरों में रिवॉल्वर के अलग-अलग हिस्सों के चित्र अब साफ़ दृष्टिगोचर हो रहे थे।

मगर एक्सरे पर एक नजर पड़ते ही उनके चेहरों पर घोर निराशा पुत गई।

"नो, नेवर।" प्रोफेसर हताश मुद्रा में बोला, "कातिल आपकी उम्मीद से कहीं ज्यादा चालाक है ऑफिसर ! उसने रिवॉल्वर के ऊपर से फिंगरप्रिंट पहले ही साफ कर दिए हैं और इस समय रिवॉल्वर पर कहीं एक धब्बा तक नहीं है।"

उन्होंने देखा प्रोफेसर ठीक कह रहा है।

रिवॉल्वर के किसी भी हिस्से पर कोई एक फिंगर प्रिंट तक मौजूद नहीं था।

"ऑफिसर !" शुभांगी तेजी से बोली, "क्या इससे यह और भी ज्यादा साबित नहीं हो जाता कि इसी रिवॉल्वर से महेश खोखा का मर्डर किया गया है ?"

"क्यों ?" यशवंत गवली बोला।

"क्योंकि अगर इस रिवॉल्वर से कोई गलत काम नहीं किया गया होता यशवंत, तो टंडन को इस रिवॉल्वर को पोंछकर रखने की क्या जरूरत थी ?" अगर रिवॉल्वर अच्छी तरह पोंछकर रखी गई थी और इसके ऊपर कहीं से भी टंडन की उंगलियों के निशान नहीं मिले तो साफ जाहिर है कि इसी से महेश खोखा का खून किया गया।"

यशवंत गवली के दिमाग में रोशनी का छनाका-सा हुआ।

शुभांगी की बात में दम था।

वह ठीक कह रही थी।

"वैसे भी क्रिमिनोलॉजी के अपराध मनोविज्ञान चैप्टर के दूसरे पैराग्राफ में लिखा है कि जब कोई आदमी जरूरत से ज्यादा सावधानी बरतने लगे तो एक कुशल इन्वेस्टिगेटर को समझ जाना चाहिए कि उसने जरूर कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ की है।"

"और तुम्हारा यह कहना है।" यशवंत गवली ने उसकी बात आगे बढ़ाई, "कि चूंकि बलदेवराज टंडन की अब ऐसी हरकतें सामने आने लगी हैं जिसमें उसने सावधानियाँ बरती तो साफ जाहिर है कि उसने जरूर कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ की है। करेक्ट ?"

"करेक्ट।"

यशवंत गवली सोच में डूब गया।

हालात वाकई पेचीदा थे।

केस की तस्वीर साफ भी थी और नहीं भी थी। अलबत्ता कुछ ऐसे मुद्दे जरूर सामने आने लगे थे जिन्हें देखकर लगता था कि वह केस बहुत जल्द सॉल्व हो जाएगा।

●●●

हरिनारायण आप्टे ने हवाना सिगार का एक छोटा-सा कश लगाया और कुर्सी पर बहुत बेचैनी के साथ पहलू बदला।

हरिनारायण आप्टे उस समय अपने केबिन में थे और यशवंत गवली उनके सामने बैठा था।

"तो तुम्हें इस बात का पूरा-पूरा यकीन है।" हरिनारायण आप्टे संजीदगी के साथ बोले, "कि महेश खोखा का मर्डर बलदेवराज टंडन ने ही किया है ?"

"बिल्कुल। अब इस बात में शक-शुबहे की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि महेश खोखा के कत्ल में टंडन का ही हाथ है।"

"हूँ।"

हरिनारायण आप्टे ने भारी हुंकार भरी।

केबिन का माहौल उस समय बहुत रहस्य से भरा था।

"मगर जहाँ तक मैं समझता हूँ ।" हरिनारायण आप्टे बोले, "टंडन को अरेस्ट करने के लिए तुम्हारे पास अभी भी पर्याप्त सबूत नहीं हैं ।"

"मैं जानता हूँ सर !" यशवंत गवली बोला, "इसीलिए मेरी इच्छा है कि अब उसके बंगले की तलाशी ली जाए । वहाँ से उसके खिलाफ कुछ ऐसे सबूत जरूर मिलेंगे जिनसे उसका महेश खोखा के मर्डर में हाथ साबित होगा ।"

"और इसके लिए तुम्हें तलाशी का सर्च वारंट चाहिए ।"

"बिल्कुल ।"

"लेकिन एक परसेंट मान लो, अगर तुम्हें बंगले की तलाशी के बावजूद भी कोई सबूत न मिला तो... ।"

"तो क्या होगा, फिर हम किसी और नजरिए से सबूत कलेक्ट करने की कोशिश करेंगे ।"

"मगर तुम एक बात भूल रहे हो ऑफिसर !"

"क्या ?"

"अगर बंगले की तलाशी में कुछ न मिला तो बलदेवराज टंडन हमारे डिपार्टमेंट के खिलाफ प्रेस में काफी हल्ला मचायेगा ।"

"यहाँ मैं नहीं, आप भूलने की गलती कर रहे हैं सर !" यशवंत गवली के स्वर में पूरा कॉन्फिडेंस था, "आप भूल रहे हैं । जब तक जुपिटर क्लब कि वह तस्वीरें हमारे पास हैं, बलदेवराज टंडन किसी हालत में हम लोगों के खिलाफ जाने की गलती नहीं करेगा । क्योंकि अगर उसने ऐसी गलती की तो उसकी ही छीछालेदारी ज्यादा होगी और मैं समझता हूँ कम-से-कम टंडन इतना समझदार जरूर है जो कोई भी कदम उठाने से पहले अपना आगा-पीछा सोच सके ।"

"गुड, वेरी गुड ।" हरिनारायण आप्टे की आँखें चमक उठीं, "एक बार फिर तुम्हारी बुद्धि की दाद देने को दिल चाहता है ।"

"थैंक्यू सर !"

"ओके, मैं अभी बलदेवराज टंडन के बंगले की तलाशी का सर्च वारंट तुम्हें दिलवाता हूँ ।"

हरिनारायण आप्टे अपनी कुर्सी छोड़कर खड़े हो गए ।

उनके साथ-साथ यशवंत गवली ने भी कुर्सी छोड़ी ।

●●●

अर्ध रात्रि का समय था । कोई तीन बज रहे थे ।

वह मुंबई के ही एक बहुत पॉश इलाके में बनी मल्टी स्टोरी बिल्डिंग थी । वह बिल्डिंग भी गहन अंधकार में डूबी थी । मगर तभी एकाएक उस बिल्डिंग के टू नॉट थ्री नंबर फ्लैट में किसी के जोर से चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी और सोते-सोते कोई चीखकर झटके के साथ उठ बैठा ।

वह शुभांगी थी ।

जैसे ही शुभांगी सोते-सोते चीखकर उठी फौरन उसकी माँ दौड़ती हुई कमरे में आई ।

"शुभांगी, शुभांगी !"

माँ ने आते ही शुभांगी को अपनी छाती से चिपटा लिया ।

शुभांगी उस समय पसीनों में लथपथ थी और भय से थरथर काँप रही थी ।

"तूने आज फिर कोई सपना देखा बेटी ?"

"हाँ माँ !" शुभांगी मासूम बच्चे की तरह अपनी माँ की छाती से चिपककर बोली, "मैंने आज फिर वही सपना देखा, वही सपना । मालूम है, मैंने देखा वह मेरे अभय को फाँसी के तख्ते तक ले गए । फिर उसके सिर पर काला कपड़ा डाल दिया गया । फिर फंदा डाला गया और फिर... और फिर... ।"

शुभांगी के मुँह से जोर से सुबकी उबली ।

जबकि माँ ने अब उसे और भी ज्यादा कसकर अपनी बाँहों में भींच लिया ।

"तू अब उस हादसे को भूल क्यों नहीं जाती बेटी ?"

"नहीं माँ, नहीं !" शुभांगी जज्बाती हो उठी, "मैं उस हादसे को कभी नहीं भूल सकती । जरा सोचो, जब उन्होंने मेरे अभय को फाँसी के फंदे पर लटकाया होगा तो कितना कष्ट पहुँचा होगा उसे ? कितना तड़पा होगा वह ?"

"श... शुभांगी... !"

"मैं गलत नहीं कह रही माँ ! मैं सच कह रही हूँ ।" शुभांगी दीवानावार अंदाज में बड़बड़ाती चली गई, "उसके साथ ठीक नहीं हुआ माँ, ठीक नहीं हुआ !"

"मैं भी जानती हूँ कि उसके साथ ठीक नहीं हुआ ।" माँ तड़पते हुए बोली, "मगर तू अब इस बात को क्यों नहीं समझती कि वह मर चुका है, खत्म हो चुका है । आखिर तू कब तक उसकी यादों को अपने सीने से चिपकाकर जीती रहेगी, कब तक ?"

"जब तक मेरी यह साँसें चल रही हैं मैं तब तक उसकी यादों को अपने सीने से चिपटाए रहूँगी ।"

"श... शुभांगी !" माँ के शरीर में झुरझुरी दौड़ी ।

"मैं सच कह रही हूँ माँ, सच !" शुभांगी की आवाज में गजब की दीवानगी थी, "प्यार सिर्फ शरीर से तो नहीं किया जाता न माँ ! प्यार तो आत्मा से किया जाता है और हमारे शास्त्रों में भी लिखा है नैनं छिन्दति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः । आत्मा को न कोई शस्त्र काट सकता है, न कोई अग्नि जला सकती है और जब आत्मा अजर-अमर है तो मेरा प्यार भी कैसे मर सकता है ?"

"शुभांगी !"

माँ का पूरा शरीर सूखे पत्ते की तरह काँपकर रह गया ।

आँखों में आँसू आ गए ।

शुभांगी को अपनी छाती से चिपटाये-चिपटाये सिर पर स्नेहा का हाथ फिराने लगी ।

"जानती हो माँ !" शुभांगी मानो खुद से ही बड़बड़ाई, "आज मैंने सपने में अभय का एक रुप और देखा ।"

"कौन-सा रुप ?"

"मैंने उसे आकाश में देखा । वह देवताओं के बीच विचरण कर रहा है और वह वहाँ काफी खुश है । इतना ही नहीं उसने मुझे मेरे जन्मदिन की शुभकामनाएँ भी दी ।"

"जन्मदिन की शुभकामनाएं !"

"हाँ माँ, कल मेरा जन्मदिन है न !" शुभांगी बड़बड़ाई, "देखा माँ, वह फाँसी चढ़ गया, मर गया ! परंतु उसके बावजूद भी मुझे मेरे जन्मदिन पर विश करना नहीं भूला ।"

माँ एक बार फिर तड़प उठी ।

वह जानती थी- शुभांगी, अभय से बहुत प्यार करती थी ।

न सिर्फ शुभांगी बल्कि अभय मल्होत्रा भी उससे उतना ही प्यार करता था ।

दोनों दीवाने थे एक-दूसरे के ।

दिन में जब तक कम-से-कम एक बार वह दोनों एक-दूसरे से मिल न लेते, बात न कर लेते उन्हें चैन न पड़ता था और अब एकाएक उनके बीच इतना बड़ा फासला हो था कि सोचकर भी डर लगता ।

"इतना ही नहीं माँ, अभय इस बात को भी लेकर बहुत खुश था कि क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर ने महेश खोखा मर्डर केस की रि-इन्वेस्टिगेशन शुरू कर दी है !" शुभांगी बोली, "वह कह रहा था, अब वह दिन

दूर नहीं जब असली मुजरिम को भी उसी की तरह फाँसी हो जाएगी और तभी उसकी आत्मा को भी सुकून पहुँचेगा।"

"हाँ-हाँ।" माँ ने भी जज्बाती होकर कहा, "अब सचमुच वह दिन दूर नहीं जब असली मुजरिम को भी फाँसी मिल जाएगी। लेकिन अब तू सो जा, अभी आधी से ज्यादा रात पड़ी है, सुबह उठते ही तू यशवंत के पास भागेगी।"

"ठीक है, मैं सोती हूँ।" शुभांगी ने बिल्कुल बच्चों की तरह कहा।

वह वापस बिस्तर पर लेट गई।

माँ भी बाहर निकल आई।

शुभांगी की आँखें छत पर टिकी थी जहाँ वह खाली-खाली आँखों से मानो कुछ टटोल रही थी। उसके बाद वह काफी देर तक सोने की कोशिश करती रही मगर फिर उसे नींद न आई।

●●●

बलदेवराज टंडन की उस दिन सुबह जब आँख खुली तो वह खुद को काफी तरोताजा महसूस कर रहा था।

वह अपने बंगले में था।

दरअसल रात उसने तीन-चार घंटे सोफिया के साथ गुजारे थे और दो बार उसे फिट किया था। यह बात अलग है दो बार फिट करने की जिद ने टंडन के घुटनों का टायर पूरी तरह पंचर कर दिया और उसके अंदर की सारी हवा निकल गई। मगर उसी दो बार फिटिंग की वजह से उसके अंदर जो कॉन्फिडेंस पैदा हुआ था, उसने उसमें नौजवानों जैसा उत्साह भर दिया।

उस समय टंडन वॉशबेसिन के पास खड़ा ब्रश कर रहा था और उसके चेहरे पर गजब की चमक थी।

उस चमक को वह बीच-बीच में सामने लगे आइने में देखना न भूलता।

उसने टाइट गाउन पहना हुआ था।

पैरों में स्लीपर थे।

टंडन अभी टूथब्रश कर रही था, तभी जोर से बंगले की डोरबेल बज उठी।

"इतनी सुबह-ही-सुबह कौन आ गया ?"" टंडन ब्रश करते हुए ही बोला।

"जरूर काम वाली बाई होगी।" मिसिज टंडन ने कहा, "बिशनु, जरा दरवाजा खोलना।"

बिशनु उनके घर के नौकर का नाम था। बिशनु ने आगे बढ़कर दरवाजा खोला।

जैसे ही दरवाजा खुला फौरन यशवंत गवली, रागिनी और सावंत धड़धड़ाते हुए अंदर आ गये।

सावंत ने अंदर आते ही बंगले का दरवाजा भीतर से बंद कर लिया।

जबकि बाकी सब ड्राइंग हॉल में इधर-उधर फैले।

"यह क्या हरकत है ऑफिसर !" बलदेवराज टंडन ब्रश करता-करता ठिठका और उसने कुल्ला करके मुँह साफ किया, "आप लोग यहाँ क्यों आए हैं ?"

"हमें आपके बंगले की तलाशी लेनी है मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली बोला।

"तलाशी, मगर क्यों ?"

"इस क्यों का जवाब आप बहुत अच्छी तरह जानते हैं।" यशवंत गवली गुर्राता हुआ बोला, "महेश खोखा मर्डर केस की जाँच पड़ताल का ही यह एक हिस्सा है।"

"महेश खोखा, महेश खोखा !" तौलिये से हाथ पोंछता टंडन झुंझलाता हुआ ड्राइंग हॉल में आया, "मैं आप लोगों से पहले भी कह चुका हूँ कि महेश खोखा के मर्डर से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। मैं उसे तरीके से जानता भी नहीं था।"

यशवंत गवली मुस्कुराया ।

वह मुस्कुराहट बहुत बेधक और नपी-तुली थी ।

"मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली चहलकदमी-सी करता हुआ टंडन के नजदीक आया, "हर कातिल कत्ल के बाद यही कहता है जो तुम कह रहे हो । इसमें नया क्या है ?"

"मगर जो कत्ल नहीं करता वह भी तो चीख-चीखकर यही कहता होगा ।"

"करेक्ट । एब्सोल्युटली करेक्ट ।" यशवंत गवली के होंठों की मुस्कुराहट गहरी हो गयी, "एक निर्दोष आदमी भी यही कहता है कि उसने कत्ल नहीं किया । वह निर्दोष है लेकिन निर्दोष आदमी के चेहरे पर वह खौफ नहीं होता जो खौफ मैं इस वक्त तुम्हारे चेहरे पर देख रहा हूँ । ऐसा खौफ तो सिर्फ कातिल के चेहरे पर ही पाया जाता है ।"

"अ... ऑफिसर... !"

"नो-नो, अब यह कहने की भूल हरगिज़ मत करना कि मुझसे चेहरा पढ़ने में गलती हो रही है । तुम तो जानते ही हो, मेरा नाम यशवंत गवली है और जिंदगी में मेरा वास्ता एक से एक दुर्धष तथा चतुर अपराधी से पड़ चुका है । कम-से-कम इस तरह की गलतियाँ मैं नहीं करता ।"

"लेकिन... ।"

"प्लीज, आप हमें अपना काम करने दीजिए !" यशवंत गवली ने उसकी बात बीच में ही काटी, "अगर आप निर्दोष हैं तो हमारे हाथ तलाशी में वैसे भी कुछ नहीं लगने वाला है ।"

"नहीं ऑफिसर !" टंडन, यशवंत गवली के सामने अड़ गया, "आप इस तरह मेरे बंगले की तलाशी नहीं ले सकते ।"

"बंगले की तलाशी तो अब हम लेकर जाएंगे टंडन साहब ! आप हमें तलाशी आसानी से लेने दे तो लेने दे, नहीं तो हमारे पास तलाशी लेने का कानूनी रास्ता भी है ।"

"क... कानूनी रास्ता !"

"हाँ, यह देखिए तलाशी का सर्च वारंट ।"

यशवंत गवली ने अपनी जेब से उसके बंगले की तलाशी का सर्च वारंट निकालकर दिखाया ।

और ।

उस सर्च वारंट को देखते ही टंडन के चेहरे का रंग दूध की तरह सफेद झक्क पड़ गया ।

"अब बोलिए मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली ने सीधे उसकी आँखों में झांका, "क्या आप अब भी हमारे रास्ते की रुकावट बनेंगे ?"

टंडन से कुछ कहते न बना ।

उसकी बीवी भी काफी घबराई हुई मालूम हो रही थी ।

"आखिर यह सब क्या चक्कर है ?" टंडन की बीवी लपककर टंडन के पास पहुँची, "यह लोग यहाँ किसलिए आए हैं ?"

टंडन ने अपनी नजरें नीचे झुका ली ।

वह कहता भी तो क्या कहता ।

"ऑफिसर !" टंडन की बीवी अब व्यग्रतापूर्वक यशवंत गवली के पास आई, "आप ही कुछ बताइए ।"

"फिलहाल मैं सिर्फ इतना ही कहूँगा ।" यशवंत गवली बोला, "कि आपकी एक गलत आदमी के साथ शादी हो चुकी है ।"

टंडन ने अब झटके से गर्दन उठाकर यशवंत गवली की तरफ देखा ।

"क्यों, मैंने कुछ गलत कहा ?" यशवंत गवली ने सीधे उसकी आँखों-में-आँखें डाली, "क्या जुपिटर क्लब की तस्वीरें इस बात की गवाह नहीं ?"

टंडन फिर नजरें चुराने लगा ।

"फ्रेंड्स !" यशवंत गवली ने चिल्लाकर अपने साथियों से कहा, "सब आगे बढ़कर तलाशी का काम शुरू करो और ध्यान रहे कोई चीज छूटनी नहीं चाहिए । ओके ?"

"ओके ऑफिसर !"

सब धड़धड़ाते हुए बंगले में अंदर घुस गए ।

फिर बलदेवराज टंडन की किसी को रोकने की हिम्मत न हुई । अगले ही पल बंगले में तलाशी अभियान पूरे जोर-शोर के साथ शुरू हो गया और बलदेवराज टंडन, उसकी पत्नी तथा बंगले के नौकर-चाकर, सब मूकदर्शक बने वह तमाशा देखते रहे ।

किसी के कुछ समझ नहीं आ रहा था क्या होने वाला है ?

सबकी साँस गले में अटकी थी ।

यशवंत गवली ड्राइंग हॉल की तलाशी लेने में जुट गया । वह एक-एक चीज की बहुत बारीकी से छानबीन कर रहा था ।

बंगले के अंदर से भी सामान के गिरने और उठापटक की आवाज अब आने लगी थी ।

यशवंत गवली जानता था, उसके सभी साथी अपना काम करने में सिद्धहस्त थे ।

शुभांगी भी ।

यशवंत गवली ने आधे से ज्यादा ड्राइंग हॉल छान मारा परंतु उसे कोई काम की वस्तु न मिली ।

"ऑफिसर, मैं फिर कहूँगा !" टंडन हौसला जुटाकर बोला, "आप बंगले की तलाशी लेने में अपना वक्त बर्बाद कर रहे हैं । यहाँ से आपको कुछ नहीं मिलने वाला ।"

"गुड ।" यशवंत गवली मुस्कुराया, "तो फिर आप हमें यह बता दीजिए कि आपने सबूत किस जगह छिपाकर रखे हैं ?"

"मैंने कहा न, मैंने कोई खून नहीं किया । आप लोग खामखाह मेरे ऊपर शक कर रहे हैं ।"

यशवंत गवली के होंठों की मुस्कान और ज्यादा विद्रूपतापूर्ण हो गई तथा वह पहले की तरह तलाशी लेने में जुटा रहा ।

समय धीरे-धीरे गुजरता जा रहा था ।

यशवंत गवली अब खुद सस्पेंस में गिरफ़्तार होने लगा कि यहाँ कोई सबूत है भी या नहीं ?

वह पूरी तरह निराश होता उससे पहले ही एकाएक रागिनी दौड़ती हुई अंदर से बाहर आई ।

"ऑफिसर, ऑफिसर ! यह देखिए यह क्या है !"

यशवंत गवली ने देखा, रागिनी के हाथ में उस समय डॉक्टर वाला एक सफेद ओवरऑल झूल रहा था ।

"ऑफिसर !" रागिनी बोली, "यह सफेद ओवरऑल मुझे मिस्टर टंडन के वार्डरोब से मिला है ।"

यशवंत गवली की आँखें यूँ चमक उठी जैसे एक साथ उनमें असंख्य जुगनू टिमटिमाने लगे हो ।

"वेरी गुड ।"

उसने रागिनी के हाथ से वह सफेद ओवरऑल ले लिया तथा उसे पकड़े पकड़े पूरी गर्मजोशी के साथ बलदेवराज टंडन की तरफ घूमा ।

"मिस्टर टंडन !" उसने ओवरऑल यूँ टंडन की आँखों के सामने लहराया जैसे सरकारी वकील भरी कोर्ट में कोई सबूत मुजरिम के सामने लहराता है, "अब आप क्या कहेंगे, क्या आप बता सकते हैं कि डॉक्टरों वाला यह ओवरऑल आपके वार्डरोब में कहाँ से आया ?"

टंडन के माथे पर असंख्य पसीने की बूंदें चुहचुहा उठी और उसने अचकचाकर इधर-उधर देखा ।

"मैं नहीं जानता ।" टंडन का लहजा शुष्क था, "कि यह ओवरऑल मेरे वार्डरोब में कैसे आया ।"

"यह झूठ बोलने से आप बच नहीं जाएंगे मिस्टर टंडन ! क्योंकि यह ओवरऑल खुद आपके वार्डरोब से बरामद हुआ है । इसके अलावा आप शायद एक बात और नहीं जानते कि महेश खोखा का मर्डर भी कातिल ने ऐसा ही सफेद ओवरऑल पहनकर किया था ।"

"त... तो आप कहना क्या चाहते हैं ?"

"मैं यह कहना चाहता हूँ ।" यशवंत गवली ने अपनी उंगली भाले की तरह टंडन की तरफ भोकी, "कि आपने यह ओवरऑल पहनकर महेश खोखा का खून किया है ।"

"यह झूठ है ।"

"यह सच है ।" यशवंत गवली उससे भी ज्यादा जोर से चिल्लाया ।

टंडन अब साफ-साफ भयभीत नजर आने लगा था ।

उसे अपने पैरों के नीचे से जमीन खिसकती दिखाई पड़ी ।

वह और बहस करता तभी शुभांगी भी बंगले के अंदर से दौड़ते हुए बाहर आई ।

शुभांगी के हाथ में उस समय एक स्टैथोस्कोप झूल रहा था ।

"यह देखिए ऑफिसर !" शुभांगी उत्सुकतापूर्वक बोली, "मिस्टर टंडन के बेडरूम में मुझे यह स्टैथोस्कोप मिला है । यह इनके ब्रीफकेस में रखा हुआ था ।"

"स्टैथोस्कोप !" टंडन के दिमाग में छनाका-सा हुआ ।

"यस मिस्टर टंडन, स्टैथोस्कोप !" यशवंत गवली स्टैथोस्कोप भी अपने हाथ में लेकर कुटिल मुस्कान बिखेरता हुआ टंडन की तरफ घूम गया, "प्लीज, अब आप यह मत कहियेगा कि आप इस स्टैथोस्कोप के विषय में भी कुछ नहीं जानते । यह आपके ब्रीफकेस में कहाँ से आया ?"

"मैं सचमुच इसके बारे में कुछ नहीं जानता ऑफिसर ! आप मेरी बात का यकीन करें ।"

यशवंत गवली हँसा ।

"मुझे तुम्हारा यह जवाब सुनकर कोई हैरानी नहीं हो रही है, क्योंकि मैं तुमसे ऐसे ही किसी जवाब की उम्मीद रखता हूँ ।"

"लेकिन... ।"

"प्लीज मिस्टर टंडन, प्लीज ! वैसे आपको एक बात और बता दूँ, कातिल जब महेश खोखा का खून करने जसलोक हॉस्पिटल पहुँचा तो उसके हाथ में ऐसा ही एक स्टैथोस्कोप भी था ।"

"और यह देखिए ऑफिसर, यह देखिए !" तभी सावंत भी बदहवासों की तरह दौड़ता हुआ बाहर आया ।

उसके हाथ में दस्ताने झूल रहे थे ।

"बिल्कुल वैसे ही दस्ताने भी यहाँ से बरामद हुए हैं ।" सावंत बोला, "जैसे दस्ताने कत्ल करते समय कातिल ने पहने हुए थे ।"

"गुड, वेरी गुड ।"

यशवंत गवली ने वह दस्ताने भी अपने हाथ में ले लिए ।

जबकि बलदेवराज टंडन का पूरा चेहरा बिल्कुल खून से निचुड़ा हुआ नजर आने लगा ।

"मिस्टर टंडन !" यशवंत गवली एक-एक शब्द पर जोर देता हुआ बोला, "मैं समझता हूँ कि अब तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है क्योंकि इन तमाम सबूतों की रोशनी में फिलहाल इस बात के अंदर शक-शुबहे की कहीं कोई गुंजाइश नहीं बचती कि महेश खोखा का खून तुमने नहीं किया ।"

"यह झूठ है ।" बलदेवराज टंडन फिर गला फाड़कर चिल्लाया, "गलत है ।"

"एनीवे, अब तुमने जो कहना हो ।" यशवंत गवली बोला, "अदालत में चलकर कहना । फिलहाल, यू आर अंडर अरेस्ट ।"

"नहीं-नहीं ऑफिसर !" मिसेज टंडन भी अब बदहवासों की तरह चिल्लाती हुई आगे बढ़ी, "आप इन्हें इस प्रकार गिरफ्तार करके नहीं ले जा सकते ।"

"आप हमें रोक भी नहीं सकती मिसेज टंडन ! मैंने पहले ही कहा कि आपकी एक गलत आदमी से शादी हो चुकी है । चलो फ्रेंड्स !"

रागिनी और सावंत ने बलदेवराज टंडन को कसकर पकड़ लिया ।

फिर वह बाहर की तरफ बढ़े ।

टंडन उसके बाद उनका विरोध करना चाहकर भी विरोध न कर सका ।

●●●

बलदेवराज टंडन की गिरफ्तारी ने प्रेस में बड़ा हंगामा बरपा किया ।

जैसे ही प्रेस मीडिया को यह पता चला कि मुम्बई टाइम्स अखबार के मालिक बलदेवराज टंडन को एक कत्ल के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया गया है तो भारी संख्या में प्रेस रिपोर्टर तथा प्रेस फोटोग्राफर क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर के बाहर उमड़ पड़े ।

वह एक ही डिमांड कर रहे थे, हमारी यशवंत गवली से बात कराओ ।

हमें यशवंत से बात करनी है ।

उनके काफी जोर देने के बाद यशवंत गवली उनके बीच आया ।

"ऑफिसर !" एक प्रेस रिपोर्टर ने चिल्लाकर पूछा, "क्या सचमुच बलदेवराज टंडन साहब ने महेश खोखा का खून किया है ?"

"हाँ, यह सच है ।" यशवंत गवली बोला, "मिस्टर टंडन वाकई खूनी है ।

"मगर इसके आपके पास सबूत क्या है ?" टीवी चैनल आज तक का रिपोर्टर चिल्लाया ।

सबूत अदालत में पेश किए जाएंगे ।

लेकिन फिर भी कुछ तो बताइए ।

"किन्हीं कारणों से उन सबूतों का कोई जिक्र यहाँ नहीं किया जा सकता । आप अदालत में आए, वहीं सबकुछ आपको अपनी आँखों से देखने को मिल जाएगा ।"

कुछ और रिपोर्टर यशवंत गवली से सवाल करने के लिए दौड़े परंतु फिर यशवंत गवली ने किसी के सवाल का जवाब न दिया । वह लंबे-लंबे डग भरता हुआ अपनी कार में जाकर बैठा और अगले ही पल कार सड़क पर दौड़ पड़ी ।

क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर ने महेश खोखा मर्डर केस के सिलसिले में कुछ और कदम बहुत आनन-फानन उठाए ।

जैसे बलदेवराज टंडन को 3 घंटे क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर में रखने के बाद मुंबई पुलिस के हवाले कर दिया गया ।

फिर मुंबई पुलिस ने उसे 24 घंटे हवालात में रखा और उससे गहन पूछताछ की ।

उसके बाद पुलिस ने चार्जशीट लगाकर टंडन को अदालत में पेश कर दिया ।

●●●

जिस दिन मुंबई पुलिस ने टंडन को अदालत में पेश किया, वह दिन भी जबरदस्त गहमागहमी से भरा रहा ।

न सिर्फ प्रेस मीडिया के रिपोर्टर और फोटोग्राफर बल्कि पब्लिक भी भारी तादाद में कोर्ट के बाहर उमड़ पड़ी । आखिर बलदेवराज टंडन शहर का एक पॉपुलर आदमी था ।

यही हालत दर्शक दीर्घा की थी । वहाँ भी तिल रखने को जगह न बची ।

पब्लिक का उस केस में इंटरेस्ट यूँ भी और ज्यादा बढ़ गया था क्योंकि बलदेवराज टंडन के खिलाफ सबूत पेश करने आज खुद यशवंत गवली वहाँ आने वाला था ।

अदालत की कार्यवाही शुरू हुई ।

ठीक वक्त पर यशवंत गवली भी वहाँ पहुँच गया । उसके वहाँ पहुँचते ही अदालत में और भी ज्यादा खलबली मची ।

यशवंत !

यशवंत !

चारों तरफ से शोर-सा उमड़ा ।

बलदेवराज टंडन उस समय अपना सिर झुकाए विटनेस बॉक्स में खड़ा था ।

एक पल के लिए यशवंत गवली और टंडन की निगाहें एक-दूसरे से टकराई, मगर टंडन ने वापस अपनी आँखें झुका ली ।

"मी लॉर्ड !" यशवंत गवली न्यायाधीश से संबोधित हुआ, "सबसे पहले इस केस से संबंधित कुछ तस्वीरें मैं आपको दिखाना चाहूँगा ।"

यशवंत गवली ने अपनी जेब से जूपिटर क्लब की अश्लील तस्वीरें निकाली और उन्हें पेशकार की तरफ बढ़ाया । जबकि पेशकार ने वह तस्वीरें जज के सामने डेस्क पर ले जाकर रखीं ।

तस्वीरें !

टंडन के चेहरे का रंग और भी ज्यादा बुरी तरह उड़ गया ।

वह अब खुद को जमीन में गड़ता अनुभव करने लगा । उसके हाथ विटनेस बॉक्स पर कस गए ।

जज ने भी एक-एक करके उन तस्वीरों को देखा और जैसे-जैसे वह तस्वीरें देखता चला गया, उसके चेहरे पर हैरानी का साम्राज्य बढ़ा ।

"मिस्टर टंडन !" जज ने अब चुभती निगाहों से टंडन की तरफ देखा, "क्या यह सब तस्वीरें तुम्हारी हैं ?"

टंडन कुछ न बोला ।

वह नजरें फर्श में गड़ाये खड़ा रहा ।

"मिस्टर टंडन !" जज पुनः चिल्लाया, "मैं तुमसे कुछ पूछ रहा हूँ, जवाब दो । क्या यह तस्वीरें तुम्हारी हैं ?"

खामोशी ।

सन्नाटा ।

"मी लॉर्ड, बलदेवराज टंडन साहब इस सवाल का क्या जवाब देंगे । क्योंकि इस सवाल का जवाब देने के लिए हौंसला चाहिए, हिम्मत चाहिए और वह हिम्मत एक अपराधी के अंदर हरगिज़ नहीं होती । वैसे इनकी खामोशी खुद इस बात को कबूल कर रही है कि यह तस्वीरें इनकी हैं ।"

टंडन नजरे झुकाए खड़ा रहा ।

"कितनी हैरानी की बात है जज साहब !" यशवंत गवली, टंडन का मखौल उड़ाता हुआ बोला, "मुम्बई टाइम्स जैसे अखबार के मालिक, हिंदी के प्रकांड पंडित, समाजवाद, बाल कल्याण, महिला कल्याण जैसी बड़ी बड़ी बात करने वाले और प्रेस जगत की एक बड़ी हस्ती बलदेवराज टंडन साहब का एक रूप यह भी है । यह जुपिटर क्लब जैसी जगह जाकर अय्याशी करते हैं और दिल खोलकर रंगरलियाँ मनाते हैं ।"

डिफेंस लॉयर (बचाव पक्ष का वकील) अब कुछ बेचैन दिखाई पड़ा ।

"मी लॉर्ड !" उसने न्यायाधीश महोदय से कहा, "क्या इन तस्वीरों को एक नजर मैं भी देख सकता हूँ ?"

"जरूर ।"

पेशकार ने अब वह तस्वीरें डेस्क से उठाकर डिफेंस लॉयर की तरफ बढ़ा दीं ।

डिफेंस लॉयर ने भी उन तस्वीरों को देखा ।

और ।

तस्वीरें देखकर उसकी भी घबराहट बढ़ी ।

उसने टंडन की तरफ देखा । टंडन अभी भी किसी से नजरें मिलाने की ताब नहीं ला पा रहा था ।

"मी लॉर्ड !" डिफेंस लॉयर जल्दी से अपना पक्ष संभालकर बोला, "मैं नहीं जानता कि यह तस्वीरें कितनी सही है या कितनी गलत, मगर एक बात जरूर कहूँगा ।"

"क्या ?"

"इन तस्वीरों का महेश खोखा के मर्डर केस से क्या ताल्लुक हो सकता है ?"

"मैं कबूल करता हूँ ।" जज की जगह यशवंत गवली ने जवाब दिया, "कि इन तस्वीरों का महेश खोखा मर्डर केस से कोई ताल्लुक नहीं । मगर इन तस्वीरों का बलदेवराज टंडन की व्यक्तिगत जिंदगी से जरूर ताल्लुक है । इस बात से जरूर ताल्लुक है कि यह कैसा बहरुपिया इंसान है जिसने अपने चेहरे पर कई तरह के मुखोटे चढ़ाए हुए हैं । यह कहता कुछ है और असल जिंदगी में करता कुछ है । महेश खोखा मर्डर केस से संबंधित सबूत पेश करने से पहले जरूरी था कि इस आदमी का यह रुप भी अदालत के सामने लाया जाए, ताकि अदालत इस आदमी के बनाए प्रपंचों को लेकर किसी भ्रम में न रहे और वह सबकुछ बिल्कुल साफ-साफ सच्चाई के आईने में देख सके ।"

डिफेंस लॉयर ने फिर बेचैनीपूर्वक पहलू बदला ।

हालांकि वह वकील था । बोलने की ही उसे फीस मिलती थी परंतु यशवंत गवली जैसे आदमी की बातों का उसके पास भी कोई जवाब नहीं था ।

तस्वीरें वापस न्यायाधीश महोदय की डेस्क पर ले जाकर रख दी गई ।

यह केस कई मायनों में विचित्र होने के साथ-साथ इसलिए भी विचित्र था, क्योंकि यशवंत गवली खुद जिंदगी में पहली बार किसी अपराधी के खिलाफ कोर्ट में पेश हुआ था ।

"क्या अब आप वह सबूत भी अदालत में पेश करेंगे ऑफिसर !" डिफेंस लॉयर बोला, "जिनसे मेरे मुवक्किल के ऊपर लगा हत्या का अभियोग साबित होता है ?"

"क्यों नहीं ! मैं वह सबूत पेश करने के लिए ही तो अदालत में हाजिर हुआ हूँ । लेकिन उससे पहले मैं कुछ गवाह अदालत के समक्ष पेश करना चाहूँगा ।"

न्यायाधीश महोदय ने अपना गोल्डन फ्रेम का ऐनक दुरुस्त करके गौर से यशवंत गवली को देखा और कहा, "गवाहों को पेश करने की इजाजत है ।"

"थैंक्यू मी लॉर्ड !"

●●●

कोर्ट रुम में बिल्कुल पिन ड्रॉप साइलेंस जैसी स्थिति थी । सब साँस रोके बैठे थे ।

दर्शक दीर्घा में दूसरे लोगों के अलावा रागिनी, शुभांगी और सावंत भी मौजूद थे तथा यशवंत गवली की एक-एक बात बहुत गौर से सुन रहे थे ।

सबसे पहले गवाह के तौर पर अदालत में मराठा मंदिर सिनेमा हॉल के सिंधी मैनेजर को पेश किया गया ।

"आप अपना नाम बताइए ।" यशवंत गवली, सिंधी मैनेजर के सामने जाकर खड़ा हुआ ।

"दौलतानी ।" सिंधी मैनेज़र अपनी ही टोन में बोला, "वडी केशुभाई दौलतानी ।"

"आप क्या करते हैं ?"

“वडी मैं मराठा मंदिर सिनेमा हॉल का मैनेजर हूँ ।”

“ओह ! तो मराठा मंदिर के मैनेजर हैं आप ।” यशवंत गवली उसके सामने चहलकदमी-सी करता हुआ बोला, “मिस्टर दौलतानी आपके सामने वाले कटघरे में जो महाशय खड़े हैं, क्या आप उन्हें पहचानते हैं ?”

“वडी यह भी कोई पूछने की बात है नी । खूब अच्छी तरह पहचानता हूँ । और मैं क्या, इन्हें तो आधी से ज्यादा मुंबई पहचानती है । आखिर यह इतने बड़े अखबार के मालिक हैं नी ।”

“मिस्टर दौलतानी ! जितना सवाल आपसे पूछा जाए, उतना जवाब दीजिए । आप इन्हें पहचानते हैं या नहीं ? सिर्फ हाँ या न ।”

“प... पहचानता हूँ ।”

“गुड ।” यशवंत गवली ने अब सीधे सिंधी मैनेजर की आँखों में झांका, “और मुझे पता चला है कि बलदेवराज टंडन साहब पिछले दिनों अपनी पत्नी के साथ आपके सिनेमा हॉल में फिल्म अभी देखने गए थे ?”

“जी हाँ, यह सच है ।”

“कौन-सी फिल्म ?”

“वडी ‘हम आपके हैं कौन’ । अभी भी थिएटर में वही फिल्म लगी है ।”

“दौलतानी साहब, क्या आपको वह तारीख याद है जिस तारीख को बलदेवराज टंडन साहब आपके सिनेमा हॉल में फिल्म देखने आए ?”

“कसम झूलेलाल की, मेरे को खूब अच्छी तरह वह तारीख याद है साईं । उस दिन 3 अप्रैल थी ।”

“3 अप्रैल !”

“जी हाँ ।”

“मी लॉर्ड !” यशवंत गवली अब न्यायाधीश महोदय की तरफ घूम गया, “तीन अप्रैल । यही वह तारीख है जिस तारीख को जसलोक हॉस्पिटल में शाम सात बजे महेश खोखा का मर्डर किया गया था और उसी दिन टंडन साहब इवनिंग शो यानी 6 से 9 वाले शो में मराठा मंदिर के अंदर बैठे वह फिल्म देख रहे थे । यानी वह कत्ल इन्होंने नहीं किया है, इस बात की इन्होंने पहले से ही मजबूत ऐलीबाई बना रखी थी । इतना ही नहीं, जब मैं इस केस के सिलसिले में इनसे जाकर मिला तो इन्हें फौरन ही न सिर्फ यह याद आ गया कि यह उस दिन उस समय मराठा मंदिर में बैठे फिल्म देख रहे थे बल्कि उन्होंने फौरन ही अपनी जेब से मुझे उस शो के दो टिकट भी निकालकर दिखाएँ, जो कई दिन बाद भी पूरी हिफाजत से इनकी जेब में मौजूद थे । यह देखिए, यह रहे वह टिकट ।”

यशवंत गवली ने अपनी जेब से फिल्म के दो टिकट निकाले और पेशकार की तरह बढ़ाएं ।

पेशकार ने वह टिकट जज की तरफ बढ़ाएं ।

जज ने गौर से उन दोनों टिकटों को देखा ।

“मी लार्ड !” डिफेंस लॉयर जल्दी से चिल्लाया, “इन दोनों टिकटों से तथा दौलतानी साहब की गवाही से तो मेरे क्लाइंट की बेगुनाही और भी ज्यादा पुख्ता साबित होती है क्योंकि जिस समय खून हुआ उस समय तो वह सिनेमा हॉल के अंदर बैठे फिल्म देख रहे थे ।”

"करेक्ट, एब्सोल्यूटली करेक्ट !" यशवंत गवली मुस्कुराया, “खुद बलदेवराज टंडन साहब भी यही प्रूफ करना चाहते थे और इसीलिए इन्होंने जानबूझकर उस दिन मराठा मंदिर में फिल्म देखने का प्रोग्राम बनाया । मगर कहते हैं, हर चालक से चालक अपराधी से भी कुछ-न-कुछ गलती हो ही जाती है । ऐसी ही गलती इनसे भी हुई ।”

“जैसे ?”

"जैसे सबसे बड़ी गलती तो टंडन साहब से यही हुई कि उन्होंने कई दिन बाद भी उस शो के टिकट अपनी जेब में संभालकर रखे और जब मैंने इनसे पूछताछ की तो इन्होंने जल्दी से वह टिकट निकालकर मुझे दिखाये और कहा कि उस दिन तो मैं फला सिनेमा हॉल में बैठा फिल्म देख रहा था । आप चाहे तो उस सिनेमा हॉल के मैनेजर से भी पूछताछ कर सकते हैं क्योंकि उन्होंने ही यह टिकट बुक कराए थे और मी लॉर्ड, बलदेवराज टंडन का दिया गया वही बयान, वही इकलौता बयान मेरे दिमाग में घंटी बजाने के लिए पर्याप्त था । टंडन साहब समझ रहे थे कि वह कई दिन पुराने शो की टिकट दिखाकर मेरे सामने अपनी बेगुनाही साबित कर रहे हैं परंतु मेरी निगाह में टंडन साहब के वही शो के टिकट उनके गुनाहगार होने का सबसे बड़ा प्रमाण थे । क्योंकि फिल्म देखने के बाद कोई भी इतने दिन तक अपनी जेब में फिल्म के टिकट संभालकर नहीं रखता । क्यों मिस्टर डिफेंस लॉयर, क्या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ ?"

"बात आपकी अपनी जगह बिल्कुल ठीक है ऑफिसर !" डिफेंस लॉयर बोला, "परंतु हो सकता है, मेरे क्लाइंट की जेब में इत्तेफाक से वह टिकट रह गए जो बाद में आपको दिखाने के काम आए ।"

"इत्तेफाक !"

"जी हाँ, इत्तेफाक !" डिफेंस लॉयर ने पूरे यकीन के साथ कहा, "ऐसा इत्तेफाक किसी के साथ भी हो सकता है ऑफिसर ! मेरे साथ भी, आपके साथ भी, जज साहब के साथ भी ।"

"मैं मानता हूँ, यह एक इत्तेफाक हो सकता है ।" यशवंत गवली बोला, "परंतु मिस्टर डिफेंस लॉयर इस केस में ऐसे और भी कई खतरनाक इत्तेफाक हुए हैं, जिन्होंने मुझे कदम-कदम पर चौंकाया और मैं समझता हूँ कि ऐसे खतरनाक इत्तेफाक बार-बार नहीं हुआ करते ।"

"और कौन से खतरनाक इत्तेफाक हुए हैं ?"

"यह तो अभी शुरुआत है मिस्टर डिफेंस लॉयर ! अब मैं अदालत में अपना अगला गवाह पेश करने की इजाजत चाहता हूँ ।"

"इजाजत है ।" न्यायाधीश महोदय की भारी रौबदार आवाज कोर्ट रूम में गूँजी ।

●●●

फिर केशुभाई दौलतानी की जगह विटनेस बॉक्स में अब्बास आकर खड़ा हुआ ।

अब्बास जो मराठा मंदिर का उशर था और टिकट फाड़ने का काम करता था ।

"तुम्हारा नाम ?" यशवंत गवली, अब्बास के सामने जाकर खड़ा हुआ ।

"अब्बास है साहब !"

"तुम्हारे सामने वाले कटघरे में जो आदमी खड़ा है उसे पहचानते हो ?"

"खूब अच्छी तरह पहचानता हूँ साहब ! यह अपुन के मैनेजर साहब के दोस्त हैं । बलदेवराज टंडन नाम है इनका । यह बहुत बड़े अखबार के मालिक हैं ।"

"क्या यह पिछले दिनों तुम्हारे सिनेमा हॉल में फिल्म देखने आए थे ?"

"बिल्कुल आए थे साहब और अपुन के मैनेजर साहब ने अपुन से इनका खास ख्याल रखने को भी बोला था ।"

"वेरी गुड ।" यशवंत गवली मुस्कुराया, "तब तो तुमने पूरी फिल्म के दौरान इनका बहुत खास ख्याल रखा होगा । कोल्ड ड्रिंक, चाय-शाय सब इन्हें पेश करते रहे होंगे ?"

अब्बास के चेहरे पर अब हिचकिचाहट के भाव प्रतिबिंबित हुए ।

"क्या बात है, तुम खामोश क्यों हो गए अब्बास ?"

"दरअसल अपुन को इनका खास ख्याल रखने का मौका ही नहीं मिला साहब !"

"क्यों, मौका क्यों नहीं मिला ? तुम्हारे मैनेजर साहब ने तो तुमसे स्पेशली बोला था ।"

"बोला तो था साहब !" अब्बास ने कहा, "पन क्या है इन्होंने ही अपुन को डिस्टर्ब करने के वास्ते मना कर दिया था । उन्होंने कहा कि फिल्म देखते वक्त बीच में इन्हें किसी और चीज की जरूरत नहीं पड़ने वाली थी इसलिए इन्हें डिस्टर्ब न किया जाए ।"

"मी लॉर्ड, पॉइंट नोट किया जाए !" यशवंत गवली तेजी से न्यायाधीश महोदय की तरफ घूमा, "टंडन साहब ने ही अब्बास को बीच में डिस्टर्ब करने के लिए मना कर दिया था । यानी यह पूरे 3 घंटे तक सिनेमा हॉल के अंदर मौजूद थे या नहीं थे, इसकी भनक यह किसी को नहीं लगने देना चाहते थे ।"

"लेकिन इस बात का आपके पास क्या सबूत है ऑफिसर ?" डिफेंस लॉयर ने चिल्लाकर पूछा, "कि बलदेवराज टंडन साहब ने वह पूरी फिल्म नहीं देखी या वह पूरे 3 घंटे तक सिनेमा हॉल में मौजूद नहीं थे ।"

"मेरे पास सबूत है । ठोस सबूत है कि उस पीरियड में बलदेवराज टंडन साहब पूरे वक्त सिनेमा हॉल के अंदर मौजूद नहीं थे । मी लॉर्ड, मैं अपने तीसरे और आखिरी गवाह रंगीला को कोर्ट में पेश करने की इजाजत चाहूँगा !"

"इजाजत है ।"

●●●

फिर रंगीला कोर्ट में हाजिर हुआ ।

वह आज भी पूरी तरह स्टाइलिश कपड़ों में था । उसने काली चमकदार टी-शर्ट पहनी हुई थी, काली पैंट थी । काले जूते थे और सिर पर चमचमाता काला हैट था । यह बहुत बड़ा शुक्र था कि उसने फिल्म अभिनेता राजकुमार स्टाइल में अपने गले में एक काला मफलर भी नहीं डाल लिया था ।

कुल मिलाकर फिल्मी बुखार उसके ऊपर उस समय भी पूरा चढ़ा हुआ था ।

वह आज कॉमेडी किंग महमूद की नकल करने पर आमादा था ।

"तुम्हारा नाम ?" यशवंत गवली ने उसके सामने पहुँचकर पूछा ।

"अजी नाम में क्या रखा है ।" वह हूबहू महमूद की आवाज निकालता हुआ बोला, "नाम तो अपने हजारों हैं । हर फिल्म में अपने को नया नाम मिल जाता है ।"

उसकी अदा पर पूरे कोर्ट-रूम में हँसी का फव्वारा छूटा ।

"शटअप !" यशवंत गवली गुर्राया, "सीधे-सीधे जवाब दो, नाम क्या है तुम्हारा ?"

"रंगीला कह सकते हैं आप मुझे ।"

कोर्ट रुम में बैठे तमाम लोग फिर हंसे ।

"रंगीला ! तुम्हारे सामने वाले कटघरे में जो आदमी खड़ा है, क्या तुम उसे पहचानते हो ?"

"अच्छा वो । अपुन के नसीर भाई की जेरोक्स कॉपी । उसको अपुन कैसे नहीं पहचानेगा साहब ! अपुन को इधर मुंबई में नई रहने का क्या ?"

"इन साहब से तुम्हारी सबसे पहली मुलाकात कब हुई ?"

"3 अप्रैल को हुई ।" रंगीला बोला, "उस दिन अपुन हमेशा की तरह मराठा मंदिर में 6:00 से 9:00 वाला शो देखने गया हुआ था । यह साहब अपुन की एकदम बराबर वाली सीट पर बैठे थे ।"

"अकेले ?"

"नहीं, इनके साथ इनकी वाइफ भी थी ।"

"वेरी गुड । यानी उस दिन तुमने इन साहब के साथ बैठकर ही वह फिल्म देखी ।"

"जी हाँ ।"

"क्या तुम बता सकते हो रंगीला, यह साहब पूरे फिल्म के दौरान थिएटर में बैठे रहे थे या नहीं ?"

"कहाँ बैठे रहे थे !" रंगीला ने इठलाते हुए ही कहा, "यह तो मुश्किल से आधे घंटे बाद ही फिल्म छोड़कर चले गए थे।"

"यानी 6:30 बजे।"

"हाँ।"

"यह अकेले ही गए थे ?" यशवंत गवली एक-एक बात खोद-खोदकर पूछता हुआ बोला, "या फिर अपनी वाइफ को भी अपने साथ ले गए थे ?"

"नहीं जी।" रंगीला लगातार महमूद की नकल कर रहा था, "यह तो अकेले ही गए थे। इनकी वाइफ तो बिचारी वहीं सिनेमा हॉल में बैठी रही थी।"

"इन्होंने कितनी देर में वापस आने को बोला था ?"

"आधे घंटे में।"

"फिर आए यह आधे घंटे में वापस ?"

"कहाँ आए !" रंगीला बोला, "फिर तो इन्हें वापस आने में एक घंटे से भी ज्यादा समय लगा। इनकी वाइफ तो बेचारी सिनेमा हॉल में बैठी-बैठी बड़ी हलकान हो रही थी।"

"मी लॉर्ड !" यशवंत गवली, रंगीला का बयान लेने के बाद अब तेजी से न्यायाधीश महोदय की तरफ घूम गया, "जैसाकि रंगीला के बयान से साफ जाहिर है कि 3 अप्रैल को यह भी मराठा मंदिर सिनेमा हॉल में टंडन साहब के बिल्कुल बराबर में बैठा फिल्म देख रहा था और उनकी एक-एक हरकत का चश्मदीद गवाह था। उसी रंगीला का कहना है कि यह फिल्म शुरू होने के मुश्किल से आधे घंटे बाद ही सिनेमा हॉल से उठकर चले गए थे और फिर एक घंटे से भी ज्यादा वक्त में लौटे थे और यही वह टाइम पीरियड था, जिस टाइम पीरियड में महेश खोखा का मर्डर हुआ।"

"लेकिन उस एक घंटे में मैंने क्या-क्या किया मी लॉर्ड, उसकी डिटेल में पहले ही यशवंत गवली को बता चुका हूँ।" बलदेवराज टंडन ने अपनी खामोशी तोड़ी।

"तो एक बार फिर उसकी डिटेल को जरा अदालत के सामने दोहरा दो।"

"दरअसल उस दिन जब मैं मराठा मंदिर में अपनी वाइफ के साथ फिल्म देखने गया था।" बलदेवराज टंडन बोला, "तो उसके बस आधे घंटे बाद ही मोबाइल पर मेरे ऑफिस से न्यूज़ एडिटर का फोन आ गया था।"

"क्यों ?"

"मैं एडिटोरियल (सम्पादकीय) लिखकर भूल से उसे अपनी टेबल की ड्राअर ने बंद कर आया था और उसका फौरन छपना बहुत जरूरी था। इसीलिए न्यूज़ एडिटर ने मुझे फोन किया था कि मैं आकर उसे एडिटोरियल दे दूँ।"

"फिर आप ऑफिस गए ?"

"न जाने का मतलब ही कोई नहीं था। आखिर बिना एडिटोरियल के अखबार कैसे छप सकता था। इसीलिए मैं अपनी वाइफ से बोलकर गया था कि मैं बस आधे घंटे में गया और आया।"

"लेकिन जैसाकि रंगीला के बयान से जाहिर है।" यशवंत गवली बोला, "आप आधे घंटे में आए तो नहीं वापस।"

"जी हाँ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि जब मैं एडिटोरियल देकर अपने ऑफिस से वापस आ रहा था, तो रास्ते में मेरी कार खराब हो गई और उसी को ठीक करने के चक्कर में मुझे इतना वक्त लग गया।"

“क्यों ?” यशवंत गवली ने बहुत वेधक निगाहों से उसकी तरफ देखा, “क्या तुम कार ठीक कराने के लिए किसी मैकेनिक के पास गए थे ?”

“नहीं ।”

“फिर भी तुम्हें इतना वक्त लग गया ?”

“मैं दरअसल किसी मैकेनिक के पास जाने के बारे में सोच ही रहा था कि फिर मेरे दिमाग में ख्याल आया, क्यों न एक बार मैं खुद ही कार को चेक करके देखूं ।”

“फिर तुमने कार चेक करके देखी ?”

“हाँ ।”

“और कार ठीक भी हो गई ?”

“हाँ... हाँ ।” टंडन असमंजसपूर्ण लहजे में बोला ।

वह समझ नहीं पा रहा था, यशवंत गवली उसके खिलाफ क्या चाल चल रहा है ।

“मी लॉर्ड !” यशवंत गवली मुस्कुराता हुआ न्यायाधीश महोदय की तरफ घुमा, “टंडन साहब का कहना है कि उन्होंने खुद ही अपने करामाती हाथों से अपनी कार ठीक कर डाली और उससे भी ज्यादा करामाती बात यह बयान कर रहे हैं कि उस आधे पौन घंटे की इनके पास कोई ऐलीबाई भी नहीं है । ऐसा कोई गवाह यह कोर्ट के सामने पेश नहीं कर सकते, जो यह गवाही दे सके कि उस दिन उस कत्ल वाले टाइम पीरियड में इनकी कार खराब हो गई थी और उसे ठीक करने में ही इन्हें इतना वक्त लग गया । अब इस बयान की एक दूसरी तस्वीर मैं अदालत को दिखाना चाहूँगा मी लॉर्ड ! इस बात की क्या गारंटी है कि सचमुच 3 अप्रैल को शाम 7:00 बजे के आसपास इनकी कार ही खराब हो गई थी और उसी को ठीक करने में इन्हें इतना वक्त लगा । मी लॉर्ड, ऐसा भी तो हो सकता है कि उस समय यह जसलोक हॉस्पिटल के अंदर महेश खोखा का मर्डर करने पहुँचे हुए थे और उस बात को छुपाने के लिए यह ऐसा फर्जी तथा मनगढ़ंत किस्सा बयान कर रहे हैं ।”

“यह झूठ है ।” टंडन गला फाड़कर चिल्लाया, “गलत है । मैंने किसी का खून नहीं किया ।”

“खून तो आपने किया है टंडन साहब !”

“लेकिन इस बात का आपके पास ही क्या सबूत है ऑफिसर !” डिफेंस लॉयर फिर टंडन की हिमायत में खड़ा हुआ, “कि 3 अप्रैल को शाम 7:00 बजे के आसपास बलदेवराज टंडन साहब की गाड़ी खराब नहीं हुई थी या फिर यह सचमुच जसलोक हॉस्पिटल में महेश खोखा का खून करने पहुँचे थे ?”

“सबूत हैं ।” यशवंत गवली ने पूरे कॉन्फिडेंस के साथ कहा, “मेरे पास इस बात के बहुत पुख्ता और मजबूत सबूत हैं कि उस दिन बलदेवराज टंडन ही जसलोक हॉस्पिटल में महेश खोखा का मर्डर करने पहुँचे थे और उन्होंने मर्डर किया भी था ।”

डिफेंस लॉयर अब साफ-साफ चिंतित दिखाई पड़ा ।

उसने अपने शुष्क अधरों पर जबान फेरी ।

“क... क्या सबूत है आपके पास ?”

तुरंत मुंबई पुलिस का एक बड़ा अधिकारी आगे आया और उसने अदालत के समक्ष बड़े से पॉलीथीन में बंद वह सारे सबूत पेश किया, जो बंगले से तलाशी के दौरान बरामद हुए थे । डॉक्टरों वाला सफेद ओवरऑल, स्टैथोस्कोप, ग्लव्स और मुम्बई टाइम्स के ऑफिस से बरामद हुई पॉइंट 32 कैलीबर की स्मिथ एंड वैसन रिवॉल्वर ।

“मी लॉर्ड !” यशवंत गवली उस पॉलिथीन बैग को अदालत के समक्ष लहराता हुआ बोला, “यह हैं वह सबूत । यह जो बलदेवराज टंडन साहब के घर और ऑफिस से बरामद हुए हमें । डॉक्टरों वाला सफेद ओवरऑल, स्टैथोस्कोप, ग्लव्स वह सारा-साजो समान जिसे पहनकर कत्ल किया गया और इसके अलावा

पॉइंट 32 कैलीबर की वह स्मिथ एंड वैसन रिवॉल्वर, जो मर्डर वेपन है । यह सब चीजें टंडन के पास से बरामद हुई हैं । अगर इन्होंने महेश खोखा का खून नहीं किया मी लॉर्ड; तो यह सारा साजो-सामान इनके पास कहाँ से आया ?"

"मैं नहीं जानता ।" टंडन चीखा, "मैं नहीं जानता कि यह सब चीजें मेरे घर में कहाँ से आईं ! मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि मैं निर्दोष हूँ । मुझे जानबूझकर किसी साजिश में फंसाया जा रहा है । मैंने कुछ नहीं किया ।"

"सिर्फ कह देने से ही कोई आदमी निर्दोष साबित नहीं हो जाता टंडन साहब ! इसके लिए अदालत में सबूत पेश करने पड़ते हैं और अदालत में पेश किए गए तमाम सबूत चीख-चीखकर इस बात को कह रहे हैं कि आप कातिल हैं, खूनी हैं और अब आप इसकी सजा से बच नहीं सकते ।"

"लेकिन... ।"

"अगर आप खुद को निर्दोष साबित करना चाहते हैं टंडन साहब; तो उसके सबूत अदालत में पेश कीजिए । बताइए, यह सारी चीजें आपके घर में कहाँ से आईं ?"

बलदेवराज टंडन की अब गर्दन नीचे झुक गई ।

डिफेंस लॉयर के पास भी कहने के लिए कुछ न बचा । अदालत में पेश किए गए उन सबूतों ने डिफेंस लॉयर को पूरी तरह तोड़कर रख दिया था ।

"मी लॉर्ड !" जबकि यशवंत गवली अब पूरी तरह उस केस पर हावी होता हुआ बोला, "यह बलदेवराज टंडन नाम का आदमी जो शक्ल से बहुत मासूम नजर आता है, वास्तव में हद से ज्यादा शातिर आदमी है । जिसने न सिर्फ महेश खोखा का मर्डर किया बल्कि ठीक जेंटलमैन किलर की स्टाइल में ही किया और उसकी डेड बॉडी के पास जानबूझकर प्लास्टिक की एक साँप-सीढ़ी भी छोड़ी, ताकि पुलिस यही समझे कि वह खून भी जेंटलमैन किलर यानि अभय मल्होत्रा ने ही किया है जो कि पुलिस ने समझा भी ।"

"लेकिन सवाल यह ऑफिसर !" डिफेंस लॉयर बोला, "अगर मेरे क्लाइंट ने महेश खोखा का मर्डर किया भी तो क्यों किया ? व्हाट इज मोटिव ? ऐसे सड़क छाप आदमी से बलदेवराज टंडन जैसे आदमी की क्या दुश्मनी हो सकती है ?"

"एक मोटिव तो मेरी निगाह में है ।" यशवंत गवली बोला ।

"क्या ?"

"हो सकता है महेश खोखा को भी किसी तरह बलदेवराज टंडन की जूपिटर क्लब वाली कारगुजारियों का पता चल गया हो । उसने कुछ सबूत कलेक्ट कर दिए हो और उन्हीं को लेकर अब वह टंडन साहब को ब्लैकमेल करने लगा हो जिससे तंग आकर उन्होंने यह कदम उठाया ।"

"लेकिन इस बात की गारंटी कुछ नहीं ।" डिफेंस लॉयर बोला, "कि वास्तव में भी ऐसा ही हुआ था ।"

"हाँ, गारंटी कुछ नहीं और मैं इस बात की तह में भी नहीं उतरना चाहता । मेरा काम कातिल को मय सबूत के कठघरे में लाकर खड़ा करना था जो मैंने कर दिया है । अब इस सवाल का जवाब खुद अपने क्लाइंट से ही पूछिए कि उन्होंने यह खून किया तो क्यों किया ? क्यों टंडन साहब, मैं समझता हूँ कि अब इस रहस्य के ऊपर से भी पर्दा उठा दे तो बेहतर है ।"

टंडन कुछ न बोला ।

वह सिर्फ नजरे झुकाए खड़ा रहा ।

बहरहाल उस सारी गहमागहमी और सवाल-जवाबों के बाद अदालत लंच तक के लिए मुल्तवी कर दी गई ।

●●●

लंच के बाद अदालत फिर बैठी ।

"अदालत में पेश किए गए तमाम सबूतों और गवाहों के बयान सुनने के बाद इस बात में कोई शक नहीं रह जाता ।" न्यायधीश महोदय बोले, "कि बलदेवराज टंडन खूनी है और उसी ने जसलोक हॉस्पिटल पहुँचकर महेश खोखा का खून किया । मगर यह सवाल अभी भी बाकी है कि महेश खोखा का खून क्यों किया गया ? इसीलिए यह अदालत किसी भी फैसले पर पहुँचने से पहले बलदेवराज टंडन को 3 दिन के लिए पुलिस रिमांड पर देती है ताकि इस रहस्य के ऊपर से भी पर्दा उठ सके ।"

"पुलिस रिमांड !"

टंडन के ऊपर बिजली गड़गड़ाकर गिरी ।

फिर वह अदालत वहीं बर्खास्त हो गई ।

●●●

अगले 3 दिन बलदेवराज टंडन के ऊपर पहले से भी ज्यादा भारी गुजरे ।

पुलिस को उसे रिमांड पर दिया गया तो पुलिस भी उसके साथ पूरी सख्ती से पेश आई ।

3 दिन तक उसे टॉर्चर रुम में रखा गया ।

उसकी जमकर धुलाई हुई ।

वह खूब चीखा ।

चिल्लाया ।

मगर किसी के कान पर भी उसके लिए हमदर्दी की जूं न रेंगी ।

उससे चीख-चीखकर पूछा गया, बता तूने महेश खोखा का मर्डर क्यों किया ? क्या बिगाड़ा था महेश खोखा ने तेरा ?

और उसने चीख-चीखकर उस सवाल के जवाब में हमेशा एक ही बात कही, मैंने महेश खोखा का खून नहीं किया । मैं खूनी नहीं हूँ ।

उसका वह जवाब सुनकर पुलिस उस पर और भी ज्यादा जोर-शोर से डंडे बरसाती ।

वह और चीखता ।

मगर टंडन न टूटना था ।

न टूटा ।

वह आखिर तक इसी बात पर अडिग रहा कि उसने महेश खोखा का खून नहीं किया ।

पुलिस उस पर डंडे बरसा-बरसाकर थक गई । पुलिस को लगा कि अब लिमिट क्रॉस हो चुकी है । अगर टंडन पर और डंडे बरसाए गए तो टॉर्चर रुम में ही उसकी जान चली जाएगी । उधर बलदेवराज टंडन जिस प्रेस मीडिया की एक बड़ी हस्ती होने का दावा करता था, उसी प्रेस मीडिया को जब उसके खूनी होने का पता चला, तो सबने अपने-अपने अखबारों और टीवी चैनलों पर खूब मिर्च-मसाला लगाकर उसकी न्यूज़ कवरेज दिखाई । जबकि मुम्बई टाइम्स अखबार के दफ्तर पर तो टंडन के कोर्ट में पेश होने के अगले दिन ही ताला पड़ गया । कुल मिलाकर टंडन की अच्छी-खासी दुर्गति हो रही थी ।

●●●

चौथे दिन बलदेवराज टंडन को वापस कोर्ट रुम में पेश किया गया ।

मुंबई पुलिस ने अपनी रिपोर्ट में लिखा-

काफी टॉर्चर करने के बावजूद भी बलदेवराज टंडन ने अपनी जबान नहीं खोली है । वह किसी भी हालत में यह बताने को तैयार नहीं कि उसने महेश खोखा का खून क्यों किया । पुलिस को लगता है कि जरूर

बलदेवराज टंडन का जुपिटर क्लब में जाकर रंगरेलियाँ मनाने का रहस्य ही महेश खोखा को पता चल गया था और वही उसकी मौत का कारण बना। जबकि टंडन अब इस रहस्य के ऊपर से पर्दा इसलिए नहीं उठा रहा, क्योंकि वह नहीं चाहता कि उसके नाम के साथ एक नया स्कैंडल जुड़े।

धन्यवाद

मुंबई पुलिस !

अदालत में सबके सामने मुंबई पुलिस की वह रिपोर्ट पढ़ी गई और फिर न्यायाधीश महोदय ने अपना फैसला सुनाया।

"जैसाकि पिछली पेशी पर ही मान लिया गया था।" न्यायाधीश महोदय की भारी-भरकम आवाज़ गूँजी, "कि तमाम सबूतों और गवाहों के बयान के मद्देनजर इस बात में कोई शक-शुबहा नहीं कि बलदेवराज टंडन ही महेश खोखा का खूनी है और उसी ने 3 अप्रैल को शाम 7:00 बजे जसलोक हॉस्पिटल में पहुँचकर उसका मर्डर किया था। इसलिए यह अदालत इंडियन पेनल कोड की दफा 302 के तहत बलदेवराज टंडन को फाँसी की सजा सुनाती है।"

टंडन को वह सजा सुनाते ही न्यायधीश महोदय ने अपनी कलम का निब वहीं डेस्क पर तोड़ दिया।

"नहीं-नहीं जज साहब !" बलदेवराज टंडन गला फाड़कर चिल्ला उठा, "यह इंसाफ नहीं है। मैं खूनी नहीं हूँ।"

मगर उसकी किसी ने न सुनी।

पुलिस, बलदेवराज टंडन को कोर्ट रुम से घसीटते हुए ले गई।

●●●

हरिनारायण आप्टे उस समय अपने केबिन में थे और उत्साहित दिखाई पड़ रहे थे।

उन्होंने यशवंत गवली से बहुत गर्मजोशी के साथ कसकर हाथ मिलाया।

"वेलडन, वेलडन ऑफिसर !" वह उत्साहपूर्वक ही बोले, "तुमने सचमुच एक बेहतरीन कारनामा अंजाम दिया है। यह देखो, आज के तमाम अखबार तुम्हारी तारीफों से रंगे पड़े हैं। एक बार फिर तुम्हारी बदौलत क्राइम ब्रांच हैडक्वार्टर की नाक ऊँची हुई है।" यह शब्द कहते हुए हरिनारायण आप्टे ने देश भर के काफी सारे अखबार उसकी आँखों के सामने बिखेर दिए।

इंडियन एक्सप्रेस।

टाइम्स ऑफ इंडिया।

सामना।

नवभारत टाइम्स।

हिंदुस्तान।

जनसत्ता।

सबके कवर पेज यशवंत गवली की फोटो और उसकी तारीफों से रंगे हुए थे।

"थैंक्यू सर !" यशवंत गवली ने एक सरसरी-सी निगाह उन सब अखबारों पर डाली।

"इतना ही नहीं ऑफिसर !" हरिनारायण आप्टे बोले, "बलदेवराज टंडन नामक उस शातिर आदमी की फाँसी की तारीख भी फाइनल हो गई है। उसे 10 मई को दोपहर ठीक 12:00 बजे फाँसी पर चढ़ा दिया जाएगा।"

"10 मई !"

"हाँ ऑफिसर !"

यशवंत गवली खामोश रहा। शांत। उसका चेहरा बुझा-बुझा था।

"क्या बात है ऑफिसर !" हरिनारायण आप्टे उसकी मनःस्थिति भाँपकर बोले, "क्या तुम बलदेवराज टंडन को यह सजा मिलने से खुश नहीं हो ?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं सर !"

"तो फिर क्या बात है ?"

"मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं । भागा-दौड़ी करते-करते थक गया हूँ । अब घर जाकर थोड़ा आराम करना चाहता हूँ ।"

हरिनारायण आप्टे कौतूहलता से यशवंत गवली को देखते रह गए ।

जबकि यशवंत गवली मुड़ा और वहाँ से चला गया ।

हरिनारायण आप्टे उसे जाते देखते रहे । पहली बार, शायद जीवन में पहली बार उन्हें यह एहसास हुआ था कि यशवंत गवली उनसे अपने दिल की कोई बात छुपा रहा है ।

क्या ?

यह हरिनारायण आप्टे न समझ सके ।

●●●

तारीख 9 मई ।

समय रात्रि के 2:00 बजे ।

उस रात यशवंत गवली की आँखों में नींद नहीं थी । वह अपने बेडरूम में बेचैनीपूर्वक इधर से उधर टहल रहा था । बार-बार सिगरेट के कश लगाता । सामने ही एश-ट्रे रखी हुई थी जिसमें ढेर सारे सिगरेट के टोटे जमा हो चुके थे ।

उसने अपनी रिस्टवॉच देखी । बलदेवराज टंडन को फाँसी होने में अब सिर्फ 10 घंटे बाकी थे ।

फिर एकाएक यशवंत गवली को न जाने क्या सूझा कि उसने आगे बढ़कर टेलीफोन का रिसीवर उठाया और उस आधी रात के वक्त किसी का नंबर डायल किया । दूसरी तरफ घंटी जाने लगी । काफी देर तक घंटी जाती रही । या तो दूसरी तरफ कोई था नहीं या फिर गहरी नींद सोया हुआ था । पूरी घंटी जाने के बाद लाइन कट गई । यशवंत गवली ने फिर भी हिम्मत नहीं हारी । उसने दोबारा वही नंबर डायल किया ।

फिर घंटी जाने लगी ।

इस बार रिसीवर उठाया गया ।

"कौन है बाबा ?" एक बहुत उनींदी आवाज रिसीवर पर उभरी ।

"रागिनी ?"

"बोल रही हूँ ।"

"मैं यशवंत गवली ।"

दूसरी तरफ एकदम खामोशी छा गई ।

ऐसा लगा यह नाम सुनकर नींद भक्क से उड़ी हो ।

"अ... ऑफिसर, आप !" रागिनी का आश्चर्य मिश्रित स्वर, "इ... इतनी रात गए ?"

"हाँ, मैं थोड़ी उलझन में था । सोचा, तुमसे ही बात कर लूँ ।"

"आखिर क्या हुआ ऑफिसर ?" रागिनी की नींद पूरी तरह गायब हो चुकी थी, "आपकी तबीयत... ।"

"मेरी तबीयत को कुछ नहीं हुआ ।" यशवंत गवली ने उसकी बात बीच में ही काटी, "रागिनी, क्या तुम अभी यहाँ आ सकती हो ?"

"अभी !"

"हाँ ।"

"लेकिन... ।"

"सवाल नहीं, और अगर सावंत को भी अपने साथ ले आओ तो और भी बेहतर होगा ।"

"सावंत भी !"

"हाँ ।"

"क्या कुछ जरूरी काम है ?"

"जरूरी ही समझो ।"

रागिनी खामोश हो गई । स्थिति की गंभीरता को अब वह भी समझने लगी थी, क्योंकि यशवंत गवली ने उससे पहले कभी इतनी आधी रात को फोन नहीं किया था ।

"ठीक है ऑफिसर !" वह बोली, "मैं आती हूँ ।"

लाइन कट गई ।

●●●

ठीक एक घंटे बाद यानी रात के तीन बजे यशवंत गवली, रागिनी और सावंत ड्राइंग हॉल में सेंटर टेबल के इर्द-गिर्द बैठे थे ।

रागिनी और सावंत के चेहरे पर उस समय ऐसे गहन आश्चर्य के चिन्ह थे, मानो उनके बीचो-बीच सेंटर टेबल पर साक्षात ताजमहल उतर आया हो ।

"यानी आप यह कहना चाहते हैं ऑफिसर !" रागिनी सनसनाये स्वर में बोली, "जिस बलदेवराज टंडन को सुबह फाँसी लगने वाली है, वह निर्दोष है । उसने महेश खोखा का खून नहीं किया ?"

"करेक्ट ।" यशवंत गवली पूरी संजीदगी के साथ अभी भी सिगरेट के कश लगा रहा था, "मैं यही कहना चाहता हूँ ।"

"लेकिन सबूत... ।"

"दरअसल जिन सबूतों की तुम बात कर रही हो ।" यशवंत गवली बोला, "उन्हीं सबूतों ने मेरे दिमाग में यह शक पैदा किया है कि वह निर्दोष है ।"

सावंत भी अब विस्मय से पलकें झपकाता हुआ यशवंत गवली को देखने लगा ।

यूँ देखने लगा मानो वह दुनिया के नौवें आश्चर्य को देख रहा हो ।

"हम कुछ समझे नहीं ऑफिसर !"

"समझाता हूँ ।" यशवंत गवली ने सिगरेट का टोटा एश-ट्रे में रगड़कर बुझाया, "जरा सोचो, बलदेवराज टंडन, जो इतना चालाक आदमी है कि उसने महेश खोखा का मर्डर करने के बाद उसके इल्जाम में अभय मल्होत्रा को फंसा दिया । इतना ही नहीं, मर्डर के बाद मर्डर स्पॉट पर बिल्कुल वैसी ही प्लास्टिक की साँप-सीढ़ी भी छोड़ी और बिल्कुल उसी तरह के मेक वाले रिवॉल्वर से कत्ल किया जैसे रिवॉल्वर से अभय मल्होत्रा कत्ल करता था । तो वही आदमी इतना पागल, इतना मूर्ख कैसे हो सकता है कि उसने अपने घर और ऑफिस में ही कत्ल के सारे सबूत छुपाकर रखे । वह सारे सबूत तो उस चालाक आदमी ने तभी मर्डर करने के बाद ही नष्ट कर देने चाहिए थे ।"

यशवंत गवली की बात सुनकर रागिनी और सावंत दोनों चौंक उठे ।

उन्होंने एक-दूसरे की तरफ देखा ।

"अ... आप कहना क्या चाहते हैं ऑफिसर ?" रागिनी बोली ।

"कहीं ऐसा तो नहीं रागिनी !" यशवंत गवली का स्वर सनसनाया हुआ था, "कि कोई हमारे साथ गेम खेल रहा हो । हमें डबल क्रॉस किया जा रहा हो ?"

"यानी आपके कहने का मतलब यह है ऑफिसर; कि महेश खोखा का खून किसी और ने किया तथा उसके इल्जाम में फंसाया बलदेवराज टंडन को जा रहा है ?"

"क्यों, क्या ऐसा नहीं हो सकता ?"

रागिनी और सावंत एक बार फिर एक-दूसरे की तरफ देखने के लिए विवश हो गए । उनका दिमाग फिरकनी बन चुका था ।

"दरअसल यह बात उसी दिन से मेरे दिमाग में बज रही है ।" यशवंत गवली बोला, "जब अदालत में टंडन के खिलाफ तमाम सबूत पेश किए गए, मगर उसके बावजूद भी उसने चिल्ला-चिल्लाकर एक ही बात कही, वह निर्दोष है, वह निर्दोष है । फिर मेरे आश्चर्य की सीमा तब और बढ़ी जब बलदेवराज टंडन को 3 दिन की पुलिस रिमांड में भेजा गया और वहाँ खूब टॉर्चर होने के बावजूद भी उसने यह नहीं बताया कि महेश खोखा के कत्ल की वजह क्या थी ! जबकि जितना टॉर्चर उसे किया गया था दोस्तों, इतना टॉर्चर होने के बाद तो बड़े से बड़ा घुटा हुआ आदी मुजरिम भी अपने पेट से सच्चाई उगल देता ।"

"उसने क्यों नहीं उगली ?"

"उसने सच्चाई इसलिए नहीं उगली क्योंकि उसके पास उगलने के लिए कोई सच्चाई थी ही नहीं । वह महेश खोखा के कत्ल की वजह तो तब बयान करता, जब उसने वास्तव में महेश खोखा का कत्ल किया होता ।"

दोनों अपनी-अपनी जगह सन्नाटे में बैठे रहे ।

केस एक बार फिर बड़े हंगामाखेज ट्रैक पर कदम रख रहा था । नई-नई चौंका देने वाली बातें सामने आ रही थीं ।

"लेकिन अगर कोई हमारे साथ गेम खेल रहा है, हमें डबल क्रॉस कर रहा है ।" सावंत बोला, "तो वह कौन हो सकता है ?"

"सिर्फ एक ही शख्स ऐसा है ।" यशवंत गवली बोला, "जो यह काम कर सकता है ।"

"कौन ?"

यशवंत गवली ने उस शख्स का नाम बताया ।

और वह नाम सुनकर उन दोनों के दिमाग में पहले से भी ज्यादा जबरदस्त विस्फोट हुआ ।

दोनों अचंभित रह गए ।

●●●

सुबह का वक्त था । क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर में शुभांगी की चीखें गूँज रही थी ।

"यह क्या हरकत है ?" शुभांगी चिल्लाई, "मैं पूछती हूँ, मुझे इस तरह यहाँ गिरफ्तार करके क्यों लाया गया है ?"

"यह यशवंत का हुक्म है ।"

"यशवंत !" शुभांगी चौंकी, "लेकिन यशवंत ऐसा क्यों करेंगे ?"

इस सवाल का जवाब यशवंत से ही पूछना ।

शुभांगी को इंटेरोगेशन रुम में लोहे की उसी कुर्सी पर कसकर बाँध दिया गया जिस कुर्सी पर कभी बलदेवराज टंडन को बाँधा गया था ।

उसी पल यशवंत गवली, रागिनी और सावंत भी वहाँ आ गए ।

उनके आते ही दूसरे क्राइम ब्रांच एजेंट वहाँ से चले गए ।

"ऑफिसर !" शुभांगी फिर चिल्लाई, "यह क्या हरकत है ? मुझे इस तरह गिरफ्तार क्यों किया गया ?"

यशवंत गवली ने बहुत इत्मीनान के साथ सिगरेट सुलगाई और उसका ढेर सारा धुआँ छत की तरफ उछाला।

वह अभी भी गंभीर था।

"क्या अब इस सवाल का जवाब भी मुझे ही देना होगा ?"

शुभांगी चौंकी।

यशवंत गवली के चेहरे पर ऐसा कुछ था, जिसे देखकर कोई भी चौंक उठता।

"मैं कुछ समझी नहीं ऑफिसर !"

"समझना तो मैं चाहता हूँ शुभांगी ! तुम्हारी प्लानिंग को। आखिर तुमने हमारे साथ इतना बड़ा गेम खेला तो क्यों खेला ?"

"ग... गेम !"

"ऑफकोर्स, गेम ! क्या यह सच नहीं कि जिस बलदेवराज टंडन ने महेश खोखा का खून नहीं किया, मगर इसके बावजूद हमें उसके खिलाफ सबूत मिलते चले गए। कैसे ? जब वह निर्दोष था तो हमें वह सबूत कैसे मिले ? जवाब दो।"

शुभांगी अब साफ-साफ बेचैन दिखाई पड़ी।

उसके माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा उठी।

"वह कौन था जो हमें डबल क्रॉस कर रहा था शुभांगी ?" यशवंत गवली चिल्लाया, "क्या वह तुम नहीं थीं, जो एक निर्दोष आदमी को कत्ल के जुर्म में उलझाती चली गईं ?"

"म... मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।" शुभांगी ने अपने शुष्क अधरों पर जबान फेरी।

"तुम झूठ बोल रही हो, सफेद झूठ।" यशवंत गवली का चेहरा ज्वालामुखी का दहाना बन गया, "सच तो यह है कि तुमने शुरू से लेकर अभी तक चाल ही चली है। सिर्फ चाल। तुम्हारे द्वारा उठाया गया हर एक कदम सिर्फ कानून को गुमराह करने के लिए था।"

"यह झूठ है।"

"यह सच है।"

तभी सावंत की निगाह वहीं दीवार पर लगे वॉल क्लॉक पर जाकर अटक गई, जिसमें बारह बजने ही वाले थे।

"ऑफिसर !" सावंत व्याकुल भाव से बोला, "शुभांगी से हम बाद में भी पूछताछ कर सकते हैं। सबसे पहले हमें बलदेवराज टंडन की फाँसी रोकनी चाहिए, क्योंकि अगर कहीं उस निर्दोष आदमी को फाँसी हो गई तो इस पूछताछ का भी कोई नतीजा न निकलेगा।"

"सही बात है ऑफिसर !" रागिनी ने भी कहा, "सबसे पहले हमें यही कदम उठाना चाहिए।"

"जेल फोन लगाओ।"

इंट्रोगेशन रूम के एक कोने में ही टेलीफोन इंस्ट्रूमेंट रखा हुआ था। रागिनी ने आगे बढ़कर उसका रिसीवर उठाया और कोई नंबर डायल किया। उसके बाद उसने जेलर से बलदेवराज टंडन की फाँसी रोकने संबंधी बात की।

एकाएक बोलते-बोलते रागिनी के चेहरे का रंग उड़ गया।

उसने हताश भाव से टेलीफोन का रिसीवर अपने कान से नीचे किया और यशवंत गवली की तरफ देखा।

"क्या बात है ?" यशवंत गवली बोला, "क्या हुआ रागिनी ?"

"स... सॉरी ऑफिसर ! बलदेवराज टंडन को बिल्कुल अभी-अभी फाँसी पर लटका दिया गया है। वह मर चुका है।"

"ओह शिट ! इट्स इम्पॉसिबल ।"

"यह सच है ऑफिसर !"

जबकि बलदेवराज टंडन को फाँसी लगने की खबर सुनकर शुभांगी एकाएक जोर से खिलखिलाकर हँस पड़ी ।

उसकी हँसी दहला देने वाली थी ।

खौफ से भरी ।

शुभांगी को एकाएक यूँ वहशियों की तरह खिलखिलाकर हँसते देख सबका ध्यान उसकी तरफ गया ।

"क्या बात है ?" यशवंत गवली बोला, "तुम इस तरह क्यों हँस रही हो ?"

"ऑफिसर, तुम यह समझ रहे हो कि बलदेवराज टंडन को तुम्हारे कानून ने फाँसी दी है !" शुभांगी खिलखिलाकर हँसते हुए ही बोली, "नहीं ऑफिसर, नहीं ! बलदेवराज टंडन का मर्डर हुआ है, मर्डर ।"

धमाका हो गया ।

जबरदस्त धमाका ।

मानो इंटेरोगेशन रूम में रखा कोई बम फट पड़ा हो ।

"म... मर्डर !" यशवंत गवली सहित सब चौंके, "क्या कह रही हो तुम ? किसने किया बलदेवराज टंडन का मर्डर ?"

"अभय मल्होत्रा ने ।" शुभांगी खुशी से चिल्लाते हुए बोली, "अभय ने मारा है उसे ।"

"अभय ने ! क्या बकवास कर रही हो तुम !" यशवंत गवली के दिमाग में एक के बाद एक सस्पेंस के अनार छूट रहे थे, "लेकिन अभय मल्होत्रा को तो खुद फाँसी लग चुकी है ।"

"हाँ, मर चुका है अभय मल्होत्रा !" शुभांगी एक-एक शब्द चबाते हुए बोली, "फाँसी लग चुकी है उसे । लेकिन जानते हो ऑफिसर, बलदेवराज टंडन का यह खून एक मरे हुए आदमी ने ही किया है । इतना ही नहीं, महेश खोखा का मर्डर भी उसी ने किया था । एक फाँसी पर चढ़ते आदमी ने आपसे झूठ बोला था, सफेद झूठ कि महेश खोखा का मर्डर उसने नहीं किया ।"

सब अपनी-अपनी जगह सन्न रह गए सन्न ! जैसे उनके हाथ-पैरों की जान निकल गई हो ।

जैसी उनका मस्तिष्क उड़नतश्तरी बन गया हो ।

"लेकिन अभय मल्होत्रा ने उन सबके मर्डर क्यों किए ?" यशवंत गवली बोला, "उसकी उनसे क्या दुश्मनी थी ?"

"वह एक लंबी कहानी है ऑफिसर !"

"फिर भी, मैं वह पूरी कहानी जानना चाहता हूँ ।" यशवंत गवली ने बेचैनी के साथ सिगरेट का एक कश और लगाया ।

"ठीक है ।" शुभांगी गहरी साँस लेकर बोली, "अगर आपकी यही इच्छा है तो मैं आपको सबकुछ बताऊँगी, सबकुछ । यह तो आप जानते ही हैं कि अभय मल्होत्रा के डैडी सुरेंद्र प्रताप मल्होत्रा भी एक बड़े अखबार के मालिक थे और यह बलदेवराज टंडन उनके अखबार में सब-एडिटर की नौकरी किया करता था । मगर टंडन को इस बात का बड़ा घमंड था कि उनका अखबार सिर्फ उसकी बदौलत चलता है । इसीलिए वह अक्सर ऑफिस में बदतमीजी से भरी हरकतें भी किया करता था । फिर एक दिन उसकी बदतमीजी मानो सभी हदों को पार कर गई । ऑफिस में एक घटना घटी, बड़ी घटना ।"

"कैसी बड़ी घटना ?" यशवंत गवली की निगाहें शुभांगी के चेहरे पर ही टिकी थी ।

"एक दिन अखबार थोड़ा मिस प्रिंट होने की वजह से बलदेवराज टंडन ने मशीन मैन को इतनी जोर से झापड़ मारा ।" शुभांगी बोली, "कि मशीन मैन उछलकर चलती हुई मशीन पर जा गिरा और अपनी एक टांग गवा बैठा । सुरेंद्र प्रताप मल्होत्रा जैसे शरीफ आदमी के लिए टंडन की वह हरकत बर्दाश्त से बाहर थी ।

उस दिन सुरेंद्र प्रताप मल्होत्रा और टंडन के बीच जबरदस्त झगड़ा हुआ और उन्होंने उसे खड़े पांव नौकरी से निकाल दिया।"

बोलते-बोलते शुभांगी ने गहरी साँस ली।

न सिर्फ यशवंत गवली बल्कि रागिनी और सावंत भी उसकी एक-एक बात बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

"लेकिन जानते हो ऑफिसर !" शुभांगी लोहे की कुर्सी पर बंधे-बंधे बोली, "टंडन उस दिन जाते-जाते सुरेंद्र प्रताप मल्होत्रा को एक धमकी देकर गया।"

"कैसी धमकी ?"

"उसने चिल्लाकर कहा कि वह 3 महीने के अंदर-अंदर मुंबई शहर में एक उनसे भी बड़ा अखबार खड़ा करके दिखाएगा। तब उसने मुम्बई टाइम्स की शुरुआत की। लेकिन किसी भी नए अखबार को चलाना आसान काम नहीं होता। 2 महीने में ही टंडन को लगने लगा ऑफिसर, वह अपना चैलेंज पूरा नहीं कर पाएगा ! तब उसने अपने अखबार को चलाने के लिए एक नया गेम खेला।"

"अखबार को चलाने के लिए गेम !" रागिनी के स्वर में अचरज पैदा हुआ, "कैसा गेम ?"

"उसने पूरे मुंबई शहर से 8 अपराधी चुने जो एक से एक शातिर थे और बड़े-बड़े अपराध कर चुके थे।" शुभांगी बोली, "उसने उन सभी 8 अपराधियों का एक ग्रुप बनाया जिसमें सलीम और महेश खोखा भी शामिल थे।"

"अपराधियों का ग्रुप !" यशवंत गवली ने चौंककर सिगरेट का एक छोटा-सा कश और लगाया, "लेकिन अपराधियों का ग्रुप किसलिए बनाया उसने ?"

"अपने अखबार की सरकुलेशन बढ़ाने के लिए। दरअसल वह आठों रात को मुंबई शहर में घूम-घूमकर मर्डर किया करते थे और उसके बाद वह खबर सबसे पहले मुम्बई टाइम्स के मुख्य पृष्ठ पर छपती, जिससे मुम्बई टाइम्स अखबार की सेल एकाएक रातों-रात बढ़ने लगी।"

यह बात सुनकर तीनों चौंके।

तीनों के चेहरे पर गहन उत्कंठा के भाव उभरे।

"ओह !" सावंत बोला, "अपने अखबार की सरकुलेशन बढ़ाने के लिए काफी डेंजर गेम खेला बलदेवराज टंडन ने।"

"उससे भी ज्यादा डेंजर गेम उसने एक और खेला।" शुभांगी ने लोहे की कुर्सी पर बैठे-बैठे कहा।

"क्या ?"

"सुरेंद्र प्रताप मल्होत्रा को किसी प्रकार मुम्बई टाइम्स की रातों-रात सेल बढ़ने का रहस्य पता लग गया था। तब उन्होंने हमदर्दी के नाते टंडन को फोन किया और उसे समझाया कि वह इस तरह के काम न करें। इससे वह कभी खुद ही कानून की गिरफ्त में फंस सकता था। अब टंडन को यह खतरा हुआ कि कहीं सुरेंद्र प्रताप मल्होत्रा ही पुलिस को सबकुछ न बता दे। तब वह उसी रात को अपने आठों अपराधियों के साथ सुरेंद्र प्रताप मल्होत्रा के घर जा पहुँचा तथा उनके पूरे परिवार का मर्डर कर डाला।"

एक और धमाका हुआ।

जबरदस्त धमाका।

"यानी।" यशवंत गवली विस्फारित लहजे में बोला, "यानी अभय मल्होत्रा के मम्मी-डैडी और बहन का मर्डर बलदेवराज टंडन ने ही किया था ?"

"बिल्कुल। यह बात अलग है, कानून ने उनके खिलाफ कुछ नहीं किया।" शुभांगी भभके स्वर में बोलती चली गई, "और इसीलिए अभय मल्होत्रा एक-एक करके उन सबको मार रहा था। उन सबसे अपने परिवार की मौत का बदला ले रहा था। दरअसल उसे अपने डैडी की बंद मुट्ठी से प्लास्टिक की एक साँप-सीढ़ी मिली थी और उसी से वह भाँप गया था कि उसके परिवार की तबाही का असल जिम्मेदार कौन है।

इसीलिए वह हर मर्डर करने के बाद मर्डर स्पॉट पर प्लास्टिक की एक साँप-सीढ़ी छोड़ता था, ताकि दुश्मन के खिलाफ उसी का हथियार इस्तेमाल कर सके। मगर टंडन फिर भी न समझ सका कि यह सब कौन कर रहा है।"

"ओह !"

हर मामला चौंका देने वाला था।

आश्चर्यपूर्ण।

उस केस में दो कदम चलते नहीं थे कि रहस्य के नए-नए पत्ते खुलने लगते।

"लेकिन जानते हो ऑफिसर !" शुभांगी बोली, "अभय मल्होत्रा की बदकिस्मती ने यहाँ भी उसका पीछा नहीं छोड़ा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि उसने आठों अपराधियों को तो मार डाला।" शुभांगी बोली, "मगर वह अपने हाथों से बलदेवराज टंडन का भी मर्डर करता, उससे पहले ही आपने उसे पकड़ लिया। कोर्ट ने उसे फाँसी की सजा सुनाई और... और...।"

"और क्या ?" यशवंत गवली के स्वर में सस्पेंस झलका।

"और तब जेल में, मैं उससे जाकर मिली थी ऑफिसर !" शुभांगी खोये-खोये स्वर में बोली। उसके चेहरे पर जलजले जैसे भाव उभरे, "बहुत उदास था वह, बहुत ज्यादा। जानते हो ऑफिसर, मैंने जिंदगी में पहले कभी उसे इतना उदास नहीं देखा था ! उसकी मुस्कान तो जैसे कहीं खो गई थी।"

यह शब्द बोलते-बोलते शुभांगी की आँखों में अतीत का कोई चलचित्र मंडराने लगा।

वह चलचित्र, जब वह जेल में अभय मल्होत्रा से जाकर मिली थी।

●●●

अभय मल्होत्रा उस दिन भी हमेशा की तरह चबूतरे पर लेटा था और बड़े शून्य भाव से छत को निहार रहा था। उसके हाथ में वही चॉक था जिससे वह अपनी मौत की घड़ियों का हिसाब लिखता।

"शुभांगी !" शुभांगी को देखते ही वह जल्दी से चबूतरा छोड़कर खड़ा हो गया और सींखचों के नजदीक आया, "आओ शुभांगी !"

शुभांगी भी सींखचों से बिल्कुल सटकर खड़ी हो गई।

सींखचे उसने सख्ती के साथ पकड़ लिए और अंदर से टूट पड़ने वाली रुलाई को बड़ी मुश्किल के साथ रोका।

"नहीं-नहीं। रोते नहीं शुभांगी !" अभय मल्होत्रा का स्वर बिल्कुल बच्चों जैसा था। उसने शुभांगी के हाथों को छुआ जैसे कोई नन्ना-मुन्ना बच्चा चांद छू रहा हो, "अगर तुम ही रो पड़ोगी, तो क्या मैं भी नहीं रोऊँगा।"

"अ... अभय !" शुभांगी के मुँह से तेज सिसकारी छूटी।

वह अभय मल्होत्रा से कसकर चिपट गई। सींखचे उनके बीच थे भी और नहीं भी थे।

"यह सब क्या हो गया अभय ?"

"एक बार तुम्हीं ने तो कहा था, किस्मत की लकीरों को कोई नहीं बदल सकता। यह सींखचें फिर शायद मेरी किस्मत की वह लकीरे हैं, जो हम दोनों के बीच फासला बनकर खड़े हो गए हैं और फाँसी होते ही यह फासला उम्र का भी फासला बन जाएगा।"

"अ... अभय !"

रोकना चाहते हुए भी शुभांगी की आँखों में आँसू छलछला आए।

फफक उठी वह ।

"रोते नहीं पगली, रोते नहीं !" अभय मल्होत्रा ने अपनी उंगलियों से शुभांगी के आँसू पोछे ।

"एक बात बोलूँ अभय ?"

"बोलो ।"

"तुमने उन आठों को तो मार डाला ।" शुभांगी की आवाज भावनाओं के वेग से काँप रही थी, "लेकिन तुम्हारे परिवार का असली मुजरिम बलदेवराज टंडन तो अभी भी जिंदा है । सड़क पर खुला घूम रहा है वह । उसे तुम कैसे सजा दोगे ?"

"मरेगा, वह भी मरेगा ।" अभय मल्होत्रा की आवाज भभक उठी, "उसे मरना होगा ।"

"लेकिन कैसे अभय ? तुम्हें तो बहुत जल्द फाँसी लगने वाली है ?"

अभय मल्होत्रा जोर से खिलखिलाकर हँसा । खूब जोर से । फिर वह एकाएक गंभीर होता चला गया ।

"जानती हो शुभांगी !" अभय मल्होत्रा की आवाज में अब पूरा-पूरा पागलपन झलक रहा था, "अभी तक आठ मर्डर किसने किए ?"

"क... किसने किए ?" शुभांगी का कौतूहलतापूर्ण स्वर ।

"यह मर्डर एक माँ-बाप के बेटे ने किए ।" अभय मल्होत्रा के चेहरे पर वहशीपन था, "एक बहन के भाई ने किए, लेकिन अब बलदेवराज टंडन का मर्डर, उस हरामजादे का मर्डर क्रिमिनोलॉजी का वह स्टूडेंट करेगा, जो हमेशा अपने कॉलेज को टॉप करता आया है । वह मर्डर मैं मरने के बाद करूँगा ।"

"मरने के बाद ! मगर कैसे ? मरने के बाद कोई भी आदमी मर्डर कैसे कर सकता है ?"

"करेगा, इस बार एक आदमी मरने के बाद ही मर्डर करेगा । बस इस मर्डर को करने में तुम्हें मेरी थोड़ी-सी हेल्प करनी होगी शुभांगी ! करोगी न मेरी हेल्प ?"

"क्यों नहीं ! तुम्हारे लिए तो मैं कुछ भी कर सकती हूँ अभय !"

"मुझे तुमसे यही उम्मीद है शुभांगी, यही उम्मीद है !"

अभय मल्होत्रा के हाथ शुभांगी के हाथों पर और भी ज्यादा मजबूती के साथ कस गए ।

●●●

शुभांगी की आँखों में आँसुओं की नन्ही-नन्ही बूंदें झिलमिला रही थीं । अभय मल्होत्रा की याद आते ही वह अपनी आँखों में आँसू आने से न रोक सकी ।

शुभांगी उस समय भी क्राइम ब्रांच हेडक्वार्टर के इंटेरोगेशन रूम में ही मौजूद थी और लोहे की कुर्सी पर कसकर बंधी बैठी थी ।

यशवंत गवली, रागिनी और सावंत पहले की तरह उसके इर्द-गिर्द खड़े थे ।

"और फिर मैंने अभय मल्होत्रा की हेल्प की थी ऑफिसर !" शुभांगी भाव विह्वल स्वर में बोली, "अभय मल्होत्रा यह झूठ बोलकर कि महेश खोखा का मर्डर उसने नहीं किया, टंडन की मौत का आधार तो पहले ही तैयार कर गया था । फिर मैंने सिर्फ एक काम किया कि आप लोगों के साथ मिलकर जगह-जगह ऐसे सबूत प्लांट करती चली गई, जिनसे यह जाहिर हो कि महेश खोखा का मर्डर बलदेवराज टंडन ने किया है ।"

"यानी हमें बलदेवराज टंडन के ऑफिस और उसके घर से जितने सबूत मिले थे, वह सब तुमने प्लांट किए ?"

"ऑफकोर्स ऑफिसर, मैंने प्लांट किए थे, मैंने !" शुभांगी पूरी दिलेरी के साथ बोलती चली गई, "और मुझे ऐसा करने के लिए अभय मल्होत्रा ने कहा था । पूरी प्लानिंग उसकी थी । कब-कब मैंने क्या-क्या करना है, वह इसकी पूरी रुपरेखा मुझे पहले ही एक कागज पर लिखकर दे गया था । यहाँ तक कि आप लोगों के साथ मिलकर आपको इमोशनली ब्लैकमेल करके महेश खोखा मर्डर केस की रि-इन्वेस्टिगेशन

कराने का आइडिया भी उसी का था। मैं तो सिर्फ एक कठपुतली की तरह उसकी प्लानिंग को कार्यान्वित करती चली गई और ऊपर से किस्मत ने भी हमारा भरपूर साथ दिया। उनके खिलाफ अपने आप ही कुछ ऐसे सबूत मिल गए जिनकी बिना पर वह शक के दायरे में खड़ा होता था और जिनकी उसके पास कोई ऐलीबाई भी नहीं थी।"

"यानी वह सिर्फ एक इत्तेफाक ही था।" यशवंत गवली विस्मयकारक स्वर में बोला, "जो मराठा मंदिर शो के दो टिकट टंडन की जेब में रह गए और उसके पास उस आधे पौन घंटे की कोई ऐलीबाई भी नहीं थी, जब वह शो के बीच में से उठकर गया था।"

"हाँ ऑफिसर ! वह एक इत्तेफाक ही था, मगर खतरनाक इत्तेफाक।" शुभांगी ने मुस्कुराकर कहा, "बहरहाल मुझे खुशी है, आज अभय मल्होत्रा जीत गया। अभय ने मरने के बाद भी अपने माँ-बाप और बहन की मौत का बदला ले लिया।"

शुभांगी यह सब कहकर एकाएक जोर-जोर से खिलखिलाकर हँसने लगी।

खूब जोर-जोर से।

वह मानो खुशी से पागल हो रही थी।

वह मानो अभय मल्होत्रा की जीत का जश्न मनाने पर तुली थी।

●●●

जबकि यशवंत गवली अब गहरी साँस लेकर वही इंटेरोगेशन रूम में पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया तथा उसने सिगरेट का आखिरी कश लगाकर उसका टोटा एश-ट्रे में बुझाया।

"कितना टाइम हुआ है ?" यशवंत गवली ने रागिनी से पूछा।

रागिनी ने एक सरसरी-सी निगाह अपनी रिस्टवॉच पर डाली, "अभी सिर्फ 11:30 बजे हैं ऑफिसर ! आपके कहने के मुताबिक मैंने इंटेरोगेशन रूम की वॉल क्लॉक पहले ही एक घंटा आगे कर दी थी। अभी बलदेवराज टंडन को फाँसी नहीं हुई होगी।"

"गुड। फौरन जेल फोन लगाओ और टंडन की फाँसी रोको।"

शुभांगी ने जैसे ही यशवंत गवली के यह शब्द सुने, उसकी हँसी भक्क से उड़ गई।

अभय मल्होत्रा की जीत का जश्न मनाना तो वह एक झटके में भूल गई थी।

"य... यह आप लोग क्या कह रहे हैं ?" शुभांगी हैरानीपूर्वक बोली, "टंडन को अभी फाँसी नहीं हुई ?"

"नहीं, वह अभी जिंदा है।" यशवंत गवली गंभीरतापूर्वक बोला, "अगर चाल खेलना अभय मल्होत्रा जानता था, तो नहले पर दहला मारना हम भी जानते हैं। तुमसे सच्चाई उगलवाने के लिए हमने यह सारा नाटक खेला। इतना ही नहीं, रागिनी ने थोड़ी देर पहले जेल में जो बात की, वह भी उसका ड्रामा था। वह वन साइड कन्वर्सेशन था।"

यशवंत गवली अब अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ और खुद ही टेलीफोन इंस्ट्रूमेंट की तरफ बढ़ा।

यशवंत गवली ने जैसे ही टेलीफोन का रिसीवर उठाया, शुभांगी चीख उठी।

"नहीं ऑफिसर, नहीं !" उसके स्वर में हद दर्जे तक याचना झलकी, "मेरा अभय हार नहीं सकता। टंडन की फाँसी मत रोको। यह सच है कि टंडन ने महेश खोखा का मर्डर नहीं किया लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि टंडन निर्दोष था। उसने अभय मल्होत्रा के पूरे परिवार का मर्डर किया। इसके अलावा इस शहर में और न जाने कितने बेगुनाह लोग हैं, जिनका खून उसके सिर है। अभय मल्होत्रा को उसके किए की सजा मिल चुकी है ऑफिसर; लेकिन अब बलदेवराज टंडन को भी सजा मिलनी चाहिए ! उसे फाँसी होने दो ऑफिसर, प्लीज होने दो !"

एक क्षण के लिए, सिर्फ एक क्षण के लिए यशवंत गवली के रिसीवर पर हाथ ठिठके।

"मैं एक बात कहूँ ऑफिसर !" सावंत भी थोड़ी उदासी के साथ आगे बढ़ा ।

यशवंत गवली ने उसकी तरफ देखा ।

"मैं नहीं जानता कि यह सही है या गलत, मगर मुझे लगता है कि शुभांगी ठीक कह रही है ।" सावंत गंभीरतापूर्वक ही बोला, "जो आदमी इतनी हत्याओं का जिम्मेदार है उस शैतान को फाँसी होनी ही चाहिए । सच तो यह है कि अभय मल्होत्रा को भी अगर कोई जैंटलमैन किलर बनाने का दोषी है, तो वही है ।"

"यस ऑफिसर !" रागिनी का स्वर भी जज्बाती था, "दिस इस क्वाइट राइट ।"

यशवंत गवली फिर भी काफी देर टेलीफोन का रिसीवर हाथ में लिए खड़ा रहा ।

उसके चेहरे पर असमंजसपूर्ण भाव थे ।

जैसे वह फैसला न कर पा रहा हो कि क्या करें, क्या न करें ? मगर अंततः उसने टेलीफोन का रिसीवर वापस क्रैडल पर रख दिया ।

सबके होंठों पर मुस्कुराहट दौड़ गई ।

जैसे ही बारह बजे यशवंत गवली ने सेंट्रल जेल फोन लगाया । दूसरी तरफ से सूचना मिली कि टंडन को फाँसी लग चुकी है ।

"क्या हुआ ऑफिसर ?"

"केस खत्म ।"

"हिप-हिप हुर्रे !"

सब खुशी से उछल पड़े ।

वह जीत का सच्चा जश्न था ।

●●●

शुभांगी अपने बिस्तर पर लेटी सो रही थी ।

गहरी नींद, बहुत गहरी नींद ।

लेकिन आज उसके चेहरे पर बेचैनी नहीं थी, बल्कि सुकून था । इत्मीनान ।

उसने आज फिर वही सपना देखा । उसका अभय देवताओं के बीच विचरण कर रहा है ।

"अभय, अभय !" उसने आहिस्ता से अपने अभय को पुकारा ।

और अभय मल्होत्रा भी उसकी एक ही आवाज सुनकर खींचा चला आया था उसकी तरफ ।

"कैसी हो शुभांगी ?"

"अच्छी हूँ ।" शुभांगी शरारत से बोली, "और आज तो मैं कुछ ज्यादा ही अच्छी हूँ ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि आज तुम जीत जो गए हो अभय ! तुमने मरने के बाद भी उस शैतान का खून कर दिया । आज तुम्हारा इंतकाम पूरा हुआ ।"

"यह सब तुम्हारे कारण संभव हो पाया है शुभांगी !"

"मगर दिमाग तो इसमें तुम्हारा ही काम कर रहा था । मेरे बसका इतनी जबरदस्त योजना बनानी कहाँ थी, जो यशवंत गवली जैसा आदमी मोहरा बन जाए । कितनी अजीब बात है, काम मैं कर रही थी लेकिन दिमाग एक मरे हुए आदमी का चल रहा था ।"

अभय मल्होत्रा कुछ न बोला ।

"अब मैं चलता हूँ ।" अभय ने थोड़ा रुककर कहा, "यहाँ रोजाना प्रभात पूजन होता है । मेरे प्रभात पूजन में जाने का समय हो गया है ।"

अभय मल्होत्रा तेजी से जाने के लिए मुड़ा ।

"सुनो अभय !" शुभांगी की आवाज में टीस थी ।

अभय ठिठक गया ।

वह वापस शुभांगी की तरफ पलटा ।

"क्या अपनी शुभांगी को भी अपने साथ प्रभात पूजन में नहीं लेकर जाओगे ?"

"लेकिन... ।"

"प्लीज अभय !"

अभय मल्होत्रा देखता रहा उसकी तरफ ।

एकटक, अपलक ।

"आ सकोगी मेरे पास ?" अभय मल्होत्रा की आवाज में कशमकश थी ।

"एक बार हाथ बढ़ाकर देखो, तब पता चलेगा कि यह शुभांगी अपने अभय के लिए कहीं भी आ सकती है, किसी भी जगह ।"

अभय मल्होत्रा के चेहरे पर निर्णय-अनिर्णय के भाव छाए रहे । फिर उसने अपने हाथ शुभांगी की तरफ बढ़ा दिए ।

और अगले ही पल गहरी नींद सोती शुभांगी के शरीर से एक छाया निकली और वह अभय मल्होत्रा की तरफ बढ़ती चली गई । कई आसमानों के बीच का फासला सेकेंडों में पार हो गया ।

सुबह जब शुभांगी की माँ ने उसे झंझोड़कर उठाना चाहा, तो वह न उठी ।

शुभांगी सोती की सोती रह गई ।

अभय मल्होत्रा साँप-सीढ़ी के खेल की जो बाजी जीते जी न जीत सका, उसे मरने के बाद जीत गया ।

समाप्त